राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 77

मूल्य ₹6.00, नई दिल्ली, सोमवार, 26 अगस्त 2019

www.jagran.com

पृष्ठ 16

आज (रविवार को) मेरी मां का जन्मदिन है। जन्मदिन मुबारक हो मां। मैं यह जीत उन्हें समर्पित करती हूं। यह जीत बहुत मायने रखती है। मुझे भारतीय होने पर गर्व है। दर्शकों, कोच गोपीचंद और किम का भी आभार।

– पीवी सिंधू

विश्व चैंपियनशिप में भारत

4 खिलाड़ी ही सिंधू के अलावा यहां स्वर्ण, रजत, कांस्य जीत सके हैं। ये खिलाड़ी हैं–ली लिंगवेई, गोंग रूइना और झांग निंग

5 पदक सिंधू यहां जीतने वाली एकमात्र भारतीय। साइना नेहवाल ने दो पदक (रजत, कांस्य) जीते हैं। इसमें सिंधू से ज्यादा पदक किसी अन्य ने नहीं जीते

10 पदक भारत ने अब तक जीते हैं। इनमें एक स्वर्ण, तीन रजत, छह कांस्य हैं

2013 में सिंधू पहली बार विश्व बैडमिंटन चैंपियनशिप में खेलीं और अब तक 21 मैच जीत चुकी हैं

सुपर सिंधू अब विश्व चैंपियन

- ओकुहारा को हराकर देश की पहली विश्व चैंपियन शटलर बनीं पीवी
- लगातार दो फाइनल में सिंधू को इस चैंपियनशिप में मिली थी शिकस्त

बासेल (स्विट्जरलैंड), प्रेट्र: लगातार दो विश्व चैंपियनशिप के खिताबी मुकाबले में हारने की टीस और इस चैंपियनशिप में चार पदक होने के बाद भी स्वर्ण पदक नहीं होने का मलाल यह सभी चीजें भारतीय सुपरस्टार बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधू को परेशान करती थीं। लेकिन इस ओलंपिक रजत पदक विजेता खिलाड़ी ने रविवार को सिंगल्स के फाइनल में नोजोमी ओकुहारा को एकतरफा अंदाज में शिकस्त देकर विश्व चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीत लिया।

सिंधू ने इस स्वर्ण के साथ इतिहास भी रच दिया। वह इस चैंपियनशिप में पहली बार स्वर्ण जीतने में सफल हुईं और इसके साथ ही वह यह स्वर्ण जीतने वाली भारत की एकमात्र खिलाड़ी हैं। 24 वर्षीय सिंधू ने यह खिताबी मुकाबला सीधे गेमों में 21-7, 21-7 से 38 मिनट में ही अपने नाम कर लिया। एशियन गेम्स की रजत पदक विजेता सिंधू के सामने ओकुहारा थीं, जिन्होंने 2017 में सिंधू का विश्व चैंपियन बनने का सपना तोड़ दिया था। इसके बाद सिंधू ने अपने खेल में काफी सुधार किया और 2019 के खिताबी मुकाबले को 38 मिनट में ही अपने नाम कर लिया। भारतीय खिलाड़ी ने पहला गेम 16 मिनट तो दूसरा गेम 22 मिनट में अपने नाम किया। ओकुहारा ने मैच में एक बार सिंधू को लंबी रैली में फंसाने की कोशिश की, लेकिन सिंधू ने 28 शॉट की इस रैली के गेम को भी जीता।

(पूरी कवरेज पेज–14 पर)

करिश्माई प्रतिभा की धनी पीवी सिंधू ने भारत को एक बार फिर गौरवान्वित किया। विश्व चैंपियनशिप में स्वर्ण जीतने पर उन्हें बधाई। उनकी सफलता खिलाड़ियों को प्रेरित करेगी।

– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

कोमलिका के तीरों ने किया कमाल

नई दिल्ली : भारतीय तीरंदाज कोमलिका बारी ने स्पेन के मैड्रिड में विश्व युवा तीरंदाजी चैंपियनशिप का स्वर्ण पदक जीता। कोमलिका ने फाइनल में जापान की वाका सोनोडा को 7–3 से शिकस्त देकर महिला कैडेट रिकर्व श्रेणी में स्वर्ण जीता। कोमलिका को नई दीपिका कुमारी माना जा रहा है। (पेज–15)

स्टोक्स, किस्मत और इंग्लैंड...

लीड्स : 14 जुलाई को विश्व कप फाइनल का रिप्ले रविवार को लीड्स में दोहराया गया। यहां एक बार फिर बेन स्टोक्स थे, किस्मत थी और वही इंग्लैंड की टीम और हां वही अंपायर की गलती भी थी। कुछ अलग था तो विरोधी टीम ऑस्ट्रेलिया और मैदान लीड्स। जो इंग्लैंड की टीम एशेज सीरीज के तीसरे टेस्ट के तीसरे दिन खत्म होने तक हार के मुहाने पर खड़ी थी, उसकी नैया एक बार फिर स्टोक्स ने पार लगा दी। उनकी यादगार पारी (135 नाबाद) ने इंग्लैंड को ऑस्ट्रेलिया पर एक विकेट की सनसनीखेज जीत दिला दी। (पेज–14)

प्लास्टिक और कुपोषण से लड़ेगा देश

अभियान ▸ 'मन की बात' में पीएम ने लोगों से की सक्रिय भागीदारी की अपील

अगले माह से शुरू होगी कुपोषण के खिलाफ लड़ाई, दो अक्टूबर से प्लास्टिक के खिलाफ अभियान

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

मन की बात करते पीएम मोदी। फाइल

सेहत और संतुलित समाज के लिए आने वाले दिनों में दो बड़े अभियान शुरू होने जा रहे हैं। सितंबर के महीने से जहां कुपोषण के खिलाफ अभियान का आगाज होगा, वहीं गांधी जयंती के अवसर पर दो अक्टूबर से पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहे प्लास्टिक पर चोट होगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में लोगों से इन दोनों अभियानों में सक्रिय भागीदारी की अपील की है।

प्रधानमंत्री ने प्लास्टिक के खिलाफ जंग में कॉरपोरेट सेक्टर से सिंगल यूज्ड प्लास्टिक के निस्तारण में मदद मांगी है। देश में मौजूदा समय में प्रतिदिन करीब 26 हजार टन प्लास्टिक का इस्तेमाल हो रहा है जो पर्यावरण और जनजीवन के लिए बहुत नुकसानदायक है। खासकर इन्हें खाने से जानवरों की मौत हो रही है।

प्रधानमंत्री मोदी ने गरीबी और कुपोषण के खिलाफ लड़ाई में सभी देशवासियों से हिस्सा लेने की अपील की है। यह अभियान सितंबर माह में पूरे देश में चलाया जाएगा। संतुलित व पोषक तत्वों से भरपूर भोजन की जरूरत बताते हुए प्रधानमंत्री ने भारतीय संस्कृति में बताई गई अन्न की महिमा का उल्लेख भी किया।

उन्होंने कहा कि महिला और नवजात शिशु समाज की नींव हैं, जिन्हें पोषक तत्वों की कमी के चलते कमजोर होने से बचाने की जरूरत है। नासिक के 'मुट्ठी भर धान्य' आंदोलन, जिसमें आंगनवाड़ी सेविकाएं फसल कटाई के समय लोगों से एक मुट्ठी अनाज इकट्ठा करती हैं, का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इसमें अनाज दान करने वाला व्यक्ति एक प्रकार से जागरूक नागरिक और समाज सेवक बन जाता है। भारतीय समाज में प्रचलित अन्नप्राशन संस्कार का जिक्र करते हुए मोदी ने कहा कि यह संस्कार पूरे हिंदुस्तान में है। शिशुओं को जब पहली बार अन्न यानी ठोस आहार खिलाया जाता है। अपने मुख्यमंत्रित्व काल का हवाला देते हुए मोदी ने कहा कि गुजरात में 2010 में अन्नप्राशन संस्कार के अवसर पर बच्चों को पूरक पोषक तत्वों से भरपूर भोजन देने पर विचार किया गया। कई अन्य राज्यों में तिथि भोज अभियान चलाया जाता है। इसी की देखादेखी कई परिवार अपनी खुशी बांटने के लिए स्कूलों और आंगनवाड़ी जैसी संस्थाओं में पोषक तत्वों वाला भोजन वितरित करते हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि कुपोषण की चुनौती से निपटने के लिए राशन प्रणाली के तहत वितरित किए जाने वाले चावल के फोर्टिफिकेशन की योजना सितंबर से पूरे देश में लागू होगी। इसकी प्रायोगिक परियोजना जहां पहले कुछ सीमित जिलों में ही चलाई जानी थी, उसका अब विस्तार कर दिया गया है। पिछले दिनों राज्यों के खाद्य मंत्रियों के सम्मेलन में इस योजना को मंजूरी मिल गई है। इसके लिए केंद्रीय कैबिनेट की मंजूरी मिलनी बाकी है। इसके तहत चावल पर सूक्ष्म आवश्यक पोषक तत्वों की परत चढ़ा दी जाएगी। यह काम धान से चावल तैयार करते समय ही कर लिया जाएगा। राशन फोर्टिफिकेशन प्रोग्राम को स्कूलों में चलाए जा रहे मिड डे मील में लागू किए जाने की योजना है। चावल में आयरन, फोलिक एसिड और विटामिन बी-12 मिलाया जाएगा।

पोषक तत्वों के बारे में जानकारी न होने की वजह से गरीब ही नहीं संपन्न परिवार भी कुपोषण से प्रभावित हो रहे हैं। अगर प्रत्येक जागरूक नागरिक किसी एक परिवार को कुपोषण से बाहर निकालने में मदद करे तो देश इस गंभीर समस्या से बाहर हो सकता है।

– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री ने बताया, ग्रिल्स ने कैसे समझी थी हिंदी

पीएम मोदी ने मन की बात में डिस्कवरी चैनेल पर हाल ही में दिखाए गए मैन वर्सेज वाइल्ड एपिसोड की भी चर्चा की। साथ ही बताया कि इस शो के प्रसारण के बाद कुछ लोग संकोच के साथ यह बात पूछ रहे थे कि मोदी जी आप हिंदी में बोल रहे थे और बेयर ग्रिल्स हिंदी जानते नहीं है। तो फिर इतना तेजी से कैसे संवाद होता था। क्या इसके लिए बार–बार शूटिंग की गई, लेकिन मैं इस रहस्य को खोल ही देता हूं। हकीकत यह है कि बेयर बेयर के साथ बातचीत में तकनीक का भरपूर इस्तेमाल किया गया। जब मैं कुछ भी बोलता था, तो वह तुरंत अंग्रेजी में अनुवाद होता था।

मोदी ने किया दो मोहन का जिक्र पेज>>5

सरोकार

नई तकनीक से फेफड़े के कैंसर का कारगर इलाज

चंडीगढ़ : फेफड़े के कैंसर से जूझ रहे मरीजों की जिंदगी बचाने को पीजीआइ (चंडीगढ़) के डॉक्टरों ने एक नई तकनीक ईजाद की है। इसके लिए उन्होंने विश्व के पांच देशों के चुनिंदा डॉक्टरों के साथ मिलकर लगातार तीन साल तक मरीजों पर रिसर्च किया। इस दौरान उन मरीजों को कीमो और रेडिएशन का डोज एक साथ देकर कैंसर प्रभावित टिश्यू को निष्क्रिय करने में काफी हद तक सफलता मिली। (पेज–11)

जागरण विशेष

चुनौतियों का पुल बनाकर बुलंद हुए इकबाल

श्रीनगर : श्रीनगर के जिला उपायुक्त के डॉ. शाहिद इकबाल चौधरी कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटने के बाद से हर समय सक्रिय हैं। मुश्किल वक्त में कभी प्रबंधों का जायजा लेते दिखते हैं तो कभी लोगों की समस्याएं सुनते। (पेज–11)

न्यूज गैलरी

राज–नीति ▸ पृष्ठ 3

कैग ने किया 32 डिफेंस ऑफसेट कांट्रैक्ट का ऑडिट

नई दिल्ली : राफेल डील पर भाजपा और कांग्रेस की तकरार लोकसभा चुनाव के बाद भले ही कुछ समय के लिए शांत पड़ गई हो, लेकिन आने वाले दिनों में एक बार फिर सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच रक्षा सौदों को लेकर आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो सकता है। दरअसल कैग ने संप्रग और राजग सरकार के कार्यकाल के दौरान हुए 32 डिफेंस ऑफसेट कांट्रैक्ट का ऑडिट किया है।

नेशनल न्यूज ▸ पृष्ठ 7

भारत के गगनयान अभियान में मदद को रूस ने बढ़ाया हाथ

चेन्नई : भारत के महत्वाकांक्षी अभियान गगनयान में मदद के लिए रूस ने अपना हाथ बढ़ाया है और इसके लिए उसने भारत को क्रायोजनिक इंजन देने का प्रस्ताव किया है। रूस की सरकारी एजेंसी स्पेस कारपोरेशन 'रोस्कोसमोस' की ओर से कहा गया है कि भारत रूस से जल्द अपने गगनयान अभियान को लेकर बात करने वाला है। भारत रूस से गगनयान के लिए कई जरूरी उपकरण खरीदना चाहता है।

बहरीन ने दिखाई सद्भावना, 250 भारतीय कैदियों की सजा माफ करने का किया एलान

मनामा, प्रेट्र : बहरीन सरकार ने मानवता प्रदर्शित करते हुए अपने यहां सजा भुगत रहे 250 भारतीय कैदियों को माफी दे दी है। तीन देशों के दौरे पर निकले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इस खाड़ी देश की यात्रा के दौरान क्षमादान के फैसले की घोषणा की गई। प्रधानमंत्री ने इस शाही माफी के लिए बहरीन के नेतृत्व के प्रति आभार जताया है और कहा है कि इससे दोनों देशों के बीच विश्वास और बढ़ेगा।

बहरीन द्वारा दी गई माफी का फैसला जहां 250 भारतीयों के परिवारों को राहत देने वाला है, वहीं यह कदम दोनों देशों के बीच विकसित हुए करीबी रिश्ते को भी दर्शाता है। पहले भारतीय प्रधानमंत्री के रूप में मनामा दौरे पर आए मोदी को बहरीन ने अपने सर्वोच्च सम्मान से नवाजा है और आतंकवाद के मुद्दे पर उसने भारत का खुलकर साथ भी दिया है। प्रधानमंत्री ने भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए बहरीन के साथ बेहतर रिश्ते का उल्लेख भी किया था।

सरकारी आंकड़े के मुताबिक, विदेश की विभिन्न जेलों में 8,189 भारतीय बंद हैं। सबसे ज्यादा 1,811 भारतीय सऊदी अरब की जेलों में और उसके बाद 1,392 भारतीय यूएई की जेलों में बंद हैं। खनिज तेल से समृद्ध खाड़ी देश बहरीन की जेलों में कितने भारतीय बंद हैं यह स्पष्ट नहीं है। भारतीय कैदियों की सजा माफ किए जाने का शाही आदेश आने के बाद प्रधानमंत्री कार्यालय ने ट्वीट किया, 'दया व मानवता का प्रदर्शन करते हुए बहरीन सरकार ने वहां की जेलों में सजा काट रहे 250 भारतीयों को क्षमादान दे दिया है। इस शाही माफी के लिए प्रधानमंत्री ने बहरीन सरकार, शाह हमद बिन इसा अल खलीफा के साथ ही पूरे शाही परिवार को धन्यवाद दिया है।'

प्रधानमंत्री ने 200 साल पुराने श्रीनाथजी मंदिर में की पूजा-अर्चना : प्रधानमंत्री मोदी ने मनामा में 200 साल पुराने भगवान कृष्ण के मंदिर के लिए 42 लाख डॉलर (करीब 30 करोड़ रुपये) की पुनर्विकास परियोजना लांच की है। उन्होंने कहा कि यह भारत और बहरीन के बीच मजबूत संबंध का परिचायक है। प्रधानमंत्री ने श्रीनाथजी मंदिर में पूजा-अर्चना की और शनिवार को लांच किए गए रुपे कार्ड से प्रसाद खरीदा।

आतंकवाद के खिलाफ भारत–बहरीन एकजुट

मनामा : मोदी की यात्रा के दौरान पाक पर परोक्ष रूप से प्रहार करते हुए यहां भारत और बहरीन ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से दूसरे देशों के खिलाफ आतंकवाद के इस्तेमाल को खारिज करने की अपील की है। प्रधानमंत्री की यात्रा के दौरान दोनों देश के बीच कई मुद्दों पर चर्चा हुई। (पेज–3)

मोदी को मिले सम्मान से तिलमिलाया पाक

इस्लामाबाद, : यूएई द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'ऑर्डर ऑफ जायेद' से नवाजे जाने से पाकिस्तान तिलमिला गया है। यही वजह है कि पाकिस्तानी सीनेट के चेयरमैन सादिक सांजरानी ने रविवार को खाड़ी देश की अपनी सरकारी यात्रा रद करने की घोषणा की। (पेज–3)

नए लड़ाकू विमानों के लिए सभी संभावनाएं तलाश रही वायुसेना

नई दिल्ली : अपनी ताकत में और इजाफा करने के अभियान में जुटी वायुसेना नए लड़ाकू विमानों के लिए सभी संभावनाएं तलाश रही है। इसी कड़ी में 114 लड़ाकू विमानों की खरीद प्रक्रिया शुरू हुई है और वायुसेना को उम्मीद है कि नए लड़ाकू विमान उसे जल्द मिल जाएंगे। राफेल फाइटर जेट की तरह इस सौदे में देरी नहीं होगी, जिसमें दस साल से ज्यादा का वक्त लग गया है। 114 लड़ाकू विमानों के लगभग एक लाख पांच हजार करोड़ रुपये के सौदे को हासिल करने की दौड़ में बोइंग, लॉकहीड मार्टिन, यूरोफाइटर, रसियन यूनाइडेट एयरक्राफ्ट कॉरपोरेशन और साब जैसी कंपनियां जुटी हैं। (पेज–3)

पाकिस्तान में मुहाजिर और अन्य छोटे तबकों पर भीषण अत्याचार

लंदन : पाकिस्तान सरकार जम्मू–कश्मीर में जिस तरह के मानव उत्पीड़न का दावा कर रही है उससे कहीं ज्यादा अत्याचार कराची और सिंध प्रांत के कई शहरों में वह खुद कर रही है। यह बात मुत्ताहिदा कौमी मूवमेंट (एमक्यूएम) की सेंट्रल कोऑर्डिनेशन कमेटी ने कही है। एक समय कराची में बड़े राजनीतिक प्रभाव वाले एमक्यूएम पर पाकिस्तान सरकार का ऐसा नजला गिरा कि संगठन के बड़े नेता भी देश छोड़कर ब्रिटेन और अन्य देशों में रह रहे हैं। (पेज–13)

नई दिल्ली में स्थित भाजपा मुख्यालय में अंतिम विदाई देते समय बेहद गमगीन पूर्व वित्त मंत्री अरुण जेटली की पत्नी संगीता जेटली और पुत्री सोनाली। प्रेट्र

जेटली पंचतत्व में विलीन

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

▸ राजकीय सम्मान के साथ देश ने दी पूर्व वित्त मंत्री को अंतिम विदाई

भाजपा के कद्दावर नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण जेटली पंचतत्व में विलीन हो गए। राजकीय सम्मान पूर्वक निगम बोध घाट पर उनकी अंत्येष्टि की गई। मुखाग्नि पुत्र रोहन जेटली ने दी। अंतिम विदाई देने के लिए सभी दलों और वर्गों के लोग पहुंचे। बारिश के बावजूद आखिर तक लोग जमे रहे।

लंबे समय से अस्वस्थ चल रहे अरुण जेटली ने शनिवार दोपहर अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में अंतिम सांस ली थी। रविवार सुबह उनके पार्थिव शरीर को कैलाश कॉलोनी स्थित आवास पर अंतिम दर्शन के लिए रखा गया। साढ़े नौ बजे जब पार्थिव शरीर को भाजपा मुख्यालय ले जाने के लिए घर से निकाला गया तो लोग पैदल ही पीछे चलने लगे। 10.50 पर पार्थिव शरीर दीनदयाल उपाध्याय रोड स्थित भाजपा मुख्यालय पहुंचा, जहां हर खास व आम ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। पंजाब, उत्तर प्रदेश समेत विभिन्न राज्यों से लोग पहुंचे थे।

सेना के गन कैरेज वाहन पर रखा गया पार्थिव शरीर : 1.30 बजे जेटली के पार्थिव शरीर को तिरंगे में लपेटकर सेना के गन कैरेज वाहन पर रख कर अंतिम यात्रा 5.8 किमी दूर निगम बोध घाट के लिए निकली। साथ में उनकी पत्नी संगीता, पुत्र रोहन, बेटी सोनाली समेत परिवार के अन्य सदस्य भी थे। भाजपा अध्यक्ष अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह समेत भाजपा के कई वरिष्ठ नेता काफिले के साथ चल रहे थे। रास्ते भर 'जब तक सूरज चांद रहेगा- जेटली तेरा नाम रहेगा' और 'अरुण जेटली अमर रहे' जैसे नारे गूंजते रहे। बड़ी संख्या में लोग सड़कों के किनारे खड़े थे। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पुत्र रोहन ने 3.17 बजे मुखाग्नि दी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी महत्वपूर्ण विदेशी यात्रा पर होने के कारण अंतिम विदाई में शामिल नहीं हो सके। उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू, लोकसभा के अध्यक्ष ओम बिरला, राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश, भाजपा अध्यक्ष और गृहमंत्री अमित शाह, कार्यकारी अध्यक्ष जेपी नड्डा, केंद्रीय मंत्रियों राजनाथ सिंह, पीयूष गोयल, नितिन गडकरी, निर्मला सीतारमण, स्मृति ईरानी, प्रकाश जावडेकर, रमेश पोखरियाल निशंक, डॉ. हर्षवर्धन, रामविलास पासवान व अनुराग ठाकुर ने श्रद्धांजलि दी। महाराष्ट्र, कर्नाटक, हरियाणा, उत्तराखंड और झारखंड के मुख्यमंत्रियों के साथ ही बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल समेत अन्य उपस्थित रहे। कैथोलिक चर्च के आर्च बिशप ने भी भाजपा मुख्यालय पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

रोते हुए घर में दाखिल हुईं किरण : जेटली के अंतिम दर्शन के लिए उनके घर पर रिश्तेदार, कार्यकर्ता और कई पार्टियों के नेता मौजूद रहे। सुबह करीब सात बजे से ही घर के सामने भीड़ जुटने लगी थी। सांसद किरण खेर रोते हुए घर में दाखिल हुईं। वहां पहुंचे ब्रिटिश उच्चायुक्त सर डोमिनिक ने कहा कि जेटली अच्छे स्वभाव के व्यक्ति थे।

(संबंधित खबरें पेज–5 पर)

दो तस्वीरें जो बताती हैं जम्मू–कश्मीर में क्या बदल गया

67 साल

पांच अगस्त को अनुच्छेद–370 हटने से खत्म हुई राज्य के झंडे की अहमियत, कानून एवं व्यवस्था की स्थिति को देखते हुए तत्काल नहीं उतारा गया था झंडा, लेकिन अब नजारा बदला...

नवीन नवाज, श्रीनगर

जम्मू-कश्मीर में एक निशान का सपना पूरा हो गया है। श्रीनगर स्थित राज्य सचिवालय में राष्ट्र ध्वज के साथ लहराने वाला जम्मू-कश्मीर का ध्वज 67 साल बाद रविवार को उतार दिया गया। सचिवालय समेत राज्य में सभी संवैधानिक संस्थानों की इमारतों पर केवल तिरंगा लहरा रहा है। पांच अगस्त को अनुच्छेद-370 हटने के बाद राज्य के ध्वज की अहमियत समाप्त हो गई थी।

अनुच्छेद-370 के प्रावधानों के तहत जम्मू-कश्मीर का अलग निशान (ध्वज) और अलग विधान था। राज्य के लाल रंग के झंडे पर हल का निशान और तीन पट्टियां थीं। यह तीन सफेद पट्टियां राज्य के तीन प्रांतों जम्मू, कश्मीर और लद्दाख का प्रतिनिधित्व करती थीं।

अधिकारियों ने बताया कि पहले यह विचार था कि जम्मू-कश्मीर के ध्वज को 31 अक्टूबर 2019 को ही उतारा जाए, क्योंकि उसी दिन से जम्मू-कश्मीर और लद्दाख दो अलग-अलग केंद्र शासित राज्यों के तौर पर अस्तित्व में आते। बाद में विचार आया कि अब इस ध्वज की संवैधानिक या कानूनी तौर पर किसी तरह की अहमियत नहीं रह गई है। इसलिए किसी भी दिन इसे उतारा जा सकता था। ऐसे में इसे रविवार को उतार लिया गया। वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने कहा कि अब हालात सामान्य हैं। लोग बदलाव के पक्ष में नजर आ रहे हैं। इसलिए यह ध्वज उतार लिया गया है।

एक देश एक निशान

श्रीनगर में सचिवालय की बिल्डिंग पर फहराते राष्ट्रीय ध्वज और जम्मू–कश्मीर के राज्य के झंडे की यह तस्वीर कुछ दिन पहले की है, (बाएं) लेकिन राज्य से अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद अब स्थिति एकदम बदल गई है। एक देश एक ध्वज के प्रतीक के रूप में 25 अगस्त को सचिवालय की बिल्डिंग पर शान से तिरंगा फहराता नजर आया। जिस पोल पर कश्मीर का ध्वज फहराया जाता था, उसे भी गिरा दिया गया। जागरण

समझौते के बाद मिला था झंडा

पूर्व प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू और तत्कालीन जम्मू–कश्मीर के प्रधानमंत्री शेख मुहम्मद अब्दुल्ला के बीच 1952 में केंद्र और राज्य की शक्तियों को लेकर समझौता हुआ था। इस समझौते में दोनों ने तिरंगे को राष्ट्रीय ध्वज और जम्मू–कश्मीर के झंडे को राज्य का झंडा माना था। **अनुच्छेद–370 की धारा चार में तय हुआ था झंडा :** अनुच्छेद–370 की धारा चार में लिखा गया था कि केंद्र सरकार राष्ट्रीय ध्वज के साथ राज्य सरकार के अपने झंडे को लेकर सहमति जताती है, लेकिन राज्य सरकार इस पर सहमत है कि राज्य का झंडा केंद्रीय झंडे का प्रतिरोधी नहीं होगा। यह भी मान्यता दी जाती है कि केंद्रीय झंडे की जम्मू–कश्मीर में वही दर्जा और स्थिति होगी जो शेष भारत में है, लेकिन राज्य में स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े ऐतिहासिक कारणों के लिए राज्य के झंडे को जारी रखने की जरूरत है। इसके बाद जम्मू–कश्मीर के संविधान में भी इस झंडे को अपनाया गया। जम्मू–कश्मीर संविधान का अनुच्छेद–144 भी इसे मान्यता प्रदान करता है।

वीआइपी के लिए विमान में खाली कराई गई आगे की सीट

संतोष शर्मा, नई दिल्ली

▸ एयरलाइंस व विमानन मंत्रालय से की शिकायत, स्पाइस जेट के विमान से जालंधर लौट रहा था परिवार

स्पाइस जेट की उड़ान में दिल्ली से आदमपुर जाने वाले तीन यात्रियों को उनकी सीट से उठाकर पीछे की सीट पर भेज दिया गया। इनमें एक महिला भी शामिल है। पीड़ित के मुताबिक सीट पर वीआइपी को बैठाने के लिए उन्हें पीछे की सीट पर भेजा गया था। यात्रियों ने विमानन मंत्रालय से लिखित शिकायत की है।

पंजाब के जालंधर निवासी अभिषेक चौधरी शेयर मार्केट में काम करते हैं। उनकी बहन को कनाडा जाना था। उन्हें छोड़ने के लिए वह अपनी मां रेणुका चौधरी, पिता यशपाल चौधरी के साथ आइजीआइ एयरपोर्ट गए थे। जालंधर जाने के लिए उन्होंने स्पाइस जेट की उड़ान संख्या एसजी-8731 से आदमपुर का पांच दिन पहले टिकट बुक कराया था। शनिवार को वह माता-पिता के साथ विमान में अपनी सीट पर बैठ गए। अभिषेक का कहना है कि उनकी मां का वजन थोड़ा ज्यादा है। वह पहली बार हवाई यात्रा कर रही थीं। उन्हें विमान में परेशानी न हो इसलिए उन्होंने आगे की सीट बुक कराई थी। इसके लिए उन्होंने अतिरिक्त रुपये भी खर्च किए थे, लेकिन कुछ समय बाद ही क्रू मेंबर ने उन्हें जबरन उठाकर सबसे पीछे बैठा दिया। उनकी सीट पर किसी वीआइपी को बैठा दिया गया। इसके कारण उनके माता-पिता और उन्हें काफी परेशानी हुई।

स्पाइस जेट के प्रवक्ता का कहना है कि विमान का संतुलन बनाए रखने के लिए कई बार कुछ सीट खाली रखनी पड़ती हैं। इस कारण तीनों यात्रियों से पीछे जाने का आग्रह किया गया था। इसके बाद वे स्वेच्छा से पीछे की सीट पर चले गए थे। उनका दावा है कि पूरी यात्रा के दौरान उन यात्रियों की सीट खाली रखी गई थी। जहां तक सीट बुक कराने के रुपये की बात तो वह यात्रियों को वापस लौटाने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

2.6 मिमी औसत बारिश हुई है दिल्ली में पिछले चौबीस घंटों में। पालम में 5.6 मिमी, लोदी रोड में 10.6 मिमी, रिज में 14.2 मिमी, आया नगर में 0.2 मिमी और नजफगढ़ में 2 मिमी बारिश हुई।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
सोमवार 26 अगस्त 2019

राजधानी में तीन माह में दो तिहाई ही बरसे बादल

संजीव गुप्ता, नई दिल्ली

दिल्ली में इस बार बादलों की आवाजाही तो खूब रही, छाए भी हर बार, लेकिन बरसे बहुत ही कम। मानसून की झमाझम बारिश का तो इस बार ठीक से अहसास तक नहीं हो पाया। मानसून के आंकड़े भी इस बात की पुष्टि कर रहे हैं। आंकड़ों के मुताबिक इस वर्ष दिल्ली में मानसून के तीन माह में मेघ दो तिहाई ही बरसे हैं। आने वाले दिनों में भी झमाझम बारिश के आसार नहीं लग रहे हैं।

मौसम विभाग के मुताबिक जून से सितंबर के मध्य चार माह मानसून की बारिश होती है। लेकिन एक जून से 25 अगस्त तक यहां 33 फीसद कम बारिश हुई है। इस तिथि तक सामान्य बारिश 486.7 मिलीमीटर है, जबकि अभी तक 327.2 मिलीमीटर बारिश ही हुई है। राजधानी में छिटपुट बारिश तो फिर भी बीच-बीच में होती रही है, लेकिन भारी बारिश का लोग इंतजार ही कर रहे हैं।

मौसम विज्ञानियों के मुताबिक देश के उत्तर-पश्चिम में आने वाले दिल्ली-एनसीआर में तो मानसून की बारिश फिर भी ठीक रही है, लेकिन अपरिहार्य कारणों से दिल्ली में मानसून कमजोर पड़ता जा रहा है। मौसम भी उमस भरा ज्यादा रहा है। अगले सप्ताह के आखिर में एक-दो दिन अच्छी बारिश हो सकती है। इसके बाद सितंबर में भी हाल फिलहाल अच्छी बारिश के ज्यादा संकेत नहीं हैं। मौसम विज्ञानियों के मुताबिक सितंबर माह के उत्तरार्द्ध में मौसम में शुष्कता आने और बारिश की मात्रा बहुत कम हो जाने पर इसके खत्म होने के संकेत मिलने लगते हैं।

रविवार को दिन में बारिश के दौरान मथुरा रोड पर प्रगति मैदान के पास वाहनों की लाइट जलाकर चलते चालक। पारस कुमार

दिल्ली में इस बार कम बारिश हुई है। एनसीआर में फिर भी बारिश ठीक रही है, लेकिन दिल्ली में अपेक्षाकृत हल्की रही है। मानसून खत्म होने के बाद इसके कारणों का आकलन होगा। -कुलदीप श्रीवास्तव, निदेशक, प्रादेशिक मौसम विज्ञान केंद्र, दिल्ली

तीन माह में हुई बारिश (मिलीमीटर में)

माह	सामान्य	वास्तविक	कमी
जून	65.5	11.2	-83 फीसद
जुलाई	210.6	199.2	-05 फीसद
अगस्त	210.6	116.8	-45 फीसद

(25 तारीख तक)

रविवार को कहीं-कहीं हुई हल्की बारिश

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : उमस भरी गर्मी के बीच रविवार को राजधानी में कहीं-कहीं हुई हल्की बारिश के बाद सोमवार को भी दिल्ली में बारिश के आसार हैं। इसके बाद दो-तीन दिन मौसम शुष्क रहेगा और सप्ताह के आखिर में फिर तेज बारिश हो सकती है। रविवार को दोपहर तक सूरज और बादलों में लुकाछिपी चलती रही। दोपहर बाद कई क्षेत्रों में हल्की तो कई जगह झमाझम बारिश हुई। मौसम विभाग के अनुसार सोमवार को भी दिल्ली एनसीआर में हल्की से मध्यम स्तर की बारिश होने की संभावना है। इसके बाद तीन दिन मौसम शुष्क रहेगा। 30 और 31 अगस्त को बारिश फिर तेज हो सकती है। रविवार को राजधानी का अधिकतम तापमान 34.1 डिग्री सेल्सियस रहा जो सामान्य से एक डिग्री अधिक था। न्यूनतम तापमान 26.8 डिग्री सेल्सियस रहा, यह भी सामान्य से एक डिग्री अधिक था। हवा में नमी का स्तर 60 से 97 फीसद दर्ज किया गया। स्काईमेट वेदर के मुख्य मौसम विज्ञानी महेश पलावत बताते हैं कि अगस्त के अंत में बारिश एक बार फिर रफ्तार पकड़ेगी। सितंबर के पहले हफ्ते में भी एक दो अच्छी बारिश की संभावना बनी हुई है। जहां तक सोमवार का पूर्वानुमान है, तो बादल छाए रहेंगे। अधिकतम तापमान 34, जबकि न्यूनतम तापमान 25 डिग्री सेल्सियस रहने के आसार हैं।

बुजुर्गों को तीर्थयात्रा पर अगले महीने लेकर जाएगी ट्रेन

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

- जम्मू-कश्मीर में बदले हालात और बाढ़ के चलते अगस्त में यात्रा नहीं हो सकी

पिछले करीब एक माह से ठप मुख्यमंत्री तीर्थयात्रा सितंबर से फिर शुरू होने जा रही है। कश्मीर में बदले माहौल के चलते आइआरसीटीसी द्वारा तीर्थ यात्रियों को ले जाने से मना किए जाने के बाद अगस्त माह में एक भी ट्रेन रवाना नहीं हो सकी थी। इस बीच तीर्थयात्रा के लिए अब तक 3500 लोग आवेदन कर चुके हैं।

तीर्थयात्रा विकास समिति के चेयरमैन कमल बंसल ने बताया कि इस यात्रा के लिए अगस्त में दो ट्रेनें में दो हजार यात्रियों को तीर्थ पर भेजने की दिल्ली सरकार की योजना थी। लेकिन जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाए जाने के बाद वहां माहौल बदल गया। इसे देखते हुए आइआरसीटीसी ने यात्रियों को इस मार्ग पर ले जाने से इन्कार कर दिया। वहीं भारी बारिश और बाढ़ के चलते दूसरे मार्गों पर भी अगस्त में यात्रा नहीं हो सकी। अब 4 सितंबर को अगली ट्रेन बुजुर्गों को लेकर अमृतसर बाघा बार्डर जाएगी।

इसके बाद लगातार पांच ट्रेनें अलग-अलग मार्ग पर भेजी जाएंगी। इनमें रामेश्वर, तिरुपति, जगन्नाथपुरी, वैष्णोदेवी और अजमेर-पुष्कर आदि तीर्थ स्थल शामिल हैं। नए मार्ग में सबसे अधिक दिनों की यात्रा रामेश्वरम-मदुरै की है, जो आठ दिनों की है। तिरुपति बालाजी सात दिन, जगन्नाथपुरी, कोणार्क व भुवनेश्वर सात दिन, द्वारकाधीश- नागेश्वर व सोमनाथ सात दिन, शिरडी व शनि शिंगणापुर छह दिन, उज्जैन व ओंकारेश्वर चार दिन व बोधगया-सारनाथ पांच दिन की यात्रा शामिल है। अभी तक मुख्यमंत्री तीर्थ यात्रा योजना के तहत अमृतसर-बाघा-आनंदपुर साहिब तीर्थस्थल के लिए दो ट्रेन और एक ट्रेन वैष्णों माता की यात्रा पर बुजुर्गों को लेकर जा चुकी है।

अब तक तीर्थयात्रा के लिए 3500 लोग आवेदन कर चुके हैं। (फाइल फोटो)

रामेश्वरम जाने के लिए यात्री दिखा रहे रुचि : बुजुर्ग वैष्णो माता दर्शन के बाद सबसे अधिक रुचि रामेश्वरम जाने के लिए दिखा रहे हैं। तीर्थयात्रा समिति के पास पिछले 16 दिन में ही रामेश्वरम जाने के लिए दो हजार से ज्यादा आवेदन आ गए हैं। यात्रियों को लेकर अगले महीने ट्रेन रामेश्वरम के लिए रवाना की जा सकती है।

न्यूज गैलरी

शराब के दाम प्रति बोतल 20 से 200 रुपये तक बढ़े

नई दिल्ली : दिल्ली में शराब के दाम बढ़ गए हैं। मीडियम ब्रांड की बोतल में 20 से लेकर 40 रुपये तक महंगी हो गई है। वहीं, महंगे ब्रांड पर सौ रुपये से लेकर दो सौ रुपये तक की बढ़ोतरी की गई है। इसके अलावा अद्धे पर भी 10 से 20 रुपये तक व पौवे पर 5 से 15 रुपये तक की वृद्धि की गई है। बीयर, व्हिस्की, वोदका समेत करीब 90 ब्रांड के दाम बढ़ाए गए हैं। दिल्ली में करीब 70 कंपनियां शराब की आपूर्ति करती हैं। इसमें से अभी तक 15 कंपनियों के ही लाइसेंस नवीनीकरण का काम पूरा हो सका है। जैसे-जैसे कंपनियों के लाइसेंस का नवीनीकरण का काम पूरा होता जाएगा वैसे-वैसे बाकी ब्रांडों के नाम भी जुड़ते जाएंगे। इन ब्रांडों के दामों में भी बढ़ोतरी हो सकती है। नवीनीकरण की यह प्रक्रिया अगले 15 दिन तक चलेगी। (राब्यू)

इंदिरा गांधी की प्रतिमा टूटने से कोंडली में तनाव

नई दिल्ली : न्यू कोंडली मार्केट के इंदिरा चौक पर लगी पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की प्रतिमा रविवार सुबह टूटी मिली। इससे इलाके का माहौल तनावपूर्ण हो गया। कांग्रेस नेताओं ने साजिश के तहत प्रतिमा तोड़े जाने का आरोप लगाया है। हालांकि पुलिस बारिश में प्रतिमा टूटने का दावा कर रही है। लोगों के अनुसार कई वर्ष पहले चौक पर इंदिरा गांधी की मूर्ति लगाई गई थी और उनके नाम पर ही चौक का नाम रखा गया था। पिछले काफी समय से कोंडली मार्केट के कुछ दुकानदारों ने मूर्ति के आसपास कब्जा कर रखा था। लोगों ने आरोप लगाया कि उन्हीं में से किसी ने मूर्ति को तोड़ा है ताकि वह अपनी दुकान का सामान वहां रख सकें। रविवार सुबह पुलिस ने मूर्ति के मलबे को साफ करवाया। जिला पुलिस उपायुक्त जसमीत सिंह का कहना है कि उन्हें लोगों ने बताया मूर्ति प्लास्टर ऑफ पेरिस (पीओपी) से बनी हुई थी। बारिश के कारण अपने आप टूट गई। (जासं)

एबीवीपी ने संभावित उम्मीदवार किए घोषित

नई दिल्ली : जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव के लिए एबीवीपी ने संभावित उम्मीदवारों के नाम घोषित कर दिए हैं। एबीवीपी के जेएनयू में चीफ कैंपेन कॉर्डिनेटर ललित पांडेय ने बताया कि इस बार विद्यार्थी परिषद के आठ संभावित उम्मीदवार प्री-इलेक्शन कैंपेन में हैं। इकाई अध्यक्ष दुर्गेश कुमार ने बताया कि एबीवीपी हमेशा ही छात्र हितों के लिए प्रतिबद्ध रही है। इस बार एबीवीपी ने जिन आठ उम्मीदवारों को प्री- इलेक्शन कैंपेन में उतारा है, उनमें मनीष जांगिड़, सुमंत साहू, सुजीत शर्मा, अंबेश पांडेय, श्रुति अग्निहोत्री, सबरीश, सरीपल्ली वी रविकिरण व आराधना कुमारी का नाम शामिल है। (जासं)

एलएनजेपी में 22 मंजिला इमारत बनाने का रास्ता साफ

मिली मंजूरी ▶ दिल्ली कैबिनेट ने योजना को दी हरी झंडी

भूकंपरोधी होगी इमारत, निर्माण पर 533 करोड़ खर्च का अनुमान

वी.के. शुक्ला, नई दिल्ली

दिल्ली के सरकारी अस्पतालों की सबसे ऊंची इमारत बनाए जाने का रास्ता साफ हो गया है। यह इमारत बेसमेंट सहित 22 मंजिला होगी। यह लोक नायक जयप्रकाश नारायण (एलएनजेपी) अस्पताल में बनेगी। दिल्ली कैबिनेट ने इस योजना को मंजूरी दे दी है। किसी सरकारी अस्पताल की यह सबसे ऊंची इमारत होगी। यह इमारत भूकंपरोधी होगी। इसके निर्माण पर 533 करोड़ 90 लाख 79 हजार 516 रुपये की अनुमानित लागत आएगी। इसे चार साल में पूरा किया जाएगा।

योजना के अनुसार इस इमारत में मेडिसिन विभाग व मातृत्व और उन्नत बाल चिकित्सा केंद्र की स्थापना की जाएगी। इस इमारत में कुल मिलाकर बिस्तरों की संख्या 1570 होगी। अस्पताल में वर्तमान में बिस्तरों की संख्या 2550 है। नई इमारत बनने के बाद इनकी संख्या बढ़कर 4120 हो जाएगी। यह संख्या दिल्ली सरकार के किसी भी अस्पताल से अधिक होगी। इस इमारत के निर्माण के लिए दिल्ली अर्बन आर्ट कमीशन, अग्निशमन विभाग और दिल्ली मेट्रो रेल कारपोरेशन (डीएमआरसी) से मंजूरी मिल चुकी है। अस्पताल के निकट से गुजर रही मेट्रो लाइन के चलते दिल्ली सरकार को डीएमआरसी से मंजूरी लेनी पड़ी है। गत आठ मार्च को दिल्ली सरकार की व्यय एवं वित्त समिति भी इस इमारत को मंजूरी दे चुकी है।

योजना को लेकर सरकार की शर्तें

- योजना पर काम हर हाल में निर्धारित समय में पूरा करना होगा।
- योजना पर खर्च होने वाली राशि आगे नहीं बढ़ाई जाएगी।
- सरकार द्वारा निर्धारित की गई राशि के तहत ही टेंडर जारी किए जाएंगे।
- इमारत के निर्माण में देरी होने या खराब काम होने की स्थिति में कंपनी पर जुर्माने का भी प्रावधान होगा।
- निर्माणकर्ता कंपनी ही अगले पांच साल तक इमारत का रखरखाव करेगी

केंद्र के अस्पतालों में दूर होगी नर्सिंग कर्मचारियों की कमी

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : एम्स में इस बार आर्थिक आरक्षण के आधार पर छात्रों को एमबीबीएस में दाखिला नहीं मिला, लेकिन नर्सिंग कर्मचारियों की नियुक्ति में आर्थिक आधार पर आरक्षण लागू होगा। दरअसल, एम्स सहित केंद्र के चार बड़े अस्पतालों में जल्द ही 1484 नर्सिंग अधिकारियों की नियुक्ति होगी। एम्स इसकी प्रक्रिया भी शुरू कर चुका है। इससे एम्स, सफदरजंग अस्पताल, आरएमएल व लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज में नर्सिंग कर्मचारियों की कमी दूर होगी। आर्थिक आधार पर आरक्षण के तहत गरीब परिवार के अभ्यर्थियों के लिए 141 सीटें आरक्षित रखी गई हैं। अस्पतालों में डॉक्टरों के अलावा नर्सिंग कर्मचारियों की कमी भी बड़ी समस्या रही है। इससे वार्ड में मरीजों की देखभाल प्रभावित होती है। हाल ही सफदरजंग अस्पताल में काफी संख्या में नर्सिंग कर्मचारियों की नियुक्ति भी हुई थी।

किरायेदार ने किराये से बचने के लिए खुद को मारी थी गोली

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- कंधे और जांघ पर गोली मारकर मकान मालिक के बेटे पर लगाया था आरोप
- पुलिस ने आरोपित और उसके भाई को किया गिरफ्तार

किराया न देना पड़े इसीलिए किरायेदार ने खुद के कंधे व जांघ में गोली मारकर मकान मालिक के बेटे पर आरोप लगाया था। पुलिस ने मामले की जांच की तो आरोप फर्जी पाए गए। इसके बाद पुलिस ने किरायेदार को हिरासत में लेकर सख्ती के पूछताछ की उसने खुद को गोली मारने व झूठा मुकदमा दर्ज कराने की बात कबूली। उसका साथ देने के आरोप में पुलिस ने उसके भाई को भी गिरफ्तार किया है। दोनों के कब्जे से पिस्टल व स्कूटी बरामद की गई है।

डीसीपी चिन्मय बिश्वाल ने बताया कि फर्जी मुकदमा दर्ज कराने वाला किरायेदार सुमित भड़ाना व उसके भाई नवीन भड़ाना को शनिवार रात शास्त्रीनगर स्थित बहन के घर से गिरफ्तार किया गया। नवीन पर साजिश में साथ देने का आरोप है। दोनों आरोपित भाई भोंडसी, गुरुग्राम के रहने वाले हैं।

गत 22 अगस्त को अमर कॉलोनी थाना पुलिस को सूचना मिली कि सुमित भड़ाना को उसके मकान मालिक के बेटे ने गोली मार दी है। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और सुमित को अस्पताल में भर्ती कराया। उसके कंधे व जांघ में गोली लगी हुई थी। सुमित ने आरोप लगाया कि अमर कॉलोनी में उसने सी-5 व बी-51 दो इमारत किराये पर ले रखी हैं। वह इनमें पीजी चलाता है। उसने बताया कि दोनों इमारत विजय जुनेजा की हैं। किराया उनका बेटा वरुण उर्फ विक्की जुनेजा लेता है। सुमित के मुताबिक उसके ऊपर बीते छह माह का 2.25 लाख रुपये किराया बकाया था। उसके द्वारा विक्की जुनेजा को दिए गए दो चेक बाउंस हो गए थे। किराया न देने के चलते विक्की ने उसे गोली मार दी और फरार हो गया।

डीसीपी चिन्मय बिश्वाल के मुताबिक सुमित का पीजी का कारोबार मंदा चल रहा था। इसके चलते वह किराया नहीं दे पा रहा था। दो चेक बाउंस हो गए थे। वहीं मकान मालिक का बेटा किराये के लिए लगातार दबाव बना रहा था। ऐसे में घटना के दिन 22 अगस्त से 10 दिन पहले राजस्थान के रहने वाले एक परिचित से सुमित ने पिस्टल मंगवाई। साजिश के तहत उसने खुद गोली मारी और मकान मालिक के बेटे पर गोली मारने का झूठा आरोप लगा दिया।

कैसे खुला मामला : किरायेदार सुमित की शिकायत पर पुलिस ने जांच शुरू की तो कई संदिग्ध बातें सामने आ रही थीं। सुमित बार-बार बयान बदल रहा था जबकि विक्की जुनेजा शुरू से किराया देने से बचने के लिए फर्जी आरोप लगाने की बात कह रहा था। पुलिस जांच कर ही रही थी कि सुमित अस्पताल से जबरन डिस्चार्ज होकर चला गया। इस पर पुलिस का शक गहरा गया। सर्विलांस के जरिये पुलिस ने पहले सुमित को गिरफ्तार किया। इसके बाद उसके भाई को गिरफ्तार कर पिस्टल बरामद की।

टोकाटाकी से गुस्साए युवक ने माता-पिता पर किया जानलेवा हमला

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : शाहबाद डेरी इलाके में काम-धंधे के लिए टोकाटाकी करने से गुस्साए युवक ने अपने माता-पिता का चाकू से गला रेतकर हत्या का प्रयास किया। वारदात को अंजाम देकर युवक मौके से फरार हो गया। दोनों घायलों का इलाज आंबेडकर अस्पताल में चल रहा है। वहां उनकी हालत स्थिर बताई जा रही है। शाहबाद डेरी थाना पुलिस आरोपित के खिलाफ हत्या के प्रयास की धारा में मामला दर्ज कर जांच कर रही है।

अमरजीत व उनकी पत्नी अपने बेटे संजीव (23) के साथ शाहबाद डेरी इलाके में रहते हैं। अमरजीत एक पार्टी के स्थानीय नेता हैं और उनका खुद का कारोबार है। संजीव खुद का कारोबार शुरू करना चाहता था, लेकिन उसमें सफल नहीं पा रहा था। ऐसे में वह इन दिनों कुछ नहीं कर रहा था। पुलिस की जांच में पता चला है कि उसके पिता चाहते थे कि संजीव उनके कारोबार में ही हाथ बंटाए, लेकिन वह इसके लिए तैयार नहीं हो रहा था। इसी बात को लेकर पिता-पुत्र के बीच अक्सर बहस होती थी। बताया जाता है कि शुक्रवार की रात को भी काम-धंधे को लेकर पिता ने फिर संजीव को टोंक दिया। इससे गुस्साया संजीव रसोई से चाकू लेकर आया और पिता के गले पर वार कर दिया। बीच बचाव करने के लिए उसकी मां आई तो उसने मां पर भी चाकू से हमला कर दिया और भाग गया। चीख-पुकार सुनकर पड़ोसी मौके पर पहुंचे तो दंपती को खून से लथपथ देखा। दोनों को अस्पताल में भर्ती कराया गया और मामले की सूचना पुलिस को दी गई।

बारापुला फ्लाईओवर से गिरे मौसेरे भाई, एक की मौत

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

सनलाइट कॉलोनी थाना क्षेत्र में शनिवार शाम दो मौसेरे भाई बारापुला फ्लाईओवर से नीचे गिर गए। हादसे में एक की मौत हो गई, जबकि दूसरे की हालत गंभीर है।

डीसीपी दक्षिणी-पूर्वी चिन्मय बिस्वाल ने बताया कि रोहित (32) तिलक नगर में रहते थे। वह नोएडा स्थित जेनपैक्ट कंपनी में मैनेजर थे। कुछ दिन पहले उनके मौसेरे भाई प्रदीप उनके पास आए थे। शनिवार को जन्माष्टमी की छुट्टी के चलते दोनों स्कूटी पर घूमने निकले। रोहित स्कूटी चला रहे थे। सनलाइट कॉलोनी में शाम पांच बजे दोनों बारापुला फ्लाईओवर लूप पर विपरीत दिशा से चढ़े। कुछ दूरी पर बारिश से उनकी तेज रफ्तार स्कूटी फिसलकर डिवाइडर से टकरा गई और दोनों फ्लाईओवर से नीचे जा गिरे। रोहित सड़क पर गिरे, जबकि प्रदीप फ्लाईओवर के नीचे बने नाले में। राहगीरों ने मामले की सूचना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों को एम्स ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया। वहां डॉक्टरों ने रोहित को मृत घोषित कर दिया। पोस्टमार्टम करने वाले डॉक्टरों के मुताबिक, रोहित की एक दर्जन से ज्यादा हड्डियां टूट गई थीं और हेलमेट टूटकर उनके सिर में धंस गया था। इससे उनकी मौत हो गई। वहीं, प्रदीप आइसीयू में भर्ती हैं, जहां उनकी हालत गंभीर बनी हुई है। वह नाले में गिरे, जिससे उनके शरीर को कम नुकसान पहुंचा।

बीते नौ माह में बारापुला फ्लाईओवर पर यह दूसरा बड़ा हादसा है। इससे पहले जनवरी में बाइक सवार पति-पत्नी को लग्जरी कार चालक ने टक्कर मार दी थी। बाइक डिवाइडर से टकराई और पति-पत्नी फ्लाईओवर से नीचे जा गिरे थे। हादसे में महिला की मौत हो गई थी जबकि पति गंभीर रूप से घायल हुआ था। पुलिस के अनुसार, हादसे की जांच में सामने आया था फ्लाईओवर के लूप के पास साइड वाली दीवार का छोटा होना बारापुला पर हादसे का कारण बन रहा है।

ग्रुप हाउसिंग योजना के लिए खाली प्लॉटों की ऑनलाइन नीलामी जल्द

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : ग्रुप हाउसिंग योजना के लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) खाली प्लाटों की ऑनलाइन नीलामी जल्द शुरू कर सकता है। योजना के पहले चरण में रोहिणी में चिह्नित पांच प्लॉटों की नीलामी की जाएगी। इसके बाद दिल्ली के अन्य इलाकों में नीलामी की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जाएगा। यह योजना 10 सितंबर तक शुरू हो सकती है।

13 अगस्त को ही राजनिवास में हुई डीडीए बोर्ड की बैठक में उपराज्यपाल अनिल बैजल ने ग्रुप हाउसिंग योजना के लिए प्लॉटों की नीलामी के प्रस्ताव को मंजूरी दी थी। ग्रुप हाउसिंग योजना में डीडीए अलग-अलग इलाकों में 60 से अधिक खाली प्लॉटों की नीलामी करेगा। इनका साइज कम से कम तीन हजार वर्ग मीटर से 10 हजार वर्ग मीटर तक होगा। नीलामी में एक व्यक्ति से लेकर साझीदार फर्म भी भाग ले सकेंगी, लेकिन उन्हें फ्लैट ग्रुप हाउसिंग योजना के तहत ही बनाने होंगे ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों के लिए आवास बन सकें।

उगाही करने वाले पत्रकारों से प्रभावित अफसरों पर लटकी कार्रवाई की तलवार

जागरण संवाददाता, नोएडा

- आरोपितों ने नियम विरुद्ध कार्य करने वाले कुछ अधिकारियों के बताए नाम, संपत्ति की होगी पहचान

न्यूज पोर्टल व सोशल मीडिया पर भ्रामक व फर्जी खबरें प्रसारित करने के मामले में गिरफ्तार चार फर्जी पत्रकारों को लेकर नोएडा से लखनऊ तक हड़कंप मचा हुआ है। पांच दिन की रिमांड पर लिए गए आरोपितों से रविवार को वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने पूछताछ की। आरोपितों ने कई अहम पर्दाफाश किए हैं।

उन्होंने कुछ इंस्पेक्टर, क्षेत्राधिकारी व आइपीएस अधिकारियों के नाम बताए हैं। पुलिस उन अधिकारियों के बारे में पता लगाने का प्रयास कर रही है, जिन अधिकारियों ने उनके प्रभाव में आकर गलत काम कर उगाही करने में मदद की है। इसमें शामिल अन्य फर्जी पत्रकारों के बारे में भी पता लगाया जा रहा है। इसके अलावा पीड़ितों का भी पता लगाया जा रहा है, जिनके साथ अन्याय किया गया है। उनकी पहचान कर पूछताछ की जाएगी। कथित पत्रकारों व अधिकारियों द्वारा उगाही से बनाई गई प्रापर्टी की पहचान की जा रही है। वहीं, फरार आरोपित रमन ठाकुर की तलाश में पुलिस लगातार दबिश दे रही है।

अधिकारियों को प्रभाव में लेकर आरोपितों ने नियम विरुद्ध कई कार्य करा कर लाखों रुपये की उगाही की है। उगाही की रकम में से 60 फीसद अधिकारियों को दिया गया, जबकि 40 फीसद रकम आरोपितों ने आपस में बांट ली। गौरतलब है कि एसएसपी ने शनिवार को प्रेसवार्ता में दावा किया था कि आरोपित पुलिस अधिकारियों को प्रभाव लेकर नियम विरुद्ध कार्य करा कर उगाही करते थे। जो अधिकारी इनके प्रभाव में नहीं आते थे, उनके खिलाफ न्यूज पोर्टल व सोशल मीडिया पर भ्रामक, तथ्यहीन व फर्जी खबरें पर प्रसारित कर उन्हें दबाव में लेने का प्रयास करते थे। पिछले कुछ महीने में आरोपितों ने कई फर्जी खबरें प्रसारित कीं, ताकि वे अपने खिलाफ कोर्ट में विचाराधीन मुकदमे को भी प्रभावित कर सकें।

ये हैं आरोपित : आरोपित सुशील पंडित ग्रेटर नोएडा के सेक्टर 37, उदित गोयल मिक्सन ग्रीन मैंशन सूरजपुर ग्रेटर नोएडा, रमन ठाकुर बीटा वन ग्रेटर नोएडा, चंदन राय गाजियाबाद के साहिबाबाद और नितीश पांडेय लखनऊ के गोमती नगर के रहने वाले हैं। सुशील पंडित इस गिरोह का सरगना है। रमन ठाकुर अभी फरार है। उस पर 25 हजार रुपये का इनाम घोषित है। जिलाधिकारी ने इन पर गैंगस्टर एक्ट के तहत कार्रवाई की है। इनकी गिरफ्तारी शुक्रवार देर रात क्रमशः लखनऊ, गाजियाबाद और नोएडा से की गई थी।

जेवर एयरपोर्ट

चार लेन बनेगी यीडा सिटी की मुख्य सड़क

एयरपोर्ट आने वाले यात्रियों को जाम से बचाने के लिए की जा रही है कवायद, शुरुआत में एक करोड़ बीस लाख यात्री आने का है अनुमान

जागरण संवाददाता, ग्रेटर नोएडा

जेवर एयरपोर्ट के लिए यीडा सिटी की मुख्य सड़क को चार लेन का किया जाएगा। एयरपोर्ट की चारदीवारी के साथ साथ भी चार लेन की सड़क बनाई जाएगी। एयरपोर्ट पर आने वाले यात्री वाहनों को जाम का झाम न झेलना पड़े इसके मद्देनजर यमुना प्राधिकरण मुख्य सड़क के चौड़ीकरण की योजना बना रहा है।

जेवर एयरपोर्ट पर शुरुआत में सालाना एक करोड़ बीस लाख यात्री आने का अनुमान है। यात्रियों के साथ जेवर एयरपोर्ट पर हर दिन हजारों वाहन पहुंचेंगे। इससे यीडा सिटी में सड़क पर जाम बड़ी चुनौती बन सकता है। वाहनों की दबाव को देखते हुए यीडा सिटी की मुख्य सड़क को कम से कम चार लेन करने का सुझाव है। यीडा सिटी की मुख्य सड़क साठ मीटर चौड़ी है। सेक्टरों के विकास एवं एयरपोर्ट के साथ सड़क का जेवर तक निर्माण होगा।

यमुना प्राधिकरण इस सड़क की चौड़ाई को साठ मीटर से बढ़ाकर सौ मीटर करेगा ताकि इसे चार लेन का बनाया जा सके। इसके लिए पर्याप्त जगह उपलब्ध है। ईस्टर्न पेरीफेरल एक्सप्रेस वे के निर्माण के दौरान भी विशेष ध्यान दिया गया था कि इसकी वजह से यीडा सिटी की सड़क की चौड़ाई बढ़ाने में किसी तरह की अड़चन न हो।

जेवर एयरपोर्ट के लिए यीडा सिटी की मुख्य सड़क को चार लेन का किया जाएगा। एयरपोर्ट के चारों ओर भी चार लेन की सड़क बनाई जाएगी। एयरपोर्ट शुरु होने पर यात्री वाहनों का दबाव बढ़ेगा। चौड़ी सड़क होने से जाम से निबटने में आसानी होगी।
-डा. अरुणवीर सिंह, सीईओ यमुना प्राधिकरण

एक्सप्रेस वे के साथ-साथ शहर की सड़क से मिलेगी कनेक्टिविटी

जेवर एयरपोर्ट को यमुना एक्सप्रेस वे से कनेक्टिविटी दी जाएगी। ताकि वाहन बिना किसी अवरोध के सीधे एयरपोर्ट कम से कम समय में पहुंच सकें। इसके अलावा यीडा सिटी की मुख्य सड़क से भी एयरपोर्ट की कनेक्टिविटी होगी। इसलिए सड़क की चौड़ाई बढ़ाई जाएगी।

एयरपोर्ट की चारदीवारी के साथ-साथ बनाई जाएगी सड़क

एयरपोर्ट की चारदीवारी के समानांतर भी सड़क का निर्माण होगा। यह सड़क भी चार लेन की होगी। इससे एयरपोर्ट आने वाले वाहनों को अलग-अलग दिशा में डायवर्ट किया जा सकेगा और जाम की स्थिति पैदा नहीं होगी। सड़क का निर्माण भी एयरपोर्ट के कार्य के साथ साथ शुरू हो जाएगा।

130 मीटर चौड़ी सड़क का भी होगा एयरपोर्ट तक विस्तार

ग्रेनो की 130 मीटर चौड़ी सड़क का भी जेवर एयरपोर्ट तक विस्तार होगा। यह सड़क गौर सिटी से शुरू होकर नॉलेज पार्क पांच होते हुए सिरसा गांव के समीप समाप्त होती है। यमुना प्राधिकरण इसे आगे विस्तार देते हुए एयरपोर्ट तक ले जाएगा। इससे गाजियाबाद व नोएडा की ओर से आने वाले यात्रियों के लिए एयरपोर्ट पहुंचाने के लिए एक और मार्ग उपलब्ध होगा।

चुनावी रणनीति के तहत आप करेगी संगठन में बदलाव

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

- पार्टी पदाधिकारियों के कामकाज की समीक्षा की जा रही है

विधानसभा चुनाव मजबूती के साथ लड़ने के लिए आम आदमी पार्टी (आप) ने संगठन में बदलाव की कवायद शुरू कर दी है। फिलहाल पार्टी पदाधिकारियों के कामकाज की समीक्षा की जा रही है। इसके आधार पर कमजोर कड़ी को दूर कर मजबूत कार्यकर्ताओं को संगठन में जगह दी जाएगी। यह कार्रवाई भी एक से डेढ़ माह में पूरी कर ली जाएगी।

आप के वरिष्ठ नेता गोपाल राय कहते हैं कि पार्टी अब विधानसभा चुनाव को लेकर तैयार हो रही है। यह विधानसभा चुनाव भी मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के नाम पर लड़ा जाएगा। उनका कहना है कि केजरीवाल की काट किसी भी दल के पास नहीं है। भाजपा तो मुख्यमंत्री पद के लिए कोई नाम भी तय नहीं कर पा रही है। आप संगठन की जहां तक बात है, तो पार्टी द्वारा संगठन की समीक्षा की जा रही है। इसमें देखा जा रहा है कि पिछले लोकसभा चुनाव में कौन-कौन से पदाधिकारी व कार्यकर्ता सक्रिय नहीं रहे। समीक्षा के बाद संगठन में निचले स्तर पर कुछ बदलाव भी किए जा सकते हैं।

उन्होंने कहा कि दिल्ली विधानसभा चुनाव पार्टी अपने स्तर पर लड़ने को तैयार है। आप दिल्ली में कराए जा रहे विकास कार्यों को लेकर जनता के बीच जाएगी। इसके लिए पार्टी की तरफ से विस्तृत रूपरेखा तैयार की जा रही है। इसमें मुफ्त बिजली और मुफ्त पानी दिए जाने का मुद्दा प्रमुख होगा। पार्टी की योजना है कि जब तक दूसरे दल अपनी तैयारी शुरू करें, आप घर-घर जाकर दिल्ली सरकार द्वारा कराए जा रहे विकास कार्यों का संदेश पहुंचा दे। आप के दिल्ली संयोजक गोपाल राय का कहना है कि अब नए माहौल में दिल्ली में मुफ्त बिजली की चर्चा हो रही है। दो सौ यूनिट तक बिजली मुफ्त कर दी गई है।

2009 से 2013 के बीच नक्सली हिंसा के 8782 मामले सामने आए। इस दौरान सुरक्षा बलों सहित 3,326 लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी। 2014-18 के बीच नक्सली वारदातों की संख्या घटकर 4,969 हो गई। इस दौरान सुरक्षा बलों सहित 1,321 लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी।

सर्वाधिक देशों के सर्वोच्च नागरिक सम्मान पाने वाले पीएम हैं नरेंद्र मोदी

पिछले पांच सालों में अंतरराष्ट्रीय नेता बनकर उभरे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को यूएई (संयुक्त अरब अमीरात) के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार ऑर्डर ऑफ जायद से सम्मानित किया गया। इससे पहले पीएम मोदी को संयुक्त राष्ट्र और दक्षिण कोरिया, सऊदी अरब, फलस्तीन, अफगानिस्तान, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) जैसे देशों द्वारा छह पुरस्कार दिए गए हैं। इनमें से चार पुरस्कार मुस्लिम देशों से आए हैं। वहीं पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और मनमोहन सिंह को सिर्फ एक-एक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिला है। पेश है एक नजर:

किंग अब्दुल अजीज सैश पुरस्कार

प्रधानमंत्री मोदी को 3 अप्रैल 2016 को सऊदी अरब के सर्वोच्च नागरिक सम्मान किंग अब्दुल अजीज सैश से सम्मानित किया गया। इस सम्मान से पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा, ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री डेविड कैमरन, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, जापान के प्रधानमंत्री एबी शिंजो और इंडोनेशिया के राष्ट्रपति जोको विडोडो सम्मानित हैं।

ग्रांड कॉलर पुरस्कार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 10 फरवरी 2018 को फलस्तीन में ग्रांड कॉलर पुरस्कार से नवाजा गया। यह पुरस्कार विदेशी मेहमानों को दिया जाने वाला फलस्तीन का सर्वोच्च सम्मान है। प्रधानमंत्री मोदी को फलस्तीन संबंधों को बेहतर बनाने में उठाए गए कदमों के लिए यह सम्मान दिया गया था। मोदी से पहले सऊदी अरब के किंग सलमान, बहरीन के किंग हमाद, चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग सहित अन्य को इसे दिया गया है।

निशान इज्जुद्दीन

जून, 2019 में मालदीव ने पीएम मोदी को अपने सर्वोच्च सम्मान निशान इज्जुद्दीन से सम्मानित किया। यह सम्मान गणमान्य विदेशी व्यक्तियों को दिया जाता है। ये मालदीव का सबसे बड़ा सम्मान माना जाता है।

सियोल शांति पुरस्कार

भारत में अमीर और गरीब के बीच के सामाजिक और आर्थिक अंतर को कम करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी द्वारा किए गए सराहनीय कार्य के चलते उन्हें अक्टूबर, 2018 को सियोल शांति पुरस्कार दिया गया। अब तक 13 अन्य लोगों को यह पुरस्कार दिया जा चुका है जिनमें से चार को नोबेल शांति पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। पीएम मोदी यह सम्मान हासिल करने वाले पहले भारतीय हैं।

फिलिप कोटलर पुरस्कार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 14 जनवरी 2019 को नई दिल्ली में पहली बार फिलिप कोटलर प्रेसिडेंशियल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। फिलिप कोटलर नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी, केलॉग स्कूल ऑफ मैनेजमेंट में मार्केटिंग प्रोफेसर हैं। इन्हीं के सम्मान में हर वर्ष यह पुरस्कार देश के सबसे लोकप्रिय नेता को दिया जाता है। ये मार्केटिंग (विपणन) पर 55 से अधिक पुस्तकें लिख चुके हैं।

चैंपियंस ऑफ द अर्थ

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सितंबर 2018 को संयुक्त राष्ट्र का सबसे बड़ा पर्यावरण सम्मान चैंपियंस ऑफ द अर्थ अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। पीएम मोदी को यह पुरस्कार अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन को लेकर अग्रणी एवं उत्साही कार्यों के लिए और पर्यावरणीय कार्यों में सहयोग के नये क्षेत्रों को बढ़ावा देने के लिए प्रदान किया गया।

सेंट एंड्रयू पुरस्कार

12 अप्रैल, 2019 को रूस ने पीएम मोदी को अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मान सेंट एंड्रयू अवॉर्ड से सम्मानित किया। ये सम्मान उन्हें भारत और रूस के रिश्तों को मजबूत और विशेष रणनीतिक साझेदारी को बढ़ावा देने के लिए दिया गया।

द किंग हमाद ऑर्डर ऑफ द रेनेसा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 24 अगस्त, 2019 को बहरीन में द किंग हमाद ऑर्डर ऑफ द रेनेसा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह बहरीन का तीसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान है।

ये पूर्व प्रधानमंत्री भी हुए सम्मानित

- बांग्लादेश मुक्ति युद्ध में उत्कृष्ट योगदान के लिए बांग्लादेश सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को मरणोपरांत अपने सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार बांग्लादेश फ्रीडम ऑनर से सम्मानित किया।
- मनमोहन सिंह को जापान का दूसरा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार (ग्रांड कॉर्डन ऑफ द ऑर्डर ऑफ पॉलोनिया फ्लॉ) मिला। मनमोहन सिंह को यह पुरस्कार टोक्यो में वर्ष 2009 के रणनीतिक साझेदारी के साथ भारत-जापान संबंधों को आगे बढ़ाने में उनके काम के लिए दिया गया था। हालांकि यह पुरस्कार उन्हें मई 2014 में प्रधानमंत्री पद से हटने के बाद मिला।

आमिर अमानुल्लाह खान पुरस्कार

2016 में पीएम मोदी अफगानिस्तान के दौरे पर थे। ऐतिहासिक अफगान-भारत मैत्री बांध के उद्घाटन के बाद राष्ट्रपति अशरफ गनी ने उन्हें चार जून को अफगानिस्तान के सर्वोच्च नागरिक सम्मान आमिर अमानुल्लाह खान पुरस्कार से सम्मानित किया। इस पुरस्कार का नाम अफगानिस्तान के राष्ट्रीय नायक और राजा अमानुल्लाह खान (गाजी) के नाम पर रखा गया है, जो अफगानिस्तान की स्वतंत्रता के शूरवीर थे। अफगानिस्तान सरकार ने इस पुरस्कार का साल 2006 में गठन किया था।

आतंकवाद के खिलाफ भारत-बहरीन एकजुट

अपील ▸ विश्व समुदाय से भी मांगा सहयोग, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार की बात कही

सुरक्षा एवं खुफिया सूचना के आदान-प्रदान में सहयोग बढ़ाएंगे दोनों देश

मनामा, प्रेट्र : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यात्रा के दौरान पाकिस्तान पर परोक्ष रूप से प्रहार करते हुए यहां भारत और बहरीन ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से दूसरे देशों के खिलाफ आतंकवाद के इस्तेमाल को खारिज करने की अपील की है। प्रधानमंत्री की इस खाड़ी देश (बहरीन) की यात्रा के दौरान दोनों देश सुरक्षा, आतंकवाद का मुकाबला करने एवं खुफिया सूचना के आदान-प्रदान के क्षेत्र में सहयोग और अधिक बढ़ाने को सहमत हुए। रविवार को बहरीन दो दिवसीय दौरे के बाद जी-7 की बैठक में भाग लेने के लिए प्रधानमंत्री फ्रांस रवाना हो गए।

बहरीन यात्रा के दौरान मोदी ने इस खाड़ी देश के शाह हमद बिन इसा अल खलीफा और प्रधानमंत्री खलीफा बिन सलमान अल खलीफा के साथ द्विपक्षीय बैठकें कीं। किसी भारतीय प्रधानमंत्री की बहरीन की यह पहली यात्रा थी। बहरीन के शाह ने प्रधानमंत्री को किंग हमद आर्डर ऑफ रेनेसां (पुनर्जागरण का शाह हमद सम्मान) से नवाजा है।

साझा बयान में दोनों देशों ने पारस्परिक हित के द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मुद्दों पर चर्चा की। किसी देश का नाम लिए बगैर कहा है, 'दोनों देश दूसरे देशों के खिलाफ आतंकवाद के इस्तेमाल को खारिज करने, आतंकवादी बुनियादी ढांचे को ध्वस्त करने और अन्य देशों के खिलाफ सभी तरह के आतंकवाद को समर्थन एवं धन की आपूर्ति को काटने तथा आतंकी कारनामों को कोर्ट के दायरे में लाने की अपील करते हैं।'

भारत और बहरीन ने आतंकवाद एवं कट्टरता को प्रोत्साहित करने वाले और सामाजिक सौहार्द में खलल डालने वाली गतिविधियों में साइबर जगत के इस्तेमाल की रोकथाम सहित साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग के तौर तरीकों पर भी चर्चा की है। दोनों देशों ने आतंकवाद के खिलाफ समन्वित कार्रवाई, आतंकियों और उनके संगठनों पर संयुक्त राष्ट्र प्रतिबंध की अहमियत पर भी जोर दिया है। दोनों देशों ने कहा है कि क्षेत्रीय संपर्क परियोजनाएं अंतरराष्ट्रीय कानून पर आधारित होनी चाहिए। इसमें अन्य देशों की संप्रभुता एवं क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करना चाहिए। यह चीन के 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' (बीआरआइ) की ओर इशारा है। दोनों देशों ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में विस्तार सहित इस वैश्विक संस्था में सुधारों की जरूरत पर भी जोर दिया।

बहरीन की राजधानी मनामा में स्थित 200 साल पुराने श्रीनाथ मंदिर में पूजा-अर्चना करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। एएनआइ

जम्मू-कश्मीर इन्वेस्टमेंट मीट में भाग लेंगे 20 एनआरआइ कारोबारी

भारत ने कहा है कि अक्टूबर में होने वाले जम्मू एवं कश्मीर इन्वेस्टर्स समिट में 20 प्रमुख एनआरआइ कारोबारी ने भाग लेने की इच्छा जताई है। विदेश मंत्रालय में सचिव (आर्थिक संबंध) टीएस तिरुमूर्ति ने मनामा में संवाददाताओं को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इस समिट की योजना निवेश और मानव संसाधन के माध्यम से बनाई गई है। जम्मू एवं कश्मीर में पहली बार तीन दिनों का ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट आयोजित किया जाएगा। इसमें कारोबारियों को जम्मू-कश्मीर की विविधता के बारे में बताया जाएगा ताकि वे निवेश करने के लिए प्रेरित हों।

मोदी को मिले सम्मान से तिलमिलाया पाक, सीनेट चेयरमैन का यूएई दौरा रद

▸ इस्लामाबाद के लिए तमाचा साबित हो रहे हैं मुस्लिम देशों से मिल रहे पुरस्कार

इस्लामाबाद, प्रेट्र : यूएई द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'ऑर्डर ऑफ जायेद' से नवाजे जाने से पाकिस्तान तिलमिला गया है। मुस्लिम देशों से प्रधानमंत्री को मिले पुरस्कार इस्लामाबाद के लिए तमाचा साबित हो रहे हैं। पाकिस्तानी सीनेट के चेयरमैन सादिक सांजरानी ने रविवार को खाड़ी देश की अपनी सरकारी यात्रा रद करने की घोषणा की। एक दिन पहले शनिवार को प्रधानमंत्री को यूएई में सम्मानित किया गया था। यूएई सरकार के आमंत्रण पर सीनेट चेयरमैन 25 से 28 अगस्त तक संसदीय प्रतिनिधिमंडल के साथ दौरे पर जाने वाले थे।

प्रधानमंत्री मोदी को बहरीन ने भी किंग हमद ऑर्डर ऑफ रेनेसां (पुनर्जागरण का शाह हमद सम्मान) से नवाजा है। पांच वर्षों के दौरान मुस्लिम देशों से उन्हें छह पुरस्कार मिल चुके हैं। यूएई ने अप्रैल में ही मोदी को अपना सर्वोच्च सम्मान देने की घोषणा की थी। इन पुरस्कारों को इस्लामिक दुनिया के साथ भारत के रिश्ते मजबूत करने में प्रधानमंत्री के प्रयासों के रूप में देखा जा रहा है। आतंकवाद के मुद्दे पर पाकिस्तान को अलग-थलग करने के भारत के लगातार प्रयासों के बीच प्रधानमंत्री मोदी को ये पुरस्कार मिले हैं। यूएई ने यह कहा है कि इस्लामिक विश्व के साथ नई दिल्ली के रिश्ते पहले से कहीं ज्यादा बेहतर हैं।

नई दिल्ली में सरकार के शीर्ष सूत्रों ने कहा कि मुस्लिम दुनिया से इस तरह का व्यापक समर्थन पाकिस्तान के लिए जोरदार तमाचा है। वह भारत को खास तौर से इस्लामिक देशों से अलग-थलग करने का विफल प्रयास करता रहा है। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 समाप्त किए जाने के बाद उसने काफी हायतौबा मचाई और मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

सादिक सांजरानी। फाइल फोटो

हवाईअड्डों, रेलवे स्टेशन व मॉल में जल्द मिलेगी कुल्हड़ वाली चाय

▸ गडकरी ने रेल मंत्री को लिखा पत्र, कहा- स्थानीय कुम्हारों को मिलेगा बाजार

▸ कागज-प्लास्टिक के गिलासों का इस्तेमाल बंद होने से प्रदूषण कम हुआ

नई दिल्ली, प्रेट्र : देश भर में सभी प्रमुख रेलवे स्टेशनों, बस अड्डों, हवाईअड्डों और मॉल में जल्द ही आपको कुल्हड़ वाली चाय मिल सकती है। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं सूक्ष्म लघु और मध्यम उद्योग मंत्री नितिन गडकरी ने इस संबंध में रेल मंत्री पीयूष गोयल को पत्र लिखा है। अभी वाराणसी और रायबरेली रेलवे स्टेशनों पर ही पकी मिट्टी से बने कुल्हड़ में चाय दी जाती है।

गडकरी ने कहा, 'मैंने पीयूष गोयल को एक पत्र लिखकर 100 रेल स्टेशनों पर कुल्हड़ को अनिवार्य करने के लिए कहा है। मैंने हवाईअड्डों और बस डिपो की चाय दुकानों पर भी इसे अनिवार्य करने का सुझाव दिया है। हम कुल्हड़ के इस्तेमाल के लिए मॉल को भी प्रोत्साहित करेंगे।'

गडकरी ने कहा कि इससे स्थानीय कुम्हारों को बाजार मिलेगा। इसके साथ ही कागज और प्लास्टिक से बने गिलासों का इस्तेमाल बंद होने से पर्यावरण को हो रहा नुकसान कम होगा। गडकरी ने खादी ग्रामोद्योग आयोग को मांग बढ़ने की स्थिति में व्यापक स्तर पर कुल्हड़ के उत्पादन के लिए आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराने को भी कहा है। आयोग के चेयरमैन विनय कुमार सक्सेना ने इस बारे में कहा, 'हमने पिछले साल कुम्हारों को कुल्हड़ बनाने के लिए 10 हजार इलेक्ट्रिक चाक दिए। इस साल हमने 25 हजार इलेक्ट्रिक चाक बांटने का लक्ष्य तय किया है।' सरकार कुम्हार सशक्तीकरण योजना के तहत इलेक्ट्रिक चाक वितरित कर रही है।

कुम्हारों की आमदनी बढ़ाने के लिए सरकार उठा रही है कदम।

नए लड़ाकू विमानों की खरीद के लिए सभी संभावनाएं तलाश रही वायुसेना

▸ राफेल के बाद 114 लड़ाकू विमान और खरीदने की तैयारी

▸ 1.05 लाख करोड़ के सौदे के लिए बोइंग समेत कई कंपनियां रेस में

नई दिल्ली, आइएएनएस : अपनी ताकत में और इजाफा करने के अभियान में जुटी भारतीय वायुसेना नए लड़ाकू विमानों के लिए सभी संभावनाएं तलाश रही है। इसी कड़ी में 114 लड़ाकू विमानों की खरीद प्रक्रिया शुरू हुई है और वायुसेना को उम्मीद है कि नए लड़ाकू विमान उसे जल्द मिल जाएंगे। राफेल फाइटर जेट की तरह इस सौदे में देरी नहीं होगी, जिसमें लगभग दस साल से ज्यादा का वक्त लग गया है।

वायुसेना के लिए 114 लड़ाकू विमानों के लगभग 15 अरब डॉलर (लगभग एक लाख पांच हजार करोड़ रुपये) के सौदे को हासिल करने की दौड़ में बोइंग, लॉकहीड मार्टिन, यूरोफाइटर, रसियन यूनाइडेट एयरक्राफ्ट कॉरपोरेशन और साब जैसी कंपनियां जुटी हैं। यही कंपनियां पहले मीडियम मल्टी रोल कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एमएमआरसीए) की बोली में शामिल हुई थीं।

सौदे को हासिल करने के लिए कंपनियों ने कई आकर्षक प्रस्ताव भी रखे हैं। अमेरिकी कंपनी बोइंग ने तो एफ-16 विमानों का निर्माण भारत में ही करने का प्रस्ताव किया है। भारत और फ्रांस के बीच 36 से ज्यादा राफेल विमानों की आपूर्ति को लेकर भी बातचीत चल रही है। इनके अलावा और भी कई विकल्प सामने आए हैं।

लड़ाकू विमानों की सप्लाई में देरी से भारतीय वायुसेना की युद्ध तैयारियों पर बहुत असर पड़ा है। वायुसेना को पुराने हो चुके मिग-21 लड़ाकू विमानों को धीरे-धीरे हटाने की योजना है, लेकिन विभिन्न कारणों से नए विमानों के मिलने में देरी की वजह से यह योजना परवान नहीं चढ़ पा रही है। फ्रांसीसी विमान कंपनी दासौ से लगभग 10 साल पहले राफेल लड़ाकू विमानों के लिए सौदा हुआ था, अब जाकर अगले महीने पहला विमान मिलने वाला है। सभी 36 विमान मिलने में अभी भी चार साल का वक्त लग जाएगा। रूस से भी नए सुखोई-30 एमकेआइ विमान खरीदे जा रहे हैं।

'तेजस' में वो बात नहीं: वायुसेना जल्द से जल्द हल्के लड़ाकू विमानों (एलसीए) के शक्तिशाली वर्जन को हासिल करना चाहती है, लेकिन उसे 2025 से पहले ऐसे विमान मिलने की उम्मीद नहीं है। स्वदेशी लड़ाकू विमान 'तेजस' में अत्याधुनिक लड़ाकू विमानों जैसी बात नहीं है। बता दें कि वायुसेना अध्यक्ष एयर चीफ मार्शल बीएस धनोआ ने दिल्ली में हाल ही में एक कार्यक्रम में कहा था कि लोग 40 साल पुरानी कार नहीं चलाते हम 44 साल पुराने विमान उड़ा रहे हैं।

विमानों की घटती संख्या के लिए दुर्घटनाएं चिंता का कारण : वायुसेना के बेड़े में लड़ाकू विमानों की घटती संख्या चिंता का विषय है। लेकिन इसके लिए खरीद की कमी और स्वदेशी लड़ाकू विमानों के निर्माण में देरी ही नहीं, बल्कि दुर्घटनाएं भी चिंता का कारण हैं। संसद में दिए रक्षा मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक पिछले पांच साल में 26 लड़ाकू विमान हादसों के शिकार हुए हैं, जिनमें 12 पायलट और सात अन्य क्रू मेंबर की जान गई।

चिदंबरम की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई आज

नई दिल्ली, प्रेट्र : पूर्व केंद्रीय मंत्री पी. चिदंबरम की दिल्ली हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती देने वाली याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को सुनवाई होगी। हाई कोर्ट ने पूर्व केंद्रीय मंत्री को आइएनएक्स मीडिया मनी लॉन्ड्रिंग एवं भ्रष्टाचार मामले में अग्रिम जमानत देने से इन्कार किया था। जस्टिस आर. भानुमति की अध्यक्षता वाली पीठ चिदंबरम की नई याचिका पर भी सुनवाई करेगी। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने अपने खिलाफ जारी गिरफ्तारी वारंट और निचली अदालत द्वारा आइएनएक्स मीडिया भ्रष्टाचार मामले में सोमवार तक सीबीआइ की हिरासत में सौंपे जाने को चुनौती दी है।

शुक्रवार को शीर्ष कोर्ट ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा दर्ज मनी लॉन्ड्रिंग मामले में सोमवार तक गिरफ्तारी से सुरक्षा प्रदान की थी। कोर्ट ने चिदंबरम की याचिका पर ईडी से जवाब मांगा है और तीनों मामलों की सुनवाई सोमवार को तय की है।

चिदंबरम ने कहा है कि यह संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत उनके बुनियादी अधिकार का उल्लंघन है। हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती देने वाली उनकी याचिका पर शीर्ष कोर्ट में सुनवाई नहीं हुई और उन्हें 21 अगस्त की रात में गिरफ्तार कर लिया गया।

ईडी की ओर से पेश सालिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा था कि याची (चिदंबरम) और उनकी पार्टी द्वारा काफी हंगामा किया गया है और उनके साथियों द्वारा राजनीतिक प्रतिशोध का आरोप लगाया जा रहा है। लेकिन पूरी जवाबदेही से वह कह रहे हैं कि यह मनी लॉन्ड्रिंग का मामला है। सीबीआइ ने इंद्राणी मुखर्जी का बयान दर्ज किया है सुनवाई के दौरान जिसकी जांच होगी। अपने पति पीटर के साथ वह चिदंबरम के पास एफआइपीबी मंजूरी के लिए गई थी। तब चिदंबरम ने उनसे अपने बेटे का ध्यान रखने को कहा था। सीबीआइ एफआइआर 15 मई 2017 को दर्ज की गई थी और उसके बाद उसी वर्ष ईडी ने मनी लॉन्ड्रिंग का मामला दर्ज किया था।

पूर्व केंद्रीय मंत्री ने दिल्ली हाई कोर्ट के आदेश को दी है चुनौती

कैग ने किया 32 डिफेंस ऑफसेट कांट्रैक्ट का ऑडिट

खुलेंगे राज

संप्रग-2 और राजग के कार्यकाल के दौरान के हैं यह मामले, संसद के शीतकालीन सत्र में आएगी रिपोर्ट, हो सकते हैं कई पर्दाफाश

हरिकिशन शर्मा, नई दिल्ली

राफेल डील पर भाजपा और कांग्रेस की तकरार लोकसभा चुनाव के बाद भले ही कुछ समय के लिए शांत पड़ गई हो, लेकिन आने वाले दिनों में एक बार फिर सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच रक्षा सौदों को लेकर आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो सकता है। दरअसल, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) ने संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग)-2 और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग)-1 के कार्यकाल में हुए रक्षा खरीद सौदों के 32 ऑफसेट कांट्रैक्ट का ऑडिट किया है। बताया जाता है कि कैग की इस ऑडिट रिपोर्ट में कई अहम राज फाश हो सकते हैं। कैग ने रिपोर्ट को अंतिम रूप दे दिया है और इसे संसद के शीतकालीन सत्र में पेश किया जाएगा।

सूत्रों ने बताया, 'कैग ने वर्ष 2012-13 से वर्ष 2017-18 की अवधि के लिए रक्षा क्षेत्र में खरीद के 32 ऑफसेट कांट्रैक्ट का ऑडिट किया है। इसमें थलसेना, नौसेना और वायुसेना के लिए खरीदे गए रक्षा उपकरणों के सौदे शामिल हैं। कैग के अधिकारी रिपोर्ट को अंतिम रूप दे रहे हैं। जल्द ही इसे सरकार को सौंप दिया जाएगा।'

उन्होंने कहा कि ये ऑफसेट कांट्रैक्ट राफेल और मिराज फाइटर एयरक्राफ्ट से लेकर अपाचे व चिनूक जैसे हेलिकॉप्टर, अत्याधुनिक रडार व रॉकेट जैसे रक्षा उपकरणों की खरीद से संबंधित हैं। ये उपकरण सरकार ने विदेशी कंपनियों से खरीदे हैं। सूत्रों का कहना है कि कैग ने इस बात का ऑडिट किया है कितनी कंपनियों ने ऑफसेट कांट्रैक्ट के तहत अपना उत्तरदायित्व निभाया। साथ ही ऑफसेट कांट्रैक्ट के लिए भारतीय पार्टनर का चयन किस आधार पर किया। इसकी विस्तृत रिपोर्ट तैयार की गई है।

उल्लेखनीय है कि राफेल सौदे में फ्रांसीसी कंपनी दासौ की तरफ से रिलायंस को ऑफसेट पार्टनर बनाए जाने को लेकर विपक्ष ने लोकसभा चुनाव से पूर्व मोदी सरकार पर हमला बोला था। आम चुनाव के दौरान भी यह बड़ा मुद्दा बना था। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने तो इस मुद्दे पर प्रधानमंत्री पर जमकर निशाना साधा था।

कैग मुख्यालय। फाइल फोटो

सरकार ने वर्ष 2005 में शुरू की थी ऑफसेट पॉलिसी

सरकार ने रक्षा खरीद प्रक्रिया के तहत पहली बार वर्ष 2005 में ऑफसेट पॉलिसी शुरू की थी। तब से अब तक इसमें कई बार बदलाव हो चुके हैं। इसका मकसद रक्षा खरीद को घरेलू मैन्युफैक्चरिंग से जोड़ना था। अगर कोई रक्षा सौदा 3,000 करोड़ रुपये से अधिक का हो तो उसमें ऑफसेट का नियम लागू होता है। ऑफसेट कांट्रैक्ट होने पर विदेशी कंपनियों को एक भारतीय पार्टनर चुनना होता है या भारत में ही बने कुछ पार्ट्स खरीदने होते हैं। वर्ष 2005 से अब तक पांच दर्जन से अधिक ऑफसेट कांट्रैक्ट हो चुके हैं।

अमित शाह आज करेंगे नक्सलियों के खिलाफ अभियानों की समीक्षा

नई दिल्ली, प्रेट्र: केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह सोमवार को नक्सलियों के खिलाफ चल रहे अभियानों और माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में विकास कार्यों का जायजा लेंगे। इस बैठक में नक्सल प्रभावित 10 राज्यों के मुख्यमंत्री या फिर उनके प्रतिनिधियों के साथ ही शीर्ष पुलिस अधिकारियों के भाग लेने की उम्मीद है। इसमें अर्धसैनिक बलों और गृह मंत्रालय से जुड़े शीर्ष अधिकारी भी हिस्सा लेंगे। बता दें कि अमित शाह के पदभार संभालने के बाद यह अपनी तरह की पहली बैठक होगी।

गृह मंत्रालय के एक अधिकारी ने बताया, 'गृह मंत्री नक्सलियों के खिलाफ चलाए जा रहे ऑपरेशन और नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में चल रहे विकास कार्यों की समीक्षा करेंगे। इसके बाद इस बारे में कोई दिशा-निर्देश भी दे सकते हैं।' नक्सल प्रभावित देश के 10 राज्यों में छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, बंगाल, बिहार, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश शामिल हैं।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

इसे भ्रष्टाचार मत कहिए! असल में मैं वह साहसिक व्यक्ति हूँ जिसने गरीबी के खिलाफ कदम उठाए..!

37 फीसद से अधिक है छत्तीसगढ़ में कुपोषण की दर। आदिवासी क्षेत्रों में यह आंकड़ा 44 फीसद से अधिक है। ऐसे में राज्य सरकार ने दो अक्टूबर से पूरे राज्य में कुपोषण मुक्ति अभियान चलाने का फैसला किया है। सरकार ने तीन वर्ष में राज्य को कुपोषण मुक्त करने का लक्ष्य रखा है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
सोमवार 26 अगस्त 2019

न्यूज गैलरी

पाक से एक-एक इंच जमीन वापस लेने का समय : इंद्रेश

गुरुग्राम : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य इंद्रेश कुमार ने कहा कि अब समय आ गया है कि भारत पाकिस्तान से अपनी एक-एक इंच जमीन वापस ले ले। रविवार को यहां एक कार्यक्रम में इंद्रेश कुमार ने कहा कि इसके लिए जल्द ही 'पाकिस्तान पीओके को छोड़ो' और 'चीन अक्साई चिन को छोड़ो' के नारे बुलंद किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान पर खतरा मंडरा रहा है। वह कई टुकड़े होने की दहलीज पर खड़ा है। वहां की जनता मूलभूत सुविधाओं के लिए तड़प रही है। अर्थव्यवस्था चौपट हो चुकी है। पाकिस्तान, बलूचिस्तान में लोगों के साथ अत्याचार कर रहा है और अल्पसंख्यकों को देश छोड़ने के लिए मजबूर किया जा रहा है। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र संघ ने पाकिस्तान में इस अत्याचार पर चिंता जाहिर की है। इस्लामिक देश भी पाकिस्तान की नीति को समझ चुके हैं और वह आतंक को खत्म करने के लिए भारत का साथ देने की बात कह रहे हैं, लेकिन पाकिस्तान के हुक्मरान सुधरने को तैयार नहीं है। जंग की धमकी दी जा रही है, जबकि उन्हें भी पता है कि पांच दिन भी उनकी सेना नहीं लड़ सकती। (जासं)

प्रियंका कल रायबरेली के दौरे पर

रायबरेली : कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा मंगलवार को रायबरेली आ रही हैं। वह पहले पूर्व विधायक स्वर्गीय अखिलेश सिंह के घर लालूपुर चौहान गांव जाएंगी। वहां उनके परिवार से शोक संवेदना व्यक्त करने के बाद लालगंज के ऐहार स्थित आधुनिक रेल कोच कारखाना (आरेडिका) पहुंचेंगी। यहां आरेडिका के निगमीकरण का विरोध कर रहे कर्मचारियों का मनोबल बढ़ाने के लिए प्रियंका सभा को संबोधित करेंगी। सदर क्षेत्र से पांच बार विधायक रहे अखिलेश सिंह का 20 अगस्त को पीजीआइ लखनऊ में निधन हो गया था। उनकी बेटी अदिति सिंह कांग्रेस से मौजूदा सदर विधायक हैं। (जासं)

छग के सीएम को बीपी मंडल सामाजिक न्याय रत्न सम्मान

रायपुर : छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को रविवार को नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में बीपी मंडल सामाजिक न्याय रत्न से सम्मानित किया गया। बघेल को यह सम्मान राज्य में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्ग के लिए आरक्षण बढ़ाने के लिए दिया गया। यह सम्मान सामाजिक न्याय के प्रणेता और पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री बीपी मंडल की स्मृति में दिया जाता है। रविवार को उनकी जयंती के अवसर पर नई दिल्ली के कॉन्स्टिटूशन क्लब में यह कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में उपस्थित राज्यसभा सदस्य पीएल पुनिया व पूर्व केंद्रीय मंत्री शरद यादव ने मुख्यमंत्री बघेल द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य में आरक्षण को 58 से बढ़ाकर 72 प्रतिशत किए जाने को साहसिक कदम बताया। (नईदुनिया)

एक परिवार 41 रुपये में कैसे कर सकता है गुजारा : हाई कोर्ट

उठाया सवाल ▶ हिमाचल में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के वेतन पर जताई हैरानी

पदों को भरने के लिए राज्य सरकार की नीति पर कड़ी टिप्पणी की

राज्य ब्यूरो, शिमला

हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं व हेल्पर के लिए वार्षिक आय 15 हजार रुपये रखी गई है। यह आय प्रतिदिन के हिसाब से मात्र 41 रुपये होती है। अदालत ने आश्चर्य जताते हुए आदेश में कहा कि राज्य सरकार के अधिकारी किस तरह इस नतीजे पर पहुंचे कि एक परिवार एक दिन में मात्र 41 रुपये में गुजारा कर सकता है।

हाई कोर्ट ने हिमाचल में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता व हेल्पर के पदों को भरने के लिए राज्य सरकार द्वारा बनाई गई नीति पर कड़ी टिप्पणी की। न्यायाधीश तरलोक सिंह चौहान ने प्रदेश के मुख्य सचिव को आदेश दिए कि वह सभी संबंधित अधिकारियों से बैठक करें। वह नई नीति बनाने के लिए संभावनाएं तलाशें जो व्यवहारिक व तर्कपूर्ण हों। नीति में दिए गए अपील के प्रावधान पर भी अदालत ने यह टिप्पणी की। नीति के प्रावधान के तहत आंगनबाड़ी कार्यकर्ता या हेल्पर की नियुक्ति को चुनौती सिर्फ 15 दिन के भीतर दी जा सकती है। अपील को निपटाने के लिए भी 15 दिन का ही समय दिया गया है जो व्यवहारिक व तर्कपूर्ण नहीं है। अदालत ने स्पष्ट किया कि हिमाचल प्रदेश की भौगोलिक स्थिति और प्रार्थियों की वित्तीय स्थिति के नजरिये से अपील दायर करने के लिए उचित समय नहीं दिया गया है। इससे प्रार्थियों का अपील दायर करने का अधिकार लगभग समाप्त कर दिया गया है। न्यायाधीश तरलोक सिंह चौहान ने उक्त आदेश प्रार्थी संगीता द्वारा दायर याचिका स्वीकार करते हुए पारित किए। एडीएम ने प्रार्थी की याचिका यह कहकर खारिज कर दी थी कि उसने अपील 15 दिन के भीतर दायर नहीं की है। अदालत ने पाया कि डीसी व एडीएम कार्यालय एक ही भवन में हैं। फिर भी प्रार्थी की अपील डाक से भेजी गई। इससे अपील 15 दिन के भीतर एडीएम कार्यालय में नहीं पहुंची।

एक ही छत के नीचे कार्यालय में पत्राचार सही नहीं : न्यायाधीश तरलोक सिंह चौहान ने राज्य सरकार के उन अधिकारियों व कर्मियों की कार्यप्रणाली पर भी कड़ी टिप्पणी की जो एक ही छत के नीचे होते हैं और उसी भवन में स्थापित दूसरे कार्यालय के लिए डाक से पत्राचार करते हैं जिसे सेवादार, ई-मेल या अन्य माध्यम से भेजा जा सकता है। इससे समय व सरकारी खजाने की बचत होगी।

हिमाचल प्रदेश के हाई कोर्ट ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं व हेल्पर के वेतन पर पूछे सवाल। फाइल

बिहार में छात्र-शिक्षक अनुपात सबसे खराब सिक्किम सबसे बेहतर

नई दिल्ली, प्रेट्र : बिहार के स्कूलों में छात्रों के अनुपात में शिक्षकों की संख्या बेहद कम है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में यह अनुपात बिहार की अपेक्षा थोड़ा ठीक है और यहां 35 छात्रों के मुकाबले एक शिक्षक हैं। वहीं सिक्किम में यह अनुपात सबसे बेहतर है और यहां चार छात्रों पर एक शिक्षक है। यह जानकारी मानव संसाधन विकास (एचआरडी) मंत्रालय के एक अधिकारी ने दी।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 की अनुसूची में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्कूलों में छात्र-शिक्षक अनुपात (पीटीआर) निर्धारित किया गया है। प्राथमिक स्तर पर पीटीआर का प्रावधान 30:1 और उच्च प्राथमिक स्तर पर यह अनुपात 35:1 का है।

एचआरडी मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया, 'उच्च प्राथमिक स्कूलों में बिहार में छात्र-शिक्षक अनुपात 39 है जबकि दिल्ली में 34 है। प्राथमिक स्कूलों में यह आंकड़ा बिहार और दिल्ली में क्रमशः 38 और 35 है।'

बिहार में खराब पीटीआर वाले स्कूलों की संख्या सबसे ज्यादा है। इसके बाद झारखंड का स्थान आता है। अधिकारी ने कहा कि बिहार में 67.94 प्राथमिक स्कूल और 77.86 उच्च प्राथमिक स्कूलों का पीटीआर खराब है।

अधिकारी ने बताया, 'झारखंड में 50.28 फीसद प्राथमिक स्कूल एवं 64.24 फीसद उच्च प्राथमिक स्कूल हैं जहां छात्र शिक्षक अनुपात खराब है। कुल मिला कर देश के 26.45 फीसद प्राथमिक स्कूलों में तथा 31.07 फीसद उच्च प्राथमिक स्कूलों में छात्र शिक्षक अनुपात उचित नहीं है।'

हुड्डा के विधानसभा क्षेत्र में आज आएंगे सीएम मनोहर

ओपी वशिष्ठ, रोहतक

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल जन आशीर्वाद यात्रा लेकर सोमवार को पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा के गृह क्षेत्र गढ़ी-सांपला-किलोई में प्रवेश करेंगे। हुड्डा के गढ़ में कमल खिलाने के लिए जनता का आशीर्वाद लेने मनोहर आ रहे हैं। भाजपा ने राजनीतिक गुणा-भाग करते हुए कार्यक्रम निर्धारित कर नेताओं को जिम्मेदारी सौंपी है। जातीय समीकरणों को देखते हुए जो जाट बहुल क्षेत्र हैं, वहां जाट नेता स्वागत करेंगे। जहां गैर जाट क्षेत्र हैं, वहां गैर जाट नेता सीएम की अगवानी करेंगे। साथ ही, हुड्डा को चुनौती देने वाले टिकटार्थियों की शक्ति का भी आकलन होगा।

गढ़ी-सांपला-किलोई विधानसभा क्षेत्र कांग्रेस के पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा का मजबूत किला है। इस विधानसभा क्षेत्र में भाजपा कभी मजबूत नहीं रही। पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा वर्ष 2014 में भी 47 हजार से अधिक मतों से विजयी हुए थे। वह भी इंडियन नेशनल लोकदल प्रत्याशी सतीश नांदल से। सतीश नांदल को 33485 मत मिले थे। भाजपा प्रत्याशी धर्मबीर सिंह हुड्डा मात्र 22088 मत लेकर तीसरे स्थान पर रहे थे। रोहतक लोकसभा चुनाव में भाजपा पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा के पुत्र दीपेंद्र सिंह हुड्डा को हराने में कामयाब हो गई, लेकिन अब विधानसभा चुनाव में भी भाजपा इस विधानसभा क्षेत्र में कमल खिलाने की रणनीति बना रही है। मुख्यमंत्री रोहतक जिले में प्रवेश भूपेंद्र सिंह हुड्डा के विधानसभा क्षेत्र से ही कर रहे हैं।

विधानसभा चुनाव से दोगुने हुए लोकसभा में भाजपा के मत : गढ़ी-सांपला-किलोई विधानसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी धर्मबीर हुड्डा को 22088 मत मिले थे। विधानसभा क्षेत्र में 194 बूथों में केवल तीन ही बूथ 85, 86 और 86ए पर ही भाजपा प्रत्याशी को मामूली बढ़त मिली थी। वहीं, वर्ष 2019 लोकसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशी डॉ. अरविंद शर्मा को इस विधानसभा क्षेत्र से दीपेंद्र हुड्डा के 92606 मतों के मुकाबले 47120 मत प्राप्त हुए, जो विधानसभा चुनाव से दोगुने से भी ज्यादा हैं।

2014 विधानसभा चुनाव में गढ़ी-सांपला-किलोई में तीसरे स्थान पर रहे थे भाजपा प्रत्याशी

हुड्डा के कट्टर विरोधियों को सौंपी जिम्मेदारियां

राजनीति में भूपेंद्र सिंह हुड्डा के कट्टर विरोधियों को ही भाजपा ने जन आशीर्वाद यात्रा की जिम्मेदारी दी है। बेशक, वे अन्य दलों से भाजपा में शामिल हुए, लेकिन विधानसभा क्षेत्र में उनका प्रभाव कहीं न कहीं जरूर है। वर्ष 2014 विधानसभा चुनाव में 33485 मत लेकर तीसरे स्थान पर रहे इनेलो प्रत्याशी सतीश नांदल अब भाजपा में शामिल हो चुके हैं। इसके अलावा जजपा व इनेलो के वरिष्ठ नेताओं के अतिरिक्त भाजपा नेता, जो इसी विधानसभा क्षेत्र में सक्रियता रखते हैं, उनको भी अपनी ताकत दिखाने का मौका दिया गया है।

'राजबल्लभ, शहाबुद्दीन, अनंत सिंह को लालू ने पाला-पोसा'

जागरण संवाददाता, बिहारशरीफ

बिहार के सूचना एवं जनसंपर्क मंत्री नीरज कुमार ने रविवार को कहा कि बिहार की सरकार न तो किसी को फंसाती है न ही किसी को बचाती है, जिस व्यक्ति पर गंभीर आरोप हैं उस पर निर्णय के लिए न्यायपालिका है। बिहारशरीफ में पत्रकारों से बातचीत उन्होंने कहा कि राजबल्लभ यादव, शहाबुद्दीन, अनंत सिंह जैसे लोग एक ही वंश व गोत्र के हैं। इन सभी को लालू यादव ने पोस रखा था।

नीरज कुमार ने अनंत सिंह पर हुई कार्रवाई और उनके द्वारा लगाए गए आरोप के सवाल पर कहा कि अपराध करने वाला हर व्यक्ति यही कहता है कि उसे फंसाया गया है। लेकिन, जिस व्यक्ति पर 55 मुकदमे दर्ज हो उसे फंसाने की क्या जरूरत है? उन्होंने कहा कि जब वह जदयू के विधायक थे, उस वक्त भी उन पर 24 से 25 मुकदमा दर्ज हुआ था। दो बार उन्हें जेल की यात्रा भी करनी पड़ी थी। सरकार ने तब भी कोई मदद नहीं की थी। सीएम नीतीश कुमार ने तो स्पष्ट तौर पर कहा है कि बिहार में कानून का राज है। अपराध करने वाला कोई भी हो उसे जेल जाना पड़ेगा। जदयू ने तो अनंत सिंह से पीछा छुड़ा लिया, लेकिन राजद ने राजनीतिक स्वार्थ के लिए उन्हें भी पाला। उन्होंने कहा कि बिहार के लोगों को जाति धर्म से ऊपर उठकर अपराध के खिलाफ आवाज बुलंद करनी चाहिए। ऐसे संगीन आरोप के मामले को राजनीतिक एजेंडा नहीं बनाना चाहिए।

आइपीएस लिपि सिंह का किया बचाव

नीरज ने आइपीएस लिपि सिंह का बचाव करते हुए कहा कि किसी सर्विस कोड या पुलिस मैनुअल में नहीं लिखा है कि कोई आइपीएस अधिकारी अपने पिता की गाड़ी पर नहीं बैठ सकता है। लिपि सिंह ने दिल्ली में अपने पिता की गाड़ी का प्रयोग किया तो यह कौन सा गुनाह है? मंत्री ने कहा कि अनंत सिंह को फंसाना भी नहीं लिखना आता। उन्होंने कहा कि जब कोर्ट पर उनका भरोसा है तो मीडिया ट्रायल क्यों करा रहे हैं?

अदालतों में बायोमीट्रिक उपस्थिति प्रणाली के लिए सुप्रीम कोर्ट में याचिका

नई दिल्ली, एएनआइ: सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर कर देश भर के सभी कोर्ट अधिकारियों के लिए बायोमीट्रिक अटेंडेंस प्रणाली शुरू करने के लिए केंद्र को निर्देश देने की मांग की गई है। वहीं बड़ी संख्या में लंबित मुकदमों को देखते हुए सभी अदालतों में काम के घंटे बढ़ाने का निर्देश देने की भी मांग की गई है। बता दें कि यह याचिका शशि भूषण सोनभद्र नामक एक व्यक्ति ने अपने वकील शशांक देव सुधी के माध्यम से दायर की है। याचिका में लंबित मुकदमों से निपटने के लिए सभी उच्च न्यायालयों में न्यायाधीशों के रिक्त पदों को तत्काल आधार पर भरने की आवश्यकता जताई गई है। याचिका में सुप्रीम कोर्ट से सभी हाई कोर्ट में याचिकाओं की फाइलिंग में एकरूपता सुनिश्चित करने के लिए निर्देश देने की मांग की गई है। याचिका में यह भी कहा गया है कि शिफ्ट-वार तरीके से काम करने के संदर्भ में न्यायिक ढांचे की संभावनाएं तलाशने के लिए शीर्ष अदालत को सरकार को दिशा-निर्देश जारी करना चाहिए, जिससे लंबित मुकदमों के बोझ को प्रभावी तरीके से कम किया जा सके।

कोलकाता में अब दुर्गा प्रतिमा से 'कमल' हटाने का फरमान

जागरण संवाददाता, कोलकाता

▶ हटाने से इन्कार करने पर आयोजन समिति ने थीम मेकर से किया किनारा

भाजपा के प्रभाव से दुर्गा पूजा को मुक्त रखने के मकसद से कोलकाता में कालीघाट स्थित संघश्री दुर्गोत्सव कमेटी ने अपने पूजा थीम के साथ ही थीम मेकर को भी किनारे कर दिया। प्रदेश भाजपा महासचिव सायंतन बसु को पूजा समिति का अध्यक्ष बनाए जाने के बाद सियासी हलकों में चर्चा तेज थी कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के इलाके में होने वाली इस पूजा का उद्घाटन भाजपा अध्यक्ष व केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा किया जाएगा। इसको लेकर भाजपा और तृणमूल के बीच टकराव जैसी स्थिति पैदा हो गई थी, लेकिन ऐन वक्त पर मुख्यमंत्री के हस्तक्षेप के बीच तृणमूल नेताओं ने खूंटी पूजा कर भाजपा को झटका देने का काम किया।

पिछले साल मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने इस पूजा का उद्घाटन किया था। हालांकि पहले पूजा का थीम 'काटाकुटी खेला' निर्धारित किया गया था, लेकिन ऐन वक्त पर आयोजन समिति के पदाधिकारियों ने इस थीम में तब्दीली करते हुए अब 'सबसे ऊपर मानवता' के थीम पर मंडप निर्माण का फैसला लिया है। वहीं बताया गया कि प्रदीप्त कर्मकार बतौर थीम मेकर तैयारियों में लगे हुए थे, लेकिन इसी बीच क्लब के पदाधिकारियों ने थीम मेकर से प्रतिमा व मंडप में कई तब्दीलियां करने को कहा। इतना ही नहीं उन्हें कहा गया कि मां दुर्गा की प्रतिमा से कमल के फूल को हटाना होगा। लेकिन थीम मेकर ने ऐसा करने से साफ मना कर दिया, जिसके बाद आयोजन समिति ने उन्हें हटाने का निर्णय लिया।

क्लब के अध्यक्ष देवाशीष बंद्योपाध्याय ने बताया कि थीम मेकर को डिजाइन में तब्दीली करने को कहा गया था, लेकिन वे इसके लिए तैयार नहीं हुए और आखिरकार हमने उन्हें हटाने दिया। इधर, थीम मेकर प्रदीप्त कर्मकार ने कहा कि सारी तैयारियां पूरी होने के बाद अचानक उन्हें बजट कम करने को कहा गया, जो उनके बस की बात नहीं थी, सो उन्होंने असहमति जाहिर करते खुद को अलग कर लिया।

उप्र सहित चार राज्यों की विस सीटों पर उपचुनाव 23 सितंबर को

नई दिल्ली, एएनआइ: उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, केरल और त्रिपुरा की चार विधानसभा सीटों पर उपचुनाव 23 सितंबर को होंगे। चुनाव आयोग ने रविवार को यह घोषणा की। जिन सीटों पर उपचुनाव होने हैं, उनमें उत्तर प्रदेश की हमीरपुर, छत्तीसगढ़ की दंतेवाड़ा, केरल की पाला और त्रिपुरा की बहादरघाट शामिल हैं। चुनाव की घोषणा के साथ ही इन क्षेत्रों में चुनाव आचार संहिता लागू हो गई है।

28 अगस्त से चार सितंबर तक नामांकन दाखिल होंगे। जबकि सात सितंबर तक नाम वापस लिए जा सकेंगे। मतगणना 27 सितंबर को होगी। चुनाव आयोग ने स्थानीय त्योहारों, मतदाता सूची और मौसम को ध्यान में रखते हुए उपचुनाव की तारीखों का एलान किया है। आयोग ने उपचुनाव के दौरान सभी मतदान केंद्रों पर ईवीएम और वीवीपैट का उपयोग करने का निर्णय किया है। आयोग का कहना है कि सभी राज्यों को पर्याप्त संख्या में ईवीएम और वीवीपैट उपलब्ध कराई गई हैं।

विधायकों की खरीद फरोख्त पर घिर सकते हैं हरीश रावत

जागरण संवाददाता, नैनीताल

▶ सीबीआइ ने हाई कोर्ट को रिपोर्ट सौंप मांगी आगे जांच की अनुमति

उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत द्वारा विधायकों को कथित खरीद फरोख्त से संबंधित मामले में सीबीआइ की हाई कोर्ट में दाखिल प्रारंभिक जांच रिपोर्ट से सियासी हलचल बढ़ गई है। जांच एजेंसी ने स्टिंग मामले की प्रारंभिक जांच पूरी कर सीलबंद रिपोर्ट हाई कोर्ट में दाखिल करते हुए आगे की जांच के लिए अनुमति मांगी है। सीबीआइ के इस रुख के बाद पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने ट्वीट कर विरोधियों पर सियासी वार किया है। उन्होंने कहा है कि कुछ ताकतें मुझे मिटा देना चाहती हैं। मैं मिटूंगा अवश्य परंतु उत्तराखंडी गंगलोड़ (पहाड़ के नदी गाड़ गधेरों के पानी में घिसकर बना पत्थर) की तरह लुढ़कते हुए घिसते-घिसते इस मिट्टी में मिल जाऊंगा, पर टूटूंगा नहीं।

दरअसल मार्च 2016 में कांग्रेस के नौ विधायकों ने तत्कालीन मुख्यमंत्री हरीश रावत के खिलाफ बगावत कर दी थी। इसके बाद एक न्यूज चैनल की ओर से दिल्ली में विधायकों की खरीद फरोख्त से संबंधित सीएम रावत की कथित बातचीत का स्टिंग जारी किया तो सियासी हंगामा खड़ा हो गया। तत्कालीन राज्यपाल डॉ. केके पॉल ने इसी स्टिंग के आधार पर केंद्र सरकार को मामले की सीबीआई जांच की संस्तुति भेज दी। इस बीच केंद्र सरकार ने राज्य में धारा 356 का उपयोग करते हुए कांग्रेस सरकार को बर्खास्त कर दिया। इस फैसले के खिलाफ बर्खास्त मुख्यमंत्री हरीश रावत और वरिष्ठ मंत्री इंदिरा हृदयेश द्वारा याचिका दायर कर चुनौती दी।

सरकार बर्खास्तगी को गलत ठहराया : नैनीताल हाई कोर्ट ने रावत सरकार की बर्खास्तगी को गलत ठहराया तो फिर सुप्रीम कोर्ट से रावत सरकार बहाल हो गई। इसी बीच मंत्रिमंडल ने स्टिंग मामले की जांच सीबीआइ के बजाय एसआइटी से करने का निर्णय लिया तो बागी नेता व वर्तमान में कैबिनेट मंत्री हरक सिंह रावत ने हाई कोर्ट में याचिका दायर कर सरकार के फैसले को चुनौती दी। याचिका में कहा था कि जब एक बार राज्यपाल स्टिंग मामले की सीबीआइ जांच की संस्तुति केंद्र को कर चुके हैं तो उस फैसले को वापस नहीं लिया जा सकता। इधर, हाल ही में सीबीआइ ने हाई कोर्ट में प्रार्थना पत्र दाखिल कर बताया कि स्टिंग मामले की प्रारंभिक जांच पूरी हो चुकी है। कोर्ट ने सुनवाई करते हुए अगली तिथि 20 सितंबर तय की है।

झारखंड में कांग्रेस अध्यक्ष चुनने में हो रही देरी

राज्य ब्यूरो, रांची : झारखंड प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. अजय कुमार के इस्तीफे के बाद नया नाम चुनने में इस बार जरूरत से ज्यादा देरी हो रही है। अनुमान लगाया जा रहा था कि दो-तीन दिनों में अध्यक्ष के नाम की घोषणा हो जाएगी, लेकिन एक पखवाड़ा कैसे बीत गया कोई समझ भी नहीं पाया। प्रदेश कांग्रेस एक पखवाड़े से अधिक समय से अध्यक्ष विहीन है और जाहिर सी बात है कि झारखंड विधानसभा चुनाव से पहले कहीं न कहीं इसकी कमी हर स्तर पर खल रही है। डॉ. अजय कुमार ने विगत नौ अगस्त को ही औपचारिक तौर पर अपने इस्तीफे की घोषणा कर दी थी और राहुल गांधी को लिखा पत्र भी सार्वजनिक किया था। इसके बाद से नए अध्यक्ष के लिए कवायद चल रही है।

प्रदेश कांग्रेस प्रभारी आरपीएन सिंह भी अपनी ओर से सभी वरिष्ठ नेताओं को टटोल चुके हैं। उनका मंतव्य जानकार आलाकमान को जानकारी भी दे चुके हैं। इसके बाद नए अध्यक्ष को लेकर कवायद तेज हुई है। आश्चर्य की बात यह है कि डॉ. अजय कुमार का इस्तीफा सोशल मीडिया में आने के बावजूद अभी तक इसे स्वीकार नहीं किया गया है और औपचारिक तौर पर अभी भी वही प्रदेश कांग्रेस के मुखिया हैं। यही कारण है कि डॉ. अजय कुमार के ट्विटर हैंडल पर अभी भी उनका परिचय प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के तौर पर लिखा हुआ है।

छत्तीसगढ़ के 10 फीसद किसानों को भी नहीं मिल पाया पीएम का 'सम्मान'

संजीत कुमार, रायपुर

छत्तीसगढ़ के पंजीकृत किसानों में से अब तक 10 फीसद को भी प्रधानमंत्री 'सम्मान' निधि की दूसरी किस्त नहीं मिल पाई है। वहीं, कुल पंजीकृत किसानों में से 82 हजार को तो अभी पहली ही किस्त का इंतजार है। इसकी तुलना में एनडीए और भाजपा शासित राज्यों में ज्यादा किसानों के खाते में सम्मान निधि की राशि पहुंच चुकी है।

राज्य सरकार के अफसर योजना को केंद्र सरकार की बात कर इस पर किसी भी तरह की टिप्पणी करने से बच रहे हैं। राजस्व विभाग के अफसरों के अनुसार यह योजना पूरी तरह केंद्र सरकार की है। जैसे-जैसे फंड आ रहा है, वैसे-वैसे किसानों के खाते में जमा हो रहा है। अफसरों के अनुसार इस वर्ष 10 जून तक राज्य में इस योजना के पात्र किसानों की संख्या दो लाख 51 हजार से अधिक थी। इनमें से केवल एक लाख 11 हजार 818 को ही पहली किस्त मिली थी। केंद्र सरकार ने जून के अंतिम सप्ताह में भी बाकी किसानों के लिए पहली किस्त की शेष राशि जारी की। जुलाई में कुल नौ लाख 76 हजार को पहली किस्त मिली थी। अब यह संख्या बढ़कर 11 लाख 26 हजार से अधिक हो गई है। वहीं, दूसरी किस्त की राशि अब तक केवल एक लाख 12 हजार किसानों के ही खाते में पहुंची है।

मौजूदा स्थिति में योजना के लिए पंजीकृत किसानों की संख्या 12 लाख नौ हजार 128 है। इस वर्ष जून में केवल दो लाख के आसपास किसान पंजीकृत थे। जून के बाद से यह आंकड़ा तेजी से बढ़ रहा है। राज्य में किसानों की वास्तविक संख्या को लेकर भी संशय की स्थिति बनी रहती है। राजनीतिक दल राज्य में 35 से 37 लाख किसान होने का दावा करते हैं। वहीं, सरकारी मंडियों में धान विक्रय के लिए पंजीयन कराने वाले किसानों की संख्या 15 लाख के आसपास पहुंचती है।

योजना की विभिन्न राज्यों में स्थिति

राज्य	पंजीकृत	पहली किस्त	दूसरी किस्त
छत्तीसगढ़	1209128	1126140	112272
बिहार	2991931	2806382	2408855
उत्तर प्रदेश	16876408	15580739	10848667
उत्तराखंड	588899	523263	401106
हरियाणा	1311192	1210071	935929
झारखंड	995417	790874	403879
ओडिशा	3078100	3026024	934797
मध्यप्रदेश	3570468	3239578	9178
राजस्थान	4811975	3746035	2184904
पंजाब	1452709	1433349	1144648

जम्मू-कश्मीर के मुख्य सचिव को वापस बुला सकती है भूपेश सरकार !

भूपेश बघेल फाइल

नईदुनिया, रायपुर : छत्तीसगढ़ के मुख्य सचिव सुनील कुजूर के सेवा विस्तार का प्रस्ताव केंद्र सरकार के पास विचाराधीन है। कुजूर अक्टूबर में सेवानिवृत्त हो रहे हैं, लेकिन उनके सेवा विस्तार पर केंद्र ने अब तक रुख स्पष्ट नहीं किया है। राज्य सरकार उन्हें छह महीने और सीएस के पद पर रखना चाह रही है। केंद्र से अनुमति नहीं मिलने पर राज्य सरकार को उन्हें सेवानिवृत्त करना ही पड़ेगा। इस स्थिति में राज्य सरकार जम्मू-कश्मीर के मुख्य सचिव सुब्रमण्यम को वापस बुला सकती है। वह छत्तीसगढ़ कैडर के 1987 बैच के आइएएस हैं।

चर्चा है कि राज्य में आइएएस अफसरों की कमी का हवाला देकर भूपेश सरकार उनकी प्रतिनियुक्ति समाप्त करने का आग्रह कर सकती है। मामला हाईप्रोफाइल होने के कारण फिलहाल इस मामले में कोई कुछ कहने को तैयार नहीं है, लेकिन मंत्रालय के आला सूत्रों के अनुसार राज्य सरकार सुब्रमण्यम की वापसी की मांग कर कुजूर के सेवा विस्तार के प्रस्ताव को स्वीकृत कराने का दबाव बना सकती है।

सुब्रमण्यम की वापसी आसान नहीं : सुब्रमण्यम सितंबर 2022 तक सेवा में रहेंगे। फिलहाल वे जून 2018 से केंद्रीय प्रतिनियुक्ति में हैं। उन्हें गए अभी करीब 14 महीने हुए हैं। आला अफसरों के अनुसार जम्मू-कश्मीर में जिस तरह के हालात हैं, ऐसे में केंद्र सरकार उन्हें वहां से हटाने को राजी नहीं होगी। ऐसे में उनकी छत्तीसगढ़ वापसी संभव नहीं है।

वरिष्ठता क्रम में सातवें नंबर पर : वैसे भी सुब्रमण्यम राज्य कैडर की वरिष्ठता सूची में सातवें नंबर पर हैं। यहां उनका रैंक एसीएस है। 1986 बैच के कुजूर इस वक्त सीएस हैं। कैडर में वरिष्ठता क्रम में सबसे ऊपर 1983 बैच के अजय सिंह हैं। पूर्ववर्ती सरकार में वे मुख्य सचिव थे, फिलहाल राजस्व मंडल के अध्यक्ष हैं।

वापसी

तैयारी और तेवर बता रहे हैं कि संसदीय चुनाव की हार के सदमे से वह पूरी तरह उबर चुके हैं और पार्टी को पटरी पर लाने के लिए तैयार हैं

सियासी उलझन से निकल तेजस्वी ने संभाली राजद की कमान

राज्य ब्यूरो, पटना

पार्टी और परिवार से लगभग तीन महीने अलग रहकर राजनीतिक संन्यास की स्थिति से गुजर चुके नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने अब संपूर्ण रूप से राजद की कमान थाम ली है। विधानसभा चुनाव से पहले पार्टी के सभी मोर्चों को दुरुस्त करने की कोशिशें तेज कर दी हैं। तेजस्वी की तैयारी और तेवर बता रहे हैं कि वह संसदीय चुनाव की हार के सदमे से पूरी तरह उबर चुके हैं और पार्टी के ढीले पेच को कसना शुरू कर दिया है।

राजद के सदस्यता अभियान के सिलसिले में रविवार को राबड़ी देवी के आवास पर हुई राजद पदाधिकारियों की बैठक में तेजस्वी ने जिस अंदाज में अपनी बातें रखीं और पार्टी की नीतियों एवं आने वाले कार्यक्रमों की तस्वीर खींची उससे साफ हो गया कि वह राजनीतिक उलझनों को भी सुलझा चुके हैं। तेजस्वी के उद्गार में स्पष्टता थी और आदेश-निर्देश में अधिकार का भाव।

पार्टी में पदाधिकारी बनकर महत्वपूर्ण बैठकों से दूर रहने वाले नेताओं को तेजस्वी ने साफ चेताया कि पुरानी शैली अब नहीं चलेगी। जिनका प्रदर्शन ठीक नहीं है, उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जा सकती है। लोकसभा चुनाव के दौरान वोटरों को साधने के लिए राजद के संविधान की अवहेलना करते हुए थोक के भाव में पद बांटे गए थे। दर्जनों ऐसे लोगों को पार्टी में महत्वपूर्ण ओहदा दे दिया गया, जिनकी प्रकृति राजद से मेल नहीं खाती है। ऐसे लोग बैठकों में भी नहीं आते हैं। तेजस्वी ने प्रदेश अध्यक्ष रामचंद्र पूर्वे को हिदायत दी कि ऐसे लोगों की सूचना रखें और उनके खिलाफ कार्रवाई करें।

तेजस्वी यादव फाइल

राबड़ी देवी फाइल

मां ने बनाया बेटे को सदस्य : राबड़ी देवी ने तेजस्वी यादव को राजद की सदस्यता दिलाई। इसके बाद तेजस्वी ने मौके पर मौजूद 30 लोगों को पार्टी का सदस्य बनाया। इनमें विधायक अख्तरुल इस्लाम शाहीन, वीरेंद्र सिन्हा, आभालता, राजनीति प्रसाद, रामबली चंद्रवंशी एवं सतीश गुप्ता शामिल हैं। तेजस्वी ने सभी पदाधिकारियों को 50 लाख सदस्य बनाने के लक्ष्य को समय रहते पूरा करने की हिदायत दी। विधायकों को कम से कम 15 हजार सदस्य बनाना है। प्रकोष्ठ अध्यक्षों को कम से कम 13-13 हजार सदस्य बनाने का लक्ष्य दिया गया है। जमशेदपुर जाने के कारण राजद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शिवानंद तिवारी बैठक में नहीं पहुंचे। उन्होंने इसकी सूचना भी मीडिया को दी थी। बैठक पार्टी पदाधिकारियों की थी। फिर भी भोला यादव समेत कुछ विधायक बैठक में सक्रिय देखे गए। भाई वीरेंद्र के नहीं पहुंचने की भी चर्चा हुई।

आरसीपी पर बोला हमला : तेजस्वी बाहुबली विधायक अनंत सिंह से जुड़े सवालों को टाल गए, लेकिन राज्य सरकार के तंत्र पर जबर्दस्त हमला बोला। जदयू राष्ट्रीय महासचिव आरसीपी सिंह के साथ उनकी एसपी पुत्री लिपि सिंह को भी कठघरे में खड़ा करने की कोशिश की। तेजस्वी ने सीधा आरोप लगाया कि दिल्ली में विधान पार्षद की गाड़ी से लिपि सिंह के घूमने से प्रमाणित हो गया कि आरसीपी पैसे लेकर लोगों को पद बांट रहे हैं। तेजस्वी ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से पूछा कि कहां चली गई आपकी जीरो टॉलरेंस वाली नीति? उपमुख्यमंत्री सुशील मोदी को भी निशाने पर लिया और पूछा कि अब क्यों नहीं प्रेस कांफ्रेंस कर भ्रष्टाचार को उजागर कर रहे हैं?

झामुमो के चुनावी निशान को निर्वाचन आयोग और हाई कोर्ट में चुनौती देगा जदयू

राज्य ब्यूरो, रांची : झारखंड जदयू ने झामुमो पर पलटवार किया है। जनता दल यूनाइटेड (जदयू) के झारखंड प्रभारी रामसेवक सिंह ने दो टूक कहा है कि जदयू का चुनाव चिह्न फ्रीज कर दिए जाने से पार्टी की सेहत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। हम पार्टी के नेता और नीति को लेकर नए चुनाव चिह्न के साथ जनता के बीच जाएंगे। प्रदेश जदयू के कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतीश कुमार सितंबर के पहले सप्ताह में रांची आएंगे। इस बीच, प्रदेश अध्यक्ष सालखन मुर्मू ने कहा कि तीर-धनुष आदिवासियों की सांस्कृतिक पहचान है, जिसे झारखंड मुक्ति मोर्चा भुनाने का काम कर रहा है। जदयू झारखंड में झामुमो का चुनाव चिह्न फ्रीज करने के लिए निर्वाचन आयोग को आवेदन देगा, हाई कोर्ट भी जाएगा। दोनों रविवार को राजकीय अतिथिशाला में पत्रकारों से मुखातिब थे। रामसेवक सिंह ने कहा कि बिहार में झामुमो का चुनाव चिह्न फ्रीज कर दिए जाने से उसकी दुकानदारी बंद हो गई है। यह पूछे जाने पर कि जदयू बिहार में भाजपा के साथ गलबहियां कर रहा है और झारखंड में भाजपा विरोधी बातें करता है।

28,639 लोग मुआवजे की बाट जोह रहे हैं झारखंड में। इन्होंने अपनी जमीन केंद्र व राज्य सरकार के अलावा कॉरपोरेट घरानों की विभिन्न परियोजनाओं के लिए दी। वंचित लाभुकों के बीच 2451.26 करोड़ रुपये का वितरण किया जाना है।

भरोसे की जमीन पर पनपे मोदी, शाह और जेटली के रिश्ते

अंतिम विदाई ▸ मोदी और शाह के साथ सबसे मजबूती से खड़े होने वाले जेटली ही थे, तीनों नेताओं के बीच आपसी सम्मान और विश्वास आखिर वक्त तक बना रहा

मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री बने तो दिल्ली में उनके सबसे विश्वस्त जेटली ही रहे

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

भाजपा के वरिष्ठ नेता अरुण जेटली के निधन पर शोक जताते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि 'उन्होंने अपना एक बहुमूल्य दोस्त खो दिया जिसके साथ-साथ वह जीवन के कई कदम चले।'

दूसरी तरफ केंद्रीय गृह मंत्री और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह के श्रद्धांजलि के ये शब्द कि 'जेटली का निधन उनके लिए व्यक्तिगत क्षति है,' बयां करते हैं कि लगभग दो दशक तक भाजपा के लिए सेनापति की तरह रहे जेटली-मोदी-शाह के बीच विश्वास और संबंध किस स्तर पर थे।

महज पांच -छह वर्षों में दिल्ली की सियासत पर सितारे की तरह अंकित मोदी और शाह के साथ सबसे मजबूती से खड़ा होने वाला कोई एक व्यक्ति था तो वह जेटली थे। जब राष्ट्रीय राजनीति, यहां तक कि खुद भाजपा के अंदर एक कुनबा और मीडिया का भी एक बड़ा वर्ग नरेंद्र मोदी और अमित शाह को कठघरे में खड़ा करने की कोशिश में जुटा था तो जेटली ने एक कवच तैयार किया था।

इसके पीछे कोई ललक नहीं थी, बल्कि एक विश्वास था कि गर्दिश में खड़ी भाजपा को कोई खड़ा कर सकता है तो मोदी का करिश्मा और शाह की क्षमता। तीनों नेताओं के बीच आपसी सम्मान और विश्वास आखिर वक्त तक बना रहा। इस आपसी गठजोड़ का एक बड़ा कारण यह भी था कि तीनों नेता परिवारवाद से जुदा पूरी तरह भाजपा के लिए संकल्पित थे।

दिल्ली में मोदी के सबसे विश्वस्त : प्रधानमंत्री मोदी और जेटली के बीच मजबूत गांठ शायद तभी बनने लगी थी जब मोदी संगठन मंत्री थे और जेटली संगठन में पदाधिकारी और फिर केंद्रीय मंत्री। यह और बात है कि दोनों नेताओं के स्वभाव अलग थे, लेकिन दोनों की एक खूबी थी -किसी भी विषय को जमीन तक जाकर और तर्कों के साथ उसे समझना और समझाना। बाद में जब मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री बने तो दिल्ली में उनके सबसे विश्वस्त जेटली ही रहे।

मोदी के साथ था गजब का तालमेल : गुजरात दंगे के बाद जब तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने राजधर्म की बात कहकर मोदी के लिए संकट खड़ा किया तो दिल्ली में जिन कुछ लोगों ने मोदी के समर्थन में बात रखी थी उसमें जेटली शामिल थे। उसके बाद तो लंबे वक्त तक जेटली ही गुजरात के प्रभारी रहे और मोदी यही चाहते भी थे। गुजरात दंगे के वक्त जिस तरह मुख्यमंत्री के रूप में मोदी को घेरने की कोशिश हुई उसे जेटली लगातार तर्कों के सहारे न सिर्फ ध्वस्त करते रहे, बल्कि बुद्धिजीवियों के बीच भी एक ऐसा वर्ग खड़ा किया जो कानूनी परख के साथ इसे स्वीकार कर सके।

मुखर होकर मोदी का किया था समर्थन : 2013 में जब भाजपा का दिल्ली गैंग किसी भी तरह नरेंद्र मोदी की प्रधानमंत्री दावेदारी को रोकने के लिए खड़ा था तो जेटली ऐसे कुछ चुने हुए नेता थे जिन्होंने मुखर होकर यह दावा किया कि भाजपा अगर सत्ता में आना चाहती है तो केवल मोदी के नेतृत्व में ही संभव है। यह मोदी के करिश्मे पर भरोसे का ही सबूत था कि पहली बार जेटली खुद लोकसभा चुनाव के लिए तैयार हुए थे।

चुनाव हारने के बावजूद सरकार में बड़ी भूमिका : हालांकि वह चुनाव हार गए, लेकिन जब मोदी सरकार बनी तो जेटली को वित्त के साथ-साथ रक्षा, कारपोरेट जैसे मंत्रालय देकर मोदी ने यह जताने में संकोच नहीं किया कि उन्हें जेटली की क्षमता पर भरोसा है। संवाद को लेकर मीडिया की ओर से दबाव बढ़ा तो जेटली ने ही मोदी को तैयार किया कि वह संवाद करें और खुद अपने आवास पर इसका आयोजन किया।

प्रभारी रहते हुई भरोसे की शुरुआत : जाहिर है कि मोदी के साथ तालमेल होगा तो उनके सेनापति रहे शाह नहीं छूट सकते। गुजरात में प्रभारी रहते वक्त ही शाह के साथ भी आपसी भरोसे की शुरुआत हुई थी और अपने स्वभाव के अनुरूप ही जेटली ने शाह की क्षमता को पहली नजर में पहचान लिया था। मोदी की तरह की शाह को भी सोहराबुद्दीन केस में फंसाने और बदनाम करने की कोशिश हुई थी तो जेटली हर कदम पर साथ खड़े थे, कानूनी दांव-पेच पर सलाह से लेकर नैतिक बल देने तक।

नई दिल्ली में पार्लियामेंट बोर्ड की बैठक के दौरान पूर्व वित्त मंत्री अरुण जेटली से चर्चा करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। साथ में हैं अमित शाह। (जागरण आर्काइव)

▸ गुजरात दंगों के समय भी मुश्किल समय में जेटली ही मोदी के साथ खड़े रहे

▸ मोदी को घेरने की कोशिश हुई तो वे अपने तर्कों से मजबूत जवाब देते रहे

अपने दोस्त के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित थे मोदी

दोस्ती की ऐसी मिसाल कम ही देखने को मिलती है कि जब जेटली को किडनी देने के लिए उनके परिवार का एक व्यक्ति राजी हुआ तो प्रधानमंत्री ने खुद उसे बुलाकर उससे बात की। दरअसल मोदी ने एक तरह से अपने दोस्त जेटली के लिए किडनी दान करने वाले को धन्यवाद दिया। जेटली के स्वास्थ्य के प्रति मोदी इस कदर चिंतित थे कि एम्स में जब जेटली भर्ती हुए तो मोदी ने यह खुद सुनिश्चित किया कि उनको वह कक्ष दिया जाए जो प्रधानमंत्री के लिए आरक्षित रहता है।

शाह के लिए तैयार कराया अपना एक घर

जब जांच के क्रम में ही सुप्रीम कोर्ट ने शाह को गुजरात छोड़ने का आदेश दिया तो जेटली ही थे जिन्होंने सबसे पहले दिल्ली में अपना एक घर उनके लिए तैयार करवा दिया। हालांकि शाह को इसकी जरूरत नहीं हुई, लेकिन भरोसे और सम्मान की जो नींव लगभग पंद्रह साल पहले गुजरात में पड़ी थी वह मजबूत होती चली गई।

तीनों के बीच था गहरा अपनत्व

शाह ने जेटली के जाने को व्यक्तिगत क्षति बताया और जेटली के प्रति इस मोह का एक उदाहरण तभी मिल गया था जब जेटली अमृतसर से लोकसभा चुनाव हार गए थे। सामान्यतया बहुत सख्त शाह की आंखें भी तब छलक गई थीं। उनकी पत्नी भी रो पड़ी थीं। नेताओं के बीच यह अपनत्व राजनीति में सामान्य नहीं है, पर मोदी-शाह-जेटली के बीच यह अक्सर दिखा।

परस्पर एक दूसरे के लिए दिखा सम्मान

प्रधानमंत्री होने के बावजूद हर मौके-बेमौके जेटली के आवास पर मोदी आते-जाते रहे। वहीं जेटली दूसरों के साथ अनौपचारिक बातचीत में भी मोदी को प्रधानमंत्री जी और शाह को अध्यक्ष जी के संबोधन से ही बुलाते रहे। जाहिर है कि जेटली का जाना जहां पूरी भाजपा के लिए बड़ा झटका है, मोदी-शाह के लिए एक दोस्त के जाने जैसा ही है।

नई दिल्ली निगम बोध घाट पर अंतिम विदाई के मौके पर पूर्व वित्त मंत्री अरुण जेटली की पत्नी संगीता, पुत्र और पुत्र को गृह मंत्री अमित शाह ने सांत्वना दी। जागरण

निगम बोध घाट पर पूर्व केंद्रीय मंत्री अरूण जेटली के अंतिम संस्कार में पहुंची कैबिनेट मंत्री हरसिमरत कौर और स्मृति इरानी। संजय

अरुण जेटली ने नहीं उठने दिया था बच्चों के सिर से पिता का साया

अवनीश मिश्र, गाजियाबाद

पूर्व वित्त मंत्री अरुण जेटली के निधन से गाजियाबाद के वसुंधरा में रहने वाले दर्जी मोहम्मद मुन्ना के घर में शनिवार रात चूल्हा नहीं जला। मुन्ना ने रुंधे गले से कहा कि जेटली साहब न होते तो उनके बच्चों के सिर से पिता का साया उठ जाता। जेटली साहब की ही देन है कि आज वह जिंदा हैं। पत्नी व बच्चों के साथ खुशी-खुशी जीवन जी रहे हैं। इतना कहते-कहते मुन्ना फूट-फूटकर रोने लगे।

मुन्ना के दिल का कराया था ऑपरेशन : मूलरूप से सहरसा बिहार के रहने वाले मोहम्मद मुन्ना यहां वसुंधरा सेक्टर-छह में परिवार के साथ रहते हैं। उनके चार लड़के और चार लड़कियां हैं। वह वसुंधरा सेक्टर-पांच स्थित पत्रकार परिसर सोसायटी के बाहर पुराने कपड़ों की सिलाई करते हैं। उन्होंने बताया कि दिल की बीमारी की वजह से करीब 14 साल पहले उनकी तबीयत खराब हो गई। पत्रकार परिसर सोसायटी में रहने वाले एक पत्रकार ने उनकी इस स्थिति से अरुण जेटली को अवगत कराया। जेटली ने एम्स में निशुल्क उनके उपचार की व्यवस्था कराई। एम्स में डॉ. बिशोई के पास उन्हें भेजा गया, जहां उनके दिल का ऑपरेशन किया गया। इससे उनकी जिंदगी बच गई। मुन्ना के बेटे शानू ने कहा कि परिजनों ने जब से अरुण जेटली के एम्स में भर्ती होने की खबर सुनी थी, हर रोज उनके स्वस्थ होने की दुआ करते थे।

अब संसद में नहीं गूंजेगी जेटली की आवाज, याद आएगी : राहुल

नयी दिल्ली, एएनआइ : केंद्रीय मंत्री अरुण जेटली के निधन पर दुख जताते हुए कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी और पार्टी नेता राहुल गांधी ने उनकी पत्नी संगीता जेटली को पत्र लिखा है। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा है पूर्व केंद्रीय मंत्री ने राजनीतिक दायरे से ऊपर उठकर मित्र बनाए। उन्होंने क्रूर बीमारी से पूरे साहस के साथ मुकाबला किया और आखिरी सांस तक अदम्य बने रहे। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा है कि पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण जेटली की आवाज अब पवित्र संसद में नहीं गूंजेगी, लेकिन उनकी कमी हमेशा खलेगी। कांग्रेस नेता ने शोक संदेश में कहा है कि जेटली ने अपने चार दशक के शानदार करियर में राजनीति पर अमिट छाप छोड़ी है। राहुल ने अपने पत्र में कहा कि चूंकि उनकी आवाज पवित्र संसद में नहीं गूंजेगी, लेकिन हमें हमेशा उनकी याद आएगी। उन्होंने उनके परिवार के प्रति संवेदनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि ईश्वर परिवार को इस मुश्किल समय से उबरने की ताकत और इस दुख को सहने की शक्ति दे।

रेत से बनाया अरुण जेटली का चित्र

पुरी सी-बीच पर बालुका कलाकार (सैंड आर्टिस्ट) मानस साहू ने वरिष्ठ भाजपा नेता अरुण जेटली को अपनी विशेष बालुका कलाकृति समर्पित कर दी श्रद्धांजलि। समुद्र किनारे बनी इस कलाकृति को देखने और साथ में सेल्फी लेने के लिए भी लोगों में होड़ रही। जागरण

मॉन्ट ब्लांक पेन से पटेक फिलिप घड़ियों तक, महंगे ब्रांड्स के शौकीन थे जेटली

▸ पूर्व वित्त मंत्री अरुण जेटली महंगे ब्रांडस के शौकीन थे

नई दिल्ली, प्रेट्र : कुर्ता पायजामा और जैकेट के साथ जेटली की राजनीतिक छवि अक्सर अखबारों और टीवी पर सुर्खियों में रहती थी लेकिन कम ही लोग जानते हैं कि राजनीतिक रंग में रंगने से पहले पूर्व वित्त मंत्री अरुण जेटली महंगे ब्रांडस के शौकीन थे, फिर चाहे वो लंदन की बेस्पोक शर्ट हो या फिर जॉन लॉब द्वारा हस्तनिर्मित जूते हों।

जेटली को मॉन्ट ब्लांक पेन और पटेक फिलिप ब्रांड की घड़ी भी खासी पसंद थी। पूर्व वित्त मंत्री घड़ियों, कलमों, शॉल, शर्ट और यहां तक की जूतों का भी शौक रखते थे और उनके कलेक्शन में 'पटेक फिलिप (घड़ियों में) से मॉन्ट ब्लांक (कलमों में)' तक शामिल हैं। लेखक-पत्रकार कुमकुम चड्ढा ने अपनी किताब 'द मैरीगोल्ड स्टोरी' के 'अरुण जेटली : द पाइड पाइपर' शीर्षक वाले एक अध्याय में कहा है, '...अरुण की मॉन्ट ब्लांक कलमों और उत्कृष्ट 'जामावार' शॉल के कलेक्शन के जिक्र की जरूरत है।

वह मॉन्ट ब्लांक की नयी कलमों के लॉन्च होने के साथ ही उन्हें खरीदने वालों में से थे।' किताब में जेटली के एक करीबी मित्र को उद्धृत किया गया है जो स्वीकार करते हैं कि 'तड़क-भड़क से सादगीपूर्ण' झुकाव के बावजूद वकील से राजनेता बने जेटली 'ब्रांड को लेकर सजग' बने रहे। उन्होंने लिखा, 'यद्यपि अरुण जेटली ने अपने पहनावे में काफी बदलाव कर लिया है लेकिन ब्रांड को लेकर वो अब भी सजग हैं। उन्होंने अपने बेटे रोहन के लिए जूतों की जो पहली जोड़ी खरीदी थी वह सल्वाटोर फैरागामो (प्रसिद्ध इतालवी लग्जरी ब्रांड) की थी।'

'मन की बात' में पीएम मोदी ने किया दो मोहन का जिक्र

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▸ कहा, एक चक्रधारी और दूसरे चरखाधारी

▸ एक ने दुनिया को कर्मयोग का संदेश दिया, तो दूसरे ने स्वच्छता का

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में जन्माष्टमी के त्योहार का जिक्र करते हुए भगवान श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व उल्लेख भी किया। श्रीकृष्ण के जीवन के साथ बापू के जीवन को जोड़ा। प्रधानमंत्री ने कहा कि एक ने दुनिया को कर्मयोग का संदेश दिया तो दूसरे ने स्वच्छता का।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज जब वह देश के लोगों से बात कर रहे हैं तो उनका ध्यान दो मोहन की तरफ जा रहा है। एक सुदर्शन चक्रधारी मोहन, तो दूसरे चरखाधारी मोहन। सुदर्शन चक्रधारी मोहन यमुना के तट को छोड़कर गुजरात में समुद्र के तट पर द्वारिका नगरी बसाई और वहीं रहे। समुद्र के तट पर पैदा हुए चरखाधारी मोहन यमुना के तट पर आकर दिल्ली में जीवन के आखिरी सांस तक रहे। सुदर्शन चक्रधारी मोहन ने उस समय की स्थितियों में, हजारों साल पहले भी, युद्ध को टालने के लिए, संघर्ष को टालने के लिए, अपनी बुद्धि का, अपने कर्तव्य का, अपने सामर्थ्य का, अपने चिंतन का भरसक उपयोग किया था। सुदामा से दोस्ती निभाई तो महाभारत के मैदान में अर्जुन का सारथी बनकर कर्मयोग का संदेश दिया।

चरखाधारी मोहन ने भी तो स्वतंत्रता के लिए, मानवीय मूल्यों के जतन के लिए, व्यक्तित्व के मूल तत्वों को सामर्थ्य देने के लिए अहिंसा का रास्ता चुना, दुनिया को स्वच्छता का पाठ पढ़ाया। आजादी के जंग को एक ऐसा रूप दिया, ऐसा मोड़ दिया जो पूरे विश्व के लिए अजूबा है, आज भी अजूबा है।

एनजीटी का आरओ पर लगाई गई रोक पर पुनर्विचार से इन्कार

नई दिल्ली, प्रेट्र : राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) ने आरओ प्यूरीफायर पर रोक संबंधी सरकार को दिए गए आदेश पर पुनर्विचार से इन्कार किया है। एनजीटी ने 20 मई को वन एवं पर्यावरण मंत्रालय को उन इलाकों में आरओ प्यूरीफायर के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाने का निर्देश दिया था, जहां एक लीटर पानी में कुल घुलनशील ठोस पदार्थ (टीडीएस) की मात्रा 500 मिलीग्राम से कम है। उसने लोगों को पानी से खनिज तत्वों को निकालने के दुष्प्रभाव की जानकारी देने का भी निर्देश दिया था।

टीडीएस में अकार्बनिक लवण के साथ-साथ छोटी मात्रा में कार्बनिक तत्व भी शामिल होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का एक अध्ययन बताता है कि प्रतिलीटर 300 मिलीग्राम से कम टीडीएस वाला पानी उत्तम तथा 900 मिलीग्राम वाला पानी घटिया कहा जा सकता है। 1200 मिलीग्राम टीडीएस वाला पानी पीने योग्य नहीं होता।

फौजी बोला– पान सिंह बनने को मजबूर न करें

नईदुनिया, खंडवा

मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में 16 अगस्त को परिजन के साथ मारपीट से जम्मू-कश्मीर में आईटीबीपी (भारत-तिब्बत सीमा पुलिस) में पदस्थ फौजी अमित सिंह आहत हैं। आरोपितों पर कार्रवाई नहीं होने से नाराज अमित ने फेसबुक पर लिखा कि मध्य प्रदेश सरकार हनुवंतिया टूरिस्ट कॉम्प्लेक्स वाले हादसे पर मेरे परिवार और भाई के साथ न्याय करे। एक नया पान सिंह तोमर बनने के लिए मजबूर न करे। मुझे बंदूक चलाने की ट्रेनिंग नहीं लेनी पड़ेगी। अमित ने यह पोस्ट 20 अगस्त को लिखी थी, जो अब वायरल हो रही है।

अमित ने सरकार से मांग की है कि वह उनके भाई की आंख ठीक कराकर दे। फौजी सरहद पर सबकी सुरक्षा के लिए लड़ता है तो उसके परिवार की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी सरकार की होती है। पर्यटन स्थल पर बच्चों के लिए दूध और पानी ले जाना कहां तक गलत है। सिर्फ इन दो चीजों को ले जाने से रोकते हुए सुरक्षा गार्ड और मोटरबोट के कर्मचारियों ने उसके परिवार पर जानलेवा हमला कर दिया।

क्या है मामला : बता दें कि 16 अगस्त को खंडवा जिले के मूंदी निवासी अतुल सिंह, विपुल सिंह और आशीष सिंह पत्नी और बच्चों के साथ हनुवंतिया गए थे। यहां गेट पर सुरक्षा गार्ड ने उनके बैग चेक किए। बैग में बच्चों के लिए दूध और पानी की बोतल रखी थी। गार्ड ने इन्हें अंदर ले जाने से मना किया। इस पर गार्ड और मोटरबोट के कर्मचारियों ने तीनों से मारपीट की। इस दौरान अतुल सिंह की आंख में पानी की बोतल मार दी गई। इससे रेटिना खराब हो गया और उन्हें इंदौर रेफर किया गया। उनकी आंख करीब 80 प्रतिशत खराब हो गई है। दूसरी तरफ, पुलिस ने सुरक्षा गार्ड चरण सिंह और मुकेश के अलावा अन्य लोगों पर केस दर्ज किया था। दूसरे दिन पुलिस ने अतुल सिंह और उनके दोनों भाइयों पर भी काउंटर केस दर्ज कर लिया। इस मामले में फौजी परिवार के साथ नगरवासियों ने एक ज्ञापन भी पुलिस को सौंपकर उचित कार्रवाई की मांग की थी।

पुलिस ने मामला ठंडे बस्ते में डाला : घायल अतुल के भाई आशीष सिंह ने बताया कि पुलिस ने मारपीट करने वालों को गिरफ्तार नहीं करते हुए, उल्टा उन पर ही केस दर्ज कर लिया है। वहीं, मूंदी थाना प्रभारी अंतिम पवार ने बताया कि दोनों पक्षों की शिकायत पर काउंटर केस दर्ज हुए हैं। घायल अतुल की मेडिकल रिपोर्ट आ गई है। इसके आधार पर आरोपितों पर धाराएं बढ़ाई जाएंगी।

मारपीट की निष्पक्ष जांच होगी

जवान के परिवार के साथ मारपीट की घटना पर मुख्यमंत्री कमलनाथ ने निष्पक्ष जांच के आदेश दिए हैं। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ के मीडिया समन्वयक नरेंद्र सलूजा ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जवान से कहा गया है कि चिंता न करें। उनके परिवार को सरकार पूरी सुरक्षा देगी। मुख्यमंत्री ने खंडवा जिला प्रशासन को निर्देश देते हुए अमित सिंह के परिवार के साथ हुई घटना की निष्पक्ष जांच करने को कहा है। इस पर अमित सिंह ने अब आभार का ट्वीट भी किया है।

कोलकाता में बांग्ला अभिनेत्री से गाली गलौज, धक्का-मुक्की

जागरण संवाददाता, कोलकाता : मांग से अधिक पेट्रोल डालने का विरोध करने पर कोलकाता में एक पेट्रोल पंप पर बांग्ला अभिनेत्री के साथ गाली गलौज और धक्कामुक्की की गई। बीच बचाव को आए पिता के साथ भी हाथापाई की गई। कार की चाबी भी निकाल ली गई। पीड़िता ने थाने में पंप कर्मचारियों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस ने घटना की जांच शुरू कर दी है।

सूत्रों के अनुसार रविवार सुबह बांग्ला अभिनेत्री जूही सेनगुप्ता अपने परिवार के साथ घूमने के लिए निकली थी। इसी बीच वह कसबा थाना अंतर्गत रूबी अस्पताल के पास एक पेट्रोल पंप में कार में तेल भरवाने के लिए पहुंची। 1500 रुपये का पेट्रोल भरने को कहने के बाद भी पंप कर्मियों ने अधिक का पेट्रोल भर दिया। जब तक मीटर पर नजर पड़ी तब तक 2400 रुपये का तेल डाला जा चुका था। इस पर दोनों पक्षों में विवाद हो गया।

सम्मेलन

गेहूं का रिकॉर्ड उत्पादन कायम रखना चुनौती

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने इंदौर में आयोजित राष्ट्रीय गेहूं और जौ अनुसंधानकर्ता सम्मेलन में दी जानकारी, उत्पादकता में पिछड़े राज्यों को लाएंगे आगे

नईदुनिया, इंदौर

इस वर्ष देश में गेहूं का रिकॉर्ड उत्पादन हुआ है। वह सरकार की कृषि नीतियों, किसानों की मेहनत और कृषि अनुसंधान के सहयोग से संभव हो पाया है, लेकिन इस रिकॉर्ड उत्पादन को कायम रखना हमारे लिए चुनौती है। अब हमें ऐसे राज्यों पर ध्यान देना होगा जो गेहूं की उत्पादकता में पिछड़े हुए हैं। पंजाब जैसी उत्पादकता दूसरे क्षेत्रों में लाने का प्रयास कर रहे हैं।

यह बात भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद दिल्ली के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने मध्य प्रदेश के इंदौर में आयोजित राष्ट्रीय गेहूं और जौ अनुसंधानकर्ता सम्मेलन के दूसरे दिन रविवार को कही। वे देशभर से आए कृषि वैज्ञानिकों और किसानों को रवींद्र नाट्यगृह में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पिछले तीन साल में हम गेहूं की 35 नई वैरायटी लेकर आए हैं, जो जलवायु परिवर्तन से बढ़ते तापमान को भी सहन करने की क्षमता रखती हैं। जरूरी नहीं कि हम बड़े अनुसंधान या बड़े प्रयोग करें, छोटे-छोटे नवाचार करके भी बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं। भूमिगत जल का किफायत से उपयोग कर अधिक फसलें ले सकते हैं। गेहूं उत्पादन के लिए हमें भूमि सुधार भी करना होगा।

गेहूं की समय पर बुआई जरूरी : भारत सरकार के कृषि और सहकारिता मंत्रालय के संयुक्त सचिव अश्वनी कुमार ने कहा कि गेहूं की समय पर बुआई करना बहुत जरूरी है।

समय पर बुआई न करने से उत्पादन में 10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की कमी आ सकती है। ऐसे में कृषि वैज्ञानिकों को मंडी और ब्लॉक स्तर तक जाकर किसानों के बीच प्रचार करना होगा कि किस फसल और किस प्रजाति की बुआई किस समय करना फायदेमंद रहेगा। संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रमुख कृषि वैज्ञानिक रोनी कॉफमैन ने कहा कि जलवायु परिवर्तन सभी के लिए बड़ी चुनौती है। हमें गेहूं की सूक्ष्म पोषक तत्व और बायोफोर्टिफिकेशन वाली गेहूं की प्रजातियों पर काम करना होगा। भारत में ड्यूरम गेहूं को और बेहतर बनाकर इसका निर्यात किया जा सकता है।

मप्र के गेहूं को देंगे निर्यात में बढ़ावा : भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एके सिंह ने कहा कि अच्छी क्वॉलिटी का ब्रीडर सीड किसानों तक पहुंचाने की जरूरत है। मध्य प्रदेश में बहुत अच्छी गुणवत्ता का गेहूं होता है। यहां के गेहूं को निर्यात के उद्देश्य से बढ़ावा दिया जाएगा। देश-विदेश में गेहूं की मांग बढ़ रही है।

बेहतर काम करने वाले वैज्ञानिकों और किसानों का सम्मान

सम्मेलन के दौरान डॉ. महापात्रा के अलावा गेहूं अनुसंधान और उत्पादन में बेहतर काम करने वाले कृषि वैज्ञानिकों और किसानों को भी सम्मानित किया गया। इनमें क्षेत्रीय गेहूं अनुसंधान केंद्र के प्रभारी डॉ. साईप्रसाद और उनकी टीम, पंत नगर (उत्तराखंड) के डॉ. जयप्रकाश, मुरैना के किसान जयदीपसिंह तोमर, पंजाब के बहादुरसिंह जड़िया, हरियाणा के सुनील कालरा, गोरखपुर की महिला किसान कोयली देवी, बिलासपुर के राघवेंद्र सिंह चंदेल सहित अन्य वैज्ञानिक शामिल थे।

उप्र के एटा में जहरीली चाय से दो चचेरी बहनों की मौत

जासं, एटा : उप्र के एटा स्थित थाना निधौलीकलां क्षेत्र के गांव नगला सेवा में जहरीली चाय पीने से दो मासूम बहनों की मौत हो गई। परिवार के चार सदस्यों की हालत बिगड़ गई। गांव में बुजुर्ग महिला ने चाय बनाई थी। इसे पूरे परिवार ने पी लिया। थोड़ी ही देर बाद चाय पीने वालों को उल्टियां होने लगीं और उनकी हालत बिगड़ गई। योगेंद्र की पुत्री उर्वि और उसकी चचेरी बहन मुस्कान की हालत बिगड़ गई। ग्रामीण दोनों बच्चियों को लेकर एक निजी चिकित्सक के यहां पहुंचे। वहां उपचार के दौरान दोनों बच्चियों की मौत हो गई। वहीं परिवार के ही योगेंद्र, होशियार सिंह और योगेंद्र का पुत्र सुमित व एक अन्य भी बेहोश हो गए। इन्हें भी निजी चिकित्सक के यहां लाया गया। सबकी हालत गंभीर होने के कारण तत्काल इन्हें आगरा भेज दिया गया। पुलिस ने बताया कि चाय बच्चियों की दादी ने बनाई थी। उन्होंने चाय की पत्ती की जगह एक कीटनाशक पदार्थ धोखे से डाल दिया। इससे चाय जहरीली हो गई।

चारधाम यात्रा मार्ग पूरे दिन बाधित होता रहा यातायात

जागरण संवाददाता, देहरादून

▸ यमुनोत्री हाईवे दोपहर बाद सुचारू, अन्य अब भी बंद

▸ गंगोत्री मार्ग पर चुंगी बड़ेथी में पहाड़ी से गिर रहे पत्थर

चारधाम यात्रा मार्ग पूरे दिन बाधित होते रहे। बदरीनाथ, केदारनाथ और गंगोत्री में अब भी यही स्थिति है, जबकि यमुनोत्री मार्ग दोपहर बाद से सुचारू है। हालांकि बाधित राजमार्गों पर वैकल्पिक मार्गों से वाहनों की आवाजाही कराई गई।

चमोली और रुद्रप्रयाग में सुबह के समय बारिश होने के चलते बदरीनाथ और केदारनाथ हाईवे अवरुद्ध होने का क्रम शुरू हो गया था। बदरीनाथ हाईवे बीती रात से लामबगड़ में बंद था। इसे सुबह 10 बजे यातायात के लिए खोल दिया गया, लेकिन दोपहर दो बजे फिर से अवरुद्ध हो गया है। इस बीच, तीर्थ यात्रियों को पैदल मार्ग से बदरीनाथ रवाना किया गया। चमोली के पास क्षेत्रपाल में भी बदरीनाथ हाईवे ढाई घंटे बंद रहा। यहां सुबह 11 बजे हाईवे पर पहाड़ी से मलबा आ गया था, दोपहर डेढ़ बजे इसे साफ कर दिया गया।

केदारनाथ हाईवे बीते 24 घंटे से बांसवाड़ा में बंद चल रहा था, दोपहर इसे खोल दिया गया, लेकिन शेरसी और जामू में पूरे दिन दिक्कतें बनी रहीं।

दोपहर बाद यहां मार्ग खुल गया था, लेकिन जामू में शाम को फिर से पहाड़ी से मलबा आने की वजह से मार्ग अवरुद्ध हो गया। गंगोत्री हाईवे पर दोपहर बाद चुंगी बड़ेथी में वाहनों की आवाजाही रोक दी गई। यहां पहाड़ी से पत्थर गिर रहे हैं। जिससे यात्रियों के घायल होने का खतरा बना हुआ है।

वैकल्पिक मार्गों से यात्रियों को भेजा जा रहा है। यमुनोत्री मार्ग सुबह राणाचट्टी में बाधित था, सुबह लगभग 11:30 बजे इसे यातायात के लिए सुचारु कर दिया गया।

40 लाख नशीली गोलियां जब्त की गई हैं मणिपुर के थउबल जिले से। इन गोलियों का इस्तेमाल पार्टी ड्रग्स के रूप में किया जाता है। ये गोलियां म्यांमार से तस्करी कर लाई गई थीं। लिस ने म्यांमार के एक नागरिक को इंफाल एयरपोर्ट से गिरफ्तार कर लिया।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
सोमवार 26 अगस्त 2019

कश्मीर में सब शांत, 72 थाना क्षेत्रों में पाबंदी में ढील

सुधर रहे हालात ▶ डाउन-टाउन के तीन थाना क्षेत्रों में दिन की निषेधाज्ञा हटाई गई , सड़कों से कंटीले तारों को भी हटा लिया गया है

शरारती तत्वों के मंसूबों को नाकाम बनाने के लिए अब भी कड़ी सुरक्षा

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

कश्मीर घाटी में सुधरते हालात को देखते हुए प्रशासन ने रविवार को वादी में लगभग 72 थाना क्षेत्रों से दिन की पाबंदियां हटा ली गई हैं। हालांकि किसी भी अप्रिय घटना से बचने के लिए संवेदनशील इलाकों में सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध बरकरार रहे।

गौरतलब है कि पांच अगस्त को अनुच्छेद 370 हटाने के बाद से कश्मीर में उपजी कानून व्यवस्था की स्थिति के मद्देनजर प्रशासन ने आम लोगों के जानमाल की सुरक्षा को यकीनी बनाने के लिए पूरी वादी में प्रशासनिक पाबंदियां लागू कर दी थी। रविवार को अलगाववादियों के गढ़ डाउन-टाउन के तीन थाना क्षेत्रों में दिन की निषेधाज्ञा नहीं थी। इन थाना क्षेत्रों के अंतर्गत आने वाले इलाकों में सड़कों पर कंटीले तार भी हटा लिए गए। सड़कों पर आम लोगों की आवाजाही सामान्य रही। हालांकि अधिकांश दुकानें बंद रहीं, लेकिन वह हड़ताल या प्रशासनिक पाबंदियों के कारण बंद नहीं थीं। रविवार को छुट्टी होने के कारण दुकानें और अन्य व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद रहे। श्रीनगर में रविवार बाजार भी लगा, लेकिन दुकानदारों की संख्या कम रही। बारामुला, कुपवाड़ा, हंदवाड़ा, अनंतनाग, पुलवामा, शोपियां, कुलगाम, काजीगुंड, गांदरबल और बडगाम में स्थिति सामान्य रही। प्रशासनिक अधिकारियों ने बताया कि वादी में स्थिति पूरी तरह शांत है। विभिन्न इलाकों में सामान्य जिंदगी को पटरी पर लौटते देखा गया है। कई जगह फुटपाथ पर भी दुकानें सजी हुई थीं। शरारती तत्वों के मंसूबों को नाकाम बनाने के लिए सुरक्षा का कड़ा बंदोबस्त रहा।

श्रीनगर में रविवार को बंद पड़े मार्केट में सुरक्षा में तैनात सीआरपीएफ जवान। एएनआइ

सत्यपाल मलिक बोले, मोबाइल और इंटरनेट से कहीं ज्यादा जरूरी है इंसान की जान

राज्य ब्यूरो, जम्मू

राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने कहा कि जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 को हटाने के बाद से हिंसा में किसी की जान नहीं गई है। इंसानी जान नहीं जानी चाहिए। अगर संचार माध्यमों पर कुछ दिन के लिए अंकुश लगाने से जिंदगी बचाने में मदद मिलती है तो इसमें क्या नुकसान है। पूर्व में जब कश्मीर में संकट होता था, तो पहले ही हफ्ते में कम से कम 50 लोगों की मौत हो जाती थी। हमारा मानना है कि इंसानी जान नहीं जानी चाहिए। 10 दिन टेलीफोन नहीं होंगे तो क्या हो जाएगा, लेकिन हम बहुत जल्द लोगों को सभी सुविधाएं वापस कर देंगे।

राज्यपाल ने कहा कि ईद पर हमने लोगों के घरों में सब्जियां, अंडे और मीट पहुंचाया। आपकी राय 10-15 दिनों में बदल जाएगी। राज्यपाल सत्यपाल मलिक रविवार को पूर्व केंद्रीय वित्त मंत्री अरुण जेटली को श्रद्धांजलि देने के लिए दिल्ली पहुंचे थे। भाजपा मुख्यालय में श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए राज्यपाल ने जेटली को याद करते हुए कहा कि वह जेटली ही थे, जिन्होंने पिछले साल जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल की जिम्मेदारी लेने के लिए उन पर जोर डाला था। उन्होंने मुझसे कहा था कि यह ऐतिहासिक होगा। उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि उनकी ससुराल के लोग जम्मू से संबंधित हैं। जेटली की देश में शासन को बेहतर बनाने में अहम भूमिका रही है। उनके प्रयासों से जीएसटी लागू हो पाया। जेटली के निधन से देश को जो नुकसान पहुंचा है उसकी भरपाई कभी नहीं हो सकती।

सत्यपाल मलिक फाइल

दवाओं और जरूरी वस्तुओं की कमी नहीं : राज्यपाल ने कहा कि जम्मू कश्मीर में दवाओं और आवश्यक वस्तुओं की कोई कमी नहीं है। राज्य प्रशासन के अनुसार कश्मीर में 7,630 रिटेल और 4,331 होलसेल दवाइयों की दुकानें हैं। रविवार को पूरे कश्मीर में करीब 65 प्रतिशत दुकानें खुली रहीं। अकेले श्रीनगर में ही दवाइयों की 1,666 में से 1,165 दुकानें खुली थीं।

जम्मू-कश्मीर पर प्रियंका और राहुल गांधी ने केंद्र सरकार पर बोला हमला

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

जम्मू-कश्मीर को लेकर कांग्रेस का हमलावर रुख जारी है। पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी ने कश्मीर में राष्ट्रवाद के नाम पर लोगों के लोकतांत्रिक अधिकारों को कुचलने का आरोप लगाया है। उन्होंने सभी से इसके खिलाफ खड़े होने की अपील की है। उधर, पार्टी नेता राहुल गांधी ने कहा कि कश्मीर यात्रा के दौरान उन्हें उस बर्बरता का अहसास हुआ, जिसको कश्मीरी झेल रहे हैं।

कांग्रेस महासचिव ने रविवार को ट्वीट कर सरकार पर यह हमला राहुल गांधी की अगुआई में कश्मीर गए विपक्षी नेताओं को श्रीनगर हवाई अड्डे से दिल्ली लौटाए जाने के बाद किया है। प्रियंका ने इस दौरान उस वीडियो को भी ट्वीट किया है, जिसमें एक महिला फ्लाइट में राहुल गांधी से कश्मीर के हालात बयां करते दिख रही है। प्रियंका ने ट्वीट कर सरकार से पूछा है कि 'अभी वहां यह सब और कितने दिन चलने वाला है?' उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक अधिकारों को खत्म करने से ज्यादा राष्ट्र-विरोधी चीज और कुछ नहीं हो सकती हैं। हम सभी का कर्तव्य है कि इसके खिलाफ आवाज उठाएं। उन्होंने एक अन्य ट्वीट में कश्मीर के लोगों की ओर इशारा करते हुए कहा कि 'ये हमारे लाखों लोगों में से हैं जिन्हें राष्ट्रवाद के नाम पर कुचला जा रहा है।' उधर, खुद को श्रीनगर एयरपोर्ट से वापस भेजे जाने की घटना पर रविवार को राहुल ने ट्वीट किया। इसमें उन्होंने लिखा, 'जम्मू-कश्मीर के लोगों की आजादी और नागरिक स्वतंत्रता पर अंकुश लगाए 20 दिन हो चुके हैं। विपक्ष के नेताओं और प्रेस को प्रशासनिक क्रूरता और जम्मू-कश्मीर के लोगों पर किए जा रहे बल के बर्बर प्रयोग का अहसास तब हुआ, जब हमने शनिवार को श्रीनगर जाने की कोशिश की। ट्वीट के साथ कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने एक वीडियो भी शेयर किया, जिसमें दिख रहा है कि वह अधिकारियों को बताने का प्रयास कर रहे थे कि उन्हें राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने आमंत्रण दिया था। वीडियो में उन्हें यह भी आरोप लगाते हुए सुना जा रहा है कि प्रतिनिधिमंडल के साथ आए मीडियाकर्मियों को पीटा जा रहा है और बदसलूकी हो रही है।

अनुच्छेद 370 हटाने से पहले कश्मीर में हुई थी मॉकड्रिल

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर: जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद-370 हटाने से पहले पूरी वादी में प्रशासन और केंद्रीय अर्धसैनिक बलों ने मॉकड्रिल कर अपनी तैयारियों का जायजा लिया था। 25 जुलाई को हुई इस मॉकड्रिल में न सिर्फ महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की संचार सेवा को ठप किया गया बल्कि कुछ समय के लिए इंटरनेट सेवा को भी रोका गया। इसके बाद सभी सुविधाएं प्रदान करने से लेकर कानून व्यवस्था की स्थिति संभालने की कवायद की गई थी।

सूत्रों ने बताया कि केंद्रीय गृह मंत्रालय और राज्य प्रशासन के आला अधिकारियों ने पांच अगस्त को जम्मू कश्मीर का विशेषाधिकार समाप्त होने के बाद किसी भी अप्रिय घटना से निपटने के लिए जून के अंत में ही तैयारियां शुरू कर दी थीं। सभी तैयारियों को अंतिम रूप देने के बाद 25 जुलाई को मॉकड्रिल की गई। इसे गंभीर आपदा से निपटने की तैयारी का नाम दिया गया। इस दौरान तलाशी के नाम पर कुछ रास्तों और इलाकों की घेराबंदी भी की गई थी।

आतंकी खतरे का हवाला दे भेजीं 100 कंपनियां : मॉक ड्रिल की सफलता के बाद ही केंद्रीय गृह मंत्रालय ने आतंकी खतरे का हवाला देते हुए राज्य में केंद्रीय अर्धसैनिक बलों की लगभग 100 कंपनियों को भेजने की पहली अधिसूचना जारी की थी। मॉक ड्रिल के बाद लिए गए फैसलों के आधार पर ही सभी प्रमुख प्रशासनिक और पुलिस अधिकारियों, पुलिस थानों, चौकियों और अर्धसैनिक बलों को आपस में संपर्क बनाए रखने के लिए सेटेलाइट फोन की सुविधा प्रदान की गई थी।

पेयजल आपूर्ति केंद्रों की सुरक्षा बढ़ाई गई: जम्मू कश्मीर की संवैधानिक स्थिति में बदलाव के बाद उपजी स्थिति में सभी पेयजल आपूर्ति केंद्रों की सुरक्षा को बढ़ाया गया है। इसके लिए त्रिस्तरीय सुरक्षा चक्र बनाया गया है। पहले चक्र में केंद्रीय अर्धसैनिक बल, दूसरे में राज्य पुलिस और तीसरे में सेना के जवानों को तैनात किया गया है।

32 कश्मीरी छात्राओं के लिए दूत बनकर आए दिल्ली के युवा

गौतम कुमार मिश्रा, नई दिल्ली

▶ पुणे में नर्सिंग कोर्स कर रही 32 छात्राओं को उनके घर पहुंचाया

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत जम्मू-कश्मीर की 32 छात्राओं का दल पुणे में नर्सिंग का कोर्स कर रहा था। राज्य में अनुच्छेद 370 को निष्प्रभावी किए जाने के बाद वहां लगी पाबंदियों के कारण परिजनों से बात न होने से ये छात्राएं चिंतित हो उठीं। सोशल मीडिया पर तरह-तरह के पोस्ट वायरल होने से ये और भी परेशान थीं, लेकिन समझ में नहीं आ रहा था कि अपने घर कैसे पहुंचें?

उधेड़बुन में फंसी छात्राओं को तभी फेसबुक पर दिल्ली के तिलक नगर निवासी हरमिंदर सिंह अहलुवालिया का वीडियो पोस्ट नजर आया। हरमिंदर ने देशभर में रह रहे जम्मू-कश्मीर के लोगों को कहा कि यदि वे कहीं किसी परेशानी में हैं तो घबराएं नहीं, नजदीकी गुरुद्वारा में जाएं, वहां उनकी चिंताओं को दूर किया जाएगा। हरमिंदर ने अपना मोबाइल नंबर भी दिया था। छात्राओं के दल की सुपरवाइजर रुकैया ने उनके नंबर फोन कर मदद की गुहार लगाई।

किराये के लिए लोगों ने की मदद: हरमिंदर ने रुकैया को आश्वासन दिया था कि वे सभी को हवाई जहाज से श्रीनगर तक पहुंचा देंगे। लेकिन, रुकैया चाहती थीं कि छात्राओं को उनके घर तक पहुंचाएं। दल में पांच अलग-अलग जिले की अलग-अलग गांवों की छात्राएं थीं। हरमिंदर राजी हो गए। लेकिन, 33 लोगों को श्रीनगर हवाई जहाज से पहुंचाना कतई आसान नहीं था। सबसे पहले पैसे का इंतजाम जरूरी थी। हरमिंदर ने रुकैया का बैंक अकाउंट नंबर लिया और फेसबुक पर अपनी पूरी बात रखते हुए लोगों से मदद की अपील की। इसके बाद कई लोग पैसे देने के लिए आगे आए और खुलकर साथ दिया। इन सभी के बीच हरमिंदर के दो दोस्त पटेल नगर निवासी अरमीत सिंह खानपुरी व गीता कॉलोनी निवासी बलजीत सिंह बब्लू मदद के लिए आगे आए। तीनों ने तय किया कि वे सभी को लेकर श्रीनगर जाएंगे और उनके घर तक पहुंचाएंगे।

श्रीनगर में भी सामने आईं कई दिक्कतें: हरमिंदर बताते हैं कि 9 अगस्त को श्रीनगर में हवाई जहाज से उतरने के बाद नई परेशानियां सामने आने लगीं। छात्राओं को घर तक पहुंचाने के लिए टैक्सी का इंतजाम सबसे कठिन कार्य था। जिस भी टैक्सी वाले के पास जाते, वह मना कर देता था। संयोग से बशीर नाम का एक टैक्सी ड्राइवर राजी हो गया, लेकिन 36 लोग एक टैक्सी में नहीं आ सकते थे। बशीर ने अन्य दो टैक्सी वालों को तैयार किया। एक-एक कर सभी छात्राओं को 11 अगस्त तक उनके घर पहुंचा दिया गया। बेटियों के पहुंचते ही घरों में बकरीद की रौनक छा जाती। लोग शुक्रिया कहते नहीं थकते।

श्रीनगर में सैन्य अधिकारी के साथ बाएं से अरमीत सिंह खानपुरी, हरमिंदर सिंह अहलूवालिया व बलजीत सिंह बब्लू। फोटो : हरमिंदर सिंह अहलूवालिया द्वारा उपलब्ध

रनवे नहीं था खाली, राहुल के विमान को लगाने पड़े चक्कर

नई दिल्ली, एएनआइ : कांग्रेस नेता राहुल गांधी समेत अन्य विपक्षी नेताओं को श्रीनगर से ला रहे विमान को दिल्ली हवाई अड्डे पर रनवे खाली नहीं होने के कारण आसमान में चक्कर लगाने पड़े। इससे यात्रियों में अफरातफरी मच गई। कुछ देर बाद विमान की लैंडिंग के बाद यात्रियों ने राहत की सांस ली। विमानन कंपनी ने घटना की पुष्टि की है।

गौरतलब है कि अनुच्छेद-370 खत्म होने के बाद श्रीनगर के हालात का जायजा लेने के लिए विपक्षी नेताओं का एक प्रतिनिधिमंडल शनिवार को वहां गया था, लेकिन स्थानीय प्रशासन ने उन्हें श्रीनगर एयरपोर्ट से बाहर जाने की अनुमति नहीं दी और एक घंटे बाद सभी को दिल्ली वापस भेज दिया गया। इन नेताओं को गो-एयर की फ्लाइट संख्या जी8-149 से रवाना किया गया था। विमान में राहुल गांधी, गुलाम नबी आजाद, राजद के मनोज झा, माकपा महासचिव सीताराम येचुरी और कई अन्य वरिष्ठ नेताओं सहित 100 से अधिक यात्री सवार थे। दिल्ली पहुंचने के बाद विमान हवाई अड्डे पर लैंडिंग को तैयार था और इसकी घोषणा भी हो चुकी थी, लेकिन इसी बीच आसमान में चक्कर लगाने लगा। इससे नेता ही नहीं विमान में सवार यात्री घबरा गए। कुछ मिनट बाद पायलट ने यात्रियों को सूचित किया कि रनवे की अनुपलब्धता के चलते विमान लैंड नहीं कर सका और वह एक बार फिर से लैंड करने जा रहे हैं। पायलट ने कहा कि विमान में खराबी नहीं है और असुविधा के लिए खेद जताते हैं।

रैगिंग के आरोपित छात्रों को मिल सकती है राहत

जागरण संवाददाता, इटावा

▶ उप्र आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय सैफई में रैगिंग का मामला

▶ कुलपति ने दिए संकेत, एफआइआर के फैसले पर पुनर्विचार संभव

उत्तर प्रदेश आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय सैफई में रैगिंग में दोषी पाए गए 2018 बैच के सात छात्रों के खिलाफ एफआइआर के फैसले पर पुनर्विचार हो सकता है। इस बात के संकेत रविवार को कुलपति प्रो. राजकुमार ने दिए।

कुलपति ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट की गाइड लाइन के अनुसार देखेंगे कि मामले में एफआइआर जरूरी है या नहीं। छात्रों के करियर का सवाल है। ऐसे में कानूनी सलाह लेकर कार्रवाई की जाएगी। कुलपति ने यह भी कहा कि फैक्ट फाइंडिंग कमेटी जांच करना चाहे तो कर सकती है। उसकी जांच रिपोर्ट भी शासन को जाएगी। यह भी दोहराया कि दो दिन पूर्व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात के दौरान उन्हें विश्वविद्यालय की सुरक्षा से अवगत कराया गया है।

फैक्ट फाइंडिंग कमेटी करेगी जांच : रैगिंग प्रकरण में मुख्यमंत्री के निर्देश पर गठित फैक्ट फाइंडिंग कमेटी सोमवार को विश्वविद्यालय पहुंचकर जांच करेगी। कमेटी के अध्यक्ष सीडीओ ने बताया कि दो दिन अवकाश होने के कारण जांच नहीं की जा सकी। सोमवार को जांच की जाएगी। मालूम हो कि सैफई मेडिकल कॉलेज में प्रवेश लेने वाले नए छात्रों के साथ सीनियर्स ने रैगिंग की थी। अनुसाशनहीनता का आरोप लगाकर उनके सिर तक मुंडवा दिए थे। साथ ही सड़क पर सिर झुकाकर चलने को भी कहा था।

इन बिंदुओं पर मांगी गई रिपोर्ट

- सैफई मेडिकल यूनिवर्सिटी में 20 अगस्त को जूनियर छात्रों के साथ किया गया कृत्य रैगिंग की श्रेणी में आता है या नहीं।
- एंटी रैगिंग कमेटी, मॉनिटरिंग सेल व एंटी रैगिंग स्क्वॉड की क्या भूमिका रही।
- लंबे समय से रैगिंग की रोकथाम न होने के लिए कौन जिम्मेदार है।
- भविष्य में ऐसी घटना न हो, इसके लिए क्या कदम उठाए जाने चाहिए।

अल्पसंख्यक मंत्रालय की टीम तलाशेगी कश्मीर में विकास की संभावनाएं

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्रीय मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी ने कहा है कि अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय की एक टीम मंगलवार को कश्मीर घाटी जाएगी। दो दिवसीय दौरे में यह टीम राज्य से अनुच्छेद 370 को हटाए जाने के बाद केंद्रीय योजनाओं के क्रियान्वयन की संभावनाओं की पहचान करेगी। यह टीम बाद में जम्मू और लद्दाख का भी दौरा करेगी।

नकवी ने एजेंसी के साथ खास बातचीत में कहा, 'सचिव समेत वरिष्ठ अधिकारियों की एक टीम 27-28 अगस्त तक कश्मीर घाटी का दौरा करेगी। टीम वहां विकास की संभावनाओं का पता लगाएगी और जानकारी हासिल करेगी कि स्कूल, कॉलेज व कौशल विकास केंद्र आदि कहां खोले जा सकते हैं।' उन्होंने कहा कि जो लोग राज्य के पुनर्गठन का 'राजनीतिक पूर्वाग्रह' से विरोध कर रहे हैं, इसके प्रभाव को देखने के बाद वे भी समर्थन में आ जाएंगे। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि मंत्रालय का पूरा ध्यान जम्मू-कश्मीर व लद्दाख पर है। अनुच्छेद 370 के प्रावधानों को हटाए जाने के बाद वहां बड़े पैमाने पर विकास की संभावनाएं विकसित होंगी। अल्पसंख्यकों के विकास के लिए बने प्रधानमंत्री जन विकास कार्यक्रम (पीएमजेवीके) का भी दोनों राज्यों में क्रियान्वयन होगा।

छह दिन की न्यायिक हिरासत में भेजे गए अनंत

जागरण टीम, पटना

घर से एके-47 की बरामदगी मामले में दिल्ली के साकेत कोर्ट में सरेंडर करने वाले मोकामा (पटना, बिहार) विधायक अनंत सिंह को पटना पुलिस की टीम रविवार सुबह विमान से पटना लेकर आई। कड़ी सुरक्षा में विधायक को कैदी वाहन से लेकर पुलिस बाढ़ अनुमंडल कोर्ट गई। अदालत में उन्हें पेश किया गया। पेशी के बाद कोर्ट ने छह दिनों की न्यायिक हिरासत में आदर्श केंद्रीय कारा बेउर दिया। दोपहर 12 बजे पुलिस विधायक को लेकर बेउर जेल पहुंची। बाढ़ कोर्ट परिसर पुलिस छावनी में तब्दील था। ग्रामीण एसपी कांतेश मिश्र ने कहा कि न्यायालय के आदेश का पालन किया जा रहा है। इससे पूर्व हवाईअड्डे की सुबह चार बजे से ही पुलिस ने घेराबंदी कर दी थी, ताकि विधायक के समर्थक हंगामा न कर सकें। सूत्रों के अनुसार शनिवार को रातभर दिल्ली में इंदिरा गांधी एयरपोर्ट पर पटना पुलिस की पहरेदारी में विधायक को रखा गया।

एयरपोर्ट पर यात्रियों से उलझे पुलिसकर्मी : पटना में पुलिसकर्मियों ने एयरपोर्ट के बाहरी परिसर को घेर रखा था। यात्रियों और मीडियाकर्मियों को पोर्टिको में आने नहीं दिया जा रहा था। कई यात्री आक्रोशित हो गए। भारी सामान के एक यात्री ने कार को पोर्टिको में ले जाने की जिद कर दी। पुलिसकर्मी उससे उलझ गए। पुलिसकर्मियों की हरकत देख दूसरे यात्री भी आक्रोशित हो गए और हंगामा करने लगे। इसके बाद पोर्टिको में प्रवेश करने दिया गया।

एसीजेएम ने पूछा- आपको कोई शिकायत तो नहीं : कोर्ट में प्रभारी अपर मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी (एसीजेएम) पंकज कुमार तिवारी ने विधायक अनंत सिंह से पूछा- आप ठीक हैं? आपको कोई शिकायत है? इस पर विधायक ने जवाब दिया - चार दिन पहले हल्का बुखार था, अब ठीक हैं। कोई शिकायत नहीं है। इस बीच विधायक के अधिवक्ता ने न्यायालय में आवेदन देकर अनुरोध किया कि अभी अनंत सिंह को पुलिस रिमांड पर नहीं दिया जाए। सूत्र बताते हैं कि पुलिस ने चार दिन की रिमांड की अर्जी दी थी।

लेकिन, न्यायालय ने बाद में रिमांड के लिए आवेदन देने को कहा। 30 अगस्त को विधायक न्यायालय में हाजिर होंगे। मोकामा से निर्दलीय विधायक को पुश्तैनी घर में एके-47, ग्रेनेड और कारतूस रखने के आरोप में दर्ज कांड संख्या 389/19 के तहत जेल भेजा गया है।

उतर गया काला चश्मा और चेन : हमेशा काला चश्मा और गले में मोटी चेन के साथ दिखने वाले अनंत सिंह इस बार पुराने अंदाज में नजर नहीं आए। पटना एयरपोर्ट से बाढ़ और वहां से बेउर जेल तक उन्हें पहुंचाने के लिए दो कैदी वाहन का इस्तेमाल किया गया। साथ ही पुलिस की 22 गाड़ियां साथ में चल रही थीं।

जेल में नहीं मिला वीआइपी ट्रीटमेंट : बाहुबली विधायक अनंत सिंह को आदर्श केंद्रीय कारा बेउर में वीआइपी ट्रीटमेंट नहीं मिला। उन्हें पूर्व की तरह डिविजन वार्ड में रखा गया है। अनंत सिंह के जेल में पहुंचते ही कैदियों ने पुलिस-प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की और विधायक के समर्थन में नारे लगाए। सख्ती के बाद कैदियों ने नारेबाजी बंद की।

कैदी वाहन से निकलकर बेउर जेल के भीतर जाते हुए मोकामा के विधायक आनंत सिंह। जागरण

फैसला जो भी हो, मंदिर अयोध्या में ही बनेगा : परांडे

जागरण संवाददाता, लुधियाना : विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय महामंत्री मिलिंद परांडे ने श्रीराम जन्मभूमि को लेकर सुप्रीम कोर्ट में रोजाना हो रही सुनवाई पर खुशी जाहिर की है। उन्होंने कहा कि फैसला जो भी हो, मंदिर जन्म स्थल पर ही बनेगा।

सदस्यता अभियान के तहत रविवार को लुधियाना पहुंचे परांडे ने कहा कि अयोध्या हिंदुओं की आस्था का केंद्र है। उन्हें उम्मीद है कि सुप्रीम कोर्ट भी हाई कोर्ट के आदेश को बरकरार रखेगा और वहां पर मंदिर बनाने की अनुमति दे देगा। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर की स्थिति पर विपक्षी दलों को राजनीति की बजाय वहां के हालात को समझना चाहिए। राहुल गांधी ने श्रीनगर जाकर बचकानी हरकत की है। परांडे ने बताया कि पंजाब में ईसाई मिशनरी धर्मांतरण कर रही है और अब उनके निशाने पर सिख समुदाय है। गुरदासपुर, अमृतसर, पठानकोट, लुधियाना सहित अन्य जिलों में ऐसे कई मामले उनके ध्यान में आए हैं। उन्होंने पंजाब सरकार से मांग की कि धर्मांतरण रोकने के लिए ठोस कानून बनाया जाए। वहीं सदस्यता अभियान के बारे में उन्होंने कहा कि देशभर में 51 लाख हिंदुओं को संगठन से जोड़ने का लक्ष्य है।

पहल

उत्तर प्रदेश के बादां की पहल, यहां एसडीएम जमानत स्वीकृति से पूर्व भरवातीं पांच पौधे लगाने का शपथपत्र, तहसील कर्मियों और प्रधानों के जरिए तस्दीक करातीं पौधरोपण, शांति भंग व मारपीट के आरोपितों ने अब तक रोपे 500 से ज्यादा पौधे

शांतिभंग के गुनहगारों को 'हरियाली' की सजा

जागरण संवाददाता, बांदा

मामला शांतिभंग का हो या पड़ोसी से झगड़े का, आरोपित को जमानत तभी मिलेगी जब पांच पौधे लगाने का शपथपत्र देंगे। हरियाली बढ़ाने की यह सार्थक पहल उप जिलाधिकारी (एसडीएम) नरैनी वंदिता श्रीवास्तव ने की है। जमानत होने के बाद तहसीलकर्मी और प्रधान पौधारोपण की तस्दीक भी करते हैं। पहल रंग लाने लगी है और अब तक पांच सौ पौधे लगाए जा चुके हैं।

जनपद में वन क्षेत्र मानक 33 फीसद के बजाय महज ढाई फीसद ही है। पेड़ गायब होते जा रहे हैं। हर साल पौधे रोपित होते हैं पर देखरेख के अभाव में मुरझा जाते हैं। तहसील क्षेत्र में हरियाली बढ़ाने और पर्यावरण संतुलन के लिए एसडीएम की पौधारोपण की पहल की। तहसील में अक्सर शांतिभंग, 107-16 व मारपीट के मामले आते हैं। एसडीएम उन्हें मुचलके पर जमानत देते हैं लेकिन अब एसडीएम वंदिता ने जमानत में पौधारोपण शपथपत्र की बाध्यता है। ये अन्य तहसीलों के लिए भी नजीर है। एसडीएम अब आरोपितों को जमानत देने के पूर्व संकल्प दिलाती के साथ ही शपथपत्र लेती हैं कि आपस में वाद-विवाद न पैदा करेंगे। अपने क्षेत्रों में पांच-पांच पौधे लगाकर नियमित देखभाल भी करेंगे।

परिसर में पौधों की करतीं देखरेख : बीती नौ अगस्त को पौधारोपण महाभियान में तहसील परिसर में तीन सौ से ज्यादा पौधे रोपे गए थे। एसडीएम रोज दफ्तर पहुंचने के बाद उनकी नियमित देखभाल करती हैं। अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी पर्यावरण संरक्षण की नसीहत देती हैं।

प्रतीकात्मक

सप्ताह के आरोपित व पौधारोपण

आरोपित	ग्राम	धारा	रोपित पौधे
रामकिशोर	मनीपुर	151	5
कमल किशोर	जवाहर नगर	151	5
नन्ना	बसराही	151	5
मो .हनीफ	कल्हरा	151	5

अभियान के तहत आरोपित 500 पौधे लगा चुके हैं। तहसील कर्मियों और प्रधानों के जरिए पौधारोपण के बाबत जानकारी ली जाती है। रोपण के बाद पौधे की क्या स्थिति है, यह बताने के लिए आरोपित खुद भी फोटो कराकर तहसील लाता है। उसे जमानत की पत्रावली में संलग्न कराते हैं।
-वंदिता श्रीवास्तव, एसडीएम

नरैनी एसडीएम का यह कदम सराहनीय है। ऐसी पहल सभी अधिकारियों को करनी चाहिए ताकि जिले को हरा-भरा व स्वच्छ बनाया जा सके। इससे निश्चित तौर पर पर्यावरण समृद्ध होगा।
हीरालाल, डीएम-बांदा

सरयू नदी में 45 किमी बहने पर भी सुरक्षित रहा बुजुर्ग

जागरण संवाददाता, बस्ती : भगवान राम की नगरी अयोध्या आए बुजुर्ग के साथ हुई घटना आश्चर्य में डालने वाली है। दरअसल, सरयू नदी की धारा में 45 किमी तक बहने के बाद भी महाराष्ट्र के जलगांव जिले के रहने वाले मगननारायण पाटिल (60) की जान बच गई। वह रामलला के दर्शन करने आए थे। शुक्रवार को सरयू में हाथ-पैर धोते समय फिसलकर वह तेज धारा के साथ बहते चले गए थे। सोशल मीडिया में वीडियो वायरल होने से मामला चर्चा में आया।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक नदी में 45 किमी दूर बहकर मगननारायण सरयू नदी पार देवारागंग बरार गांव के पास एक पेड़ की डाली पकड़ कर खुद को बचाने का प्रयास कर रहे थे। ग्रामीणों की नजर उन पर पड़ी तो नाव के जरिए सुरक्षित निकालकर गांव ले गए। गांव निवासी राजेंद्र व बाबूराम ने बताया कि वह ठंड से कांप रहे थे। अलाव जलाकर खूब तपाया गया। कुछ देर बाद गांव के लोगों ने उनको नहलाकर साफ कपड़े पहनाए और भोजन कराया।

आठ लाख के इनामी नक्सली ने किया आत्मसमर्पण

नईदुनिया, दंतेवाड़ा

नक्सलियों के मलांगिर एरिया कमेटी में तैनात मिलिट्री प्लाटून नंबर 24 के डिप्टी कमांडर ने रविवार को पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। उस पर आठ लाख रुपये का इनाम घोषित था।

सुकमा जिले के जगरगुंडा (ग्राम दुरमा) निवासी मुचाकी बुदरा उर्फ नरेश (32) ने आत्मसमर्पण के बाद कहा कि नक्सलियों की विचारधारा से तंग आकर उसने यह निर्णय लिया। कुआकोंडा के ग्राम नकुलनार के कांग्रेस नेता अवधेश गौतम के घर पर हमला, वर्ष 2012 में चेकपोस्ट के पास जवानों के वाहन पर हमला कर वाहन चालक और छह जवानों को शहीद करने, जवानों के हथियार लूटने, ग्राम समेली बोडेपारा के पास एंबुश लगाकर सीआरपीएफ जवानों पर हमला, एंटी लैंडमाइंस वाहन को विस्फोट से उड़ाने, वर्ष 2012 में ग्राम बड़ेबेड़मा में सोनी सोरी के पिता मुंडरा सोरी के घर पर हमला समेत कई अन्य घटनाओं में वह शामिल रहा। एसपी डॉ. अभिषेक पल्लव ने कहा कि मुचाकी को पुनर्वास नीतियों के तहत सुविधाएं मुहैया कराई जाएंगी।

मौसम बना बाधा, इलाज के अभाव में घायल जवान शहीद

नारायणपुर, नईदुनिया प्रतिनिधि : अबूझमाड़ के गुमरका और धुरबेड़ा के जंगल में शनिवार सुबह नक्सलियों के साथ हुई मुठभेड़ में घायल डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड (डीआरजी) का जवान राजू नेताम आखिरकार शहादत को प्राप्त हुआ। बारिश के चलते हेलीकॉप्टर नहीं उतर पाने के कारण उसे समय पर इलाज नहीं मिल पाया। पत्नी की मौजूदगी में पुलिस लाइन में अंतिम सलामी देने के बाद उसका पार्थिव शरीर गृहग्राम नेसलनार रवाना कर दिया गया। वहीं दूसरे घायल जवान सोमारू गोटा को रायपुर रेफर किया गया है। बताया जाता है कि रास्ते में राजू ने अंतिम सांस ली।

18 वां दल कैलास मानसरोवर यात्रियों का आधार शिविर धारचूला पहुंच चुका है। यह अंतिम दल है। इस दल में 25 पुरुष और आठ महिलाएं शामिल हैं।

गगनयान अभियान में मदद को रूस ने बढ़ाया हाथ

▸ क्रायोजनिक इंजन टेक्नालोजी समेत अन्य महत्वपूर्ण उपकरण देने का प्रस्ताव

चेन्नई, आइएएनएस : भारत के महत्वाकांक्षी अभियान गगनयान में मदद को रूस ने हाथ बढ़ाया है और इसके लिए उसने भारत को क्रायोजनिक इंजन देने का प्रस्ताव किया है।

रूस की सरकारी एजेंसी स्पेस कारपोरेशन 'रोस्कोसमोस' ने कहा कि भारत रूस से जल्द अपने गगनयान अभियान को लेकर बात करनेवाला है। भारत रूस से गगनयान के लिए कई जरूरी उपकरण खरीदना चाहता है। इसमें गगनयान में लगनेवाली वैज्ञानिकों के लिए सीटें, खिड़कियां तथा वो पोशाक प्रमुख हैं जो अंतरिक्ष यात्रा पर वैज्ञानिक पहनते हैं।

'रोस्कोसमोस' के मुताबिक, इस संबंध में 4 से 6 सितंबर के बीच रूस के व्लादिवोस्तोक में ईस्टर्न इकोनामिक फोरम की बैठक के दौरान उच्च स्तरीय वार्ता हो सकती है। 21 अगस्त को मास्को में भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल तथा महानिदेशक डिमिट्री रोगोजिन के बीच हुई बातचीत के बाद 'रोस्कोसमोस' ने एक बयान में कहा कि इस वार्ता में अंतरिक्ष अभियान, उपग्रह नेविगेशन तथा इंजन टेक्नालोजी समेत कई अन्य महत्वपूर्ण सहयोग पर विचार-विमर्श किया जाएगा।

दोनों देशों के उच्च अधिकारियों के बीच भारत की अंतरिक्ष एजेंसी इसरो और रूस की ग्लावकोसमोस के बीच व्यापक सहयोग और चार भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिकों को यूरी गागरिन अंतरिक्ष प्रशिक्षण केंद्र में ट्रेनिंग देने पर चर्चा हुई। इस संबंध में अगस्त माह के अंत तक एक समझौते पर हस्ताक्षर हो सकते हैं। 'रोस्कोसमोस' ने कहा कि भारत अपने पहले मानव अंतरिक्ष अभियान गगनयान को 2022 में लांच करने की तैयारी कर रहा है।

इस बीच इसरो के अध्यक्ष के.सिवन ने रविवार को एक साक्षात्कार में कहा कि रूस ने भारत को अंतरिक्ष टेक्नालोजी के साथ-साथ सेमी क्रायोजनिक इंजन टेक्नालोजी देने का भी प्रस्ताव किया है। इसके अतिरिक्त गगनयान के लिए अन्य महत्वपूर्ण उपकरण एवं सामान भी देने का प्रस्ताव किया है। उन्होंने बताया कि रूस ने सेमी क्रायोजनिक राकेट इंजन टेक्नालोजी को भारत को 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के तहत देने का प्रस्ताव किया है। राकेट इंजन को भारत में ही बनाया जाएगा और उसका इस्तेमाल हम अपने राकेट में करेंगे। सिवन ने कहा कि दोनों देश अपने-अपने यहां ग्राउंड स्टेशन की भी स्थापना करेंगे। रूस में भारत का ग्राउंड स्टेशन मास्को में तो रूस का भारत में ग्राउंड स्टेशन बेंगलुरु में स्थापित होगा। इससे उपग्रह नेविगेशन सिग्नल अचूक और सटीक होंगे।

रूस ने भारत को क्रायोजनिक इंजन देने का प्रस्ताव दिया है। प्रतीकात्मक

सात सितंबर को चंद्रमा पर उतरेगा लैंडर विक्रम

इसरो प्रमुख के.सिवन ने कहा कि फिलहाल हम अपना सारा ध्यान अपने चंद्रयान-2 अभियान पर लगा रहे हैं जो अभी चंद्रमा की कक्षा में परिक्रमा कर रहा है। सात सितंबर को अलग होकर लैंडर विक्रम रात में करीब 1.55 बजे चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव में उतरेगा। ऐसा करने वाला भारत विश्व का पहला देश होगा।

दक्षिण कोरिया की रानी हो पर डाक टिकट जारी

जागरण संवाददाता, अयोध्या : भारत-दक्षिण कोरिया के रिश्तों को नया मुकाम मिला है। डाक विभाग ने अयोध्या की राजकुमारी व रानी हो पर अलग-अलग डाक टिकट जारी किया है। इसे निदेशक डाक सेवाएं केके यादव ने रविवार को राजा अयोध्या विमलेंद्र मोहन प्रताप मिश्र व महापौर ऋषिकेश उपाध्याय को भेंट किया। आम लोगों के लिए यह डाक टिकट प्रधान डाकघर में सुलभ रहेगा।

डाक टिकट पर अयोध्या की राजकुमारी एवं महारानी कोरिया के अलग-अलग चित्र हैं। राजकुमारी पर जारी डाक टिकट की कीमत 25 रुपये व रानी हो पर जारी टिकट का मूल्य पांच रुपये रखा गया है। इसी साल मार्च में रानी हो स्मारक पर विशेष आवरण जारी किया जा चुका है।

निदेशक डाक सेवाएं ने कहा कि दक्षिण कोरिया और अयोध्या का रिश्ता सदियों पुराना है। अयोध्या की राजकुमारी दक्षिण कोरिया की महारानी बनीं थीं। इस रिश्ते को और मजबूती दी जाएगी। उन्होंने कहाकि भारत और दक्षिण कोरिया के मध्य यह डाक टिकट सांस्कृतिक दूत के समान कार्य करेगा।

सीएस प्रोफेशनल में तान्या कथूरिया देश में अव्वल

जागरण संवाददाता, कानपुर

द इंस्टीट्यूट ऑफ कंपनी सेक्रेट्री ऑफ इंडिया ने रविवार को सीएस फाउंडेशन, एक्जीक्यूटिव व प्रोफेशनल का परिणाम जारी कर दिया। सीएस प्रोफेशनल में कानपुर के मेधावियों ने अपनी शानदार सफलता का परचम लहराया है। शहर के लाल बंगला के समीप चाउखेड़ा निवासी तान्या कथूरिया ने देश में अव्वल स्थान पाया है।

सीएस प्रोफेशनल की परीक्षा में कानपुर से 250 छात्र-छात्राएं शामिल हुए थे, जिनमें 11 सफल घोषित किए गए हैं। इस वर्ष देश में सीएस प्रोफेशनल का परीक्षा परिणाम करीब 27 फीसद रहा है। इसके पुराने पाठ्यक्रम में 27.13 फीसद और नए पाठ्यक्रम में 27.82 फीसद छात्र-छात्राएं सफल हुए। सीएस एक्जीक्यूटिव के पुराने पाठ्यक्रम में 11.51 फीसद छात्र छात्राओं ने सफलता प्राप्त की है जबकि नए में 10.22 फीसद छात्र-छात्राएं सफल हुए हैं। संस्थान के कानपुर चेप्टर में हुए कार्यक्रम में चेयरमैन गोपेश साहू ने बताया कि सीएस के एक्जीक्यूटिव व प्रोफेशनल प्रोग्राम की अगली परीक्षाएं 20 दिसंबर से 30 दिसंबर के बीच होंगी।

सीएस प्रोफेशनल की परीक्षा में ऑल इंडिया में प्रथम रैंक पाने वाली तान्या कथूरिया। जागरण

प्रोफेशनल प्रोग्राम (पुराना पाठ्यक्रम)
1. तान्या कथूरिया, 2. कामोदिनी भरतिया, 3. रीतेश आग्रवाल

प्रोफेशनल प्रोग्राम (नया पाठ्यक्रम)
1. कीर्ति खंडेलवाल, 2. हर्षा चोपानी, 3. रूपल गुप्ता

एक्जीक्यूटिव प्रोग्राम (पुराना पाठ्यक्रम)
1. खुशी अग्रवाल, 2. नारायणचेट्टि आकर्ष, 3. आयुष कामेदिया

एक्जीक्यूटिव प्रोग्राम (नया पाठ्यक्रम)
1. गोकुल आर, 2. दर्शन पी, 3. निखिता अनिरुद्ध कडकोल

न्यूज गैलरी

ओडिशा में समुद्री ज्वार से बचाने के लिए लगा सिंथेटिक ट्यूब जलकर खाक

जियो सिंथेटिक ट्यूब में लगी आग बुझाते दमकल कर्मचारी। जागरण

भुवनेश्वर : केंद्रापाड़ा जिले के राजनगर थाना अंतर्गत पेंठ गांव के पास समुद्र के किनारे लगाए गए जियो सिंथेटिक ट्यूब में अचानक आग लग गई, जिसमें 15 से 20 फीट तक सिंथेटिक ट्यूब जल कर खाक हो गया। आग के कारणों का पता नहीं चल सका है। उल्लेखनीय है कि राजनगर समुद्री तट के किनारे बसे 54 गांवों को समुद्री ज्वार से बचाने के लिए यह जियो सिंथेटिक ट्यूब लगाए गए हैं। केंद्र सरकार ने इसके लिए 33 करोड़ रुपये दिए थे। 506 मीटर वाले क्षेत्र में इसका निर्माण कराया गया था। यह देश का दूसरा इस तरह का सिंथेटिक ट्यूब प्रोजेक्ट है, जबकि ओडिशा का यह पहला प्रोजेक्ट है। पुलिस मामला दर्ज कर आग लगने के कारणों का पता लगाने में जुटी है। बताया जा रहा है कि शनिवार देर रात में लगी आग पर रविवार अलसुबह कुछ स्थानीय लोगों की नजर पड़ी तो उन्होंने दमकल विभाग को सूचित किया। इसके बाद दमकल विभाग की टीम ने मौके पर पहुंच कर आग को बुझाया। आग कैसे लगी, यह फिलहाल स्पष्ट नहीं हो सका है। आशंका जताई जा रही कि किसी व्यक्ति ने अनजाने में सिगरेट पीकर वहां पर फेंक दिया होगा। जिसने धीरे धीरे आग का रूप धारण कर लिया होगा। (जेएनएन)

बंगाल में घर के सामने पार्षद की गोली मारकर हत्या

आसनसोल : शनिवार देर रात अपराधियों ने बंगाल के आसनसोल में पार्षद खालिद खान की ताबड़तोड़ गोलियां बरसाकर हत्या कर दी। इस मामले में मृतक के भाई अरमान ने तीन लोगों के खिलाफ नामजद प्राथमिकी दर्ज कराई है। नामजद आरोपित टिंकू शेख को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। जबकि दो अन्य आरोपित शेख कादिर व शेख शाहिद फरार बताये जाते है। तीनों ही आरोपित सगे भाई है और मृतक के मौसेरे भाई है। आरोपित भी मनबड़िया में ही रहते है। शेख कादिर युवा तृकां का नेता भी है। मृतक पर इससे पहले भी जानलेवा हमला हो चुका था। वहीं इस मामले को लेकर इलाके में भारी तनाव व्याप्त है। रविवार की सुबह आक्रोशित लोगों ने मनबड़िया की ओर आने वाली सड़कों को झाड़ियां रखकर व टायर जलाकर बंद कर दिया। लोगों ने बराकर बाजार को भी बंद कर दिया। (जासं)

पाकिस्तान से आ रहे पानी से टेंडीवाला बांध को खतरा

प्रयास तेज ▸ फिरोजपुर में बांध की मरम्मत का काम युद्धस्तर पर

सेना के जवानों, नहरी विभाग और ग्रामीणों ने बांध की दरार भरने को झोंकी ताकत

जेएनएन, जालंधर

सतलुज में पाकिस्तान की तरफ से आ रहे पानी के कारण भारत-पाक सीमा से सटे फिरोजपुर के गांव टेंडीवाला में बांध को खतरा पैदा हो गया है। हालांकि, सेना के जवानों, नहरी विभाग और ग्रामीणों ने बांध की दरार भरने को पूरी ताकत झोंक दी है, जिससे रविवार को फिरोजपुर के मक्खू व हुसैनीवाला के आसपास दरिया का पानी घटने लगा है। यहां दरिया के पानी का स्तर करीब डेढ़ फुट तक कम हो गया है। बांध की मरम्मत का काम युद्धस्तर पर जारी है। रेत के बैग क्षतिग्रस्त हिस्से पर लगाए जा रहे हैं।

रविवार को हुसैनीवाला हेड से सिर्फ 65 हजार क्यूसिक पानी ही छोड़ा गया। हालांकि, फिरोजपुर के 21 व फाजिल्का के 18 गांव अब भी बाढ़ की चपेट में हैं। यहां अब बाढ़ की चपेट में आकर मरे पशुओं को हटाना मुश्किल हो रहा है। वहीं, पाकिस्तान ने भी अपने क्षेत्र से चमड़ा उद्योगों का पानी दरिया में छोड़ दिया है।

फिरोजपुर जिले में सतलुज में आई बाढ़ के कारण कई गांवों में अभी भी पानी भरा हुआ है। लोगों की मदद के लिए बोट पर जाते सेना के जवान। जागरण

इससे बाढ़ प्रभावित गांवों में बीमारियां फैलने का खतरा बढ़ गया है। डिप्टी कमिश्नर चंद्र गैंद ने बताया कि टेंडीवाला बॉर्डर का आखिरी गांव है, जहां पाकिस्तान की ओर से घूमकर आ रही सतलुज नदी में भारी मात्रा में पानी आ गया है। ऐसा पाकिस्तानी क्षेत्र में बनाए गए बांध से पानी रिवर्स होने के कारण हो रहा है। इस पानी के कारण गांव टेंडीवाला में सतलुज के बांध को नुकसान पहुंचा है। बांध का काफी हिस्सा क्षतिग्रस्त हुआ है। आसपास के कुछ गांवों में एहतियात के तौर पर अनाउंसमेंट करवा दी गई है, ताकि किसी भी आपदा से निपटा जा सके।

रावी में जलस्तर बढ़ने से नाव बंद

रावी दरिया का जलस्तर बढ़ने से रविवार को पठानकोट के नरोट जैमल सिंह के निकट कीड़ी पत्तन पर चलने वाली नाव बंद हो गई। इससे रावी से सटे गांवों के लोगों को पठानकोट आने के लिए 15 किलोमीटर अतिरिक्त सफर तय करना पड़ रहा है।

रामपुर में अनुसूचित जाति की महिलाओं को मंदिर जाने से रोका, तनाव

जागरण संवाददाता, रामपुर : गंगापुर कदीम गांव के शिव मंदिर में कुछ लोगों ने रविवार को अनुसूचित जाति की महिलाओं को जाने से रोक दिया। महिलाएं मंदिर में जल चढ़ाने के लिए जा रहीं थीं। विरोध में समाज के लोगों ने हंगामा किया। दोनों पक्ष आमने-सामने आ गए। तनाव के मद्देनजर गांव में पुलिस तैनात कर दी गई है।

गांव में ज्यादातर परिवार लोधी और सैनी समाज के हैं। इसके अलावा मुस्लिम परिवार भी हैं, जबकि दो परिवार अनुसूचित जाति के हैं। इस जाति के एक परिवार की तीन महिलाएं रविवार सुबह गांव के शिव मंदिर में गीता पत्नी, अनीता और कविता जल चढ़ाने गईं थीं। आरोप है कि मंदिर कमेटी के लोगों ने उनके आने पर आपत्ति जताई और उन्हें बाहर ही रोक दिया। साथ ही मंदिर में ताला लगा दिया। इसके विरोध में अनुसुचित जाति के परिवार मंदिर पहुंचे तो हंगामा शुरू हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मंदिर का गेट खुलवाया। पुलिस का कहना है किदोनों पक्ष में रंजिश है। जांच की जा रही है। मंदिर कमेटी के सदस्य शिशुपाल का कहना है कि आरोप गलत हैं। मंदिर में आरती के समय गांव का ही अनुसूचित जाति का एक व्यक्ति हुड़दंग मचाता है। हमने उसकी शिकायत मंदिर आई महिलाओं से की थी।

चाक से बनाए स्वतंत्रता सेनानियों के पोर्ट्रेट

छात्रों ने रविवार को दक्षिण के राज्य तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने के लिए चाक से भारतीय स्वाधीनता सेनानियों के विशाल पोर्ट्रेट बनाए। एएनआइ

आइएसआइ को सिम उपलब्ध करवाने वाले ने डाटा किया डिलीट

दीपक बहल, अंबाला शहर

▸ दस दिन का रिमांड पूरा होने के बाद पाक नागरिक को भेजा गया जेल, जांच में जुटी सुरक्षा एजेंसियां

▸ कॉल डिटेल से पुलिस की तफ्तीश बढ़ेगी आगे, कई लोगों से होगी पूछताछ

भारतीय सिम पाक की आइएसआइ एजेंसी को उपलब्ध करवाने वाले कराची निवासी अली मुर्तजा असगर का मोबाइल गुड़गांव स्थित डिजिटल इनवेस्टिगेशन ट्रेनिंग एंड एनालिसिस सेंटर (डाइटेक) गुरुग्राम में भेजा जा रहा है। पुलिस को आशंका है कि पाक नागरिक ने मोबाइल से वाट्सएप व ईमेल के माध्यम से भी कुछ डाटा भेजा है, जिसे डिलीट कर दिया हो सकता है। डाटा रिकवर होने के बाद पुलिस की तफ्तीश इस दिशा में आगे बढ़ेगी। सीआइए स्टॉफ के अलावा देश की अन्य एजेंसियां भी जांच में जुट गई हैं। उधर, दस दिन का पुलिस रिमांड खत्म होने के बाद आरोपित को ड्यूटी मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया, जहां से उसे जेल भेजा गया है। मामले की अगली सुनवाई 7 सितंबर को होगी।

बता दें कि 14 अगस्त को अंबाला छावनी के बस स्टैंड से सीआईए स्टाफ ने पाक नागरिक को गिरफ्तार किया था। उसके पास मुंबई, अहमदाबाद, सूरत, गलियाकोट, बुरहानपुर का वीजा तो था लेकिन अंबाला और हैदराबाद का नहीं था। भले ही आरोपित ने भारत में धार्मिक स्थलों (समुदाय विशेष) के नाम पर वीजा लिया था, लेकिन यहां आकर दूसरे लोगों के नाम से सिम भी हासिल किए। वह सूरत, मुंबई आदि जगहों पर धार्मिक स्थलों पर पहुंचा और मुसाफिर खानों में रात गुजारी। हैदराबाद में आरोपित की चचेरी बहन भी रहती है, जिससे भी पुलिस पूछताछ कर रही है। तीन साल से भारत में आकर खुफिया सूचनाएं इकट्ठा कर आइएसआइ को भेजने पर उसे गिरफ्तार किया था। पूछताछ में खुलासा हुआ कि वह सूचनाएं ही नहीं भारतीय सिम भी आइएसआइ को उपलब्ध कराता था। पिछली बार जब वह भारत आया तो एक सिम दूसरे की आईडी पर लेकर आइएसआइ को दे दिया। अब तीन सिम फिर से दूसरे की आईडी पर खरीदे, जिन्हें आइएसआइ एजेंसी को ही सौंपना था।

आइएसआइ को दिए सिम पर आगे बढ़ रही तफ्तीश : आइएसआइ एजेंसी को सौंपा गया सिम एक्टिव मिला था। ऐसे में जांच की जा रही है कि इस सिम के माध्यम से क्या-क्या जानकारियां पहुंचाई गई हैं। सिम के माध्यम से फेसबुक या वाट्सएप अथवा सोशल मीडिया पर क्या गतिविधियां हुई हैं, इसकी भी छानबीन की जा रही है।

कई तथ्य आए हैं सामने : एसपी : एसपी अभिषेक जोरवाल ने कहा कि आरोपित के दस दिन के रिमांड में हुई पूछताछ में कई तथ्य सामने आए हैं। दूसरों की आईडी पर सिम लेता था, उसके पास से एक पाक का सिम भी बरामद हुआ था। मामला संवेदनशील है। पूछताछ में जो बातें सामने आई हैं उनकी जांच की जा रही है।

स्वामी चिदानंद बोले, पेड़ भी हमारे लिए पीर समान

जासं, मुजफ्फरनगर : देश में जल संरक्षण और प्रदूषण रहित बायुमंडल करने के लिए परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती और जमीयत-उलमा-ए-हिंद के राष्ट्रीय महासचिव मौलाना महमूद मदनी ने एक पहल की है। स्वामी चिदानंद ने कहा कि वतन में अमन के फूल खिलाने हैं तो हरियाली अर्थात हरि व अली के लोगों को एक साथ आगे आकर सब के दिलों में मोहब्बत के पेड़ लगाने होंगे। पेड़ भी हमारे लिए पीर समान हैं। उन्होंने यह भी कहा कि जल शक्ति जनशक्ति बनेगी तभी काम चलेगा। सभी को जल बचाने के लिए आगे आना चाहिए।

रविवार दोपहर परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती ने बताया कि ऋषिकेश से शुरू की गई अमन एकता हरियाली यात्रा कई चरणों के बाद दिल्ली में राष्ट्रपति भवन पर अक्टूबर माह में समाप्त होगी। रविवार को यात्रा पुरकाजी के बाद चरथावल के गांव नगला राई स्थित जामिया अल हिदाया में पहुंची। यहां सभा भी हुई। इस दौरान जमीयत-उलमा-ए-हिंद के राष्ट्रीय महासचिव मौलाना महमूद मदनी ने कहा कि वतन की शांति के लिए विश्व में एकता का संदेश देना ही इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य है।

मदरसों ने की मांग- हमारे लिए अलग से की जाए मिड डे मील की व्यवस्था

धीरज गोमे, उज्जैन

मध्य प्रदेश के उज्जैन की जिला मदरसा समिति ने मदरसों के लिए अलग मिड डे मील की व्यवस्था चाही है। यह मांग पूरी की जाए या नहीं, इसके लिए जिला पंचायत ने प्रदेश शासन से अभिमत मांगा है। मौजूदा व्यवस्था अनुसार, सभी शासकीय और अनुदान प्राप्त स्कूलों में केंद्रीयकृत किचन (रसोईघर) से ही भोजन उपलब्ध कराने का प्रावधान है।

बता दें कि स्कूली बच्चों के पोषण आहर को उन्नत करने के लिए भारत सरकार ने 15 अगस्त 1995 से पूरे देश में मिड डे मील योजना शुरू की थी। इसके तहत शुरुआती एक दशक तक स्कूलों में ही भोजन पकवाकर बच्चों को परोसा जाता था। प्रधान अध्यापक को राशन, गैस सिलेंडर, खाना बनने वालों का प्रबंधन करना होता था। इसके लिए उसे शासन से छात्र संख्या अनुसार पैसा मिलता था। कुछ साल बाद भोजन में एकरूपता लाने के लिए शासन ने साल 2007 से केंद्रीयकृत किचन प्रणाली को अपनाया। तय किया कि पूरे शहर के स्कूली बच्चों के लिए भोजन एक ही किचन में बनेगा और इसी किचन से सप्लाई होगा।

मदरसों ने लेने से किया था इन्कार : योजना की शुरुआत में जिला पंचायत ने निविदा के जरिए उज्जैन शहर के 110 स्कूलों में भोजन बनाकर पहुंचाने का ठेका धार्मिक ट्रस्ट इस्कॉन को सौंपा था। कुछ दिन योजना का क्रियान्वयन ठीक चला, लेकिन इसी बीच यह बात सुर्खियां बनीं कि भोजन में गंगाजल का इस्तेमाल हो रहा है और भगवान को भोग लगाकर ही स्कूलों में भोजन भेजा जा रहा है। इस पर अगस्त 2015 में उज्जैन के मदरसों ने मध्यान्ह भोजन लेने से इनकार कर दिया। उन्होंने अपने लिए अलग व्यवस्था की मांग की।

इस बीच 2016 में जब मध्यान्ह भोजन का ठेका इस्कॉन से लेकर मां पृथ्वी सांवरी और बीआरके फूड को दे दिया गया, मगर फिर भी मदरसा समिति ने भोजन नहीं लिया, क्योंकि उस समय भी मदरसा समिति के कुछ लोग चाहते थे कि अलग भोजन की व्यवस्था हो जाए। हालांकि यह मांग उस समय इतनी मुखरता से सामने नहीं आई। तब से ही शहर के मदरसों में मध्यान्ह भोजन नहीं लिया जाता है।

मदरसों के लिए मदरसा समिति ने अलग भोजन व्यवस्था की मांग की है। चूंकि शासन की बनी व्यवस्था अनुसार सभी स्कूलों को एक ही किचन में बना भोजन मुहैया कराने का प्रावधान है, इसलिए मध्यान्ह भोजन प्रकोष्ठ से अभिमत मांगा है।
-कीर्ति मिश्रा, मध्यान्ह भोजन प्रभारी, जिला पंचायत

मदरसों में भी विद्यार्थियों को मध्यान्ह भोजन मिले, इसके लिए अलग भोजन निर्माण की मांग का पत्र जिला पंचायत को भेजा था। इस पर अब निर्णय नहीं हुआ है।
-अशफाकउद्दीन, अध्यक्ष, जिला मदरसा समिति

मदरसों में मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था पृथक से करने की मांग जिला मदरसा समिति ने की है। मौजूदा प्रावधान के अनुसार यह संभव नहीं है। उनकी मांग पर क्या निर्णय लिया जाए, इस संबंध में शासन से अभिमत मांगा गया है।
-नीलेश पारिख, सीईओ, जिला पंचायत, उज्जैन

हौसला

भारत-पाक सरहद पर कमर से ऊपर तक पानी में दिन-रात पैदल गश्त कर रहे हैं जवान, दुश्मनों पर नजर गड़ाए हथियार ऊपर उठा मुस्तैदी से बढ़ते हैं आगे, बाढ़ में घुसपैठ की ताक में बैठे तस्करों के मंसूबों पर फिरा पानी

बीएसएफ के जवानों के मजबूत जज्बे के आगे बाढ़ भी हुई पस्त

प्रदीप कुमार सिंह, हुसैनीवाला बॉर्डर (फिरोजपुर)

देश की सरहद की सुरक्षा में अग्रिम मोर्चे पर मुस्तैद बीएसएफ जवानों के जज्बे के आगे बाढ़ भी पस्त दिखाई दे रही है। सतलुज दरिया में आई बाढ़ के पानी ने भले ही जमीन पर खींची गई भारत-पाकिस्तान के मध्य लकीर को अदृश्य कर दिया है, फिर भी बीएसएफ जवान पाकिस्तान की ओर से होने वाली किसी भी नापाक हरकत का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए चौबीसों घंटे अपनी जान-जोखिम में डालकर सरहद पर पैट्रोलिंग कर रहे हैं।

बीएसएफ जवान कमर से ऊपर तक पानी वाले हिस्सों में पैदल पैट्रोलिंग कर रहे हैं। अपनी जान की परवाह न करते हुए दुश्मनों पर नजर गड़ाए वह अपने हथियार ऊपर उठा लगातार मुस्तैद रहते हैं। उनका यह जज्बा देखने लायक है। गहरे पानी वाले हिस्सों में मोटरबोट पर आधुनिक यंत्रों व हथियारों से लैस होकर वे पैट्रोलिंग कर रहे हैं। जवानों के हौसलों के आगे देश के वे दुश्मन व तस्कर हताश हो गए हैं, जो बाढ़ के पानी की आड़ में अपने घिनौने कामों को अंजाम देने के सपने संजोए बैठे रहते हैं। बाढ़ में भी बीएसएफ की मुस्तैदी व चौकसी देखकर उनके मंसूबों पर पानी फिर गया है।

फिरोजपुर सेक्टर में भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास स्टीमर में बैठकर पेट्रोलिंग करते बीएसएफ के जवान (बाएं)। यहां सतलुज में बाढ़ के कारण सीमावर्ती गांवों में पानी भर गया है। इस स्थिति में भी जवान मोर्चा संभाले हुए हैं (दाएं)। जागरण

विषम से विषम परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने की महारत बीएसएफ से ज्यादा बेहतर शायद ही किसी को हासिल हो। आतंकियों से निपटने के साथ ही आपदा राहत कार्यों व देश की सरहदों की रखवाली में बीएसएफ हमेशा ही अव्वल रही है। फिरोजपुर जिले के विभिन्न हिस्सों में आई बाढ़ के समय भी बीएसएफ जहां एक ओर सरहद की रखवाली निर्भीक होकर कर रही है, वहीं दूसरी ओर वह बाढ़ पीड़ित गांवों के लोगों की मदद में भी आगे है। जहां कहीं भी बाढ़ पीड़ितों व प्रशासनिक अधिकारियों को राहत कार्य में जरूरत पड़ रही है, वहां पर बीएसएफ के जवान अपनी बोट के साथ मौजूद दिखाई दे रहे हैं।

यूं तो सभी मौसम में बीएसएफ जवानों को जंगली व जलीय जीव-जंतुओं का सामना करना पड़ता है, परंतु बारिश के मौसम में इनका खतरा कुछ ज्यादा ही बढ़ जाता है। बारिश व बाढ़ आने पर सांप, बिच्छू जैसे जीव-जंतुओं का खतरा बढ़ जाता है। यह सब पानी से बचने के लिए सुरक्षित ठिकानों की ओर आते हैं। बीएसएफ पोस्टों पर अक्सर सांप व बिच्छू दिखाई देते हैं, लेकिन जवानों के हौसले व जोश पर इसका कोई असर नहीं पड़ता है। बारिश के मौसम में मच्छरों का प्रकोप बढ़ने से जवानों को मच्छरजनित विभिन्न प्रकार की बीमारियों के घेरने की आशंका बढ़ जाती है। इसके अलावा लगातार पानी के बीच पैट्रोलिंग करने से त्वचा रोग का खतरा रहता है। उन जवानों के लिए ज्यादा परेशानी होती है, जिन्हें पानी व सूखे स्थलों पर पैट्रोलिंग करनी होती है। पानी में जाने पर उनकी वर्दी गीली हो जाती है, जिसे सूखने में समय लगता है।

फिरोजपुर बॉर्डर रेंज के डीआइजी संदीप चानन ने बताया कि सभी मौसम व सभी परिस्थितियों में बीएसएफ देश की सीमाओं की रखवाली के लिए मुस्तैद रहती है। वर्तमान समय में बॉर्डर रेंज के दरिया वाले कुछ निचले हिस्सों में फैंसिंग को पानी ने घेर रखा है, जिसे देखते हुए पैदल पैट्रोलिंग के अलावा मोटरबोट से भी लगातार पैट्रोलिंग की जा रही है।

सीबीआइ ने माखी थाने बुलाकर दर्ज किए पांच गवाहों के बयान

जागरण संवाददाता, उन्नाव : दुष्कर्म कांड की जांच कर रही सीबीआइ टीम एक सप्ताह बाद रविवार को फिर माखी गांव पहुंची और दस ग्रामीणों को थाने बुलाकर बयान दर्ज किए। गवाहों में अखिलेश, विनय उर्फ सिंपल, प्रमोद, दिनेश सिंह के अलावा बारासगवर के बीरपुर गेठूमा निवासी अनुज सिंह थाने पहुंचे और बयान दर्ज कराए। सीबीआइ इंस्पेक्टर हरिशंकर व महिला अधिकारी शिल्पी ने सभी को अलग-अलग बुलाकर पूछताछ की। इधर पांच अन्य लोगों में माखी गांव निवासी शुभम, बीना, शिवकांत, शिवप्रसाद और चंदपाल को सीबीआइ के बुलाने की जानकारी मिली तो वह गांव से निकल गए। बयान देकर लौटे गवाहों ने बताया कि टीम ने पीड़िता से दुष्कर्म और उसके पिता की हत्या के बारे में पूछताछ की। पीड़िता के पिता की हत्या में विधायक कुलदीप सिंह सेंगर की भूमिका पूछी। माखी थाने में गवाहों से पूछताछ के बाद सीबीआइ टीम की गाड़ी शहर स्थित विधायक कुलदीप सिंह व उसके भाई मनोज के आवासों पर रुकी।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
सोमवार 26 अगस्त 2019

दैनिक जागरण
संवेदनाएं आत्मिक सुधार की सूत्रधार होती हैं

प्लास्टिक कचरे से मुक्ति

शायद ही कभी ऐसा हुआ हो जब प्रधानमंत्री ने मन की बात कार्यक्रम में स्वच्छ भारत अभियान की चर्चा न की हो। इस बार भी उन्होंने इस अभियान को लेकर अपने मन की बात की, लेकिन इस दौरान उन्होंने आगामी 2 अक्टूबर से प्लास्टिक के खिलाफ अभियान शुरू करने का संदेश देकर एक ओर जहां पर्यावरण प्रेमियों के मन की मुराद पूरी की वहीं दूसरी ओर आम जनता का ध्यान एक गंभीर होती समस्या की ओर भी आकर्षित किया। ऐसा करना वक्त की जरूरत थी। चूंकि प्रधानमंत्री एक बार प्रयोग होने वाले प्लास्टिक के खिलाफ अभियान छेड़ने की जरूरत 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से भी जता चुके हैं इसलिए यह साफ है कि वह इस अभियान को जन आंदोलन का रूप देना चाहते हैं। किसी भी आंदोलन की सफलता जन भागीदारी पर निर्भर करती है। स्वच्छ भारत को नए आयाम देने वाला प्लास्टिक कचरे से मुक्ति का अभियान तभी सफल होगा जब आम लोग उसमें हर संभव तरीके से सहयोग देने के लिए आगे आएंगे। हर किसी को इससे परिचित होने की जरूरत है कि रोजमर्रा के जीवन में प्लास्टिक का आवश्यकता से अधिक इस्तेमाल पर्यावरण के लिए एक गंभीर समस्या बन गया है। प्लास्टिक का कचरा इसलिए पर्यावरण के लिए एक बड़ा संकट बन गया है, क्योंकि उसका क्षरण सैकड़ों वर्षों में होता है। यह संकट इतना गंभीर रूप लेता जा रहा है कि एक बार प्रयोग होने वाले प्लास्टिक का इस्तेमाल पूरी तरह बंद करने की नौबत आ सकती है। ऐसी कोई नौबत आए, इसके पहले ही हमें सचेत हो जाना चाहिए और इस क्रम में यह भी देखना चाहिए कि एक से अधिक बार इस्तेमाल होने वाली प्लास्टिक की ऐसी कौन सी वस्तुएं हैं जिनके प्रयोग से बचा जा सकता है, जैसे कि टूथब्रश।

निःसंदेह प्लास्टिक कचरे से पीछा तभी छूटेगा जब दैनिक उपयोग में आने वाली प्लास्टिक की वस्तुओं के विकल्प उपलब्ध कराए जाएंगे। यह अच्छी बात है कि कई सरकारी संस्थान एक बार प्रयोग में आने वाली प्लास्टिक की वस्तुओं का इस्तेमाल बंद करने जा रहे हैं। रेलवे एक बार प्रयुक्त होने वाली प्लास्टिक की चीजों का इस्तेमाल बंद करने जा रहा है तो लोकसभा सचिवालय ने संसद में प्लास्टिक की पानी की बोतलों के साथ प्लास्टिक की कुछ अन्य वस्तुओं के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है। इस तरह के जो भी कदम उठाए जा रहे हैं उनका दायरा तेजी से फैलना चाहिए। इसी के साथ इस पर भी गौर किया जाना चाहिए कि प्लास्टिक के ऐसे कौन से उत्पाद हैं जिनके निर्माण पर यथाशीघ्र पाबंदी लगाई जा सकती है? बेहतर होगा कि प्लास्टिक की थैलियां बनाने पर रोक लगाई जाए।

जल संरक्षण की पहल

बिहार सरकार ने जलसंकट के निदान के लिए रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम पर जोर दिया है। यह एक अच्छी पहल है, बशर्ते इसका अनुपालन पूरी गंभीरता और सख्ती से किया जाए। भूगर्भीय जलस्तर में हो रही कमी के कारण पेयजल के साथ-साथ सिंचाई का भी संकट पैदा हो रहा है। गर्मी में तो हालत और बदतर हो जाती है, जब लोगों को पीने के पानी के लिए भी मशक्कत करनी पड़ती है। यह बहुत ही खतरनाक संकेत है। अगर इस पर गंभीर नहीं हुए तो आने वाले वर्षों में स्थिति और भी भयावह हो सकती है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की यह पहल सराहनीय है कि तालाब-पोखर जैसे जलस्रोतों को ढूंढकर निकाला जाए और इसे संरक्षित किया जाए। इसी कड़ी में रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को सख्ती से लागू किए जाने के संबंध में नगर विकास एवं आवास विभाग का निर्देश भी अहम है। नियम तो बने हुए हैं, लेकिन हकीकत यही है कि यह सिर्फ कागज पर है। राज्य के अधिसंख्य हिस्सों में भवनों में रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम नहीं है। वर्षा का पानी बेकार चला जाता है और हम पानी के लिए तरसते रहते हैं। सरकार ने निर्देश जारी करते हुए कहा है कि सौ वर्गमीटर क्षेत्रफल वाले भवनों में रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम नहीं लगाने पर जुर्माने के साथ-साथ दंडात्मक कार्रवाई भी झेलनी पड़ेगी। वहीं जिन भवनों में यह सिस्टम है, उन्हें होल्डिंग टैक्स में पांच फीसद तक की छूट दी जाएगी। वर्षा जल संचयन का यह कारगर माध्यम है। इससे न सिर्फ भूगर्भीय जल संतुलन बना रहेगा, बल्कि पेयजल संकट की समस्या का भी निदान हो सकेगा। इस बात को समझना होगा कि जल का संरक्षण ही एक मात्र विकल्प है। जिस तेजी से आबादी बढ़ रही है, नए-नए रिहायशी इलाके बस रहे हैं, उस अनुपात में पानी की उपलब्धता भी होनी चाहिए। इसका एकमात्र उपाय बूंद-बूंद पानी का संचयन ही है। अधिकारियों का भी दायित्व बनता है कि सरकार के निर्देशों को पूरी गंभीरता से कार्यान्वित करने की पहल करें। इसके लिए अभियान चलाकर लोगों को जागरूक भी करना होगा। उन्हें समझाना होगा कि अगर अभी से सतर्क नहीं हुए तो आने वाले समय में घर-मकान तो होंगे, लेकिन पानी नहीं होगा। सरकार और प्रशासन के साथ आम जन की भागीदारी से यह मुहिम निश्चित रूप से सफल हो सकती है।

गलतियों की ओर संकेत करते कुछ स्वर

ए. सूर्यप्रकाश

पीएम मोदी की हमेशा आलोचना करने से कांग्रेस का भला नहीं होगा। कुछ कांग्रेसी इस गलती को स्वीकार करने लगे हैं। पार्टी के शीर्ष नेतृत्व को भी इसे समझना होगा

आखिरकार कांग्रेस में कुछ समझदारी भरे स्वर सुनाई पड़ रहे हैं। वर्ष 2014 में लोकसभा में अपने निम्नतम आंकड़े पर सिमटने के बाद से ही कांग्रेस हकीकत से मुंह मोड़कर सिर्फ अपशब्दों की राजनीति में जुटी थी। मगर अब कांग्रेस के कुछ वरिष्ठ सदस्य अपने साथियों को वास्तविकता का सामना करने की सलाह दे रहे हैं। जयराम रमेश कांग्रेस के समझदार नेताओं में से एक माने जाते हैं। अक्सर अपनी राजनीतिक निष्ठा को सुनिश्चित रखने वाले रमेश ने कहा कि हर समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को खलनायक की तरह पेश करने से कांग्रेस का कोई भला नहीं होने वाला, क्योंकि उनका शासन पूरी तरह नकारात्मक नहीं है। वह प्रधानमंत्री के सुशासन के एजेंडे और उज्ज्वला जैसी योजनाओं से खासे प्रभावित दिखे जिससे गरीब महिलाओं को रसोई गैस मिली और प्रधानमंत्री राजनीतिक रूप से ताकतवर हुए। कांग्रेस के एक और वरिष्ठ नेता अभिषेक सिंघवी ने भी रमेश के सुर में सुर मिलाते हुए कहा कि मोदी को खलनायक की तरह पेश करना गलत था। मोदी सरकार के फैसलों की समीक्षा व्यक्ति नहीं, बल्कि मुद्दों पर आधारित होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि उज्ज्वला उनके अच्छे कार्यों में से एक है।

इन दोनों नेताओं के ये बयान सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी जैसे पार्टी के शीर्ष नेताओं के रुख-रवैये से उलट हैं जो हर मुद्दे पर लगातार प्रधानमंत्री मोदी की आलोचना में जुटे हैं। वास्तव में मोदी सरकार ने कई ऐसे अहम फैसले लिए हैं जिनकी देश भर में चहुंओर वाहवाही हुई, लेकिन नेहरू-गांधी परिवार की ओर से मोदी की तारीफ में एक बोल नहीं फूटा। मोदी-शाह की जोड़ी द्वारा कश्मीर में अनुच्छेद 370 समाप्त करने के फैसले के बाद पार्टी नेताओं में अफरातफरी का माहौल है। पार्टी दिग्गजों में भारी दुविधा की जड़ें कांग्रेस की उस प्रतिबद्धता में हैं कि वह किसी भी कीमत पर अनुच्छेद 370 को कायम रखेगी। इस साल अप्रैल में ही लोकसभा चुनावों के लिए अपने घोषणापत्र में उसने एलान किया था कि किसी भी सूरत में 'संवैधानिक स्थिति' में बदलाव नहीं किया जाएगा। इस मसले पर स्वयं को ऐसे उलझाकर कांग्रेस अपने उसी पुराने रुख पर टिकी है जो मुद्दा भारत की एकता एवं अखंडता के लिए हमेशा से एक अवरोध रहा है। इसीलिए राहुल गांधी ने एलान किया कि एकतरफा जबरिया कदमों से राष्ट्रीय एकीकरण नहीं किया जा सकता। वहीं प्रियंका गांधी ने ट्वीट करके पूछा कि 'क्या मोदी-शाह की सरकार मानती है कि भारत अभी भी एक लोकतंत्र है?'

अफसोस की बात है कि ऐसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों पर कांग्रेस अपना दिमाग लगाती नहीं दिख रही। उन्नीस सौ साठ के दशक के उत्तरार्ध में जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को अपनी सरकार चलाने के लिए वामपंथियों की बैसाखी का मोहताज होना पड़ा तबसे पार्टी पर वामपंथी नेताओं और बुद्धिजीवियों की सोच हावी होती गई। इसका नतीजा यही निकला कि कांग्रेस ने अपनी राष्ट्रवादी विचारधारा का चोला पूरी तरह उतार फेंका। मौजूदा दौर में भाजपा राष्ट्रवाद के खांचे में पूरी तरह फिट हो गई है और कांग्रेस को सूझ नहीं रहा कि वह आगे कौन सा कदम उठाए। परिणामस्वरूप, आप देखेंगे कि तमाम अहम मुद्दों पर कांग्रेस और कम्युनिस्टों के सुर एक जैसे सुनाई पड़ेंगे। राहुल गांधी के बाद पी चिदंबरम ने सरकार पर राज्य के साथ पक्षपात का आरोप लगाया। यह रुख सीताराम येचुरी जैसे तमाम वामपंथी नेताओं के जैसा ही था जो मांग कर रहे थे कि जम्मू-कश्मीर का पुराना दर्जा बहाल किया जाए।

हालांकि अनुच्छेद 370 को लेकर पार्टी की प्रतिक्रिया को अलग करके नहीं देखा जाए। यह उसी शंकालु और अविश्वास भरे रवैये के अनुरूप है जिसमें पार्टी ने सुरक्षा बलों द्वारा सर्जिकल स्ट्राइक जैसी कार्रवाई को भी संदेह की दृष्टि से देखा। जहां पूरा देश सीमा पार आतंकी ठिकानों को निशाना बनाने वाले हमारे सैनिकों के शौर्य और प्रतिबद्धता की प्रशंसा में जुटा था वहीं कांग्रेस यह दावा कर रही थी कि उसके शासनकाल में भी ऐसी कई सर्जिकल स्ट्राइक की गई थीं। हालांकि उसके इस दावे को ज्यादा भाव नहीं दिया गया। जब महाराष्ट्र के एक कांग्रेसी नेता ने सर्जिकल स्ट्राइक को फर्जी बताया तो चिदंबरम ने उसके सुबूत मांग लिए। राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री पर आरोप लगाए कि वह सर्जिकल स्ट्राइक से सियासी फायदा बना रहे हैं। मानों इतना ही काफी नहीं था। इस साल 26 फरवरी को बालाकोट में आतंकी संगठन जैश-ए-मुहम्मद के ठिकानों पर भारतीय वायुसेना की साहसिक स्ट्राइक के बाद भी उनके इस रवैये में बदलाव नहीं आया। चिदंबरम ने इस पर सवाल उठाया कि वायुसेना के इस हमले में कितने आतंकी मारे गए। एक अन्य कांग्रेस नेता नवजोत सिंह सिद्धू तो एयर स्ट्राइक की मंशा पर ही सवाल खड़े करने लगे। इसे चुनावी तिकड़म तक बताया गया।

अब सामाजिक कल्याण की दिशा में मोदी सरकार की कुछ अहम योजनाओं की अभूतपूर्व सफलता पर भी गौर किया जाए। इनमें उज्ज्वला योजना बाजी पलटने वाली साबित हुई है जिसके तहत छह करोड़ परिवारों को रसोई गैस मुहैया कराई गई है। अगले एकाध साल में दो करोड़ परिवारों को भी इसका लाभ उपलब्ध कराने की तैयारी हो रही है। गरीब परिवारों को सालाना पांच लाख रुपये का स्वास्थ्य बीमा आवरण भी दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना है। ऐसे ही गरीबों के लिए जन-धन खाते की योजना को शानदार सफलता मिली जिसके तहत 36 करोड़ नए बैंक खाते खुले। यह भी एक विश्व कीर्तिमान है। ऐसी तमाम योजनाएं हैं जिनकी मोदी सरकार ने संकल्पना पेश कर उन्हें अमली जामा पहनाया, लेकिन नेहरू गांधी परिवार ने कभी इनमें से किसी योजना के प्रभाव को स्वीकार करना गवारा नहीं समझा। उनसे संकेत लेते हुए कांग्रेस के तमाम नेताओं ने इन योजनाओं में मीनमेख निकालने में ही अपना ज्यादा वक्त जाया किया। यह उन तमाम लोगों को जरा भी रास नहीं आया जिन्हें इन योजनाओं से फायदा पहुंचा था।

सरदार पटेल और डॉ. बीआर आंबेडकर के दिनों से ही अन्य राष्ट्रीय नायकों की उपलब्धियों के प्रति नेहरू-गांधी परिवार की असहिष्णुता अब एक स्थापित सत्य बन चुकी है और हाल के वर्षों में इसकी पर्याप्त रूप से पुष्टि हुई है। कई दशकों तक परिवार इस खेल को खेलकर बच निकलता रहा, लेकिन अब लोग उनकी इस संकीर्णता और ईर्ष्या भाव को समझने लगे हैं। इससे भी बढ़कर यह बात रही कि जनजागरूकता ने इस परिवार के लिए चुनावी सफलता का रास्ता सिकोड़ दिया है। अगर कांग्रेस अपना सियासी नुकसान कम करना चाहती है तो सरकारी घोषणाओं एवं योजनाओं पर उसे अपनी प्रतिक्रिया और विश्वसनीय बनानी होगी। जयराम रमेश ने इसका रास्ता दिखाया है। उम्मीद है कि अन्य नेता भी उनका अनुसरण करेंगे।

(लेखक प्रसार भारती के चेयरमैन एवं वरिष्ठ स्तंभकार हैं)
response@jagran.com

शिक्षा क्षेत्र में परिवर्तन की सही राह

जगमोहन सिंह राजपूत

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति जरूरी है, मगर उससे भी अहम है उन लोगों का प्रशिक्षण जिन पर इसे लागू करने का जिम्मा है

किसी भी राष्ट्र की प्रगति, परिवर्तन और प्रसन्नता का स्तर वहां के नागरिकों के मध्य समझ, सहयोग, पारस्परिक सम्मान, नवाचार में रुचि तथा मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता के परिमाण पर निर्भर करता है। इसके लिए जरूरी है कि प्रत्येक बच्चे के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास का उत्तरदायित्व राष्ट्र तथा समाज स्वीकार कर ईमानदारी से इसका क्रियान्वयन करे। साथ ही प्रत्येक बच्चे को ज्ञान, कौशल, मानवीय संवेदनाओं और मूल्यों को सीखने तथा जीवन में उतारने के लिए आवश्यक वातावरण, सहयोग, मार्गदर्शन तथा उत्साहवर्धन मिले। अर्थात हर एक बच्चे को प्रशिक्षित, प्रतिबद्ध तथा उत्साही अध्यापक मिलें और उनसे बच्चों को रुचिकर ढंग से सही विद्या और अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले। नई शिक्षा नीति प्रारूप-2019 यानी कस्तूरीरंगन समिति के प्रतिवेदन में शिक्षकों संबंधी अध्याय में यह सुनिश्चित करना उद्देश्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है कि स्कूल शिक्षा के सभी स्तरों पर सभी विद्यार्थियों का शिक्षण 'उत्साहित, प्रेरित, उच्च योग्यता प्राप्त, पेशेवर रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों' द्वारा ही हो।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लाना आवश्यक है, मगर उससे भी महत्वपूर्ण है उन लोगों का 'उत्साहित, प्रेरित और प्रशिक्षित' होना जिन्हें उसके क्रियान्वयन की जिम्मेदारी सौंपी जानी है। अध्यापकों के संबंध में मानवीय स्तर पर हर सभ्यता में और हर भाषा में जो सर्वोत्तम कहा जा सकता है, कहा जा चुका है। भारत में गुरु को ईश्वर के भी पहले स्थान देने की परंपरा रही है। प्रश्न यह है कि व्यवहार में आज स्थिति क्या है? यह तो सर्वत्र माना ही जाता है कि किसी भी देश के लोगों का स्तर वहां के अध्यापकों के स्तर से ऊंचा नहीं हो सकता है। यह वाक्य अपने आप में बहुत कुछ कहता है, 'किसी भी देश की प्रगति और विकास की गति और गुणवत्ता वहां के अध्यापकों की कार्य-कुशलता और प्रतिबद्धता तथा उनके द्वारा अपने जीवन में उतारे गए मूल्यों से ही निर्धारित होती है।' गुरु, अध्यापक या आचार्य से एक अपेक्षा तो समाज तथा हर व्यक्ति को होती है कि उनका अपना आचरण अनुकरणीय हो, क्योंकि वे राष्ट्र की भावी पीढ़ी का निर्माण करते हैं, वे ही राष्ट्र निर्माण की संरचना को मजबूती देते हैं, वे ही राष्ट्र निर्माण के आधार स्तंभ हैं।

इस समय भारत के शिक्षक वैश्विक परिदृश्य में कहां हैं? 2012 में जस्टिस जेएस वर्मा आयोग ने अपने प्रतिवेदन में कहा था कि देश में 17,000 से अधिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान हैं जिनमें 92 प्रतिशत निजी प्रबंधन के अंतर्गत आते हैं। इनमें से अधिकांश अच्छा प्रशिक्षण देने का प्रयास ही नहीं करते हैं! यहां यह याद करना समीचीन होगा कि पत्राचार द्वारा सरकारी तथा गैर सरकारी विश्वविद्यालयों द्वारा की जा रही शिक्षक प्रशिक्षण की उपाधियों की गिरती गुणवत्ता से चिंतित वरिष्ठ शिक्षाविदों के लगभग बीस वर्ष के अथक प्रयास के पश्चात राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् अधिनियम 1993 संसद में स्वीकृत हुआ। 1998-99 में यह संस्था पूरी तरह क्रियाशील हो गई तथा इसने कम गुणवत्ता वाले अनेक पाठ्यक्रमों को नियमित करने में सफलता पाई। बाद में यह अपने उस स्वरूप को कायम नहीं रख सकी तथा प्रवाह के साथ ही बहने लगी। परिणाम सामने है।

नई शिक्षा नीति ने व्यवस्था के समक्ष यह बड़ी चुनौती प्रस्तुत की है। क्या इसका समाधान संभव है? नियुक्ति की प्रक्रिया बदलकर, प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम बदल कर और सेवा शर्तों को अधिक स्वीकार्य बनाकर किए गए परिवर्तन आशा तो जनित कर सकते हैं, मगर सही क्रियान्वयन का आश्वासन नहीं बन सकते हैं। यदि सही क्रियान्वयन हो तो नई नीति हर बच्चे को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक विकास के मार्ग पर आगे बढ़ा सकेगी। ये चार तत्व भारत की परंपरागत शिक्षा व्यवस्था की धुरी रहे हैं। नई नीतियां भी इन्हीं चार मुख्य बिंदुओं के इर्द-गिर्द ही बननी होंगी। जो देश यह नहीं समझ सकेगा वह पीछे रह जाएगा। यह भी निर्विवाद है कि सार्थक और सफल परिवर्तन में सबसे महत्वपूर्ण योगदान अध्यापक का होगा। इस समय विश्व में सर्वाधिक प्रतिष्ठा फिनलैंड की शिक्षा व्यवस्था की है। हर कोई फिनलैंड के समकक्ष शैक्षिक उपलब्धियां प्राप्त करना चाहता है, लेकिन फिनलैंड शीर्ष स्थान पर पहुंचा कैसे इस पर चर्चा करने में भी नीति निर्धारक सहज नहीं रह पाते हैं।

दरअसल फिनलैंड की शिक्षा व्यवस्था में बड़ा सुधार शिक्षा की संकल्पना में बदलाव का था। उसने यह माना कि सार्थक परिवर्तन की कुंजी शिक्षक प्रशिक्षण में ही निहित है। 1974 में फिनलैंड ने इस प्रशिक्षण का सारा दायित्व अपने विश्वविद्यालयों में स्थानांतरित कर दिया। 1979 में उसने स्नातकोत्तर उपाधि अनिवार्य कर दी। 2019 में भारत में कस्तूरीरंगन समिति ने ऐसी ही सिफारिशें की हैं। फिनलैंड में प्रतिभावान तथा अध्ययन और अध्यापन में रुचि रखने वाले ही इस व्यवसाय में प्रवेश करते हैं। अध्यापक किसी से कम वेतन नहीं पाते हैं। वहां के नेशनल बोर्ड ऑफ एजुकेशन ने मूल पाठ्यक्रम की रूपरेखा 1994 में बनाकर स्कूलों और निकायों को सौंप दी। इसका विशद स्वरूप स्थानीय स्तर पर निर्धारित होता है। यह अध्यापकों पर गहन विश्वास का द्योतक था और उन्होंने अपना उत्तरदायित्व न केवल समझा, बल्कि उसका 'प्रेरित और उत्साहित' होकर अनुपालन भी किया।

आज सारा विश्व फिनलैंड के 'अपने अध्यापकों पर विश्वास' कर शैक्षिक श्रेष्ठता प्राप्त करने की वास्तविकता को आश्चर्य से देख रहा है। वैसे इस प्रकार के नवाचार की नकल कर पाना भी आसान नहीं है। ऐसे परिवर्तन तभी संभव होते हैं जब सरकार, समाज और परिवार सभी एक-दूसरे पर विश्वास करते हुए इसकी सफलता में जुट जाएं। यदि देश में दशकों तक दस-बारह लाख अध्यापकों के पद रिक्त रहें, लगभग उतने ही अनियमित थोड़े से मानदेय पर गैर-पेशेवर शिक्षक नियुक्त किए जाएं तो फिनलैंड जाकर केवल पर्यटन का आनंद ही लिया जा सकेगा और कुछ नहीं मिलेगा। फिनलैंड में अध्यापकों को निरीक्षकों (जिला शिक्षा अधिकारियों) की चिंता नहीं करनी पड़ती है। उन्हें जिला अधिकारी अन्य गैर शैक्षिक कार्यों में नहीं लगाता है। वहां के अध्यापक साल भर में 600 घंटे अध्यापन करते हैं, जबकि ब्रिटेन में यह 900 घंटे तथा अमेरिका में 1100 घंटे है। क्या हम इसके लिए तैयार हैं?

(लेखक एनसीईआरटी के पूर्व निदेशक हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

संतुष्टता

संतुष्टता सबसे बड़ा खजाना और शक्ति भी है। मनुष्य आत्मा के मूलभूत सात गुण हैं। जैसे कि शांति, प्रेम, पवित्रता, सुख, आनंद, आत्मज्ञान और आत्मशक्ति। जब किसी इंसान में ये सारे गुण पूर्णता में मौजूद होते हैं तो वह इंसान सतोगुणी कहलाता है और इन गुणों का समावेश ही संतुष्टता है। संतोष रूपी धन के सामने दुनिया की धन दौलत भी फीकी पड़ जाती है। ऐसा इसलिए, क्योंकि संसार के सारे वैभव और भौतिक सुख-सुविधाएं भी मनुष्य को सच्ची संतुष्टि देने में असमर्थ होते हैं। यह सच है, मनुष्य की सांसारिक इच्छाओं की कोई सीमा नहीं होती है। महात्मा बुद्ध के अनुसार भौतिक इच्छाएं या कामनाएं ही इंसान के दुखों का कारण हैं। भौतिक कामनाओं का अंत ही दुख का अंत है। इसलिए उन्होंने कामनाओं को शुभ कामनाओं में बदलने का मार्ग दिखाया। शास्त्रों में 'इच्छा मात्रम अविद्या' कहा गया है। और यह भी कहा यह है कि 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात वही विद्या है, जो मनुष्य को कामनाओं और इंद्रिय भोग से जन्मे रोग, कष्ट और दुख से मुक्ति दिलाए।

संतुष्टता मानव को निष्क्रिय नहीं, अपितु क्रियाशील, सृजनशील, सकारात्मक, आशावादी, निष्ठावान, ईमानदार और प्रगतिशील बनाती है। सच्चाई, अच्छाई और सबकी भलाई के लिए उमंग, उत्साह, साहस, आत्मविश्वास और मनोबल के साथ आगे बढ़ने के लिए लोगों को प्रेरित करती है।

संतुष्ट व्यक्ति शांत, शीतल, संतुलित, सहनशील, धैर्यवान, लचीला और मिलनसार होता है। श्रीमदभगवद्गीता के अर्जुन के समान सभी मानसिक द्वंद्वों और प्रश्नों से परे प्रसन्न रहता है। कार्यक्षेत्र में कर्मयोगी बन समाधानात्मक बुद्धि से हर कार्य में सफल, संतुष्ट और स्थितप्रज्ञ रहता है। संतुष्टता को बढ़ाने के लिए अंतरात्मा में निहित सातों गुणों के बारे में नियमित मनन, चिंतन एवं अनुभूति जरूरी है। इन गुण और शक्तियों को परमात्मा से, मन-बुद्धि से जोड़े रहने की आवश्यकता होती है।

ब्रह्मा कुमारी सुनिता

संसाधनों के अपव्यय का खतरा

सुधीर कुमार

2019 में धरती द्वारा उत्पादित जिस संसाधन को हमें 365 दिन उपभोग करना था, उसे हमने 209वें दिन ही खत्म कर दिया

'अर्थ ओवर शूट डे' सिद्धांत का प्रतिपादन सर्वप्रथम ब्रिटेन की न्यू इकोनॉमिक संस्था के एंड्रयू सिम्स ने किया था। धरती एक साल में जितने संसाधन उत्पादित करती है, दुनियाभर की आबादी उन संसाधनों का साल पूरा होने से पहले जिस दिन तक उपभोग कर लेती है, उस तिथि को 'अर्थ ओवरशूट डे' के नाम से जाना जाता है। ग्लोबल फुटप्रिंट नेटवर्क के मुताबिक 2019 में यह तिथि 29 जुलाई को चिन्हित किया गया। इसका अभिप्राय यह हुआ कि 2019 में धरती द्वारा उत्पादित जिस संसाधन को हमें 365 दिन उपभोग करना था, उसे हमने 29 जुलाई यानी साल के 209वें दिन ही खत्म कर दिया। इसका अर्थ यह भी हुआ कि साल के बाकी 156 दिन हम संसाधन के जिस हिस्से का उपभोग करेंगे, वह आने वाली पीढ़ी से लिया गया उधार होगा!

दरअसल जिस गति से विश्व में जनसंख्या में वृद्धि हो रही है, उस अनुपात में प्राकृतिक संसाधनों का दोहन भी तेजी से बढ़ रहा है, जिससे 'अर्थ ओवरशूट डे' की अवधि भी सिमटती जा रही है। 1969 में साल भर का संसाधन 13 महीने में खपत होता था, लेकिन आज वह वर्ष के सातवें या आठवें महीने में ही खत्म हो जा रहा है! 2018 में यह तिथि एक अगस्त को आया था। यह साबित करता है कि मानव समुदाय द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का बड़ी तेजी से और अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है।

औद्योगिक विकास के नाम पर पृथ्वी पर आज जिस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों का अपव्यय किया जा रहा है, उसके कारण न केवल इन संसाधनों के स्रोत समाप्त हो रहे हैं, बल्कि प्रदूषण में वृद्धि, प्रदूषण-जनित बीमारियों का प्रसार, सूखा पड़ने, मरुस्थलों का विस्तार तथा प्राकृतिक असंतुलन जैसी विभिन्न समस्याएं भी बढ़ी हैं। हालांकि पृथ्वी के पास उतनी क्षमता है कि समस्त जनसंख्या के आवश्यकताओं की पूर्ति वह कर सकती है, लेकिन स्वार्थ और लालच की वजह से प्राकृतिक संसाधन सिकुड़ते जा रहे हैं। विशेषकर वनों की कटाई, मृदा क्षरण, जैव विविधता के ह्रास और वातावरण में घुलती कॉर्बन डाईऑक्साइड जैसे कारक पारिस्थितिक असंतुलन के लिए जिम्मेवार रहे हैं।

बहरहाल संसाधनों के बेतहाशा दोहन को रोकने के लिए एक ओर जहां विकास के सततपोषणीय स्वरूप पर जोर देने की आवश्यकता है, वहीं नागरिकों से भी उम्मीद की जाती है कि वे प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण तरीके से इस्तेमाल करें। अनवीकरणीय संसाधन (कोयला, गैस, पेट्रोलियम), जिसकी मात्रा सीमित है, उसका कम से कम इस्तेमाल करने तथा नवीकरणीय संसाधनों जैसे सौर, पवन और भूतापीय ऊर्जा के इस्तेमाल पर जोर देने से हालात सुधर सकते हैं। इसके अलावा वनीकरण को बढ़ावा देकर, ऊर्जा संसाधनों की बर्बादी रोककर और जागरूकता का प्रसार करके भी संसाधनों का अपव्यय रोका जा सकता है। स्मरण रहे, प्रकृति के साथ तालमेल बैठा कर चलने से ही सुखी जीवन बिताया जा सकता है।

(लेखक बीएचयू में अध्येता हैं)

एक वहुआयामी व्यक्तित्व का अवसान

सरल हृदय वाले विराट राजनेता शीर्षक से युक्त अपने आलेख में भूपेंद्र यादव ने अरुण जेटली के व्यक्तित्व को जिस विराटता से निरूपित किया है, वह उनकी महत्ता को रेखांकित कर रहा है। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी जेटली का यूं चले जाना हृदयघाती बन गया। अल्पसमय में ही यह देश एक और विराट व्यक्तित्व के दुखद अवसान का साक्षी बना। अभी कुछ दिनों पहले इसी अगस्त माह में इस देश ने एक विदुषी राजनेत्री सुषमा स्वराज को खोया था और अब अरुण जेटली जैसे प्रखर राजनेता और विधिवेत्ता भी चले गए। इन द्वय राजनेताओं का असामयिक निधन भारतीय राजनीति की अपूर्णनीय क्षति है। दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रनेता के रूप में अपना राजनीतिक सफर शुरू करने वाले जेटली ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। आपातकाल के प्रताड़नापूर्ण दौर से गुजरते हुए वो अटल-आडवाणी के नेतृत्व में गठित होने वाली भाजपा के सच्चे सिपाही बने। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में विधि मंत्री रहते हुए उन्होंने एक श्रेष्ठ विधिवेत्ता के रूप में अपने दायित्व का निर्वाह किया। 2014 में पूर्ण बहुमत वाली मोदी सरकार में उनको वित्त मंत्री का गुरुतर दायित्व सौंपा गया। केंद्रीय वित्त मंत्री के रूप में आपने बहुप्रतीक्षित जीएसटी के क्रियान्वयन में आने वाली तमाम रुकावटों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपनी तर्क शक्ति से विपक्षी नेताओं को सहमति के कगार पर खड़ा करने में उन्हें महारत हासिल थी। एक धीर-गंभीर राजनेता के रूप में विपक्षी दल के लोग भी उनका सम्मान करते थे। विदेश यात्रा पर गए प्रधानमंत्री मोदी ने अपने परम सहयोगी और मित्र अरुण जेटली के आकस्मिक निधन से भाव-विह्वल होकर जो शोक व्यक्त किया, वह संवेदनशील था। जेटली ने अपने राजनीतिक जीवन में राजनीतिक शुचिता के जो मानदंड स्थापित किए, वो अनुकरणीय हैं। प्रखर राजनेता के साथ एक अध्ययनशील बुद्धिजीवी एवं तार्किक वकील के रूप में उनके द्वारा अर्जित राष्ट्रव्यापी ख्याति ने उनके व्यक्तित्व को वास्तव में विराट बना दिया।

डॉ. वीपी पाण्डेय, अलीगढ़

मेलबाक्स

विरोध की राजनीति

राजनीति में विपक्ष की भी बड़ी जिम्मेदारी होती है। सरकार को गलत काम से रोकने के लिए विरोध और अच्छे काम पर समर्थन करना उसका दायित्व है। मगर वर्तमान में विपक्ष अपनी जिम्मेदारी को निभाने में विफल साबित हो रहा है। सत्तापक्ष की हर बात का विरोध करने का परिणाम यह होता है कि जनता उसकी बात पर ध्यान देना छोड़ देती है। कांग्रेस हाईकमान को यह बात समझ नहीं आ रही, किंतु उनके नेताओं जयराम रमेश, शशि थरूर और अभिषेक मनु सिंघवी अवश्य ही समझ रहे हैं। पिछले पांच से अधिक वर्ष से, जबसे नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने हैं अथवा राजग की सरकार बनी है, कांग्रेस के शीर्ष नेताओं ने उनके हर सही-गलत कार्य का एकतरफा विरोध किया है। किसी अच्छे कार्य की प्रशंसा एक बार भी नहीं की। नोटबंदी, सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक और तीन तलाक का तो जोरदार विरोध किया ही, साथ में राष्ट्रहित से जुड़े अतिसंवेदनशील मुद्दे अनुच्छेद 370 का भी जबरदस्त विरोध कर बैठे। होना यह चाहिए था कि राष्ट्रीय एकता से जुड़े इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर सरकार का साथ देते, लेकिन यहां भी कांग्रेस ने इसे अपनी नाक का सवाल समझा। कांग्रेस का यह विरोध पाकिस्तान का हौसला बढ़ाने का काम करेगा। कांग्रेस को चाहिए कि वह अपनी आंखों से सरकार के विरोध की मोटी परत को हटाकर राष्ट्रहित के लिए सरकार के सही कार्यों की प्रशंसा करे। इससे कांग्रेस की छवि और जनाधार में वृद्धि ही होगी।

सतप्रकाश सनोठिया, रोहिणी

कैमरों में कैद जिंदगी

हर युवा आज स्मार्टफोन के जरिये खुद की जिंदगी को कैमरों में कैद करने में जुटा है, कहीं वीडियो तो कहीं तस्वीरों के रूप में। आज का युवा अपने समय का एक बड़ा हिस्सा इन डिजिटल कैमरों के सामने गुजार रहा है। यहां ध्यान देने वाली बात ये है कि हर कोई अपनी जिंदगी का बस वही हिस्सा साझा करना चाहता है जिसमें वो खुश है और इस तरह से हर कोई अपनी परेशानियों को खुद में ही समेटता जा रहा है।

अभिषेक त्रिपाठी, दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) - विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

1.4 करोड़ के आसपास विदेशी पर्यटक आए भारत की यात्रा पर वर्ष 2017 में, जबकि वर्ष 2014 में केवल 76.8 लाख विदेशी पर्यटक ही आए थे भारत घूमने के लिए।

आजकल

कश्मीर में खुल गई शिक्षा की राह

कश्मीर में शिक्षा व्यवस्था अब तक उपेक्षित ही रही है। शायद यही कारण है कि यहां की आबादी का एक बड़ा तबका उच्च शिक्षा से वंचित रहा है। हालांकि इसके कई कारण हैं, लेकिन उम्मीद की जा रही है कि कश्मीर के संबंध में सरकार द्वारा किए गए नए फैसले के बाद से वहां शिक्षा की राह खुलेगी और पुराने शिक्षा संस्थानों का विकास तो होगा ही, साथ ही नए संस्थान भी खुलेंगे। कश्मीर को देश की मुख्यधारा में शामिल करने में शिक्षा एक नया माध्यम बन सकती है

डॉ. दर्शनी प्रिय
स्वतंत्र टिप्पणीकार

दशकों से शैक्षिक उपेक्षा और पिछड़ेपन का दंश झेल रहे कश्मीर के पास अब खुलकर मुस्कुराने की वजह है। कश्मीर जो कभी शिक्षा के दीये से रोशन था और जिसकी घाटियां तालीमपसंद बुद्धजीवियों से आबाद थीं। पिछले कुछ दशकों में रोशनी का यह दीया बुझ सा गया था। संसाधन और ढांचागत सुविधाओं के अभाव ने कश्मीर की शैक्षणिक कमर तोड़ ही दी थी। अनुच्छेद 370 ने उसके रास्ते की रुकावटों को तोड़ विकास का एक नया दरवाजा खोल दिया है जिससे होकर शिक्षा की नई आबोहवा चमन में फैलेगी और नौनिहालों का विकास होगा। बुनियादी, माध्यमिक और उच्च शिक्षा पर सबका हक है और इससे घाटी के युवाओं को बिल्कुल मरहूम नहीं रखा जा सकता। सालों से विकास की राह जोह रही तालीम की सूनी गलियां अब आबाद होंगी। बहुत संभव है घाटी में गोलियों और बारूदों का स्थान अब कलम और किताबें ले लें। अमन और तरक्की पसंद कश्मीर में विद्या के मंदिरों पर लगा ग्रहण अनुच्छेद के हटते ही छंटने वाला है।

किसी भी राज्य के केंद्रशासित प्रदेश बनने के अपने निहितार्थ हैं और कश्मीर के केंद्रशासित राज्य में तब्दील होने के अपने नफे-नुकसान हैं। अन्य सारी बातों को छोड़ भी दें तो विस्तारवादी नीतियों के चलते वहां शिक्षा में बड़े बदलाव होने की संभावना है। सालों से ढांचागत कमी और अनुदान की कमी की मार झेल रहे शिक्षा के संस्थानों के द्रुत गति से विस्तारित होने से निश्चित तौर पर वहां बुनियादी शिक्षा की स्थिति सुधरेगी। मंदिर और सिर्फ बुनियादी शिक्षा ही क्यों सार्वजनिक महत्व के बड़े व्यावसायिक शैक्षिक संस्थानों के भी बदलने के पूरे आसार हैं जो अनुदान की भारी कमी झेल रहे हैं। उम्मीद है वित्तीय सहायता और धन के सीधे स्त्राव से इन संस्थानों की कमजोर स्थिति सुधरेगी और वे पर्याप्त संसाधनों और अनुदान प्राप्त कर पाने में सक्षम होंगे।

शिक्षा के लिहाज से कश्मीर के हिस्से कुछ बड़ा और अच्छा आने वाला है। उम्मीद है अब घाटी के नौनिहालों को अब उच्च शिक्षा की तलाश में ज्यादा दूर नहीं भटकना पड़ेगा। आंकड़े बताते हैं कि घाटी में कुल 73 सरकारी डिग्री कॉलेजों के माध्यम से छात्रों को उच्च व तकनीकी शिक्षा प्रदान की जा रही है। इनमें से सिर्फ 23 कॉलेजों को नियमित अनुदान सहायता प्राप्त हो रही है। स्पष्ट है कि ये सहायता अनुदान सभी कॉलेजों को ठीक से चला पाने में नाकाफी हैं। इसके अतिरिक्त वहां पहले से मौजूद सरकारी इंजीनियरिंग, बीएड, डिग्री, एमसीए, लॉ, बीबीए, पीजी, एमबीए कॉलेज छात्रों की जरूरत को पूरा कर पाने में नाकाम हैं। बेशक घाटी में कॉलेजों की अच्छी खासी संख्या है, लेकिन वे आधारभूत ढांचे और फैकल्टी की कमी से बेहाल हैं।

दशकों से छात्रों को उच्च शिक्षा की तलाश में देश के दूसरे राज्यों और महानगरों की ओर रुख करना पड़ा है। अनुकूल परिस्थितियों में शिक्षा के बुनियादी विस्तार से बाधित शैक्षिक संस्थानों की राहें आसान होंगी। साथ ही केंद्र के हाथों में बागडोर आने से सुस्त पड़े शैक्षणिक संस्थानों की रफ्तार गति में आएगी। इससे न केवल सरकारी अपितु निजी क्षेत्रों के निवेश को भी बढ़ावा मिलेगा जिससे शिक्षा की दशा-दिशा में आमूलचूल परिवर्तन होने की बड़ी संभावना है। शिक्षा एक बुनियादी जरूरत है और इस पर नए सिरे और पारदर्शी तरीके से काम किया जाना बेहद जरूरी है।

जाहिर है रुकावटों की दीवार टूटते ही शिक्षा की रोशनी चारों ओर फैलेगी जिससे घाटी का हर घर रोशन होगा। विकास के अन्य क्षेत्रों के अलावा शिक्षा एक ऐसा क्षेत्र है जिसके काया पलट से तस्वीर बदल सकती है। आरंभ से ही उपेक्षा और तिरस्कार की मार झेल रहा क्षेत्र ज्ञान के दीये से सचमुच जगमगा उठेगा यदि पूर्ण निष्ठा और राजनीतिक इच्छा शक्ति के साथ आधारभूत स्तरों पर इसके लिए काम किया जाए। दशकों से शैक्षिक पलायन की मार झेल रहे कश्मीर के पास अब खुलकर मुस्कुराने की वजह है। उच्च और बेहतर शिक्षा की तलाश में बाहर निकल रहे छात्रों की भारी संख्या मौजूदा संस्थाओं की संस्थागत खामियों और कमियों पर सवाल उठाते रहे हैं।

बीते वर्षों में शिक्षा के गिरते स्तर ने घाटी में छात्रों के मनोबल को तोड़ा है। इसके अतिरिक्त आधारभूत अवसंरचनात्मक कमी, शिक्षकों की लगातार अनुपस्थिति और शैक्षिक संस्थानों के लिए घटते अनुदान राशि के आवंटन ने पलायन की इस प्रक्रिया को और धार दिया है। यही कारण है कि पटना, दिल्ली, रुड़की और चंडीगढ़ जैसे शैक्षिक हब अब इन छात्रों के पसंदीदा ठिकाने बनते जा रहे हैं। बीते वर्षों में जेएनयू, जामिया मिलिया इस्लामिया और दिल्ली विश्वविद्यालयों जैसे प्रतिष्ठित केंद्रीय विश्वविद्यालयों में घाटी के छात्रों की भारी आगत इस बात की तस्दीक करती रही है कि शिक्षा को लेकर वहां सबकुछ सामान्य नहीं। दिल्ली स्थित जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी में तो कश्मीरी छात्रों की अच्छी खासी संख्या है जो उच्च शिक्षा की गरज से सालों से कैंपस हॉस्टल को अपना पनाहगाह बनाए हुए हैं। वर्ष 2018 में दिल्ली विश्वविद्यालय में कश्मीरी माइग्रेंट कोटा के अंतर्गत अंडरग्रेजुएट कोर्स के तहत 694 कश्मीरी छात्रों ने ऑनलाइन आवेदन किया। वहीं अकेले चंडीगढ़ विश्वविद्यालय में 900 कश्मीरी छात्रों ने विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए अपना पंजीकरण कराया। वहीं पंजाब के राजपुरा में लगभग 1,600 कश्मीरी छात्र अध्ययनरत हैं।

ये तमाम आंकड़े स्वतः इस बात को सिद्ध करते हैं कि घाटी में शिक्षा के क्षेत्र में अभी बहुत कुछ किए जाने की जरूरत है। अनुदानों के निर्बाध स्त्राव और बाहरी निवेशकों से बुनियादी और उच्च शिक्षा की तस्वीर बदली जा सकेगी, इसकी पूरी संभावना है। नौनिहाल अपनी मिट्टी में रहकर विद्या के अपने मंदिरों में शिक्षा पा सकें, इससे बेहतर और क्या हो सकता है। शिक्षा की लौ को और अधिक प्रज्ज्वलित करने में राज्य अकादमियां केंद्र की सहायता से अपनी महती भूमिका निभा सकें इसकी भी अपेक्षा रहेगी। घाटी को अभी शैक्षिक विस्तार हेतु भारी निवेश और अनुदान की दरकार है। सरकार के हालिया फैसले से इसका भी हल निकलने की उम्मीद जगी है। आतंकवाद और उन्मादी कट्टरता से निपट रहे कश्मीर में शिक्षा एकदम से हाशिये पर चली गई और जाहिर इसे पटरी पर लाने में लंबा वक्त लगेगा। देर से ही सही, शिक्षा का दीया रोशन तो होगा। यही उम्मीद पर्याप्त है।

असल मूल्यों से दूर होती शिक्षा

शोभा जैन
स्वतंत्र टिप्पणीकार

महात्मा गांधी मानते थे कि 'शिक्षा मनुष्य में निहित उसके सर्वश्रेष्ठ को बाहर लाने की क्षमता है।' वर्तमान में शिक्षा के माध्यम से अपने सर्वश्रेष्ठ को बाहर लाने की फीस के रूप में जो कीमत चुकाई जा रही है उससे तो यही प्रतीत होता है कि शिक्षा अभिशप्त हो चुकी है। हमारा भारतीय समाज विशेषण का पूज्य समाज है और जो विशेष्य है उसकी पूजा नहीं करता। हमारे यहां जहां व्यवस्था प्रमुख हो जाती है शिक्षा गौण।

आजादी के बाद भारत सरकार द्वारा गठित शिक्षा आयोग ने कहा था-भारत का भविष्य उसकी कक्षाओं में निर्मित हो रहा है। इस निर्माण की जो कीमत पालकों अथवा अभिभावकों द्वारा दी जा रही है, क्या उसकी तुलना में भारत के भविष्य की इमारत की मजबूती को लेकर हम आश्वस्त हैं? यह बड़ा सवाल है। आज हमारे देश में दो ही असहाय और विवश नजर आते हैं-एक स्त्री और दूसरी शिक्षा। आज शिक्षा की मुंह मांगी कीमत दी जा रही है। इसके बावजूद भी रोजगार के लिए जाना तो विदेश ही है तो क्या हमारी वर्तमान शिक्षा इतनी महंगी होने के बावजूद रोजगारोन्मुख भी है, यह विचारणीय है। पहला प्रश्न तो शिक्षा के लिए दी जाने वाली फीस का है। दूसरा मुंह मांगी फीस देने के बावजूद भी क्या जो हमें चाहिए, वह शिक्षा के रूप में मिल रहा है? शिक्षा में राष्ट्र पुरुषों का अभाव ही नहीं, अकाल सा दिखाई देता है, जहां मोटी फीस वसूलने के बाद भी बच्चा न तो ठीक से हिंदी लिख-बोल-समझ पाता है, न ही अंग्रेजी जिसका सबसे ज्यादा लालच दिया जाता है। निजी विद्यालयों द्वारा सुव्यवस्था का हवाला देकर मनमानी फीस वसूली जाती है। सुव्यवस्था भी ऐसी जिसमें बेस्वाद गुणवत्ताहीन भोजन से लेकर योग्य और जुझारू शिक्षकों का इस क्षेत्र में निरंतर अभाव होना कुप्रबंधन और अव्यवस्था को बढ़ावा ही दे रहा है। स्वयं शिक्षक और स्कूल संचालक भी किसी न किसी रूप में अभिभावक पालक की भूमिका में हैं जो शिक्षा के नाम पर कमाई करने वाले कारोबारियों के साथ पर्दे के पीछे रहकर किसी दूसरी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। इसलिए समाज का कौन सा वर्ग इसके लिए जागरूक हो, यह भी ज्ञात नहीं।

शिक्षा जो कर्म के रूप में अभ्यास मूलक है, उपलब्धि के रूप में संस्कार मूलक है, जिसके गुण धर्म मानवीय हैं, किंतु वर्तमान में बच्चों के भविष्य के साथ जो हो रहा है उसे किस तरह की मानवीयता में गिना जाय, यह भी एक प्रश्न है। इसकी एक वजह यह भी कि हमारे तथाकथित गुरुजनों को भी शिक्षक बनने के लिए कैसे भी नौकरी हासिल करने की तड़प है, मगर नौकरी पा लेने के बाद शिक्षा की तड़प नहीं। इतने वर्षों की शिक्षा में हमने क्या पाया, सिवाय भय, निर्ममता और इन्हीं के बीच से जन्मे पाठ्यक्रम। हमने कैसी शिक्षा, शिक्षक और शिक्षा प्रणाली को चुना है जो अन्याय, शोषण, रिश्वतखोरी, हत्या, आत्महत्या आदि सिखाती है, जिसके लिए मनमानी फीस हम देने को तैयार हैं। हमारे देश में कमाने वाले हाथ कम हैं, खाने वाले पेट ज्यादा हैं, बच्चे और बूढ़े ज्यादा हैं, युवा हैं, पर काम नहीं। गांधी ने इसीलिए काम और शिक्षा को एक करने की कल्पना की थी कि जो शिक्षा अन्न पैदा करेगी उससे अक्षर की चिंता अपने आप पैदा होगी, जो शिक्षा स्वावलंबन पैदा करेगी उससे स्वाभिमान अपने आप पैदा होगा, जो शिक्षा अपने काम से प्रेम करना सिखाएगी, उससे देशप्रेम अपने आप आ जाएगा।

शिक्षाविद डॉ. रमेश दवे ने एक किताब में शिक्षा के संदर्भ में लिखा है, 'मौलाना आजाद ने नेहरू से कहा था कि अगर हमें एक पढ़ा लिखा हिंदुस्तान रचना है तो शिक्षा बजट भी उतना कर दीजिए जितना सेना का बजट है, मगर हमने शिक्षा के बजाय शस्त्र को, अक्षर के बजाय अणुशस्त्र को ज्यादा महत्वपूर्ण माना। और आज इस शिक्षा को मोटी फीस से अभिशप्त कर दिया। क्या इससे यह माना जाए कि सरकार शिक्षा में अनुत्तीर्ण हो चुकी है? मनमाना पैसा देकर हम शिक्षा के नाम पर जितना समय खरीद रहे हैं, क्या उस समय में वो सब हैं जिसकी कीमत वास्तविकता में हम देना चाहते हैं? यह हम सभी के चिंतन का विषय है।

खरी-खरी

मजबूत छाते की तलाश में...

डॉ. अतुल चतुर्वेदी

कल वो झमाझम बारिश में सड़क किनारे खड़े मिल गए। मैंने पूछा, कैसे खड़े हो? बोले, भाई तेज बारिश हो रही है, कैसे जाएं! कोई मजबूत छाता होता तो निकल लेते। मैंने कहा, भीग तो आदमी छाते में भी जाता है, गर बारिश तेज हो! वे हंसते हुए बोले, अजी उसमें सिर्फ नीचे-नीचे भीगता है, जबकि आजकल सेल्फी का जमाना है, मुखड़े की चमक देखी जाती है। पैरों की ओर कौन देखता है कि इन पर कितनी गंदगी लगी हुई है? ये कहां-कहां से चल कर आया है? इसने कितनी वैतरणी पार की है? एक मजबूत छाता आदमी को मिल जाए तो जिंदगी आराम से पार हो जाती है।

वो दार्शनिक होने का असफल अभिनय कर रहा था और फिलहाल दो छोड़ कर तीसरी पार्टी में था। मैंने पूछा, यार तुम कब तक एक के बाद दूसरे और फिर तीसरे ऐसे छाते तलाशते रहोगे? वो तपाक से बोला, जब तक ढंग से रपट नहीं जाएंगे। आप नहीं समझेंगे। आप गृहस्थ जीवन और साहित्य के आदमी हैं। राजनीति के पंक में पंकित होने का आनंद अनिर्वचनीय है। अब देखिए, न उधर के छाते में, जिसमें हम पहले थे, कितने छेद हो रहे हैं! कहीं परिवारवाद का पानी रिस रहा है, तो कहीं वैचारिक भ्रम की तानें उखड़ रही हैं। ऐसे में सोचा चलो इधर छलांग लगा लें कुछ दिनों के लिए।

एक अच्छा छाता आपको न केवल व्यर्थ के छींटों से बचाता है, बल्कि सामाजिक और मानसिक सुरक्षा भी देता है। आप तो जानते हैं कि सार्वजनिक जीवन में हैं तो छींटे तो लगते ही रहते हैं, कपड़े चाहे कितने भी उजले पहनो। छाता है तो सुरक्षाबोध है। आत्मविश्वास बढ़ जाता है। आप देखिए न पूरे देश में कैसे लोग इधर से कूदकर उधर आ-जा रहे हैं। मानो कोई कूदोत्सव सा चल रहा हो। यह सब छाते पर भरोसे का ही चमत्कार है। आपका छाता टिकाऊ कंपनी का है तो सब कुछ मुमकिन है। वरना उन्हें देखिए कैसे फटी बरसाती लिए चिल्ला रहे हैं पटरी के उस पार। बचाओ, बचाओ कोई तो बचाओ।

साहित्य हो या मीडिया, फिल्म हो या व्यापार, सबको एक अदद महफूज छाते की तलाश है। यदि आप ढंग के छाते तले आ गए तो आपकी कचरा रचनाएं भी एकाध पुरस्कार ले उड़ेंगी। आप कप्तान-कोच की नाक का बाल हो तो दो-चार बॉल खेलकर भी टीम में बने रहेंगे। इसलिए बेहतर व मजबूत छाता ढूंढ़िए और सारा जीवन चैन की वंशी बजाइए।

ट्वीट-ट्वीट

प्रधानमंत्री मोदी जी, मेरा खयाल है कि सिर्फ रोजमर्रा का सामान लाने-ले जाने के लिए इस्तेमाल में आने वाली पॉलीथिन और प्लास्टिक बैग की रोकथाम के अलावा जब तक दूध के पॉलीपैक और पानी वाली प्लास्टिक बोतलों का कोई विकल्प नहीं तलाशा जाता तब तक सिंगल यूज प्लास्टिक मिशन अधूरा रहेगा।
अनुराग मुस्कान@anuraagmuskaan

विश्व बैडमिंटन चैंपियनशिप जीतने वाली पहली भारतीय बनीं पीवी सिंधू ने कीर्तिमान रच दिया। आपने पूरे देश को गौरवान्वित किया है। जब आप उड़ रही थीं तो आपने मेरी छह वर्षीय बेटी समेत तमाम लड़कियों को पंख दे दिए।
आकाश चोपड़ा@cricketaakash

विपक्षी नेताओं को कश्मीर से बैरंग वापस भेजने से स्पष्ट है कि राज्यपाल द्वारा राहुल गांधी को दिया गया निमंत्रण गंभीर नहीं था। ऐसे में मुझे हैरानी नहीं कि संसद में बहस के दौरान सर्वदलीय दौरे की मेरी मांग अनसुनी कर दी गई थी। सरकार बताती क्यों नहीं कि वह क्या कर रही है?
शशि थरूर@ShashiTharoor

महाराष्ट्र डायरी

दुधारू गाय बन गया सहकारिता क्षेत्र

ओमप्रकाश तिवारी
ब्यूरो प्रमुख, मुंबई

मुंबई उच्च न्यायालय ने महाराष्ट्र के 70 से ज्यादा नेताओं के खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज कर सहकारी बैंक घोटाले में उनकी जांच का आदेश देकर एक तरह से महाराष्ट्र की सियासी चूलें हिला दी हैं, क्योंकि यह जांच आगे बढ़ी तो न जाने कितने 'चिदंबरम' फंसते नजर आएंगे और न जाने कितनों की राजनीति खत्म हो जाएगी। महाराष्ट्र राज्य सहकारिता का अनुपम उदाहरण रहा है। हाल ही में कांग्रेस से नेता विरोधीदल का पद छोड़कर भाजपानीत सरकार में मंत्री बने राधाकृष्ण विखे पाटिल के बाबा विट्ठलराव विखे पाटिल को महाराष्ट्र में सहकारिता का अग्रदूत माना जाता है। उन्होंने ही अहमदनगर के लोनी में राज्य का पहला सहकारी शक्कर कारखाना शुरू किया। उनकी इसी उपलब्धि के कारण उन्हें भारत सरकार ने 1961 में चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'पद्मश्री' से सम्मानित किया था। उनकी देखादेखी और सहयोग से महाराष्ट्र के अन्य क्षेत्रों में भी सहकारी शक्कर कारखानों की शुरुआत होने लगी और किसानों का भला होने लगा। उन दिनों महाराष्ट्र में कांग्रेस के ज्यादातर दिग्गज नेताओं ने अपने-अपने क्षेत्रों में सहकारी शक्कर कारखाने लगाने शुरू किए। चूंकि ये नेता ज्यादातर पश्चिम महाराष्ट्र के थे, इसलिए पूरा पश्चिम महाराष्ट्र 'शुगर बेल्ट' के नाम से जाना जाने लगा। गन्ने की खेती और शक्कर कारखानों के कारण समृद्धि ऐसी आई कि कोल्हापुर-सांगली जैसे नगर प्रति व्यक्ति आय के मामले में देश में शिखर पर पहुंच गए।

राज्य के सहकारी शक्कर कारखानों का सालाना कारोबार 5,000 करोड़ रुपये से भी ज्यादा है। देश की 40 फीसद चीनी की जरूरतें महाराष्ट्र से पूरी होती हैं। इसका लाभ किसानों को भी होता है। सहकारी चीनी कारखानों में किसान भी भागीदार होते हैं। कांग्रेस को इस क्षेत्र में जब अपनी मजबूती का अहसास हुआ, तो उसने अपने शासनकाल में सहकारी क्षेत्र को भ्रष्टाचार का अड्डा बना दिया। दूसरी ओर सहकारिता की परंपरा शक्कर कारखानों तक ही सीमित नहीं रही। यह दुग्ध उत्पादन एवं सूत कताई मिलों के रूप में भी विकसित होने लगी। लेकिन इसका लाभ भी ज्यादातर पश्चिम महाराष्ट्र को ही मिला। विदर्भ और मराठवाड़ा इनसे भी वंचित रहे। कपास की खेती सबसे ज्यादा विदर्भ और मराठवाड़ा में होती है। लेकिन इन क्षेत्रों में कद्दावर नेतृत्व की कमी ने इन्हें सहकारिता के लाभ से वंचित रखा। 1995 में पहली बार राज्य में शिवसेना-भाजपा सरकार बनने के बाद उसमें उपमुख्यमंत्री रहे गोपीनाथ मुंडे अपना खुद का शक्कर कारखाना लगाने में कामयाब जरूर रहे, लेकिन सहकारिता क्षेत्र में उनकी भी दाल नहीं गल पाई। लेकिन शिवसेना-भाजपा सरकार ने सहकारिता कानूनों में कुछ बदलाव कर 'शुगर लॉबी' पर नियंत्रण की कोशिश जरूर की। दुर्भाग्य से यह सरकार साढ़े चार साल ही रही। उसके जाने के साथ ही महाराष्ट्र में कांग्रेस भी दोफाड़ हो गई, और लगभग पूरी की पूरी 'शुगर लॉबी' शरद पवार के साथ राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी से जुड़ गई।

वर्ष 1999 के बाद आई कांग्रेस- राकांपा की सरकार का ही दौर था, जिसमें सहकारी बैंकों को चूना लगाकर खुद को लाभ पहुंचाने का खुलासा नाबार्ड की लेखा परीक्षित रिपोर्ट में हुआ है। इसी आधार पर गुरुवार को मुंबई उच्च न्यायालय ने 70 से ज्यादा नेताओं के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करने के आदेश मुंबई पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा को दिए हैं। दरअसल जब कोई नेता सहकारी चीनी मिल, सूत मिल या डेयरी फॉर्म खोलना चाहता है, तो उसे राज्य सरकार की बैंक गारंटी के साथ महाराष्ट्र राज्य सहकारी बैंक से आसान कर्ज भी उपलब्ध होता है। लेकिन ये कर्ज लौटाने की फिक्र किसी को नहीं होती। इससे जहां एक ओर सहकारी कारखाने डूबते हैं, वहीं बैंकों का पैसा भी डूबता है और राज्य सरकार को भी नुकसान उठाना पड़ता है।

सहकारिता क्षेत्र की इस दुधारू गाय को दुहते रहने के लिए नेताओं का सत्ता के साथ बने रहना भी जरूरी होता है। इसकी एक झलक पूर्व की शिवसेना- भाजपा सरकार में भी देखी गई थी, और अब देवेंद्र फड़नवीस की सरकार में भी दिखाई देने लगी है। 1995 की शिवसेना-भाजपा सरकार में भी 'शुगर बेल्ट' के नेताओं ने गठबंधन सरकार के साथ तैरने का मन बना लिया था। उस समय उपमुख्यमंत्री गोपीनाथ मुंडे द्वारा निकाली गई 'परिवर्तन यात्रा' ज्यादातर उन्हीं क्षेत्रों से निकली थी, जिसे शुगर बेल्ट के नाम से जाना जाता था। तब शुगर बेल्ट में उस यात्रा का न सिर्फ जबर्दस्त स्वागत हुआ था, बल्कि कई 'शुगर किंग' नेता उस दौरान भाजपा या शिवसेना के साथ जुड़ गए थे।

राधाकृष्ण विखे पाटिल एवं उनके पिता बालासाहब विखे पाटिल तथा विजयसिंह मोहिते पाटिल के छोटे भाई प्रतापसिंह मोहिते पाटिल ऐसे ही नेताओं में थे। यह स्थिति बदली नहीं है। एक तरफ मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस की 'महाजनादेश यात्रा' निकल रही है, तो उसके साथ-साथ शुगर बेल्ट के कई दिग्गजों का भाजपा की ओर आगमन भी हो रहा है। मजे की बात यह कि इस बार भी राह विखे पाटिल और मोहिते पाटिल परिवार ही दिखा रहा है, जो सहकारी शक्कर कारखानों के क्षेत्र में अगुआ रहा है।

जागरण जनमत — कल का परिणाम

आर्थिक सुस्ती से निपटने के लिए सरकार के हालिया कदमों से अर्थव्यवस्था में सुधार होगा?

उत्तर	प्रतिशत
हां	68
नहीं	23
कह नहीं सकते	9

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

कश्मीर गए विपक्षी दलों के प्रतिनिधिमंडल को एयरपोर्ट से वापस भेजकर सरकार ने सही किया है?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर POLL लिखें, स्पेस देकर Y, N या C लिखकर 57272 पर भेजें
Y -हां, N-नहीं, C-कह नहीं सकते

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

हितचिंतन से देश के रहते कोसों दूर,
बोरिया-बिस्तर बांधकर करने निकले टूर।
करने निकले टूर और वह भी कश्मीरी,
ये अशांति की चाह रहे बांटना पंजीरी।
टुकड़े-टुकड़े गैंग साथ जा करते क्रंदन,
कर सकते ये लोग भला कैसे हितचिंतन!!
- ओमप्रकाश तिवारी

मुद्दा

नासूर बन रहा है तंबाकू उत्पादों का अवैध कारोबार

अगर इस गोरखधंधे को जल्दी नहीं रोका गया तो यह स्वास्थ्य संबंधी खतरों के साथ-साथ कानून-व्यवस्था के लिए बड़ी चुनौती में बदल सकता है

रंजन राजन
वरिष्ठ पत्रकार

तंबाकू उत्पादों खासकर सिगरेट का अवैध कारोबार पूरी दुनिया में बड़ी चिंता का सबब बन रहा है। यह न केवल स्वास्थ्य संबंधी खतरों को बढ़ा रहा है, बल्कि आर्थिक और सुरक्षा संबंधी चिंता भी गंभीर हो रही है। अमेरिकी विदेश विभाग की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि तंबाकू उत्पादों का अवैध व्यापार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपराध और भ्रष्टाचार के साथ-साथ आतंकवाद को भी बढ़ावा दे रहा है। भारत में भी पुलवामा आतंकी हमले के बाद सुरक्षा विशेषज्ञों ने इस बात पर जोर दिया था कि तंबाकू उत्पादों की तस्करी सहित आतंकियों की फंडिंग के तमाम स्रोतों की जांच कर उस पर अंकुश लगाने के लिए ठोस कदम उठाने की जरूरत है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया में खपत होनेवाली हर 10 सिगरेट व अन्य तंबाकू उत्पादों में से एक अवैध कारोबार का हिस्सा है। इसे बढ़ाने में छोटे निर्माताओं व विक्रेताओं से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर के हथियार एवं मानव तस्कर गिरोह तक शामिल हैं। जर्मनी के ओस्नाब्रुक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. एचसी अरंड्ट सिन के शोध के मुताबिक तंबाकू उत्पादों के अवैध व्यापार में 900 प्रतिशत तक लाभ लिया जा रहा है और इससे प्राप्त मोटी राशि हथियारों तथा मानव तस्करी के साथ-साथ आतंकवाद जैसी अत्यंत गंभीर आपराधिक गतिविधियों में लगाई जा रही है। यह बात आपको हैरान कर सकती है कि भारत में तंबाकू उत्पादों का अवैध कारोबार दुनिया से ज्यादा तेजी से फल-फूल रहा है। एक अनुमान के मुताबिक भारत में तस्करी कर लाई गई और स्थानीय स्तर पर टैक्स चोरी कर अवैध रूप से निर्मित सिगरेट का कारोबार देश में सिगरेट उद्योग के कुल कारोबार के पांचवें हिस्से तक पहुंच चुका है! 'यूरोमॉनीटर इंटरनेशनल' के मुताबिक भारत अवैध सिगरेट का दुनिया का चौथा सबसे बड़ा मार्केट बन चुका है।

इसी कड़ी में 'संडे गार्जियन' की हालिया रिपोर्ट में राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआइ) के सूत्रों के हवाले से बताया गया है कि भारत में इस साल जनवरी से अब तक 25 करोड़ रुपये से अधिक की विदेशी ब्रांडों की अवैध सिगरेट जब्त की जा चुकी है। जब्त सिगरेट की कुल संख्या करीब 2 करोड़ है। इनमें से अधिकतर चीन, म्यांमार, नेपाल और मध्य-पूर्व के देशों के रास्ते भारत लाए गए थे। रिपोर्ट में डीआरआइ के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि तंबाकू उत्पादों के अवैध कारोबार से भारत सरकार को हो रही कुल राजस्व हानि के सटीक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन एक मोटे अनुमान के अनुसार यह नुकसान सालाना 600 अरब रुपये तक हो सकता है। जानकारों का मानना है कि भारत में विदेशी सिगरेट की तस्करी हाल के वर्षों में तेजी से बढ़ने का कारण देश में आयातित सिगरेट पर टैक्स में भारी वृद्धि है। फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के थिंक टैंक विंग ने भी खुलासा किया है कि देश में आयातित और घरेलू सिगरेट एवं अन्य तंबाकू उत्पादों पर टैक्स जितनी तेजी से बढ़ा है, इसका अवैध कारोबार भी उतनी ही तेजी से बढ़ रहा है। हर साल बड़ी संख्या में नए युवा उन नकली या तस्करी वाले विदेशी ब्रांडों के लालच में आ रहे हैं, जो अनिवार्य सचित्र चेतावनी के बिना धड़ल्ले से बेचे जा रहे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर इस गोरखधंधे को जल्दी नहीं रोका गया तो यह स्वास्थ्य संबंधी खतरों के साथ-साथ कानून-व्यवस्था के लिए बड़ी चुनौती में बदल सकता है।

तस्करी कर लाई गई और अवैध रूप से निर्मित सिगरेट को हरियाणा, एनसीआर और जम्मू-कश्मीर में बड़े पैमाने पर खपाया जा रहा है। पिछले दिनों फरीदाबाद, गाजियाबाद और नोएडा में एक विशेष टीम ने कई अवैध सिगरेट निर्माण इकाइयों पर छापा मारा और करोड़ों रुपये की अवैध सिगरेट जब्त की। ये छोटी इकाइयां न केवल अपने स्वयं के ब्रांडों का निर्माण कर रही हैं, बल्कि कई लोकप्रिय विदेशी ब्रांडों के नाम से नकली माल भी तैयार कर रही हैं। अवैध रूप से तैयार इन माल पर न तो सिगरेट एंड अदर टोबैको प्रोडक्ट्स एक्ट द्वारा निर्धारित आवश्यक सचित्र चेतावनी छापी जा रही है, न ही अन्य जरूरी सूचनाएं दी जा रही हैं, जो पैकिंग नियमों के तहत जरूरी है। ये कंपनियां टैक्स चोरी कर काफी सस्ते में माल तैयार कर रही हैं।

दरअसल सिगरेट लाइसेंस का नियमन इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट एंड रेगुलेशन एक्ट 1951 द्वारा किया जाता है। 1991 में खुली अर्थव्यवस्था की नीति लागू होने के बाद केवल पांच उद्योगों के लिए लाइसेंस अनिवार्य रह गया है, जिनमें सिगार, सिगरेट एवं अन्य तंबाकू उत्पादों का निर्माण शामिल है। इन उत्पादों के लिए 1999 के बाद से किसी भी नए निर्माता को लाइसेंस नहीं दिया गया है। लेकिन कानूनी खामियों का फायदा उठा कर सिगरेट की अवैध निर्माण इकाइयां धड़ल्ले से खुली हैं।

जानकार बताते हैं कि लाइसेंस मुक्त फैक्टरी से संबंधित नियमों में 'फैक्टरी' की जो परिभाषा दी गई है, उसमें अपवाद के रूप में सिगरेट या किसी अन्य उत्पाद का जिक्र नहीं है। परिभाषा के मुताबिक ऐसी फैक्टरी इकाई, जिसे ऊर्जा सहायता मिलती है और जिसमें 50 से कम कर्मचारी हैं या जिसे ऊर्जा सहायता नहीं मिलती है और जिसमें 100 से कम कर्मचारी हैं, की स्थापना अनिवार्य लाइसेंस हासिल किए बिना की जा सकती है। दिल्ली के वरिष्ठ अधिवक्ता अजय कुमार मानते हैं कि समस्या इसी प्रावधान के कारण उत्पन्न हो रही है और इसकी आड़ में अवैध सिगरेट निर्माण की लघु एवं मध्यम इकाइयों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इसलिए 'अवैध सिगरेट कारोबार को रोकने के लिए सरकार को तुरंत नीतिगत सुधार करना चाहिए।' यह सलाह फिक्की की हालिया रिपोर्ट में सेंट्रल बोर्ड ऑफ इनडायरेक्ट टैक्सेज एंड कस्टम्स के पूर्व चेयरमैन नजीब शाह द्वारा दी गई है, जिसे हल्के में लेना घातक हो सकता है।

9 फीट ऊंची महात्मा गांधी की प्रतिमा स्थापित की जाएगी ब्रिटेन के मैनचेस्टर में साल के अंत तक। कांस्य की इस मूर्ति का निर्माण भारतीय कलाकार राम वी सुतार करेंगे।

पांच ग्राम प्लास्टिक हर सप्ताह जा रहा शरीर में

डाटागीरी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक बार प्रयोग होने वाले प्लास्टिक के खिलाफ दो अक्टूबर से एक 'नया जन-आंदोलन' शुरू करने का रविवार को आह्वान किया। उन्होंने 'मन की बात' में कहा कि जब देश राष्ट्रपिता की 150वीं जयंती मना रहा है, तब ऐसे में 'हम प्लास्टिक के खिलाफ एक नया जन-आंदोलन आरंभ करेंगे।' प्लास्टिक प्रदूषण वर्तमान में एक वैश्विक समस्या बनी हुई है। प्लास्टिक की वजह से पर्यावरण को हो रहा नुकसान वर्षों से अंतरराष्ट्रीय शोध और सरकारी रिपोर्टों का विषय रहा है। इससे पता चलता है कि दुनियाभर में बनने वाले प्लास्टिक का 75 फीसद इसका कचरा बन जाता है और लगभग 87 फीसद हिस्सा पर्यावरण में मिल जाता है।

ऑस्ट्रेलिया की यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूकैसल द्वारा किया गया अध्ययन इस वर्ष वर्ल्ड वाइल्डलाइफ फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित किया गया है। इसमें बताया गया है कि एक सप्ताह में एक व्यक्ति औसतन पांच ग्राम प्लास्टिक निगल रहा है। यानी किसी न किसी माध्यम से यह नुकसानदेह चीज उसके शरीर में पहुंच रही है। अध्ययन के अनुसार प्लास्टिक कचरे का एक तिहाई से अधिक हिस्सा प्रकृति में मिल जाता है, विशेष रूप से पानी में जो शरीर में प्लास्टिक पहुंचाने का सबसे बड़ा स्रोत है। अध्ययन के मुताबिक, नल के पानी में प्लास्टिक फाइबर पाए जाने के मामले में भारत तीसरे नंबर पर है। यहां 82.4 फीसद तक प्लास्टिक फाइबर पाया जाता है। मतलब प्रति 500 मिली में चार प्लास्टिक फाइबर।

भारत में प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियमों के पालन का आकलन करने वाले केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) की रिपोर्ट अंतिम बार 2017-18 के लिए प्रकाशित की गई थी। 2018 में इसके नियमों में संशोधन किया गया था। 2017-18 में केवल 14 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट सीपीसीबी को सौंपी थी। इन 14 में से उत्तर प्रदेश में हर साल 2.06 लाख टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न हुआ। यहां पर प्लास्टिक निर्माण और रिसाइकिल की 16 अपंजीकृत इकाइयां भी थीं। वहीं गुजरात में 2.69 लाख टन प्रति वर्ष प्लास्टिक कचरा उत्पन्न हुआ।

नल के पानी में प्लास्टिक

देश	प्लास्टिक फाइबर से युक्त नल का पानी (प्रतिशत में)	प्रति 500 मिली में औसत प्लास्टिक फाइबर
लेबनान	98	4.5
अमेरिका	94.4	4.8
भारत	82.4	4
इक्वाडोर	79.2	2.2
इंडोनेशिया	76.2	1.9
यूरोप	72.2	1.9

राज्यों में प्लास्टिक कचरा

राज्य	प्लास्टिक कचरा (टन प्रति वर्ष)	निर्माण/रिसाइकिल इकाई	
		पंजीकृत	गैरपंजीकृत
उत्तर प्रदेश	2.06लाख	133	16
गुजरात	2.69 लाख	882	0
मध्य प्रदेश	0.61 लाख	71	20
पंजाब	0.54 लाख	144	246
नगालैंड	0.14 लाख	6	-
ओडिशा	0.12 लाख	20	-

नाहरगढ़ रेस्क्यू सेंटर में 57 शेर व बाघों की गई जान

अनदेखी के शिकार ▶ 25 साल पूरे कर चुकी अकेली शेरनी 'बेगम' ही बची, गुजार रही अंतिम दिन, वन मंत्री ने मांगी रिपोर्ट

जयपुर में 2002 में बनाया गया था रेस्क्यू सेंटर, सर्कस से आजादी दिलाकर सेंटर में लाए गए 58 शेर और बाघ

जागरण संवाददाता, जयपुर

कभी सर्कस की क्रूरता से आजादी दिलाकर जयपुर के नाहरगढ़ रेस्क्यू सेंटर में लाए गए 58 शेर और बाघ गुमनामी में ही इस दुनिया से विदा हो गए। इन शेर और बाघों में से अब एक अकेली शेरनी बेगम बची है। शेरनी बेगम जिंदगी के 25 साल पूरे कर चुकी है। वह भी अपने अंतिम दिन गुजार रही है। मौजूदा हालात को देखते हुए उसकी मौत के बाद यह रेस्क्यू सेंटर इतिहास की बात हो जाएगा। दुनिया की नजर से दूर नजरबंदी में नाहरगढ़ रेस्क्यू सेंटर में रखे गए इन शेरों और बाघों को किन हालात में रखा गया, कभी कोई नहीं जान पाया।

सर्कस में शेरों और बाघों के उपयोग और प्रदर्शन पर जब पाबंदी लगी तो सभी सर्कस से इनको आजाद कराया गया था। तब उम्मीद यह की गई थी कि इन जानवरों को सर्कस के रिंग मास्टर की क्रूरता से दूर एक बेहतर जिंदगी मिल पाएगी। इसलिए जयपुर में 2002 में नाहरगढ़ रेस्क्यू सेंटर बनाया गया। वहां 2002 से लेकर 2010 तक बाघों और शेरों के आने का सिलसिला जारी रहा। तब यहां लाए गए कुल जीवों की संख्या 58 थी। शेर और बाघ के अलावा इनमें एक बेहद दुर्लभ टाइगोन भी था।

राजस्थान के वन मंत्री सुखराम विश्नोई का कहना है कि नाहरगढ़ रेस्क्यू सेंटर के हालात को सुधारने के लिए अधिकारियों से चर्चा की जाएगी। उन्होंने बताया कि अब तक जानवरों की किन परिस्थितियों अथवा लापरवाही से मौत हुई, यह भी रिपोर्ट मांगी जाएगी। उधर, वन विभाग के सूत्रों के अनुसार, जिम्मेदार लोगों की लापरवाही के कारण बाघ और शेर दुनिया से विदा हुए।

प्रजनन नहीं कराया गया : इन बेजुबानों को वहां शिफ्ट तो कर दिया गया, लेकिन यहां आकर भी इन्हें आजाद जिंदगी नहीं मिल पाई। इन जीवों के मिक्स ब्रीड होने की वजह से यहां इनका प्रजनन नहीं कराया गया। इसका नतीजा यह रहा कि वहां ज्यादातर शेरनी व बाघिनों को बच्चेदानी में संक्रमण की वजह से जिंदगी गंवानी पड़ी। वहीं प्रजनन नहीं होने के तनाव से बहुत जानवर यहां कैंसर के कारण मारे गए।

मौत का कारण कैंसर रहा : पब्लिक डिस्प्ले पर पाबंदी की वजह से यहां से न तो शेर और बाघ की होने वाली मौतों की जानकारियां दी गईं और न ही इन जीवों के लिए कुछ बेहतर जिंदगी देने के लिए कुछ किया जा सका। वर्ष 2016 तक वहां शेर व बाघों की मौत की जानकारी सार्वजनिक की जाती थी, लेकिन उसके बाद वह सिलसिला भी खत्म हो गया। यहां ज्यादातर शेर और बाघ की मौत का कारण कैंसर रहा। वन्यजीव प्रेमी लगातार यहां बाघों और शेरों की मौत के कारणों पर सवाल उठाते रहे, लेकिन उन्हें कभी कोई जवाब नहीं मिला। वर्ष 2012 में इस मामले में राजस्थान हाई कोर्ट ने संज्ञान लेकर जवाब तलब किया था। तब यहां शेर और बाघों की मौत की वजह उनकी उम्र बताई गई थी।

जिस जगह को जानवरों को बचाने के लिए तैयार किया गया था, वहीं गई जानें। फाइल

डीएनए टेस्ट कराया तो ज्यादातर मिक्स ब्रीड के निकले

नाहरगढ़ रेस्क्यू सेंटर में इन जीवों को खाना, मेडिकल सुविधा और रहने की जगह तो मिली, लेकिन इनका अंत बेहद दुखद रहा। रेस्क्यू सेंटर में लाए गए इन जीवों को रिंग मास्टर के हंटर से तो निजात मिल गई, लेकिन जो जिंदगी उन्हें मिली उसे जिंदगी नहीं काला पानी की सजा कहा जा सकता है।

ऐसे हुआ इनका दुखद अंत

वर्ष 2015 में नाहरगढ़ रेस्क्यू सेंटर में शेरनी सोना की कैंसर से मौत हुई। उस समय यहां 12 बिग कैट्स जिंदा थे। उनमें से छह शेरनी, तीन शेर, चार बाघ और एक टाइगोन था। वर्ष 2015 में ही सिंबा नाम के टाइगोन की मौत हो गई। उसके बाद यहां शेर व बाघों की मृत्यु की जानकारी सार्वजिक नहीं की गई। तब से लेकर अब तक बचे 13 जीवों में 12 की मौत हो चुकी है।

सीसीटीवी कैमरे के साक्ष्य मान्य नहीं, फिर भी उनके आधार पर वाहनों के हो रहे चालान

सूचना का अधिकार

धनंजय प्रताप सिंह, भोपाल

यातायात पुलिस कई वर्षों से सीसीटीवी कैमरे की रिकॉर्डिंग के आधार पर सैकड़ों लोगों को यातायात नियमों के उल्लंघन का आरोपित बताकर जुर्माना वसूल रही है। यह तब है, जब मोटर व्हीकल एक्ट में कहीं भी यह प्रावधान नहीं है कि पुलिस कैमरे की रिकॉर्डिंग के आधार पर चालान की कार्रवाई कर सकती है। सूचना का अधिकार (आरटीआइ) के तहत जब इस संबंध में जानकारी मांगी गई तो पुलिस के पास कोई जवाब नहीं था।

केंद्र सरकार के सड़क-परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय से आरटीआइ के जरिये जब यह पूछा गया कि मोटर व्हीकल एक्ट के किन नियमों के आधार पर राज्य सरकारें सीसीटीवी कैमरे से हुई रिकॉर्डिंग पर यातायात नियम तोड़ने वालों का ई-चालान बनाने को कानूनन वैध मानती हैं, तो इसके लिखित जवाब में डायरेक्टर (मोटर व्हीकल एक्ट) डॉ. पीयूष जैन ने पल्ला झाड़ लिया। उन्होंने कहा कि यातायात पुलिस और आरटीओ सहित मोटर व्हीकल एक्ट 1988 के प्रावधानों का क्रियान्वयन राज्यों के परिवहन विभाग के अधिकार में आता है। यह जानकारी वहीं से प्राप्त करें।

राज्य सरकार ने भी पल्ला झाड़ लिया : जब यही जानकारी आरटीआइ के तहत मध्य प्रदेश में ग्वालियर के परिवहन आयुक्त से मांगी गई तो उन्होंने आरटीआइ के आवेदन को पहले पुलिस मुख्यालय की पुलिस यातायात प्रशिक्षण संस्थान (पीटीआरआइ) भेज दिया, फिर पीटीआरआइ ने इसे नगर निगम को भेज दिया। कहा गया कि उक्त जानकारी का संबंध इस संस्थान से न होकर नगर निगम से है, इसलिए इसकी जानकारी उनके स्तर पर ही दी जा सकती है। आरटीआइ के जवाब में निगम की ओर से कहा गया कि यह उनका विषय नहीं है।

देश के कई शहरों में सीसीटीवी से ट्रैफिक पर रखी जाती है नजर। प्रतीकात्मक

> हमने केंद्र सरकार और राज्य सरकार से ई-चालान की वैधता की जानकारी मांगी, तो जवाब नहीं दिया गया।
> – डॉ. प्रकाश अग्रवाल, सामाजिक कार्यकर्ता

> ई-चालान में सीसीटीवी फुटेज को साक्ष्य के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। पूरे देश में ही ये व्यवस्था चल रही है। जिसे आपत्ति हो, वह अदालत जाने के लिए स्वतंत्र है।
> – अजय शर्मा, अतिरिक्त पुलिस महानिरीक्षक (पीटीआरआइ)

इस तरह निगम की ओर से भी यह नहीं बताया गया कि ई-चालान किस नियम के तहत बनाए जा रहे हैं।

पैतृक गांव में बंजर भूमि को आबाद कर रहे डीयू स्कॉलर

- महानगरीय तिलस्म को छोड़ अपने पैतृक गांव घंडियाल में स्वरोजगार की नई इबारत लिख रहे दो भाई परिमंजय और मनंजय
- मनियारस्यूं क्षेत्र के तीन दर्जन गांवों में ग्रामीणों के समूह बनाकर शुरू की सैकड़ों लोगों को खेती-किसानी से जोड़ने की मुहिम

पौड़ी जिले के पैतृक घंडियाल गांव में खेतों में उगी सब्जियों की देखरेख करते परिमंजय व मनंजय रावत। जागरण

गणेश काला, पौड़ी गढ़वाल

पहाड़ों से रोजगार के नाम पर हो रहे बेतहाशा पलायन के दौर में दिल्ली विश्वविद्यालय के दो स्कॉलर भाई अपने पैतृक गांव घंडियाल की बंजर भूमि को आबाद कर खुशहाली की नई इबारत लिख रहे हैं। पांच दशक से बंजर पड़ी पुरखों की इस जमीन पर दिन-रात पसीना बहा रहे ये दोनों भाई परिजनों के साथ मिलकर खेती-किसानी की उन्नत तकनीक के साथ लोगों को भी खेती के लिए प्रेरित कर रहे हैं। इसके सार्थक नतीजे भी सामने आए हैं और वर्तमान में आसपास के गांवों के 100 से अधिक लोगों ने अपनी बंजर भूमि पर आधुनिक तौर-तरीकों से व्यावसायिक खेती शुरू कर दी है।

उत्तराखंड के पौड़ी जिले के ग्राम घंडियाल निवासी समाजसेवी दिनेश रावत व मीना रावत के पुत्र परिमंजय व मनंजय रावत ने वर्ष 2015 में दिल्ली विश्वविद्यालय से अकाउंट और कंप्यूटर साइंस में डिग्री हासिल की। इसके बाद दोनों को मल्टीनेशनल कंपनियों में अच्छी नौकरी भी मिली, लेकिन दोनों भाइयों का मन पहाड़ से रोजगार के नाम पर हो रहे बेतहाशा पलायन से इस कदर व्यथित था कि उन्होंने महानगर की चकाचौंध को छोड़ वापस गांव की राह पकड़ ली। उद्देश्य था गांव में खेती-किसानी के जरिये स्वरोजगार के बीज रोपित करना। आज डेढ़ हेक्टेयर में फैले अपने रुद्रगढ़ फॉर्मिंग एस्टेट (घंडियाल) में आधुनिक उपकरणों के साथ पसीना बहा रहे इन नौजवानों की पहली फसल अब पकने को तैयार है। शुद्ध जैविक मंडुवा, झंगोरा, मूंग व उड़द के अलावा लौकी, कद्दू सहित दर्जनभर सब्जियों की कतारबद्ध बेलें उनकी मेहनत की गवाही दे रही हैं।

बकौल मनंजय, 'इस बार हमारा लक्ष्य दस लाख रुपये के उत्पाद बेचने का है। फिलहाल देहरादून के कुछ नामी होटलों के साथ हिमालयन हॉस्पिटल जॉलीग्रांट से हमें सब्जियों की सप्लाई के ऑर्डर मिले हैं।'

गांवों में समूहों के जरिये शुरू की खेती : दोनों भाइयों ने 'द न्यू विजन सेल्फ इंप्लॉयमेंट ग्रुप' के बैनर तले मनियारस्यूं क्षेत्र के तीन दर्जन गांवों में ग्रामीणों के समूह बनाकर करीब 200 लोगों को दोबारा खेती-किसानी से जोड़ने की मुहिम शुरू की। पहले प्रयास में घंडियाल, ओलना, धारी, साकनी, नैथाणा, भेटुली, सैली, गढ़कोट, थनुल, पीपली, नौगांव, बेडगांव आदि गांवों के 100 से ज्यादा ग्रामीणों ने जैविक खेती शुरू कर दी है।

पांच दशक बाद शुरू हुई परंपरागत खेती : परिमंजय और मनंजय का हरियाली का सफर यहीं नहीं थमा। इन दिनों गांव के निकट करीब दस हेक्टेयर भूमि में उनकी पहल पर दर्जनों प्रजाति की आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों के साथ करीब तीन लाख पौधों का रोपण किया जा रहा है। बांज, बुरांश और काफल के सघन जंगलों के बीच स्थित खेतों में पांच दशक बाद परंपरागत खेती शुरू हुई है।

14 परियोजनाओं पर शुरू कर चुके कार्य : छह माह रुद्रगढ़ एस्टेट में परंपरागत जैविक कृषिकरण के सफल प्रयोग के बाद परिमंजय व मनंजय ने न्यू वर्ल्ड फॉर्मिंग एस्टेट में असोमी बांस की पौध का वृहद स्तर पर रोपण किया है। फिलहाल वह गोधाम, शिटाके मशरूम, कड़कनाथ कुक्कुट, फूलों की खेती, मौनपालन, जैविक जूस व बैंबू उद्योग सहित 14 परियोजनाओं पर कार्य शुरू कर चुके हैं।

बदलाव की बयार

> घंडियाल में रावत बंधुओं की बंजर भूमि को आबाद करने की मुहिम से पलायन पर अंकुश लगेगा। कृषि विभाग की ओर से उनके प्रयोगों को अन्य लोगों तक पहुंचाने के लिए वहां फॉर्मर फील्ड स्कूल की स्थापना कर तकनीकी जानकारियां देने के साथ ही किसानों को विभागीय योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है।
> – देवेंद्र सिंह राणा, मुख्य कृषि अधिकारी, पौड़ी

फोटो न्यूज

दुनिया का सबसे बड़ा रूफटॉप फार्म

छठी मंजिल पर है

पेरिस के दक्षिण-पश्चिमी हिस्से में 14,000 वर्ग मीटर में बन रहा यह फार्म छह मंजिला इमारत की छत पर तैयार किया जा रहा है। इस फार्म के लिए 20 माली रखे गए हैं, जो यहां पर 30 तरह के पौधे लगाएंगे। इसको शहरी फार्मिंग कंपनी एग्रीपोलिस तैयार कर रही है। उसका दावा है कि इस फार्म से रोजाना एक हजार किलो फल व सब्जियां मिल सकेंगी। यह कंपनी लंबे समय से शहरों में लोगों को फार्मिंग के बारे में शिक्षित करती रहती है। इसके लिए वह कई वर्कशॉप का आयोजन भी कर चुकी है। कंपनी देश में और स्थानों पर भी इस तरह के फॉर्म लगाने की दिशा में काम कर रही है। कंपनी का कहना है कि उनका उद्देश्य हर खाली स्थान पर कृषि के लिए उचित स्थान तैयार करना है।

क्या है तकनीक

इस फार्म को वर्टिकल फार्मिंग तकनीक पर तैयार किया है। इससे इस फार्म में किसी भी तरह के पेस्टीसाइड की आवश्यकता नहीं होगी। साथ ही इसमें पानी की जरूरत भी बहुत कम होगी।

तलाशा विकल्प : बढ़ती आबादी के साथ कृषि योग्य भूमि लगातार घट रही है। दुनियाभर के वैज्ञानिक इसके विकल्प तलाश रहे हैं। फ्रांस की राजधानी पेरिस में इसे लेकर बेहतरीन कदम उठाया गया है। यहां दुनिया का सबसे बड़ा रूफटॉप फार्म तैयार किया जा रहा है, जो अगले साल शुरू हो जाएगा। उम्मीद जताई जा रही है कि इससे हजारों लोगों को खाद्य आपूर्ति की जा सकेगी। एजेंसी

कोदो, रागी, कुटकी और सावा से तैयार किया जाएगा ज्यादा आयरन वाला चावल

तलाशी राह

- इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के प्रो. डॉ. गिरीश चंदेल ने खोजे चार नए जीन
- छत्तीसगढ़ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के माध्यम से कराया जा रहा पेटेंट

दीपक अवस्थी, रायपुर

छत्तीसगढ़ के रायपुर स्थित इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के प्रो. डॉ. गिरीश चंदेल ने चावल की उपजाति कोदो, रागी, कुटकी, सावा से चार ऐसे जीन खोजे हैं, जो चावल में पाए जाने वाले आयरन की क्षमता को तीन गुना बढ़ा देंगे। इन जीन का प्रयोग कर धान की नई प्रजाति ईजाद की जा रही है। इसका फायदा ऐसे राज्यों के लोगों को होगा, जहां चावल की खपत ज्यादा है। डॉ. गिरीश की खोज डब्ल्यूएचओ के मानक पर पूरी तरह से खरी उतरी है। इस शोध को इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के साथ मिलकर छत्तीसगढ़ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद पेटेंट करा रही है। बता दें कि चावल में कम आयरन होने पर पौष्टिकता पर सवाल उठता रहा है।

इस तरह किया शोध : चावल में मुख्यतः आयरन और जिंक पाए जाते हैं। शोध में पौष्टिक आयरन केवल दो से चार पार्ट्स पर नोटेशन (पीपीएन) के बीच पाया गया, जबकि जिंक 12 पीपीएन। प्रोफेसर चंदेल ने जिंक की मात्रा को बढ़ाने की कवायद शुरू की। कनेकेसिवल विधि यानी ब्रीडिंग मैथड से चावल में जिंक को 24 पीपीएन तक पहुंचा दिया। अब चुनौती थी, आयरन को बढ़ाने की। इसके लिए डॉ. चंदेल ने चावल की अन्य उपजाति पर शोध प्रारंभ किया। शोध में कोदो, रागी, कुटकी और सावा में आयरन की मात्रा 36 पीपीएन के ऊपर पाया। इनकी जांच में पता चला कि चारों खाद्य पदार्थों में आयरन स्वयं से नहीं आता, बल्कि जमीन से ही पौधा आयरन लेता है। ऐसे में इन पौधों को जड़, तना, पत्ती और फल चार भागों में बांट दिया। पत्ती में सबसे ज्यादा आयरन मिला। वही फलों तक पहुंचाता था। इसमें 43 तरह के फंक्शन किए गए। इसकी पत्ती से चार नए जीन निकले हैं, जिन्हें भविष्य में धान की प्रजाति के साथ ब्रीडिंग कर तैयार नई प्रजाति में आयरन की मात्रा बढ़ाई जाएगी।

इससे चावल की पौष्टिकता बढ़ेगी। प्रतीकात्मक

ये होगा लाभ

- चावल भी गेहूं की तरह शरीर को पर्याप्त मात्रा में देगा आयरन
- कुपोषण को रोका जा सकेगा
- शुगर के मरीजों के लिए होगा लाभप्रद

> इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के प्रो. डॉ. गिरीश चंदेल ने चावल की उपजाति से आयरन बढ़ाने वाले चार जीन खोजे हैं। प्रदेश में शोध को बढ़ावा मिले, इसलिए छत्तीसगढ़ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद ने उसे भारत सरकार को पेटेंट के लिए भेजा है, जो डब्ल्यूएचओ के मानक को पूरा करेगा। इससे प्रदेश और अन्य राज्य के लोगों को पौष्टिक आहार मिलेगा।
> – डॉ. अमित दुबे, वैज्ञानिक, छत्तीसगढ़ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, रायपुर

ईरान तक पहुंचा गेहूं का अफ्रीकी गेरुआ रोग, भारत के वैज्ञानिक निपटने को तैयार

- देश में शिमला और विदेश में केन्या में नई किस्मों पर हो रहा है परीक्षण
- भारतीय वैज्ञानिक तैयार कर रहे यूजी-99 से लड़ने वाली प्रजातियां

जितेंद्र यादव, इंदौर

गेहूं की फसल पर अब अफ्रीकी काला गेरुआ रोग का खतरा मंडरा रहा है। दक्षिण अफ्रीका के युगांडा से पैदा हुआ यह रोग ईरान, मिस्र और यमन तक आ पहुंच गया है। ईरान, पाकिस्तान, अफगानिस्तान के रास्ते इसके भारत में आने का खतरा है। हालांकि, अच्छी बात यह है कि भारतीय कृषि वैज्ञानिक इससे निपटने को तैयार हैं। यूजी-99 नाम के इस गेरुआ रोग से लड़ने के लिए उन्होंने गेहूं की नई प्रजातियां ईजाद करनी शुरू कर दी हैं।

यह रोग पहली बार 1999 में सामने आया था। हाल के सालों में देश के अनुसंधान केंद्रों में गेहूं की ऐसी प्रजातियां विकसित की गई हैं जो यूजी-99 से लड़ सकें और इस रोग का फसल पर असर न हो। भारतीय गेहूं अनुसंधान संस्थान करनाल (हरियाणा) की एक प्रयोगशाला शिमला (हिमाचल प्रदेश) में है। इसमें सीमा क्षेत्र के गेहूं के पौधों पर आने वाले रोगों का विश्लेषण किया जा रहा है। इसके अलावा मेक्सिको स्थित अंतरराष्ट्रीय गेहूं और मक्का अनुसंधान संस्थान भी इस पर काम कर रहे हैं। दरअसल, दक्षिण अफ्रीका का केन्या गेरुआ का हॉट स्पॉट है, इसलिए मेक्सिको अंतरराष्ट्रीय संस्थान ने केन्या में परीक्षण की व्यवस्था की है। इसके लिए केन्या एग्रीकल्चर रिसर्च इंस्टीट्यूट (कारी) बनाया गया है, जिसमें दुनियाभर के गेहूं उत्पादक देशों के गेहूं की प्रजातियों का परीक्षण किया जाता है।

हर साल हो रहा अध्ययन : क्षेत्रीय गेहूं अनुसंधान केंद्र इंदौर के प्लांट पैथालॉजिस्ट डॉ. एएन मिश्रा के मुताबिक, केन्या में दुनियाभर से गेहूं की करीब 30 हजार क्यारियां उगाई जाती हैं, जिसमें भारत की भी 300-400 क्यारियां होती हैं। भारत में अब तक यह रोग कहीं नजर नहीं आया है। हालांकि, हमने यूजी-99 से निपटने की तैयारी कर ली है। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर के प्रिंसिपल साइंटिस्ट और ब्रीडर डॉ. आरएस शुक्ला बताते हैं कि हम बहुत पहले से इस पर तैयारी कर रहे हैं। कुछ साल पहले भारतीय वैज्ञानिकों के समूह के साथ मैं भी केन्या प्रशिक्षण के लिए गया था। भारतीय गेहूं की प्रजातियों का भी वहां के वातावरण में टेस्ट किया जा रहा है कि उन पर यूजी-99 का असर तो नहीं हो रहा, लेकिन हमारी नई वैरायटी यूजी-99 से लड़ने की क्षमता रखती है।

यह रोग पहली बार 1999 में सामने आया था। प्रतीकात्मक

लोहे पर जंग लगने जैसा है गेरुआ

गेरुआ रोग फफूंद से उत्पन्न होता है। यह पक्सिनिया नाम की फफूंद होती है, जिसके अलग-अलग रूप होते हैं। गेरुआ रोग से गेहूं के पौधे पर फफोले जैसे पड़ जाते हैं। जिस तरह लोहे पर जंग लग जाती है, उसी तरह गेहूं के पौधे लाल-भूरे रंग के हो जाते हैं। इससे गेहूं की बालियों तक पोषण नहीं पहुंच पाता। दाना सिकुड़ जाता है और विकसित नहीं हो पाता। इससे पैदावार कम होती है।

449 साल पुरानी भगवान गणेश की प्रतिमा चोरी हो गई है मप्र के दमोह जिले के नयागांव के प्राचीन शिव मंदिर से। मूर्ति गोंडा कालीन बताई जा रही है। सिंग्रामपुर की वीरांगना रानी दुर्गावती के शासनकाल में नयागांव बसाया गया था।

चुनौतियों का पुल बना बुलंद हुए इकबाल

जागरण विशेष ▶ अनुच्छेद 370 हटाने के बाद पैदा हुई चुनौतियों को बखूबी संभाल रहे श्रीनगर के डीसी डॉ. शाहिद

प्रधानमंत्री मोदी भी कर चुके हैं सराहना, कई सम्मान मिल चुके

नवीन नवाज, श्रीनगर

भारत-पाकिस्तान नियंत्रण रेखा (एलओसी) से सटे राजौरी के रेहान गांव से निकले भारतीय प्रशासनिक सेवा के इस युवा अधिकारी पर आज देश-दुनिया की नजरें हैं। श्रीनगर के जिला उपायुक्त के तौर पर तैनात डॉ. शाहिद इकबाल चौधरी जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटने के बाद से हर समय सक्रिय हैं। कभी प्रशासनिक प्रबंधों का जायजा लेते दिखते हैं, तो कभी लोगों की समस्याएं सुनते। पाकिस्तान के भड़काऊ व झूठे संदेशों और वीडियो का सच भी बखूबी दुनिया के सामने ला रहे हैं। माहौल खराब होने, दवा की दुकानें बंद होने और एटीएम में नकदी न होने जैसी झूठी खबरों की हकीकत भी बता रहे हैं।

मौजूदा माहौल में वह श्रीनगर के अपने कार्यालय में कम, गली-बाजारों में अधिक दिखते हैं। कभी शिक्षा विभाग के अधिकारियों से फीडबैक लेते हुए तो कभी खाद्य एवं आपूर्ति वालों से। पुलिस और अर्धसैनिक बलों के जवानों को ताकीद करते हैं कि डंडा नहीं चलाना, सिर्फ लोगों को समझना होता है। सबकुछ आसान हो जाएगा। डॉ. शाहिद का प्रशासनिक कैरियर उपलब्धियों से भरा पड़ा है। श्रीनगर में एक कॉल सेंटर बंद किए जाने का पता चला तो वह कंपनी के अधिकारियों से मिले और कॉल सेंटर बंद होने से बचाया। इससे पूर्व वह आतंकियों के गढ़ बांडीपोर में थे। वहां 250 लोगों को रोजगार दिलाने के लिए कॉल सेंटर स्थापित कराया, जिसका लोकार्पण प्रधानमंत्री मोदी ने किया था। ऊधमपुर में उपायुक्त रहते हुए बुनियादी सेवाओं के लिए राहत प्रोजेक्ट शुरू किया। लोगों को पहाड़ी रास्तों से आने-जाने के लिए नदी-नालों से गुजरना पड़ता था। बरसात के दिनों में यह असंभव सा होता। उन्होंने विभिन्न विभागों से फंड की व्यवस्था कर राहत प्रोजेक्ट के तहत जिले में 170 पुलों का निर्माण कराया। इससे 27465 विद्यार्थियों का स्कूल पहुंचना आसान हुआ। उनका तकरीबन 350 किलोमीटर का सफर कम हुआ। 1.30 लाख लोगों को 183 राशन डिपो तक पहुंचने का सुरक्षित रास्ता मिला। वर्ष 2013 में रियासी में नालों पर लकड़ी के 72 पैदल पुल बनवाए। तामीर प्रोजेक्ट शुरू कर राजौरी में खुले आसमान में चल रहे 100 स्कूलों के लिए भवन का निर्माण करावा। नियंत्रण रेखा पर 102 बंकर बनाए। इसके बाद एलओसी वाले सभी जिलों में इस माडल के 20 हजार बंकर तैयार किए गए।

ई-गवर्नेंस को बनाया हथियार : कठुआ जिले में तैनाती हुई तो डॉ. शाहिद ने ई-गवर्नेंस को हथियार बनाया। सभी जिला कार्यालयों में वीडियो कांफ्रेंसिंग और इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध कराई। 'सहायता' प्रोजेक्ट के तहत हर जिला कार्यालय में सप्ताह में एक दिन वीडियो कांफ्रेंस के लिए तय किया। युवाओं के लिए कौशल विकास शुरू किया। 600 युवाओं को हुनरमंद बनाया। वह बताते हैं कि गुज्जर बक्करवाल समुदाय अकसर चारागाहों के लिए अनुमति पत्र बनवाता है। हमने इससे उनका उनका डाटा बैंक तैयार किया और समझाया, जिससे मतदान 40 फीसद से बढ़कर 81 तक पहुंच गया।

अंग्रेजी का पहला अक्षर छठी कक्षा में सीखा था : गुज्जर परिवार में जन्मे 2008 बैच के आइएएस अधिकारी डॉ. शाहिद बताते हैं कि एलओसी से सटे राजौरी में रेहान गांव में पला-बढ़ा हूं। 16 किमी दूर स्कूल था। पहाड़ चढ़ता और उतरता था। अंग्रेजी का पहला अक्षर छठी कक्षा में सीखा था। पिता राजस्व विभाग में कार्यरत थे। भाई और परिजनों का पूरा साथ मिला। खुदा ने बरकतों से नवाजा और आज यहां हूं। वर्ष 2005 में इंडियन फारेस्ट सर्विस में चयन हुआ। वह गुज्जर समाज से राज्य के पहले आइएएस हैं।

अब तक मिले सम्मान : डॉ. शाहिद पिछले पांच सालों में केंद्र से बेहतर गवर्नेंस के लिए दो बार पुरस्कृत हो चुके हैं। चुनाव आयोग ने वर्ष 2014 के संसदीय और विधानसभा चुनाव में उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें राष्ट्रीय सम्मान प्रदान किया। प्रधानमंत्री ने वर्ष 2018 का महिला सशक्तीकरण के लिए उनको राष्ट्रीय सम्मान से नवाजा। रियासी जिले में ई-पंचायत प्रोजेक्ट लागू करने के लिए राष्ट्रीय अवार्ड मिला। इसी सप्ताह एक्सिलेंस इन गवर्नेंस अवार्ड से नवाजा गया है।

ऊधमपुर के पहाड़ी क्षेत्र में नाले पर बने पुल का स्कूली बच्चों से लोकार्पण करवाते तत्कालीन उपायुक्त डॉ. शाहिद इकबाल। इस पुल के निर्माण से बच्चों के लिए स्कूल की दूरी कई किलोमीटर कम हो गई थी। डॉ. शाहिद ने ऊधमपुर में 170 और रियासी जिले में 72 ऐसे ब्रिजों का निर्माण करवाया। इससे लोगों का आवागमन सुगम हो गया। जागरण आर्काइव

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/jagran-special

नई तकनीक से फेफड़े के कैंसर का कारगर इलाज

वीणा तिवारी, चंडीगढ़

स्वस्थ समाज

फेफड़े के कैंसर से जूझ रहे मरीजों की जिंदगी बचाने को पीजीआइ चंडीगढ़ के डॉक्टरों ने एक नई तकनीक ईजाद की है। इसके लिए उन्होंने विश्व के पांच देशों के चुनिंदा डॉक्टरों के साथ मिलकर लगातार तीन साल तक मरीजों पर रिसर्च की। इस रिसर्च से मिले सकारात्मक परिणामों से फेफड़े के कैंसर से पीड़ित मरीजों के लिए उम्मीद की किरण जगी है। रिसर्च के दौरान उन मरीजों को कीमो और रेडिएशन का डोज एक साथ देकर कैंसर प्रभावित टिश्यू को निष्क्रिय करने में काफी हद तक सफलता मिली। इतना ही नहीं इस तकनीक में पहली बार सीटी और पेट स्कैन की तकनीक का एक साथ प्रयोग कर बेहतर परिणाम प्राप्त किया गया। इससे फेफड़े के कैंसर के मरीजों का सर्वाइवल रेट (बचने का संभावना) 20 फीसद से बढ़कर 25-30 फीसद के बीच पहुंच गया।

इस टीम ने निभाई महत्वपूर्ण भूमिका : इस रिसर्च में पीजीआइ रेडियोथेरेपी के विभागाध्यक्ष (एचओडी) डॉ. राकेश कपूर के साथ ही डॉ. अश्वनी सूद और डॉ. नवनीत ने अहम भूमिका निभाई है। फेफड़े के कैंसर के इलाज पर आधारित इस रिसर्च को यूरोपियन जर्नल ऑफ न्यूक्लीयर मेडिसिन ने प्रकाशित किया है। इस शोध के लिए ऐसे देशों को चुना गया, जहां फेफड़े के कैंसर के मरीज ज्यादा पाए जाते हैं। इसमें भारत, पाकिस्तान, वियतनाम, टर्की, नीदरलैंड, सऊदी अरब में फेफड़े के कैंसर के 246 मरीजों पर रिसर्च किया गया।

इस तरह तलाशी राह : इस रिसर्च में शामिल देशों के रेडियोलॉजिस्टों ने फेफड़े के कैंसर के मरीजों के इलाज में पेट और सीटी स्कैन को मिलाकर यूज किया। डॉ. राकेश ने बताया कि कैंसर के मरीजों के डाइग्नोसिस में यूज की जाने वाली सीटी (कंप्यूटेड टोमोग्राफी) स्कैन और पेट (पोजीस्ट्रोन इमीशन टोमोग्राफी) स्कैन तकनीक का कंबाइंड यूज कर रेडिएशन और कीमोथेरेपी एक साथ दी गई। ऐसा अब तक नहीं किया जाता था। इस प्रयोग में पेट और सीटी स्कैन बेस्ट रेडियोथेरेपी प्लानिंग और डिलीवरी के तरीके का प्रयोग कर उन मरीजों को कीमो के दौरान रेडिएशन की उचित मात्रा ही कैंसर प्रभावित हिस्से में दी गई। इससे इलाज की तीव्रता बढ़ी, जबकि अब तक प्रयोग की जा रही तकनीक में सामान्य टिश्यू भी प्रभावित होते हैं।

पीजीआइ चंडीगढ़ में फेफड़े के कैंसर के रिसर्च में शामिल डॉ राकेश कपूर। जागरण

- पीजीआइ चंडीगढ़ ने पांच देशों के साथ मिलकर तीन साल तक किया शोध
- रेडिएशन, कीमोथेरेपी का डोज एक साथ देने से कैंसर प्रभावित हिस्से पर दिखा प्रभावी असर

इस कैंसर का कारण

फेफड़े के कैंसर का मुख्य कारण धूमपान, तंबाकू, गुटखा व पान खाना होता है। इसके लक्षण बहुत ही मुश्किल से समझ में आते हैं। इतना ही नहीं यह धुआं, फैक्ट्री से निकलने वाले केमिकल और ज्यादा प्रदूषण से भी होता है। यह ज्यादातर 55-80 आयुवर्ग के लोगों को अपना शिकार बनाता है। इसके अलावा 15-16 साल से लगातार धूमपान करने वालों को भी फेफड़े के कैंसर का खतरा ज्यादा होता है।

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/positive-news

नंद-यशोदा के द्वार बधाइयों का तांता

नवनीत शर्मा, मथुरा

श्रीकृष्ण जन्मस्थान पर शनिवार को कान्हा का जन्म होने के अगले दिन रविवार को गोकुल में लाला के जन्म का हल्ला मच गया। नंदबाबा को सुबह से ही बधाइयां दी जाने लगीं। आस्था का वैभव गोकुल में सिमट आया। श्रद्धा के ज्वार की थाह नहीं थी। 'नंद-यशोदा के द्वार बाज रही बधाई', 'नंद के आनंद भयौ, जय कन्हैया लाल की' आदि भजनों पर श्रद्धालु झूमते रहे। नंदबाबा ने लाला के जन्म की खुशी में उपहार लुटाए।

▶ नंदबाबा ने लाला के जन्म की खुशी में लुटाए मेवे, फल

मैया यशोदा को सुबह लाला के जन्म का पता चलते ही नंदबाबा के यहां आनंद छा गया। नंद भवन मंदिर में दर्शन कर श्रद्धालु हर्षित हो रहे थे। नंदबाबा भी संतान पाने की खुशी में दिल खोलकर मेवे, फल आदि उपहार लुटा रहे थे। नंदभवन से कृष्ण, बलराम, नंदबाबा, मैया यशोदा, गोपी-ग्वाल, नर-नारी आदि की शोभायात्रा निकाली गई। बैंडबाजों से भक्तिभाव से सराबोर गीत-संगीत की धुनों पर श्रद्धालु झूम रहे थे। शोभायात्रा में लाला की छीछी (हल्दी, दही का मिश्रण) लुटाई जा रही थी। छीछी की बूंदें जिस पर गिरतीं, वह अपने को धन्य समझने लगता। लाला को झूला झुलाने की होड़ मची रही। नंद चौक पहुंचने पर शोभायात्रा में आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा। श्रद्धालु भजनों पर सुधबुध खोकर झूमने लगे। सुधबुध खोए श्रद्धालु बस यही गा रहे थे 'जय कन्हैया लाल की'। द्वापर युग की लीला गोकुल में जीवंत हो उठी।

उत्तर प्रदेश के मथुरा में रविवार को नंदोत्सव शोभायात्रा के दौरान नाचते-गाते गोकुल के ग्वाल। जागरण

गैंडों की संख्या में पटना जू का विश्व में दूसरा स्थान

जेएनएन, नई दिल्ली

विश्व में गैंडों की संख्या के मामले में बिहार की राजधानी पटना का चिड़ियाघर विश्व में दूसरे स्थान पर है। यहां 12 गैंडे हैं। अमेरिका के सेंट डिएगो जू में गैंडों की संख्या सबसे अधिक है। देश में गैंडों के संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए हाल ही में पटना के संजय गांधी जैविक उद्यान में देश का पहला राष्ट्रीय गैंडा प्रजनन संरक्षण केंद्र तैयार हुआ है। 22 सितंबर को विश्व गैंडा दिवस पर इसका उद्घाटन होगा।

केंद्र सरकार के सहयोग से इसके निर्माण कार्य 4.11 करोड़ की लागत आई है। बता दें कि असम के काजीरंगा के बाद दुनियाभर के लोग पटना जू में गैंडा देखने आते हैं। संख्या में वृद्धि के लिए यहां गैंडा प्रजनन केंद्र की स्थापना की गई है। 10 गैंडों का प्राकृतिक वास तथा दो गैंडे को डिसप्ले में रखने की योजना बनी है। इसके साथ ही वियतनाम से आने वाले दो सींग वाले गैंडे को भी डिसप्ले में रखने की योजना है। वाल्मीकि नगर व्याघ्र परियोजना के मदनपुर रेंज में भी गैंडों को प्राकृतिक वास में छोड़ने की तैयारी चल रही है।

सेंट डिएगो जू भेजा था नर गैंडा : पटना चिड़ियाघर तमिलनाडु के वेंडालुर चिड़ियाघर को एक नर गैंडा देने को तैयार हो गया है। इसके बदले पटना जू को एक जोड़ा टाइगर सहित आधा दर्जन वन्य प्राणी मिलेंगे। अमेरिका का सेंट डिएगो जू नर गैंडा के बदले पटना जू को दो गैंडे और जिराफ दे चुका है।

- हाल ही में संजय गांधी जैविक उद्यान में देश का पहला राष्ट्रीय गैंडा प्रजनन संरक्षण केंद्र बनकर हुआ तैयार
- 22 सितंबर को विश्व गैंडा दिवस पर होगा उद्घाटन

राष्ट्रीय गैंडा प्रजनन संरक्षण केंद्र बनकर तैयार हो गया है। देशभर के जू से गैंडे की मांग हो रही है।

– एसएस चौधरी, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, बिहार

एशिया के सबसे ऊंचे गांव कौमिक में हाफ मैराथन का बना रिकॉर्ड

जागरण संवाददाता, केलंग

हिमाचल प्रदेश के जनजातीय जिले लाहुल स्पीति में एशिया के सबसे ऊंचे गांव कौमिक में हाफ मैराथन हुई। कौमिक से डेम्पुल गांव तक हुई दौड़ के दौरान एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स की टीम भी मौजूद रही। समुद्रतल से 4587 मीटर की ऊंचाई पर हुआ आयोजन एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज हो गया है।

एसडीएम काजा जीवन सिंह नेगी ने मैराथन को हरी झंडी दिखाई। 173 में से करीब 169 प्रतिभागी ही दौड़ पूरी कर पाए। पुरुष वर्ग में डेम्पुल गांव के सोनम टाकपा ने प्रथम स्थान हासिल किया। लादरचा गांव के दोरजे संदीप दूसरे स्थान पर रहे। महिला वर्ग में काजा की छेरिंग पॉलजोंम ने प्रथम व पद्मा डेंगमो ने दूसरा स्थान पाया। एसडीएम ने बताया कि हाफ मैराथन के माध्यम से स्वच्छता का संदेश दिया गया। अगर हमारे आसपास का वातारण साफ होगा तो हम सब रोगमुक्त रहेंगे।

काजा के खंड विकास अधिकारी जीसी पाठक ने बताया कि कौमिक गांव में लादरचा मेले के तहत हाफ मैराथन करवाने का फैसला किया था।

विश्व के सबसे ऊंचे गांव कोमिक में रविवार को हुई हाफ मैराथन में विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए मुख्य अतिथि व अन्य। जागरण

पहले किब्बर था सबसे ऊंचा गांव

मई 2017 तक किब्बर एशिया का सबसे ऊंचा गांव था। 2017 में लोक निर्माण विभाग ने कौमिक समेत पांच गांवों तक सड़क पहुंचाकर इसे एशिया का सबसे ऊंचा गांव घोषित करने की दावेदारी पेश की। काजा से 25 किलोमीटर दूर कौमिक गांव समुद्रतल से 4587 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। कौमिक, हिक्किम, टशीगंग, लांगचा व गेते के बाद अब किब्बर छठे स्थान पर पहुंच गया है। किब्बर की ऊंचाई 4200 मीटर है।

जू प्रबंधन तलाश रहा गजनी की सजनी

नईदुनिया, बिलासपुर : छत्तीसगढ़ के कानन पेंडारी जू में मादा दरियाई घोड़ा की मौत के बाद केवल दो दरियाई घोड़े बच गए हैं। दोनों नर हैं। ऐसे में इस प्रजाति का वंश बढ़ाना बड़ी समस्या बन चुकी है। अब जू प्रबंधन ने मादा दरियाई घोड़े की तलाश शुरू कर दी है। हरियाणा के रोहतक जू से चर्चा हो रही है। वहीं, अन्य चिड़ियाघरों में पत्राचार किया गया है। उन्हें कानन के सरप्लस वन्यप्राणियों की सूची भी भेजी गई है।

कानन पेंडारी जू की मादा दरियाई घोड़े की गर्भ के दौरान 16 जून को मौत हो गई थी। मां की मौत की वजह से गर्भस्थ ने भी दम तोड़ दिया था। घटना की वजह हार्ट फेल बताई गई, लेकिन हकीकत में लापरवाही से इतनी बड़ी घटना हुई थी। मादा की मौत के बाद जू में इस प्रजाति का वंश बढ़ाने की उम्मीद भी खत्म हो गई। कानन प्रबंधन के लिए यह चिंता का विषय है। वह इसी प्रयास में जुटा है कि जितनी जल्दी हो एक मादा दरियाई घोड़ा लाकर इस प्रजाति की वंश वृद्धि कराई जाए। दो महीने से प्रयास जारी हैं, लेकिन अब तक सफलता नहीं मिल सकी है। इंदौर, हैदराबाद समेत कुछ प्रमुख जू को भी पत्र भेजा गया है। इसमें उनसे नर दरियाई घोड़ा होने की जानकारी के साथ उनसे एक मादा दरियाई घोड़े की मांग की गई है। साथ ही यह कहा गया कि यदि बदले में उन्हें कानन पेंडारी से कोई वन्यप्राणी चाहिए तो वह बताएं।

फाइलों में खो गए प्रेमचंद की स्मृतियों के वारिस

प्रमोद यादव, वाराणसी

- स्मारक रखरखाव का जिम्मेदार कौन के सवाल पर सभी मौन
- अवैध कनेक्शन से रोशन हो रहा मुंशी प्रेमचंद का आशियाना

जिंदगीभर मालिक-मजदूर को अपनी कहानियों का किरदार बनाते हुए गरीब-गुरबा आबादी के दर्द को कलमबद्ध करने वाले मुंशी प्रेमचंद की याद में बने स्मारक के मालिक कौन हैं? बेहद सीधा सा सवाल, लेकिन फाइलों से ही कहने व सुनने वाले अफसर इसे भी लेकर मौन हैं। भला हिंदी साहित्य के लिए मुंशीजी से बड़ी विरासत क्या होगी, मगर स्मृतियां सहेजने के लिए जिम्मेदार विभाग को इसका जवाब ही नहीं सूझ रहा। ऐसे में अभी तक बेपरवाह रहने के बाद क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र दशकों पहले से अब तक किए-कराए गए कार्यों के बारे में समझ-बूझ रहा है।

मुंशी प्रेमचंद की जयंती से ठीक पहले विद्युत विभाग ने स्मारक में कनेक्शन को अवैध बताते हुए काट दिया। जिलाधिकारी के हस्तक्षेप पर घर-स्मारक में बिजली के तार खींच कर साहित्य की धरा रोशन तो जरूर कर दी गई, लेकिन एक बड़ा सवाल भी दे गई। इस लड़ाई में मुंशी प्रेमचंद का स्मृति स्थल भी उस बूढ़े बाप और बुढ़िया माई की तरह साबित हुआ जिसके जवान बेटों (सरकारी विभागों) ने उनकी देखरेख को लेकर दिखा दी रुसवाई। मालिकाना हक को लेकर पहले वीडीए और गांव में खींचतान मची तो संस्कृति विभाग ने हाथ खड़े कर दिए। ऐसे में डीएम ने पड़ताल कर संबंधित को कनेक्शन लेने के आदेश दिए, लेकिन अब तक खोज पूरी नहीं हो सकी है। क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र प्रमुख यशवंत सिंह राठौर का कहना है कि उन्हें चार्ज देते समय फाइल नहीं मिली। अब पुराने अफसर से फाइल मांगी गई है।

नागरी प्रचारिणी सभा ने मुंशी प्रेमचंद के परिजनों से आवास का एक हिस्सा लेकर आठ अक्टूबर 1959 में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद से शिलान्यास कराकर स्मारक का निर्माण कराया। परिवार वालों ने बैठका भी 1986 में प्रशासन को दे दिया। 2005 में वीडीए ने इसे अपने हाथ में लेकर जीर्णोद्धार कराया। बिजली का पेंच फंसने पर सभी संबंधित अधिकारी अपनी जिम्मेदारियों से भागते रहे, लेकिन इसे उन्होंने किसे और कब हैंडओवर किया के सवाल का वे जवाब भी नहीं दे सके।

वाराणसी के लमही गांव स्थित मुंशी प्रेमचंद का आवास। फाइल फोटो

अधिग्रहण

ऑलवेदर रोड कटिंग की चपेट में आ रही केदारनाथ यात्रा के मुख्य पड़ावों में शामिल तिलवाड़ा कस्बे की 320 दुकानें, जखोली ब्लॉक की भरदार, सिलगढ़, बड़मा व लस्या समेत अगस्त्यमुनि ब्लॉक की 100 से अधिक ग्राम सभाओं का केंद्र है तिलवाड़ा

बरसात के बाद मिट जाएगा रुद्रप्रयाग के तिलवाड़ा बाजार का अस्तित्व

बृजेश भट्ट, रुद्रप्रयाग

उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले का सबसे भीड़भाड़ वाला कसबा एवं केदारनाथ यात्रा के मुख्य पड़ावों में शामिल तिलवाड़ा बाजार का नक्शा जल्द ही बदलने वाला है। ऑलवेदर रोड के तहत हो रही कटिंग की जद में कस्बे के ऊपरी हिस्से की सभी दुकानें आ रही हैं। बरसात के बाद इन्हें हटाने की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी। इससे स्थानीय व्यापारी भी नाखुश हैं। उनका कहना है कि हाईवे चौड़ीकरण की आड़ में कस्बे के साथ नाइंसाफी की जा रही है। बता दें कि रुद्रप्रयाग बाजार में मात्र दस मीटर के दायरे में ही दुकानों को ही हटाया जा रहा है, जबकि तिलवाड़ा में 24 मीटर क्षेत्र अधिग्रहण कर इसके दायरे में आने वाले सभी निर्माणों को हटाया जाना है।

तिलवाड़ा बाजार आजादी के समय से ही जखोली विकास खंड की भरदार, सिलगढ़, बड़मा व लस्या समेत अगस्त्यमुनि विकास खंड की सौ से अधिक ग्रामसभाओं का केंद्र स्थल रहा है। इसी कारण यह रुद्रप्रयाग जिले का सर्वाधिक व्यस्त कस्बा माना जाता है। विभिन्न गांवों से सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण रोजाना यहां खरीदारी के लिए पहुंचते हैं। केदारनाथ यात्रा का मुख्य मार्ग (गौरीकुंड हाईवे) होने के कारण गंगोत्री-यमुनोत्री से आने वाले यात्री भी मयाली से तिलवाड़ा होते हुए ही केदारनाथ जाते हैं। हैरत देखिए कि यात्रा व स्थानीय स्तर पर इतना महत्व होने के बावजूद कस्बे का अस्तित्व बचाने को ऑलवेदर रोड के तहत बाईपास तक नहीं बनाया गया, जबकि गौरीकुंड हाईवे पर ही पड़ने वाले अगस्त्यमुनि, चंद्रापुरी, गुप्तकाशी आदि नगर व कस्बों को बाईपास बनाकर बचाने का प्रयास किया गया है।

ऑलवेदर रोड के तहत तिलवाड़ा कस्बे के बीच से गुजर रहे गौरीकुंड हाईवे को चौड़ा किया जाना है। इसके लिए नेशनल हाईवे लोक निर्माण विभाग की ओर से 24 मीटर के दायरे में आने वाली भूमि का अधिग्रहण किया गया है। इससे कस्बे के 320 व्यापारी इसकी चपेट में आ रहे हैं, जिनकी दुकान एवं प्रतिष्ठानों को पूर्ण या आंशिक रूप से हटाना पड़ेगा।

जाहिर है इससे कस्बे का अस्तित्व लगभग खत्म हो जाएगा, क्योंकि जिस ओर मुख्य बाजार है, ज्यादातर बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठान व दुकानें भी उसी तरफ हैं। व्यापार संघ के अध्यक्ष सुरेंद्र सकलानी व व्यापारी विक्रम सिंह कंडारी का कहना है कि अब तक तमाम मंचों के साथ ही मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत के सामने भी वह अपनी बात रख चुके हैं, लेकिन कोई सकारात्मक पहल नहीं हो पाई। वहीं, कार्यदायी संस्था बरसात के बाद प्रस्तावित क्षेत्र से दुकानों को हटाने की तैयारी कर रही है।

रुद्रप्रयाग-गौरीकुंड हाईवे पर बसा तिलवाड़ा शहर। जागरण

बरसात खत्म होने के बाद तिलवाड़ा में कस्बे में अधिग्रहण की गई भूमि से सभी स्थायी निर्माण हटा दिए जाएंगे। हाईवे चौड़ीकरण के लिए 24 मीटर भूमि का अधिग्रहण किया गया है। अब निर्माणों को हटाने की तैयारी की जा रही है।

– जेपी त्रिपाठी, अधिशासी अभियंता, नेशनल हाईवे लोक निर्माण विभाग, सिल्ली (रुद्रप्रयाग)

कन्नौज में बन सकता है देश का पहला इत्र विश्वविद्यालय

प्रशांत कुमार, कन्नौज

अगर सबकुछ ठीक रहा तो इत्र नगरी कन्नौज को जल्द ही देश के पहले इत्र विश्वविद्यालय की सौगात मिलेगी। इस संबंध में सांसद सुब्रत पाठक ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सुगंध एवं सुरस विकास केंद्र (एफएफडीसी) को ही यूनिवर्सिटी बनाने के लिए प्रस्ताव सरकार को भेजा है। इस पर प्रधानमंत्री की रुचि दिखाने के बाद पीएमओ इस संबंध में कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय बनने पर इत्र उद्योग को गति के साथ किसानों की आय भी दोगुनी होगी।

कन्नौज दुनिया में इत्र और अतर के लिए जाना जाता है। इसके बावजूद यहां कोई विश्वविद्यालय या रिसर्च सेंटर नहीं है। उद्यमी आज भी यहां सदियों से चली आ रही परंपरा के अनुसार ही इत्र तैयार कर रहे हैं। सांसद ने बताया कि प्रस्ताव प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सौंपा है, वह इसको लेकर संवेदनशील हैं। उम्मीद है कि जिले को जल्द ही इत्र विश्वविद्यालय की सौगात मिलेगी।

मिलेगी नई उड़ान : यूं तो फ्रांस का ग्रासे शहर विश्व में सुगंध की राजधानी के रूप में मशहूर है, मगर वहां से ज्यादा संभावनाएं कन्नौज में हैं। वहां से अधिक यहां क्षेत्रफल है। ग्रासे में सिर्फ एसेंशियल ऑयल बनता है, जबकि कन्नौज में अतर, इत्र और एसेंशियल ऑयल तीनों ही बनते हैं। उद्यमी बताते हैं कि विदेशी हमसे माल खरीदकर नई तकनीकी का प्रयोग कर एक नया प्रोडक्ट बनाकर दुनिया भर में बेचते हैं। यहां विश्वविद्यालय बनता है तो रिसर्च से हमें भी तकनीक मिलेगी।

- एफएफडीसी को अरोमा टेक्नो इंडस्ट्रियल यूनिवर्सिटी बनाने का प्रस्ताव

अभी तक हमें अतर का बेस नहीं मिल सका है। विश्वविद्यालय बनने से निश्चित तौर पर ऐसे शोध होंगे। उद्योग को नई राह मिलेगी।

– पवन त्रिवेदी, महासचिव, द अत्तर्स एंड परफ्यूमर्स एसोसिएशन

एफएफडीसी के विश्वविद्यालय बनने से हम तकनीकी तौर पर प्रशिक्षित होंगे। नए शोध होंगे, जो इत्र उद्योग को आगे बढ़ाएंगे।

– शक्ति विनय शुक्ला, प्रधान निदेशक, एफएफडीसी

एपल और सैमसंग पर मुकदमा

सैन फ्रांसिस्को, आइएएनएस : दुनिया की दो सबसे बड़ी मोबाइल निर्माता कंपनियों एपल और सैमसंग पर अमेरिका में मुकदमा कर दिया गया है। यह मुकदमा नुकसानदायक रेडियो तरंगों के उत्सर्जन को लेकर किया गया है। कैलिफोर्निया की जिला अदालत में दर्ज मुकदमे में कहा गया है कि इन कंपनियों के स्मार्टफोन निर्धारित मानकों से ज्यादा रेडियो तरंगों का उत्सर्जन करते हैं। मुकदमे में एपल के वर्जन आइफोन-7 प्लस, आइफोन-8 और आइफोन-10 के साथ सैमसंग के गैलेक्सी एस-8 और गैलेक्सी नोट-8 का नाम शामिल किया गया है।

वित्त मंत्री द्वारा पिछले दिनों घोषित राहत पैकेज के दूरगामी सकारात्मक असर होने की उम्मीद है। अच्छी बात यह है कि इसके लिए राजकोषीय घाटे पर बोझ से बचने की पूरी कोशिश की गई है।

— विक्रम किर्लोस्कर
प्रेसिडेंट, सीआइआइ

विकसित अर्थव्यवस्थाओं का समूह है जी-7

G7 FRANCE

जी 7 दुनिया की सात सबसे अधिक औद्योगिक और विकसित अर्थव्यवस्थाओं का एक समूह है। उनके राजनीतिक नेता प्रतिवर्ष महत्वपूर्ण वैश्विक आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सुरक्षा मुद्दों पर चर्चा करने के लिए इकट्ठा होते हैं। फ्रांस की तरफ से भारत को भी इस बार 45वें जी-7 शिखर सम्मेलन में विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है।

उद्देश्य : इस साल 45वां जी-7 शिखर सम्मेलन 24-26 अगस्त, 2019 को फ्रांस के बिरिट्ज शहर में आयोजित हो रहा है। इस सम्मेलन का एजेंडा आय और लैंगिक असमानता से लड़ने और जैव विविधता की रक्षा पर केंद्रित है।

एक नजर में जी 7

7 सदस्य देश

1975 समूह के छह देशों की पहली मीटिंग

40% वैश्विक जीडीपी में हिस्सेदारी

10वां हिस्सा वैश्विक आबादी में

समूह का काम

शुरुआत में यह छह देशों का समूह था, जिसकी पहली बैठक 1975 में हुई थी। इस बैठक में वैश्विक आर्थिक संकट के संभावित समाधानों पर विचार किया गया था। अगले साल कनाडा इस समूह में शामिल हो गया और इस तरह यह जी-7 बन गया। जी-7 देशों के मंत्री और नौकरशाह आपसी हितों के मामलों पर चर्चा करने के लिए हर साल मिलते हैं। प्रत्येक सदस्य देश बारी-बारी से इस समूह की अध्यक्षता करता है और दो दिवसीय वार्षिक शिखर सम्मेलन की मेजबानी करता है। यह प्रक्रिया एक चक्र में चलती है। ऊर्जा नीति, जलवायु परिवर्तन, एचआइवी-एड्स और वैश्विक सुरक्षा जैसे कुछ विषय हैं, जिन पर पिछले शिखर सम्मेलनों में चर्चाएं हुई थीं। शिखर सम्मेलन में अन्य देशों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधियों को भी आमंत्रित किया जाता है।

कितना प्रभावी है

जी-7 की आलोचना यह कह कर की जाती है कि यह कभी भी प्रभावी संगठन नहीं रहा है, हालांकि समूह कई सफलताओं का दावा करता है, जिनमें एड्स, टीबी और मलेरिया से लड़ने के लिए वैश्विक फंड की शुरुआत करना भी है। समूह का दावा है कि इसने साल 2002 के बाद से अब तक 2.7 करोड़ लोगों की जान बचाई है। समूह यह भी दावा करता है कि 2016 के पेरिस जलवायु समझौते को लागू करने के पीछे इसकी भूमिका है।

चीन हिस्सा क्यों नहीं

चीन दुनिया की दूसरी बड़ी अर्थव्यवस्था है, फिर भी वह इस समूह का हिस्सा नहीं है। इसकी वजह यह है कि यहां दुनिया की सबसे बड़ी आबादी रहती है और प्रति व्यक्ति आय जी-7 समूह देशों के मुकाबले बहुत कम है। ऐसे में चीन को विकसित अर्थव्यवस्था नहीं माना जाता है, जिसकी वजह से यह समूह में शामिल नहीं है।

प्रमुख चुनौतियां

आंतरिक रूप से जी 7 में कई असहमतियां हैं। पिछले साल कनाडा में हुए शिखर सम्मेलन में राष्ट्रपति ट्रंप जलवायु परिवर्तन पर कार्रवाई और आयात करों को लेकर अन्य सदस्यों के साथ भिड़ गए थे। अफ्रीका, लैटिन अमेरिका से कोई जी 7 सदस्य नहीं है। अर्थव्यवस्था के मामले में तेजी से उभरते ब्राजील और भारत भी इसका हिस्सा नहीं हैं। कुछ वैश्विक अर्थशास्त्रियों का मानना है कि ये अर्थव्यवस्था 2050 तक जी 7 राष्ट्रों में से कुछ को पीछे छोड़ देंगी।

जी 7 के सदस्य देश

फ्रांस, इटली, जापान, जर्मनी, कनाडा, अमेरिका, ब्रिटेन। जी-7 शिखर सम्मेलन में यूरोपीय संघ का भी प्रतिनिधित्व किया जाता है। समूह खुद को 'कम्युनिटी ऑफ वैल्यूज' यानी मूल्यों का आदर करने वाला समुदाय मानता है। स्वतंत्रता और मानवाधिकारों की सुरक्षा, लोकतंत्र और कानून का शासन और समृद्धि और टिकाऊ विकास, इसके प्रमुख सिद्धांत हैं।

रूस हुआ बाहर

1998 में रूस के शामिल होने के बाद समूह जी-8 के रूप में जाना गया, लेकिन 2014 में क्रीमिया पर कब्जा करने के बाद इसे समूह से निकाल दिया गया।

असेसी को परेशान करने वाले अफसरों पर लगेगी लगाम

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- कारोबारियों का भरोसा बढ़ाने की कवायद के तहत उठाया जा रहा कदम
- 'जीएसटी संपर्क एप' से कारोबारियों के साथ फेसलेस संपर्क करेंगे टैक्स अधिकारी

इकोनॉमी के अलग-अलग क्षेत्रों में आसन्न मंदी को टालने के उपाय करने के साथ-साथ सरकार कारोबारियों का भरोसा बढ़ाने में भी जुट गई है। इसी दिशा में कदम उठाते हुए उन टैक्स अफसरों पर लगाम कसने की तैयारी है जो असेसी को बेवजह परेशान करते हैं। इसके तहत डायरेक्ट और इन्डायरेक्ट टैक्स के अफसरों के असेसी के साथ होने वाले संपर्क को फेसलैस बनाया जा रहा है। फेसलेस संपर्क का मतलब यह है कि अब असेसी को टैक्स अधिकारियों के समक्ष हर छोटी-छोटी बातों के लिए पेश नहीं होना पड़ेगा।

सूत्रों ने कहा कि इनडायरेक्ट टैक्स के संबंध में जीएसटी में इसकी पहल की जा रही है। सेंट्रल बोर्ड ऑफ इन्डायरेक्ट टैक्स एंड कस्टम्स (सीबीआइसी) के 'जीएसटी संपर्क एप' के जरिये टैक्सपेयर्स और टैक्स अधिकारियों के बीच संपर्क फेसलेस होगा। रिटर्न की स्क्रूटनी की प्रक्रिया भी फेसलेस होगी। इस एप के अधिकाधिक इस्तेमाल के लिए सीबीआइसी अधिकारियों को जागरूक बना रहा है।

सीबीआइसी के साथ-साथ इनकम टैक्स डिपार्टमेंट भी इस साल विजयदशमी से फेसलेस स्क्रूटनी की शुरुआत करने जा रहा है। इसके तहत असेसी को यह मालूम नहीं होगा कि उसका असेसमेंट कौन सा अधिकारी कर रहा है। इसी तरह टैक्स अधिकारी भी किसी असेसी को अपने दफ्तर नहीं बुला सकेंगे। खास बात यह है कि फेसलेस स्क्रूटनी की प्रक्रिया में असेसी को जो भी नोटिस या आदेश जाएंगे वे एक कंप्यूटर सिस्टम से जनरेट होंगे। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण का कहना है कि अगर किसी नोटिस पर डॉक्यूमेंट आइडेंटिफिकेशन नंबर नहीं है तो असेसी उसे स्वीकार न करे। असेसी साफ कह सकता है कि वह इसे मानने को तैयार नहीं है।

सरकार ने यह कदम ऐसे समय उठाया है जब हाल में विपक्ष ने सरकार पर टैक्स अधिकारियों द्वारा कारोबारियों को परेशान करने का आरोप लगाया है। खासकर हाल ही में एक प्रसिद्ध कारोबारी की आत्महत्या के बाद इनकम टैक्स डिपार्टमेंट पर हरासमेंट यानी उत्पीड़न के आरोप लगे हैं। इसी तरह स्टार्ट-अप्स को भी बड़ी संख्या में इनकम टैक्स के नोटिस गए हैं। यही वजह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी कहना पड़ा कि सरकार वैल्थ क्रिएटर्स का सम्मान करती है। इसके बाद ही वित्त मंत्रालय ने यह कदम उठाया है।

टुडे होम्स नोएडा के खिलाफ दिवालिया प्रक्रिया शुरू

- 2016 के अंत तक मिलना था फ्लैट, अभी तक नहीं हुई डिलिवरी
- कंपनी ने दिया यूपी रेरा से मिली राहत का तर्क, एनसीएलटी ने किया खारिज

नई दिल्ली, प्रेट्र : दिवालिया प्रक्रिया का सामना करने वाली एनसीआर-स्थित रियल एस्टेट कंपनियों की सूची में एक और नाम जुड़ गया है। नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल (एनसीएलटी) ने रियल्टी कंपनी टुडे होम्स नोएडा लिमिटेड के खिलाफ दिवालिया प्रक्रिया की शुरुआत कर दी है। कंपनी के खिलाफ दिवालिया प्रक्रिया की याचिका कुछ घर खरीदारों ने दायर की थी। एनसीएलटी के प्रेसिडेंट जस्टिस एमएम कुमार की अध्यक्षता वाली दो सदस्यीय खंडपीठ ने अंतरिम रिजोल्यूशन प्रोफेशनल (आइआरपी) की नियुक्ति कर कंपनी का मैनेजमेंट उनके हाथों सौंप दिया है।

टुडे होम्स नोएडा के नोएडा में सेक्टर 135-स्थित निर्माणाधीन रिज रेजिडेंसी के कुछ घर खरीदारों ने कंपनी के खिलाफ दिवालिया प्रक्रिया की याचिका लगाई थी। गौरतलब है कि पिछले दिनों आइबीसी कानून में संशोधन के तहत रियल एस्टेट कंपनियों के घर खरीदार अब फाइनेंशियल क्रेडिटर बन गए हैं। कंपनी के साथ करार की शर्तों के तहत इन खरीदारों को वर्ष 2016 के आखिर तक किसी भी हालत में फ्लैट सुपुर्द कर दिया जाना था। लेकिन कंपनी ने न तो इन्हें फ्लैट दिया, न ही रकम वापस की।

दिवालिया याचिका के विरोध में कंपनी का तर्क था कि उसे अपना प्रोजेक्ट पूरा करने के लिए उत्तर प्रदेश के रियल एस्टेट रेगुलेशन अथॉरिटी (रेरा) से चार वर्षों का विस्तार मिल गया है। इस तर्क को खारिज करते हुए एनसीएलटी ने कहा कि इन्सॉल्वेंसी एंड बैंक्रप्सी कोड (आइबीसी) के प्रावधान रियल्टी कानूनों के प्रावधानों से ऊपर माने जाएंगे।

एनसीएलटी ने फैसले में कहा कि कंपनी के खिलाफ डिफॉल्ट करने के स्पष्ट प्रमाण हैं। अथॉरिटी ने कंपनी के पूर्व प्रमोटर्स, डायरेक्टर्स और कर्मचारियों से कहा कि वे दिवालिया प्रक्रिया में हरसंभव सहयोग करें। ट्रिब्यूनल ने कंपनी के कर्जदाताओं से भी कहा है कि वे एक निश्चित अवधि तक बकाया वसूली की कोई प्रक्रिया शुरू नहीं करेंगे।

सुपरटेक पर एफआइआर

जागरण संवाददाता, नोएडा : रियल्टी कंपनी सुपरटेक के चेयरमैन आरके अरोड़ा पर अवैध रूप से फ्लैट बनाकर बेचने के आरोप में एफआइआर दर्ज की गई है। सेक्टर-82 के केंद्रीय विहार निवासी आरके द्विवेदी ने कोतवाली सेक्टर-58 में यह एफआइआर दर्ज कराई है। द्विवेदी केंद्र सरकार के अधिकारी हैं। आठ अप्रैल, 2013 को उन्होंने कंपनी के ग्रेटर नोएडा के सेक्टर ओमिक्रॉन-1 स्थित निर्माणाधीन सुपरटेक जार सुइट्स में एक फ्लैट बुक कराया था। बिल्डर ने मार्च, 2015 तक सुइट्स बनाकर देने का वादा किया था। 10 नवंबर, 2016 को उन्होंने बिल्डर को पूरी रकम का भुगतान कर नो ड्यूज सर्टिफिकेट हासिल कर लिया। इसी दौरान कुछ लोगों ने बिल्डर पर ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की अनुमति के बगैर फर्जी तरीके से 1,060 फ्लैट अधिक बनाने का आरोप लगाकर हाई कोर्ट में याचिका दाखिल कर दी। कोर्ट ने 18 अप्रैल, 2017 को अवैध रूप से बनाए गए फ्लैटों को सील करने का आदेश कर दिया। इनमें द्विवेदी का भी फ्लैट शामिल था।

तैयारी ▶ एनुअल अकाउंट्स पर चर्चा के लिए होनी है बैठक

जालान पैनल रिपोर्ट पर आरबीआइ में आज विचार

सरकार को दी जाने वाली रकम पर भी बैठक में विचार होने की उम्मीद

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) सोमवार को एनुअल अकाउंट्स पर चर्चा करने के लिए बैठक करेगा। इस बैठक में इकोनॉमिक कैपिटल फ्रेमवर्क (ईसीएफ) पर बिमल जालान कमेटी के सुझावों पर चर्चा होगी। इसके साथ ही बैठक में कमेटी द्वारा आरबीआइ के सरप्लस में से सरकार को दी जाने वाली संभावित रकम पर भी चर्चा होने की उम्मीद जताई जा रही है। चर्चा के बाद इस रिपोर्ट को आम जनों के लिए आरबीआइ की वेबसाइट पर जारी किया जाएगा। गौरतलब है कि आरबीआइ अपने वित्त वर्ष के लिए उस वर्ष जुलाई से अगले वर्ष जून अवधि का अनुसरण करता है।

आरबीआइ आमतौर पर एनुअल अकाउंट्स को अंतिम रूप देने के बाद अगस्त में डिविडेंड वितरित करता है। वित्त वर्ष 2019-20 के लिए सरकार ने आरबीआइ से 9,000 करोड़ रुपये डिविडेंड की उम्मीद की है।

अपने सरप्लस से सरकार को कितनी रकम दी जाए, इसके निर्धारण के लिए आरबीआइ ने पूर्व गवर्नर बिमल जालान की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की थी। कमेटी ने पिछले दिनों इस मामले में अपनी रिपोर्ट तैयार की ली है। सूत्रों के मुताबिक रिजर्व बैंक के वर्तमान भंडार में से सरकार को हस्तांतरण इंस्टॉलमेंट्स में हो सकता है। समिति में वित्त मंत्रालय के प्रतिनिधि और तत्कालीन आर्थिक मामलों के सचिव सुभाष चंद्र गर्ग को बिजली मंत्रालय भेज दिए जाने के बाद समिति का कार्यकाल बढ़ा दिया गया था। गर्ग के स्थानांतरण के समय रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया जा रहा था। गर्ग के बाद समिति में बैंकिंग मामलों के सचिव (अब वित्त-सचिव) राजीव कुमार को नियुक्त किया गया। सूत्रों का यह भी कहना था कि सरकार को कितनी रकम दी जाए, यह अभी तय नहीं है। लेकिन दो बातें लगभग तय हो गई हैं। पहली, सरकार को रकम तीन से पांच वर्षों में दी जाएगी। दूसरी, रकम की पहली किस्त इसी वित्त वर्ष में जारी हो सकती है।

चालू वित्त वर्ष में सरकार ने आरबीआइ से 9,000 करोड़ रुपये डिविडेंड की उम्मीद की है। फाइल

पिछले वर्ष बनी थी बिमल जालान समिति

रिजर्व बैंक ने ईसीएफ की समीक्षा करने के लिए 26 दिसंबर, 2018 को इस छह सदस्यीय कमेटी का गठन किया था। रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर बिमल जालान को इसका अध्यक्ष बनाया गया था। विभिन्न पूर्वानुमानों के आधार पर रिजर्व बैंक के पास नौ लाख करोड़ रुपये से अधिक का सरप्लस है। वित्त मंत्रालय और रिजर्व बैंक के बीच सरप्लस के उचित स्तर तथा अतिरिक्त राशि के हस्तांतरण को लेकर विवाद होने के बाद समिति का गठन किया गया था।

पहले भी बनी समितियां : इससे पहले भी 1997 में वी सुब्रमण्यम समिति, 2004 में उषा थोरट समिति और 2013 में वाईएच मालेगम समिति रिजर्व बैंक के भंडार की समीक्षा कर चुकी हैं। सुब्रमण्यम समिति ने इसे केंद्रीय बैंक की बैलेंसशीट (संपत्ति) के 12 फीसद भंडार का सुझाव दिया था, जबकि थोरट समिति ने भंडार को 18 फीसद के स्तर पर बनाए रखने का सुझाव दिया था।

गोल्ड ईटीएफ में हुआ 5,000 करोड़ रुपये का इजाफा

नई दिल्ली, प्रेट्र : मौजूदा वित्त वर्ष के पहले चार महीनों में गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड यानी ईटीएफ में 5,079.22 करोड़ का इजाफा हुआ है। जानकारों के मुताबिक निवेशकों ने स्टॉक मार्केट से जो बेरुखी दिखाई है, उसके चलते गोल्ड ईटीएफ में यह इजाफा हुआ है। चालू वित्त वर्ष में अब तक स्टॉक मार्केट में तीन परसेंट की गिरावट दर्ज की गई है।

गोल्ड के मार्केट पर नजर रखने वाली मॉर्निंगस्टार से प्राप्त आंकड़ों के मुताबिक गोल्ड ईटीएफ में इस वित्त वर्ष अप्रैल से लगातार बढ़त दर्ज की गई है। पीली धातु में निवेशकों की रुचि के विपरीत स्टॉक मार्केट का हाल बुरा हुआ रहा। बीएसई का सेंसेक्स अब तक 1,191.79 अंकों का गोता लगा चुका है।

सेंसेक्स में सबसे बड़ी गिरावट जुलाई में दर्ज की गई, जब यह पांच परसेंट तक लुढ़क गया। मॉर्निंगस्टार के रिसर्च मैनेजर हिमांशु कहते हैं कि लंबे समय तक निवेशकों ने सोने में कोई रुचि नहीं दिखाई, लेकिन इस साल यह ट्रेंड बदल गया और निवेशकों ने जमकर सोने में निवेश किया। इसके चलते सोने की कीमतें लगातार आसमान छूती नजर आईं। सोना डगमगाती अर्थव्यवस्था में निवेश के लिए सबसे बेहतर माना जाता है। इसके अलावा सोने में निवेश पर मंदी का असर भी सबसे कम होता है।

आंकड़ों के मुताबिक इस वित्त वर्ष के अप्रैल महीने में ईटीएफ 4,594.06 करोड़ रुपये पर था, जबकि मई में यह 4,606.69 करोड़ रुपये रहा। जून के महीने में यह बढ़कर 5,079.22 करोड़ रुपये पर जा पहुंचा। पीसीजी एंड कैपिटल मार्केट के वीके शर्मा कहते हैं कि यूएस और चीन के बीच जारी ट्रेड वार के कारण दुनिया पर आर्थिक मंदी का खतरा है, जिसके कारण लोग सोने में निवेश को सुरक्षित मान रहे हैं।

गोल्ड ईटीएफ में शुद्ध अंतर / बाह्य प्रवाह (करोड़ ₹ में)

2018 जुल.	अग.	सितं.	अक्टू.	नवं.	दिसं.	जन.	फर.	मार्च	अप्रै.	मई	जून	2019 जुलाई
-50	-45	-33	-16	10	-25	-55	-14	-38	-10	-26	-16	-18

अप्रैल-जुलाई 2018-19: -196
अप्रैल-जुलाई 2019-20: -70

पीटीआई ग्राफिक

अनाज का सुरक्षित भंडार (मिलियन टन में)

माह	भंडार
2019 जून	84.91
मई	86.30
अप्रै.	75.75
मार्च	62.00
फर.	67.06
जन.	73.61
दिसं.	73.03
नवं.	72.28
अक्टू.	66.14
सितं.	55.96
अग.	62.19
जुलाई	67.40
2018 जून	72.00

पीटीआई ग्राफिक

एफडीआइ में ढील देगी सरकार

- बजट में कही थी गई नियमों को सरल करने की बात
- लोकल सोर्सिंग से संबंधित नियमों में होगा सुधार

नई दिल्ली, प्रेट्र : सरकार जल्द ही एफडीआइ नियमों में और ढील देने जा रही है। आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक सरकार एफडीआइ में 30 परसेंट निवेश लोकल सोर्सिंग के जरिए की जाने वाली बाध्यता खत्म करने जा रही है। नियमों के मुताबिक सिंगल ब्रांड रिटेलर द्वारा भारत में किए जाने वाले एफडीआइ में 30 परसेंट का निवेश लोकल सोर्सिंग के जरिए करना होता है। जानकार इसे एफडीआई के रास्ते में अड़चन मानते हैं।

प्रस्ताव में सिंगल ब्रांड रिटेलर को ऑनलाइन स्टोर खोलने की अनुमति देने की बात कही गई है। मौजूदा नियमों के मुताबिक सिंगल ब्रांड को पहले बाजार में स्टोर खोलना होता है इसके बाद ही यह ऑनलाइन स्टोर खोल सकता है।

लोकल सोर्सिंग की यह बाध्यता उस प्रोविजन में की गई है, जहां कोई कंपनी अपने ग्लोबल ऑपरेशन के लिए देश के भीतर सामान खरीदती है। इस तरह की खरीद से कंपनी के लिए लोकल सोर्सिंग की बाध्यता पूरी की जाती है।

सरकार बजट के दौरान निवेश नियमों में ढील देने की बात कह चुकी है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट भाषण के दौरान कहा था कि सिंगल ब्रांड रिटेलर के लिए एफडीआइ नियमों को आसान बनाया जाएगा। जनवरी 2018 में इस सेक्टर में 100 परसेंट एफडीआइ और बिना सरकार की अनुमति के स्टोर खोलने की अनुमति दी जा चुकी है।

ट्रंप को चीन पर और टैरिफ नहीं बढ़ा पाने का अफसोस

बायरिट्ज (फ्रांस), एपी : अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के सचिव ने कहा है कि अमेरिकी राष्ट्रपति को चीन पर और टैरिफ नहीं बढ़ा पाने का अफसोस है। इससे पहले ट्रंप चीन के साथ चल रहे ट्रेड वार को और आगे ले जाने का संकेत दे चुके हैं।

ग्लोबल इकोनॉमी में सुस्ती के संकेतों के बीच ट्रंप को जी-7 देशों की बैठक में दुनिया के दूसरे नेताओं के साथ तनाव का सामना करना पड़ रहा है। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन के साथ लंच के दौरान ट्रंप ने टकराव को लेकर चिंता जताई। लेकिन जब ट्रंप से पूछा गया कि क्या वह तनाव को जारी रखने देने के इच्छुक हैं, तो उन्होंने इसका पूरे विश्वास के साथ सकारात्मक जवाब दिया। हालांकि बाद में व्हाइट हाउस द्वारा जारी बयान में कहा गया कि ट्रंप के कथन को गलत समझा गया है। सचिव ने कहा कि ट्रंप ने केवल सकारात्मक बातों का जवाब दिया था, क्योंकि उन्हें चीन पर और टैरिफ नहीं बढ़ा पाने का अफसोस है।

अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव से पहले मंदी की आशंका के बीच ट्रंप, कॉन्फ्रेंस के जरिये दुनियाभर के नेताओं को इकोनॉमी में तेजी लाने के लिए मनाने का प्रयास कर रहे थे। ट्रंप के समकक्ष नेता उन्हें चीन से ट्रेड वार खत्म करने को कह रहे हैं। जी-7 देशों की बैठक ऐसे समय में हो रही है, जब चीन और अमेरिका दोनों ने एक-दूसरे पर टैरिफ बढ़ाने की घोषणा कर दी है।

एडवाइजरी बोर्ड करेगा बैंकिंग घोटालों की जांच

नई दिल्ली, प्रेट्र : सेंट्रल विजिलेंस कमीशन यानी सीवीसी ने बैंकिंग फ्रॉड का मुकबला करने के लिए एडवाइजरी बोर्ड का गठन किया है। पूर्व सीवीसी टीएम भसीन की अध्यक्षता वाले इस बोर्ड का नाम एडवाइजरी बोर्ड फॉर बैंकिंग फ्रॉड (एबीबीएफ) रखा गया है। बोर्ड 50 करोड़ रुपये से ऊपर के फ्रॉड की जांच और दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई की सिफारिश करेगा। सीवीसी की ओर से जारी प्रेस नोट में कहा गया है कि बोर्ड फ्रॉड की प्राथमिक जांच करेगा।

चार सदस्यीय बोर्ड का अधिकार क्षेत्र जनरल मैनेजर और उससे ऊपर के अधिकारी तक होगा। बोर्ड अपनी जांच रिपोर्ट संबंधित बैंक को सौंपेगा, जिसपर बैंक आगे एक्शन लेगा। नोट में कहा गया है कि बैंकिंग सेक्टर की तकनीकी समस्याओं या अन्य कारणों के चलते सीबीआइ अपने मामले भी इस बोर्ड को सौंप सकता है।

इस पैनल के अन्य सदस्यों में पूर्व शहरी विकास सचिव मधुसूदन प्रसाद, बीएसएफ के पूर्व निदेशक डीके पाठक और आंध्र बैंक के पूर्व सीईओ सुरेश एन पटेल शामिल होंगे। इन सदस्यों का कार्यकाल दो वर्षों का होगा। यह बोर्ड एक सलाहकार संस्था की तरह भी काम करेगा और फ्रॉड से निपटने के लिए आरबीआइ को तरीके सुझाएगा।

बोर्ड के फाइनेंशियल, ऑपरेशनल और कंस्ट्रक्शनल जरूरतों की पूर्ति आरबीआइ का दिल्ली हैडक्वार्टर करेगा। सरकार से जुड़े विभाग बैंकों को संभावित फ्रॉड के बारे में सूचित करते रहते हैं। बोर्ड इनमें से ही 50 करोड़ से अधिक के मामलों की जांच करेगा और अपनी रिपोर्ट बैंक की एनपीए से संबंधित समिति को सौंपेगा।

निगाहें

अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए पिछले सप्ताह शुक्रवार को वित्त मंत्री ने की थी 32 उपायों की घोषणा, एफपीआइ से सरचार्ज हटाने की घोषणा का भी सोमवार को दिख सकता है घरेलू शेयर बाजारों पर सकारात्मक असर

सुधार के प्रयासों पर प्रतिक्रिया देंगे शेयर बाजार

नई दिल्ली, प्रेट्र : बीते सप्ताह लगातार गिरावट के बाद इस सप्ताह मार्केट में सुधार का दौर आने की संभावना जताई जा रही है। इसका प्रमुख कारण सरकार के सुधारवादी कदमों को बताया जा रहा है, जिनमें एफपीआइ पर लगाया गया सरचार्ज वापस लेना भी शामिल है। सोमवार को जब बाजार खुलेंगे, तो इनका सीधा असर कई सेक्टरों के शेयरों पर दिखाई देने की उम्मीद जताई जा रही है।

इससे पहले सरकार ने बजट में विदेशी संस्थागत निवेशकों यानी एफपीआइ पर अतिरिक्त सरचार्ज लगाने का प्रावधान किया था। इस घोषणा के बाद एफपीआइ पर इस कदर नकारात्मक असर पड़ा कि जुलाई और अगस्त में इन निवेशकों ने भारतीय इक्विटी मार्केट से 3.4 अरब रुपये यानी करीब 24,500 करोड़ रुपये निकाल लिए। इसका सीधा असर रुपये पर देखा गया, जो डॉलर के मुकाबले 72 के स्तर तक लुढ़क गया।

कोटक सिक्युरिटीज प्रमुख रस्मिक ओजा ने कहा कि सरचार्ज बढ़ाने के फैसले को वापस लिया जाना बाजार के लिए अच्छा संकेत है। एफपीआइ ने भारतीय बाजारों से जो रकम निकाली है, वह वापस लौट सकती है और यह फैसला रुपये को मजबूती देने में सहायक होगा।

सरकार ने सुस्त पड़ती अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए स्टार्ट-अप से एंजल टैक्स हटाने, ऑटो सेक्टर को मंदी से उबारने के प्रयासों और सरकारी बैंकों में 70 हजार करोड़ की नकदी डालने की घोषणा की है। जियोजित फाइनेंस के प्रमुख इन्वेस्टमेंट स्ट्रैटेजिस्ट वीके विजय कुमार एफपीआइ से सरचार्ज हटाए जाने को निवेश के लिए अच्छा संकेत मानते हैं। वह कहते हैं कि इससे बाजार को बढ़त मिलने की संभावना है, लेकिन अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए अभी और सुधारों की जरूरत है।

ऑटो सेक्टर को मंदी से उबारने के लिए सरकार ने सरकारी विभागों द्वारा वाहन खरीदने पर लगी रोक को हटा दिया है और मार्च, 2020 तक वाहनों की खरीद पर 15 परसेंट की अतिरिक्त राहत देने की बात भी कही है। वन टाइम रजिस्ट्रेशन फीस भी जून, 2020 तक के लिए टाल दी गई है। जानकार बताते हैं कि यह कदम ऑटो सेक्टर को उबारने में मददगार साबित होंगे।

बीते सप्ताह बीएसई के सेंसेक्स ने 649.17 अंक यानी 1.74 परसेंट का गोता लगाया। लेकिन वित्त मंत्री द्वारा सुधारवादी कदमों के संकेत मिलने के बाद इसमें 228 अंकों का सुधार देखा गया था।

डॉलर के मुकाबले रुपये का टूटना बाजार के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। प्रतीकात्मक

एफपीआइ के वापस लौटने की उम्मीद

नई दिल्ली, प्रेट्र : इस महीने अब तक एफपीआइ ने भारतीय बाजार से 3,014 करोड़ की राशि वापस निकाली है। लेकिन सरकार के एफपीआइ से सरचार्ज वापस लेने के फैसले के बाद यह ट्रेंड पलट जाने की उम्मीद जताई जा रही है। आंकड़ों के मुताबिक एफपीआइ ने अगस्त में अब तक इक्विटी से 12,105.33 करोड़ रुपये निकाले हैं, लेकिन डेट सेग्मेंट में 9,090.61 करोड़ रुपये का निवेश भी किया है। जानकारों के मुताबिक यूएस और चीन में ट्रेड वार, यूएस फेड रिजर्व का रेट कट और बजट के बाद निवेशकों पर टैक्स बढ़ाए जाने जैसे कारणों के चलते निवेशकों ने भारतीय बाजार के प्रति उदासीनता दिखाई। गौरतलब है कि बजट घोषणाओं से पूर्व एफपीआइ भारतीय बाजार में नेट बायर्स थे।

सात सबसे बड़ी कंपनियों ने गंवाए 86,879.7 करोड़ रुपये

नई दिल्ली, प्रेट्र : बीएसई के सेंसेक्स में सूचीबद्ध 10 सबसे बड़ी कंपनियों में से सात ने बीते सप्ताह कुल 86,879.7 करोड़ रुपये का नुकसान उठाया। इनमें बड़ी एफएमजीसी कंपनी आइटीसी को सबसे करारा झटका लगा। इसके अलावा आरआइएल लिमिटेड, एचडीएफसी बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, आइसीआइसीआइ बैंक, एसबीआइ का बाजार पूंजीकरण भी कम हुआ। वहीं टीसीएस, एचयूएल और इन्फोसिस फायदे में रहीं। आइटीसी को पिछले सप्ताह के कारोबार में 20,748.4 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ, जिसके बाद उसका बाजार पूंजीकरण घटकर 2,89,740.59 करोड़ रुपये रह गया। 17,715 करोड़ रुपये के नुकसान के साथ एसबीआइ दूसरे नंबर पर रही।

4 लोगों की मौत हो गई इक्वाडोर के अमेजन क्षेत्र में एक हवाई जहाज दुर्घटना में। सिविल एविएशन के अधिकारियों ने कहा कि विमान में पायलट और तीन यात्री मौजूद थे, जिसमें सभी की मौत हो गई। घटना की जांच की जा रही है।

हांगकांग में चीनी पाबंदियां विफल, बढ़ रहा बवाल

टकराव जारी ▸ प्रदर्शनकारियों पर पुलिस ने छोड़ी पानी की बौछारें और आंसू गैस के गोले, हुआ पथराव

कठोर कार्रवाई के बाद भी ठंडा नहीं पड़ा आंदोलनकारियों का लोकतंत्र की मांग का हौसला

हांगकांग, रायटर : हांगकांग में लोकतंत्र के समर्थन में चल रहा आंदोलन बढ़ता ही जा रहा है। रविवार को भी पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच भीषण टकराव हुआ। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए पानी की बौछार और आंसू गैस के गोले छोड़े तो प्रदर्शनकारियों ने जमकर पथराव किया। पुलिस पर छह पेट्रोल बम भी फेंके गए। कई लोगों के घायल होने की खबर है। तीन महीने के आंदोलन में पुलिस ने पहली बार प्रदर्शनकारियों पर पानी की तेज बौछार छोड़ी है।

चीनी शासन वाले हांगकांग में प्रशासन प्रदर्शनकारियों को रोकने के लिए कई तरह की पाबंदियां लगा रहा है लेकिन वे सब विफल रह रही हैं। रविवार को शहर में चलने वाली एमटीआर रेल सेवा को कई रूटों पर रद कर दिया गया, बावजूद इसके युवा अन्य साधनों से स्टेडियम में एकत्रित हुए और सरकार विरोधी मार्च किया। सरकारी संपत्तियों की तोड़फोड़ करते हुए आगे बढ़ रहे युवाओं ने पुलिस को रोकने के लिए कई स्थानों पर सड़कों पर डिटरजेंट भी फैला दिया जिससे रास्तों में फिसलन पैदा हो गई। जब पुलिस ने प्रदर्शनकारियों के एक जत्थे को वह सब करने से रोका तो टकराव हो गया। लेकिन ज्यादातर प्रदर्शनकारी टकराव से दूर रहे और उन्होंने अपनी मांगों के समर्थन में नारे लगाते हुए मार्च पूरा किया। मार्च में शामिल 53 वर्षीय एम सुंग सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं। वह आंदोलन में शुरू से शिरकत कर रहे हैं। उनका कहना है कि अभी नहीं तो कभी नहीं। अगर हम नहीं चेते तो चीन की कम्युनिस्ट पार्टी हमारी सभी चीजों पर नियंत्रण कर लेगी और फिर हम कुछ नहीं कर पाएंगे। हम न्याय और लोकतंत्र के लिए लड़ाई जारी रखेंगे। उल्लेखनीय है कि 1997 में ब्रिटिश उपनिवेश से मुक्त होकर हांगकांग चीन का हिस्सा बना है। सीमित स्वायत्तता वाले हांगकांग के निवासी और ज्यादा स्वतंत्रता चाहते हैं, इसलिए उन्होंने आंदोलन छेड़ा हुआ है।

हांगकांग में रविवार को प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच जमकर लाठियां चलीं। इस दौरान कई लोग घायल हो गए। आंदोलन को दबाने के लिए पुलिस ने गंभीर धाराओं में 700 से ज्यादा लोगों को गिरफ्तार किया है लेकिन आंदोलनकारियों का हौसला कम नहीं हुआ है। एपी

चीन समर्थक हो एट सेंग को मिली मकाऊ की कमान

हांगकांग, रायटर : पड़ोसी हांगकांग में लोकतंत्र समर्थक आंदोलन के बीच चीन समर्थक हो एट सेंग को मकाऊ का सर्वोच्च नेता चुन लिया गया है। कसीनो के लिए मशहूर मकाऊ भी हांगकांग की तरह चीन का स्वायत्तशासी क्षेत्र है। चार सदी तक इस पर शासन के बाद 1999 में पुर्तगाल ने मकाऊ को चीन को सौंप दिया था। उसके बाद से सेंग इस क्षेत्र के मुख्य कार्यकारी चुने जाने वाले तीसरे नेता हैं। वह चुई साई-ऑन की जगह लेंगे। चुई का कार्यकाल दिसंबर में खत्म हो रहा है। मकाऊ की 400 सदस्यीय चीन समर्थक समिति ने रविवार को 62 वर्षीय सेंग का चुनाव किया। समिति के 392 लोगों ने उनके पक्ष में मतदान किया। मकाऊ का मुख्य कार्यकारी अधिकारी बनने की दौड़ में वह अकेले प्रत्याशी थे। माना जा रहा है कि वह मकाऊ पर चीन के नियंत्रण को मजबूती देने के साथ ही उसे हांगकांग में चल रहे आंदोलन से दूर रखेंगे। एक प्रेस वार्ता में उन्होंने कहा, 'प्रदर्शन के चलते हांगकांग का पर्यटन प्रभावित हो रहा है। यह विरोध प्रदर्शन जल्द खत्म होगा।'

पाक में मुहाजिर और अन्य छोटे तबकों पर भीषण अत्याचार

लंदन, एएनआइ : पाकिस्तान सरकार जम्मू-कश्मीर में जिस तरह के मानव उत्पीड़न का दावा कर रहा है उससे कहीं ज्यादा अत्याचार कराची और सिंध प्रांत के कई शहरों में वह खुद कर रहा है। यह बात मुत्ताहिदा कौमी मूवमेंट (एमक्यूएम) की सेंट्रल कोऑर्डिनेशन कमेटी ने कही है। एक समय कराची में बड़े राजनीतिक प्रभाव वाले एमक्यूएम पर पाकिस्तान सरकार का ऐसा नजला गिरा कि संगठन के बड़े नेता भी देश छोड़कर ब्रिटेन और अन्य देशों में रह रहे हैं।

कमेटी ने कहा, पाकिस्तान में निर्दोष मुहाजिर, बलोच, पश्तून, सिंधी और अन्य छोटे तबकों का जिस तरह का जिस तरह से उत्पीड़न हो रहा है वह बाकी दुनिया के लिए अकल्पनीय है। पाकिस्तान में इन तबकों के लोगों को जो झेलना पड़ रहा है, वह उत्पीड़न की पराकाष्ठा है। कराची और अन्य शहरों में यह सब पाकिस्तानी सेना और अर्धसैनिक बलों द्वारा किया जा रहा है। ये विचार कोऑर्डिनेशन के उप संयोजक कासिम अली रजा और उसमें शामिल मुस्तफा अजीजाबादी, मंजूर अहमद और अरशद हुसैन ने व्यक्त किए हैं। रजा ने कहा, पाकिस्तान की दुष्ट सेना ने हजारों भोले-भाले मुहाजिरों का नरसंहार किया है। तमाम लोगों को उनके घर से अगवा कर लिया गया और पता नहीं कि अब वे कहां हैं। पाकिस्तान की कोई भी सरकारी संस्था मुहाजिरों और अन्य तबकों के साथ हो रहे अत्याचारों के बारे में सुनने को तैयार नहीं है। एमक्यूएम दुनिया के सभी लोकतांत्रिक देशों से पाकिस्तान में मुहाजिरों पर हो रहे अत्याचार, नरसंहार और नाइंसाफी से मुक्ति दिलाने में मदद की गुहार लगाती है। कमेटी ने कहा, अत्याचार से मुक्ति का एक रास्ता यह भी है कि सभी पीड़ित तबके एकजुट होकर पाकिस्तान से अलग होने के लिए संघर्ष छेड़ दें।

मुत्ताहिदा कौमी मूवमेंट की कमेटी ने खोली पाकिस्तान की कलई। फाइल

बलूचिस्तान में सतर्कता

बलोच संगठनों की हिंसा की धमकी के बाद बलूचिस्तान प्रांत के रेलवे स्टेशनों और वहां से गुजरने वाली ट्रेनों में खासतौर पर सतर्कता बरती जा रही है। क्वेटा स्टेशन की सुरक्षा में बड़ी संख्या में सुरक्षा बल तैनात कर दिए गए हैं और यात्रियों पर नजर रखी जा रही है।

संयुक्त अरब अमीरात में फंसे 100 नाविकों को भारत भेजा गया

दुबई, प्रेट्र : संयुक्त अरब अमीरात में फंसे 100 नाविकों को इस साल जुलाई के अंत तक भारत वापस भेजा जा चुका है। दुबई में भारत के महावाणिज्य दूत विपुल ने कहा कि फंसे हुए भारतीयों की सहायता करना मिशन की पहली प्राथमिकता है।

महावाणिज्य दूत ने खलीज टाइम्स से कहा, 'इस साल 31 जुलाई तक भारतीय सामुदायिक कल्याण कोष (आइसीडब्ल्यूएफ) के माध्यम से महावाणिज्य दूतावास ने 375 लोगों को हवाई टिकट प्रदान किए हैं। उन्होंने बताया कि ईद के दिन हुई बस दुर्घटना में मारे गए 12 भारतीयों और हादसे में घायल लोगों के परिजनों को मदद दी गई। उन्होंने बताया कि जिस कंपनी में पीड़ित काम करते थे, उस कंपनी द्वारा लंबित वेतन का कुछ हिस्सा देने के लिए राजी होने के बाद इन सभी को भारत भेज दिया गया। बस हादसे में घायल विकास मिश्रा ने बताया कि यहां बच पाना कठिन था। इससे भी ज्यादा कठिन स्थिति में मेरे परिवार के सामने भारत में थी। मेरे पिता किसान हैं। पैसा नहीं भेज पाने से मेरे पिता को खेत बेचकर अपना इलाज कराना पड़ा। हालांकि अब बुरे दिन खत्म हो गए हैं।

'संपत्ति का सही ब्योरा नहीं देने पर शरीफ को ठहराया था अयोग्य'

▸ पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट ने कहा- नामांकन पत्र में सही जानकारी नहीं देने से बढ़ता है भ्रष्टाचार

इस्लामाबाद, आइएएनएस : पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि संपत्ति का सही ब्योरा नहीं देने और हलफनामे में गलत जानकारियां पेश करने के लिए पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ (69) को अयोग्य करार दिया गया था। सुप्रीम कोर्ट का मानना है कि नामांकन पत्र में प्रत्याशियों द्वारा संपत्ति की सही जानकारी नहीं देने से भ्रष्टाचार बढ़ता है। यह मुल्क के हित में नहीं है।

वर्ष 2013 के चुनाव में नामांकन पत्र दाखिल करते वक्त शरीफ ने कैपिटल एफजेडई से जुड़ी अपनी संपत्तियों की जानकारी उजागर नहीं की थी। शनिवार को अपने एक फैसले में शरीफ के केस का हवाला देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वह संपत्ति छुपाने और गलत जानकारी पेश करने को बर्दाश्त नहीं करेगा।

सांसद को अयोग्य करार देने से जुड़े अपने फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा, जन प्रतिनिधि संविधान के अनुच्छेद 62-1एफ के प्रति ईमानदार नहीं हैं। इसको लेकर सख्त कदम उठाने होंगे। उल्लेखनीय है कि पनामा पेपर्स मामला उजागर होने के बाद 2017 में सुप्रीम कोर्ट ने शरीफ को अयोग्य ठहरा दिया था, जिसके बाद उन्हें प्रधानमंत्री पद छोड़ना पड़ा था। पिछले साल उन्हें कोई भी सार्वजनिक पद संभालने के अयोग्य करार दिया गया था। शरीफ फिलहाल अल-अजीजिया स्टील मिल भ्रष्टाचार मामले में लाहौर की कोट लखपत जेल में सात साल की सजा काट रहे हैं। लंदन में आलीशान फ्लैट से जुड़े एक अन्य मामले में भी उन्हें सजा हो चुकी है।

नवाज शरीफ शरीफ

उत्तर कोरिया ने नए मल्टीपल रॉकेट लांचर का किया था परीक्षण

सियोल, एपी : उत्तर कोरिया ने शनिवार को किए परीक्षण पर स्थिति स्पष्ट की है। स्थानीय मीडिया कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी का कहना है कि ताजा परीक्षण सुपर लॉर्ज मल्टीपल रॉकेट लांचर से जुड़ा था और वह सफल रहा। परीक्षण के दौरान उसके सर्वोच्च नेता किम जोंग उन भी मौजूद थे। इससे पहले दक्षिण कोरिया ने कहा था कि उ. कोरिया ने कम दूरी तक मार करने वाली दो बैलिस्टिक मिसाइलों का परीक्षण किया है।

किम ने नए लांचर को महत्वपूर्ण हथियार बताया है। उन्होंने कहा, 'लगातार बढ़ते सैन्य खतरों और शत्रुतापूर्ण ताकतों के दबाव से पूरी तरह निपटने के लिए देश को हथियार विकसित करते रहने की जरूरत है।'

शनिवार का परीक्षण भी उ. कोरिया द्वारा अपने सैन्य हथियारों का जखीरा बढ़ाने से जुड़ा था। कोरियाई प्रायद्वीप के निरस्त्रीकरण पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ वार्ता से पहले अपना पक्ष मजबूत करने के लिए उत्तर कोरिया लगातार मिसाइलों का परीक्षण कर रहा है। दक्षिण कोरिया व अमेरिका के साझा सैन्य अभ्यास के विरोध में बीते एक महीने में वह सात परीक्षण कर चुका है। सैन्य अभ्यास एक हफ्ते पहले ही समाप्त हुआ है।

ट्रंप ने दिया जॉनसन को साथ होने का भरोसा

जी-7 सम्मेलन

बायरिट्ज, एएफपी : अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रविवार को ब्रिटिश प्रधानमंत्री के रूप में बोरिस जॉनसन से अपनी मुलाकात में उनकी पीठ थपथपाई। ब्रेक्जिट के लिए जॉनसन को 'राइट मैन' बताया और खुद के साथ होने का भरोसा दिया। चीन के साथ चल रहे ट्रेड वार को लेकर ट्रंप ने मिले-जुले संकेत दिए।

रविवार सुबह नाश्ते पर मिले ट्रंप और जॉनसन का हर मुद्दे पर बातचीत में दोस्ताना रुख रहा। जॉनसन को लेकर ट्रंप की हमेशा से अच्छी राय रही है। वार्ता में जॉनसन ने चीन से चल रहे ट्रेड वार और उसके असर पर भी वार्ता की। उन्होंने ट्रंप से कारोबार के लिए शांति स्थापित करने की आवश्यकता जताई। वार्ता के बाद जब पत्रकारों ने ब्रेक्जिट पर ट्रंप की सलाह के बारे में पूछा तो अमेरिकी राष्ट्रपति ने बिना देर किए जवाब दिया- जॉनसन को किसी सलाह की जरूरत नहीं। वह इस काम के लिए सही व्यक्ति हैं। यह वह (ट्रंप) शुरू से कह रहे हैं। ट्रंप ने जॉनसन को आश्वासन दिया कि यूरोपीय यूनियन से अलगाव (ब्रेक्जिट) के बाद वह ब्रिटेन के साथ खड़े रहेंगे। तब इतना बड़ा द्विपक्षीय व्यापार समझौता किया जाएगा जितना पहले कभी नहीं हुआ।

13 हजार पुलिसकर्मियों की सुरक्षा : बायरिट्ज के जिस बास्क रिजॉर्ट में जी 7 समिट हो रही है, वहां की सुरक्षा के लिए 13,000 पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई है। शनिवार रात पूंजीवाद विरोध संगठनों के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने समिट के विरोध में रिजॉर्ट के बाहर की गई बेरिकेडिंग को तोड़ने की कोशिश की। इसके बाद पुलिस ने पानी की बौछार और आंसू गैस के गोले छोड़कर उन्हें तितर-बितर किया। समिट में ब्रिटेन, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान और अमेरिका के शासनाध्यक्ष भाग ले रहे हैं जबकि भारत और मिस्र विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में हिस्सा ले रहे हैं।

डिनर से शुरू हुआ वार्ता का सिलसिला : शनिवार रात समुद्र के किनारे बने लाइटहाउस की छाया में डिनर के मौके पर शासनाध्यक्षों के बीच अनौपचारिक बातचीत का सिलसिला शुरू हो गया।

इस दौरान न केवल अमेरिका-चीन के ट्रेड वार बल्कि अमेजन के जंगल की आग और ईरान के परमाणु मसले पर भी चर्चा हुई। इस मौके पर प्रधानमंत्री जॉनसन ने फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के आयोजन को शानदार बताया।

बैरिट्ज में डेवल्पड इकॉनोमी वाले देशों के संगठन जी-7 के शिखर सम्मेलन में वर्किंग सेशन के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों। एपी

बांग्लादेश के शरणार्थी शिविर में दो लाख रोहिंग्याओं ने निकाली रैली

▸ म्यांमार के रखाइन में अगस्त, 2017 में हुए नरसंहार को किया याद

▸ यूएन ने मामले में शीर्ष सैन्य अधिकारियों पर मुकदमा चलाने की मांग की थी

ढाका, एएफपी : म्यांमार के रखाइन प्रांत में दो साल पहले हुए नरसंहार की दूसरी बरसी पर करीब दो लाख रोहिंग्या मुसलमानों ने बांग्लादेश स्थित दुनिया के सबसे बड़े शरणार्थी शिविर में रैली की। अगस्त, 2017 में रखाइन में हिंसक सैन्य कार्रवाई के बाद सात लाख से ज्यादा रोहिंग्या भागकर बांग्लादेश आ गए थे। म्यांमार की सेना ने पुलिस चौकियों पर रोहिंग्या आतंकियों के हमले के बाद यह कार्रवाई की थी। संयुक्त राष्ट्र ने इसे नरसंहार बताते हुए शीर्ष सैन्य अधिकारियों पर मुकदमा चलाने की मांग की थी।

रैली में बच्चों और बड़ों के साथ बड़ी संख्या में बुर्का पहने महिलाएं भी शामिल हुईं। चिलचिलाती धूप में हुई इस रैली में लोग 'दुनिया नहीं सुनती रोहिंग्या का दर्द' गाना भी गा रहे थे। रैली के दौरान किसी तरह की हिंसा रोकने के लिए सैकड़ों पुलिसकर्मी तैनात किए गए थे। रैली में शामिल तैयबा खातून ने कहा, 'मैं अपने दो बेटों की हत्या का इंसाफ मांगने आई हूं। अपनी अंतिम सांस तक मैं न्याय के लिए लड़ती रहूंगी।' इस रैली से तीन दिन पहले ही शरणार्थियों को म्यांमार वापस भेजने का एक और प्रयास विफल रहा था। रोहिंग्या नेता मुहीबुल्ला ने कहा, 'हम तभी लौटेंगे जब म्यांमार सरकार हमें नागरिकता देगी। साथ ही हमें हमारे गांव में बसने और हमारी सुरक्षा की गारंटी देगी। हमने सरकार को बातचीत का प्रस्ताव दिया है लेकिन उसका कोई जवाब नहीं आया है।' म्यांमार में कई पीढ़ियों से रहने के बावजूद सरकार ने रोहिंग्या मुसलमानों को अल्पसंख्यकों का दर्जा नहीं दिया है।

म्यांमार के रखाइन में हुए नरसंहार की दूसरी बरसी पर रोहिंग्या मुस्लिमों ने बांग्लादेश के कॉक्स बाजार स्थित शरणार्थी शिविर में विशाल रैली की। रायटर

अबु धाबी में भी गूंजा जय कन्हैयालाल की

अबु धाबी, आइएएनएस: संयुक्त अरब अमीरात के अबु धाबी में भारतीय प्रवासियों ने पूरे हर्षोल्लास के साथ जन्माष्टमी का पर्व मनाया। मुख्य आयोजन बीएपीएस मंदिर में किया गया, जिसमें लगभग चार हजार लोगों ने हिस्सा लिया। इस दौरान भक्ति गीत, भगवद्गीता का पाठ, शांति और सद्भाव के लिए सामूहिक प्रार्थना, नृत्य नाटिका और भगवान कृष्ण के पालने को झुलाने जैसे कार्यक्रम आयोजित किए गए।

खलीज टाइम्स के मुताबिक संयुक्त अरब अमीरात में भारत के राजदूत नवदीप सिंह सूरी के स्थान इस कार्यक्रम में दुबई में महावाणिज्य दूत विपुल ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि मंदिर और त्योहार दोनों देशों के बीच साझा मूल्यों और दोस्ती के प्रतीक हैं।

बीएपीएस स्वामीनारायण संस्था के मुख्य पुजारी ने कहा कि हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि हम एक ऐसे देश में रह रहे हैं, जो सहिष्णुता और सद्भाव के सार्वभौमिक मूल्यों का समर्थन करता है। बीएपीएस हिंदू मंदिर के चेयरमैन डॉक्टर बीआर शेट्टी ने कहा कि मेरा मानना है कि जन्माष्टमी इस वर्ष के सहिष्णुता का उत्सव है। इस्कॉन द्वारा आयोजित एक अन्य कार्यक्रम में लगभग 2500 श्रमिकों ने हिस्सा लिया।

ईरान के विदेश मंत्री ने सम्मेलन में पहुंचकर सबको चौंकाया

बायरिट्ज (फ्रांस), रायटर : संबंधों पर जमी बर्फ पिघलाने के लिए रविवार को अप्रत्याशित और नाटकीय घटनाक्रम में ईरान के विदेश मंत्री जावद जरीफ भी जी-7 सम्मेलन में पहुंच गए। ईरान और अमेरिका के बीच तनाव कम करने की कोशिश में जुटे फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों ने उन्हें आमंत्रित किया था। हालांकि जरीफ के पहुंचने को लेकर पहले से कोई घोषणा नहीं थी।

समाचार एजेंसी के मुताबिक, करीब साढ़े तीन घंटे रुकने के बाद जरीफ वापस चले गए। जरीफ ने ट्वीट कर बताया कि ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर चर्चा के लिए वह जी-7 सम्मेलन में पहुंचे। यहां मैक्रों के अलावा फ्रांस के विदेश मंत्री और ब्रिटेन व जर्मनी के अधिकारियों से भी उन्होंने चर्चा की। जरीफ ने कहा, 'रास्ता मुश्किल है। लेकिन हम कोशिश करते रहेंगे।' इससे पहले ईरान के विदेश मंत्रालय ने कहा था कि हाल के दिनों में ईरान और फ्रांस के राष्ट्रपतियों के बीच हुई बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए जरीफ बायरिट्ज पहुंचे। वहीं, अमेरिकी वित्त मंत्री स्टीवन न्यूचिन ने कहा कि ट्रंप पहले भी स्पष्ट कर चुके हैं कि अगर ईरान बातचीत करना चाहता है, तो उसके सामने कोई शर्त नहीं रखी जाएगी। हालांकि न्यूचिन ने जरीफ के जी-7 पहुंचने पर कोई टिप्पणी नहीं की।

रूस को फिर शामिल करने की तैयारी

बायरिट्ज (फ्रांस), एएफपी : जी-7 में रूस को फिर से शामिल करने की चर्चा चल रही है। विकसित देशों का यह समूह पहले जी-8 कहा जाता था। इसमें ब्रिटेन, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, रूस और अमेरिका शामिल थे। 2014 में यूक्रेन के प्रायद्वीप क्रीमिया पर कब्जे के बाद उपजे विवाद के चलते रूस इस समूह से बाहर हो गया था। सूत्रों का कहना है कि समूह के मौजूदा देश रूस से सहयोग बढ़ाने के पक्ष में हैं।

दुनिया के नेताओं को साधने फ्रांस पहुंचे मोदी

बायरिट्ज (फ्रांस), प्रेट्र : जी-7 सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी फ्रांस पहुंच गए हैं। भारत विकसित देशों के इस समूह का हिस्सा नहीं है, लेकिन फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों के विशेष आग्रह पर मोदी पहुंचे हैं। विदेश मंत्रालय का कहना है कि यह न्योता दोनों नेताओं के आपसी संबंध और बड़ी आर्थिक ताकत रूप में भारत की पहचान का प्रतीक है।

सम्मेलन में पहुंचे मोदी ने ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन से मुलाकात की। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रवीश कुमार ने बताया, 'दोनों नेताओं के बीच द्विपक्षीय संबंधों, रक्षा, सुरक्षा एवं व्यापार समेत कई मुद्दों पर बात हुई। मोदी ने एशेज शृंखला के तीसरे टेस्ट मैच में इंग्लैंड की रोमांचक जीत पर भी जॉनसन को बधाई दी।' मोदी ने संयुक्त राष्ट्र के प्रमुख एंटोनियो गुतेरस से भी विभिन्न मसलों पर बात की। जी-7 की बैठक में मोदी पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता और डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन जैसे मुद्दों पर प्रस्तावित दो सत्रों को संबोधित करेंगे।

जंगलों में लगी आग बुझाने को उतारे सैनिक

उठाया कदम

अमेजन के वर्षा वनों में लगी है भीषण आग, ब्राजील ने 44 हजार सैनिक और दो सैन्य विमान किए तैनात, युद्ध स्तर पर चलेगा काम

रियो डी जेनेरियो, एपी : धरती के फेफड़े कहे जाने वाले अमेजन के वर्षावनों में लगी भीषण आग पर काबू पाने के लिए ब्राजील सरकार ने सेना और सैन्य विमानों की तैनाती की है। इस मामले में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आलोचना झेलने और सरकार विरोधी प्रदर्शनों के बाद ब्राजील ने यह कदम उठाया है। धरती की 20 फीसद ऑक्सीजन देने वाले अमेजन के जंगलों में दो हफ्ते से ज्यादा समय से आग लगी है। इन जंगलों का 60 फीसद हिस्सा ब्राजील में पड़ता है। इस आग से ब्राजील के अलावा बोलिविया और पेरू भी प्रभावित हुए हैं।

ब्राजील के विदेश मंत्री फर्नांडो अजीवेडो ने कहा, 'आग बुझाने के लिए 44 हजार सैनिक लगाए गए हैं। जिन राज्यों ने संघीय सहायता मांगी थी वहां सैनिक रवाना कर दिए गए हैं। आग बुझाने का पहला मिशन रोंडोनिया प्रांत की राजधानी में होगा। दो सी-130 हरक्युलिस विमान भी इस्तेमाल किए जाएंगे। ये विमान एक बार में 12 हजार लीटर पानी गिराने में सक्षम हैं।' बोलिविया के हिस्से में आने वाले जंगलों में लगी आग को बुझाने के लिए अमेरिकी विमान बी747-400 सुपर टैंकर की मदद ली जा रही है।

अमेजन की आग को लेकर संयुक्त राष्ट्र के अलावा फ्रांस और जर्मनी समेत कई देश चिंता जता चुके हैं। यूरोप के कई देशों ने ब्राजील के राष्ट्रपति जैर बोल्सोनारो पर अमेजन की सुरक्षा की अनदेखी का आरोप भी लगाया है।

पोप फ्रांसिस ने भी जताई चिंता : पोप फ्रांसिस ने भी इस मसले पर चिंता जताई है। उन्होंने कहा, 'अमेजन वर्षावनों में लगी आग से हम सब चिंतित हैं। प्रार्थना करें कि हम सबके प्रयास से आग जल्द काबू कर ली जाए। ये जंगल धरती के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।'

जी-7 के सदस्य देश करेंगे मदद : अमेजन के जंगलों में लगी आग से प्रभावित देशों की मदद के लिए जी-7 देश आगे आए हैं। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों ने बताया कि जी-7 सदस्य देशों के बीच इस मसले पर सहमति बनी है। इस समस्या से निपटने के लिए ठोस कदम उठाए जाएंगे।

अमेजन के वर्षावनों में इन दिनों भीषण आग लगी हुई है। एएफपी

करतारपुर कॉरिडोर का काम पूरा करने की पाक ने जताई प्रतिबद्धता

इस्लामाबाद, प्रेट्र: पाकिस्तान सरकार ने करतारपुर कॉरिडोर का काम पूरा करने की प्रतिबद्धता जताई है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान के विशेष प्रतिनिधि फिरदौस आशिक अवान ने कहा है कि हम कॉरिडोर को गुरुनानक देव की 550वीं जयंती से पहले पूरा करने की कोशिश कर रहे हैं। यह बयान ऐसे वक्त आया है जब कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद दोनों देशों के बीच तनाव लगातार बढ़ता जा रहा है।

फिरदौस आशिक ने ट्वीट कर कहा 'करतारपुर सिखों के लिए एक पवित्र जगह है और यह सद्भाव की एक शानदार मिसाल है। हम उन खबरों को खारिज करते हैं, जिनमें दोनों देशों के बीच बढ़ते तनाव के बाद कॉरिडोर का काम बंद किए जाने की बात कही जा रही थी। भारत और पाक के संबंध अभी जैसे भी हों, लेकिन सिख धर्मस्थल दरबार साहिब करतारपुर में श्रद्धालुओं के आने के लिए दरवाजे खुले हुए हैं।' फिरदौस ने कहा कि करतारपुर कॉरिडोर सम्मान और सहिष्णुता का संदेश देता है।

भारतवंशी पाक के राजनीतिज्ञ बीएम कुट्टी का निधन

कराची, प्रेट्र : भारतवंशी पाकिस्तानी राजनीतिज्ञ एवं मानवाधिकार कार्यकर्ता बीएम कुट्टी का रविवार को कराची के एक अस्पताल में निधन हो गया। वह 89 वर्ष के थे और लंबे समय से बीमार चल रहे थे। केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने कुट्टी की मौत पर दुख जाते हुए कहा कि उन्होंने हमेशा ही भारत-पाकिस्तान के अच्छे रिश्ते की पैरवी की।

कुट्टी 19 वर्ष की उम्र में वर्ष 1949 में पाकिस्तान चले गए थे। पत्रकार व मानवाधिकार कार्यकर्ता एम. सरमद ने कहा कि कुट्टी ने पूरी जिंदगी नागरिक व मानवाधिकार की लड़ाई लड़ी। उनकी पत्नी बिरजिस सिदिकी की वर्ष 2010 में मौत हो चुकी है। उनके चार बच्चे हैं। कुट्टी पाकिस्तान पीस कोइलिशन समूह के महासचिव थे। यह समूह भारत व पाकिस्तान के बीच शांति की स्थापना के लिए कार्यरत है। वह एक जमाने में बलूचिस्तान प्रांत के गवर्नर के सहायक व राजनीतिक सचिव भी रहे। उनके निधन पर प्रमुख हस्तियों ने शोक जताया है।

केरल के मलापुरम जिला निवासी कुट्टी ने केरल में वर्ष 1946 में मुस्लिम स्टूडेंट फेडरेशन से राजनीतिक जीवन की शुरुआत की। उन्होंने चेन्नई स्थित मुहम्डन कालेज में चार वर्षों तक विज्ञान की पढ़ाई भी की। कुट्टी 2011 में अपनी आत्मकथा 'स्वनिर्वासन में 60 साल कोई अफसोस नहीं, एक राजनीतिक आत्मकथा' से प्रसिद्ध हुए। इसमें उन्होंने केरल से कराची तक की अपनी यात्रा की कहानी बयां की है। केरल के मुख्यमंत्री ने कुट्टी को भारत और पाकिस्तान के बीच बेहतर संबंधों का पैरोकार बताया।

बीएम कुट्टी। फाइल

रहाणे का शतक, भारत मजबूत

टेस्ट ▶ भारत ने दूसरी पारी में बनाए चार विकेट पर 311 रन

नॉर्थ साउंड (एंटीगा), प्रेट्र: अजिंक्य रहाणे के शतक की बदौलत भारत ने वेस्टइंडीज के खिलाफ यहां जारी पहले टेस्ट के चौथे दिन खबर लिखे जाने तक 105 ओवर में चार विकेट पर 311 रन बना लिए थे, जिससे भारत की कुल बढ़त 386 रन की हो गई है। रहाणे ने करीब दो साल में अपना पहला टेस्ट शतक जड़ते हुए नाबाद 100 रन बनाए। उन्होंने 235 गेंदें खेलीं और पांच चौके जड़े। दूसरे छोर से हनुमा विहारी नाबाद 71 रन बनाकर रहाणे का साथ निभा रहे थे। पहली पारी में 81 रन बनाने वाले रहाणे ने इससे पहले अगस्त 2017 में श्रीलंका के खिलाफ शतकीय पारी खेलते हुए 132 रन बनाए थे। वहीं, विहारी का यह दूसरा टेस्ट अर्धशतक है।

भारत ने चौथे दिन तीन विकेट पर 185 रन से अपनी पारी आगे बढ़ाई। भारत ने कप्तान विराट कोहली का विकेट जल्दी खो दिया, जो 51 रन बनाकर ऑफ स्पिनर रोस्टन चेज की गेंद जॉन कैंपबेल के हाथों दूसरे प्रयास में लपके गए। कोहली के आउट होने से रहाणे की उनके साथ तीसरे विकेट के लिए 106 रन की साझेदारी का अंत हुआ। कोहली के आउट होने के बाद रहाणे का साथ देने विहारी आए। उन्होंने आसानी से गेंद को खाली जगह पर पहुंचाया और स्कोर बोर्ड को चलाए रखा। ऐसे में होल्डर ने दूसरे छोर से भी स्पिन गेंदबाजी आक्रमण को लगाते हुए कैंपबेल को गेंद थमाई, जिससे की जल्द से जल्द नई गेंद ली जा सके। जैसे ही नई गेंद उपलब्ध हुई, तो होल्डर ने तेज गेंदबाजों केमार रोच और शेनॉन गेब्रियल को गेंद थमाई। हालांकि, वेस्टइंडीज की ओर से इससे पहले इस पारी में पार्ट टाइम गेंदबाजों के द्वारा 41 ओवर फेंके जा चुके थे। रोच और गेब्रियल के गेंदबाजी के आने के बाद भी रहाणे और विहारी को कोई खास मुश्किल नहीं हुई और रहाणे ने भोजनकाल के बाद अपना शतक पूरा किया। इससे पहले सलामी बल्लेबाज मयंक अग्रवाल (16) भारत की दूसरी पारी में आउट होने वाले पहले बल्लेबाज बने। उन्हें 14वें ओवर में चेज ने एलबीडब्ल्यू आउट किया। हालांकि, टीवी रीप्ले में साफ नजर आ रहा था कि गेंद लेग स्टंप को मिस कर रही है, लेकिन मयंक ने रिव्यू नहीं लिया और उन्हें पवेलियन लौटना पड़ा। मयंक के बाद केएल राहुल (38) को चेज ने बोल्ड कर अपनी टीम को दूसरी सफलता दिलाई। वह स्वीप शॉट खेलने की कोशिश में विकेट गंवा बैठे। राहुल ने दूसरे विकेट के लिए पुजारा (25) के साथ 43 रन जोड़े। रोच ने पुजारा को पवेलियन भेजा।

अजिंक्य (बाएं) ने खेली 100 रनों की नाबाद पारी। एपी

बेन ने नाबाद 135 रन बनाकर दिलाई एक विकेट से जीत, मेजबानों ने सीरीज में की 1-1 से बराबरी

बेन स्टोक्स ने दिलाई इंग्लैंड को यादगार जीत

एशेज

लीड्स, एएफपी: पिछले 42 दिन क्रिकेट के जन्मदाता इंग्लैंड और इस देश के प्रशंसकों के लिए किसी सपने से कम नहीं रहे हैं। 14 जुलाई को विश्व कप फाइनल का रीप्ले रविवार को लीड्स में दोहराया गया। जहां एक बार फिर बेन स्टोक्स थे, किस्मत थी और वही इंग्लैंड की टीम और हां वही अंपायर की गलती भी थी। कुछ अलग था तो विरोधी टीम ऑस्ट्रेलिया और मैदान लीड्स। जो इंग्लैंड की टीम एशेज सीरीज के तीसरे टेस्ट के तीसरे दिन खत्म होने तक हार के मुहाने पर खड़ी थी। उसकी नैया एक बार फिर स्टोक्स ने पार लगा दी। यह स्टोक्स के जीवन की ही नहीं, टेस्ट क्रिकेट इतिहास की सबसे यादगार पारियों में से एक है। एक वर्ष पहले तक जो खिलाड़ी बैडब्वॉय के नाम से सुर्खियों में रहता था आज वही स्टोक्स 42 दिनों में इंग्लैंड को दो यादगार जीत दिलाकर सभी की आंखों का तारा बन गया है।

स्टोक्स (नाबाद 135) और जैक लीच (नाबाद 01) के बीच आखिरी विकेट के लिए हुई 76 रनों की मैच जिताऊ अटूट साझेदारी इस मैच के रोमांच की कहानी बयां कर देती है। हालांकि लॉर्ड्स विश्व कप फाइनल में अंपायर की गलती एक बार फिर इंग्लैंड और स्टोक्स के लिए किस्मत की धनी साबित हुई। ऑस्ट्रेलिया को जब जीत के लिए आखिरी विकेट की भूख बढ़ रही थी उस वक्त नाथन लियोन की गेंद पर स्टोक्स साफ एलबीडब्ल्यू थे, लेकिन अंपायर ने उन्हें आउट नहीं दिया और ऑस्ट्रेलिया के पास कोई रिव्यू ही नहीं बचा था। खास बात यह रही कि इससे एक गेंद पहले ही लियोन ने लीच का आसान सा रन आउट छोड़ दिया था।

टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में चौथी बार है जब इंग्लैंड एक विकेट से मैच जीतने में सफल रहा है। इससे पहले उसने 1922-23 में केपटाउन में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ, 1907-08 में मेलबर्न में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ और 1902 में ओवल में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एक विकेट से जीत दर्ज की थी। इस जीत के बाद इंग्लैंड ने पांच मैचों की एशेज टेस्ट सीरीज में 1-1 की बराबरी हासिल कर ली है। सीरीज का पहला मैच ऑस्ट्रेलिया ने 251 रनों से जीता था, जबकि दूसरा मैच ड्रॉ रहा था।

ऑस्ट्रेलिया ने पहली पारी में 179 रन का स्कोर बनाया था और फिर उसने इंग्लैंड को उसकी पहली पारी में 67 रन पर ढेर कर 112 रन की बढ़त हासिल कर ली थी। ऑस्ट्रेलिया ने इसके बाद अपनी दूसरी पारी में 246 रन का स्कोर बनाकर इंग्लैंड के सामने जीत के लिए 359 रनों का लक्ष्य रखा। इंग्लैंड ने इस लक्ष्य को नौ विकेट खोकर हासिल कर लिया।

इससे पहले, ऑस्ट्रेलिया से मिले 359 रनों के लक्ष्य का पीछा कर रही इंग्लैंड ने रविवार सुबह अपने तीसरे दिन के स्कोर तीन विकेट पर 156 रन से आगे खेलना शुरू किया और लंच तक चार विकेट पर 238 रन बना लिए थे। लंच के बाद इंग्लैंड की टीम काफी संकट में आ गई और उसने अगले 48 रन के अंदर ही अपने पांच और विकेट गंवा दिए। मेजबान टीम 286 रन के स्कोर तक अपने नौ विकेट गंवा चुकी थी और उसे जीत के लिए अभी 73 रन और बनाने थे जबकि उसकी आखिरी जोड़ी क्रीज पर संघर्ष कर रही थी। इस संघर्ष में स्टोक्स मुख्य भूमिका निभा रहे थे जबकि लीच उनका बखूबी साथ दे रहे थे।

मैच जीतने के बाद इंग्लैंड के ऑलराउंडर बेन स्टोक्स दायें • एएफपी

10वें विकेट के लिए जीत दिलाने वाली साझेदारी

रन	साझेदारी	बनाम	जगह	वर्ष
78	कुशल परेरा-अविष्का फर्नांडो	द. अफ्रीका	डरबन	2019
76	स्टोक्स- लीच	इंग्लैंड	लीड्स	2019
57	इंजमाम-मुश्ताक	ऑस्ट्रेलिया	कराची	1994

स्टोक्स की पारी पर एक नजर

- 3 रन पहली 73 गेंद में स्टोक्स ने बनाए
- 50 रन 152 गेंद में पूरे किए स्टोक्स ने
- 74 रन आखिर के मात्र 45 गेंद में सात छक्कों की मदद से बनाए स्टोक्स ने
- 359 रनों के बड़े लक्ष्य का पीछा किया, जब किसी अन्य बल्लेबाज ने साथ नहीं दिया

67 रनों पर पहली पारी में ऑलआउट होकर टेस्ट जीता इंग्लैंड ने। इससे पहले हाल ही में ऑयरलैंड के खिलाफ इंग्लैंड 85 रनों पर ढेर होकर टेस्ट जीतने में सफल रही थी

135 रन नाबाद बनाकर स्टोक्स ने लीड्स टेस्ट जिताया और मैन ऑफ द मैच बने। इससे पहले लॉर्ड्स में खेले गए टेस्ट में उन्होंने शतकीय पारी खेलकर टेस्ट ड्रॉ कराया और मैन ऑफ द मैच बने थे

करत करत अभ्यास ते जड़मति होत सुजान...

किसी बड़े टूर्नामेंट में सिंधू ने जीता अपना पहला स्वर्ण पदक तीन वर्ष से चला आ रहा फाइनल में हारने का सिलसिला तोड़ा

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: करत करत अभ्यास ते जड़मति होत सुजान। रसरी आवत-जात के, सिल पर पड़त निशान। अभ्यास के बल पर मूर्ख भी बुद्धिमान हो जाता है, अज्ञानी भी ज्ञानी हो जाता है। इतिहास गवाह है कि अभ्यास और परिश्रम के बलबूते असंभव दिखाई देने वाला कार्य भी संभव हो जाता है। सच ही तो हैं ये लाइनें। इनमें कितनी सच्चाई छुपी है यह बात रविवार को भारतीय महिला बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधू ने स्विट्जरलैंड के बासेल में विश्व चैंपियनशिप का खिताब जीतकर साबित कर दी। तीन साल पहले रियो ओलंपिक के फाइनल में हार से शुरू हुआ सिंधू का मुश्किलों भरा सफर सोमवार को सोने के तमगे के साथ खत्म हुआ।

2016 ओलंपिक फाइनल में शिकस्त, 2017 विश्व चैंपियनशिप के फाइनल में शिकस्त, 2018 विश्व चैंपियनशिप के फाइनल में शिकस्त, 2018 कॉमनवेल्थ गेम्स के महिला सिंगल्स फाइनल में शिकस्त और 2018 एशियन गेम्स के सिंगल्स फाइनल में शिकस्त। ये तीन वर्ष और इन बड़े टूर्नामेंट के फाइनल सिंधू के लिए किसी टीस से कम नहीं रहे। बेहतर प्रयास, गलतियों से सीख और कड़ी लगन ने आज सिंधू को बैडमिंटन की दुनिया की रानी बना दिया। जिस नोजोमी ओकुहारा ने 2017 में सिंधू का सपना तोड़ा था, उन्हें इस बार फाइनल में एकतरफा मुकाबले में हराकर सिंधू ने अपनी मां को जन्मदिन का तोहफा तो दिया ही, साथ ही करोड़ों हिंदुस्तानियों का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया। पदक के बाद राष्ट्रगान के साथ ऊंचे उठते तिरंगे को देख सिंधू की आंखों के आंसू यह साफ बता रहे थे कि उन्हें इस दिन का किस कदर इंतजार था। ऐसा हो भी क्यों ना, सिंधू का सीनियर स्तर पर किसी बड़े टूर्नामेंट में यह पहला स्वर्ण पदक है। हालांकि, मिक्स्ड टीम स्पर्धा में सिंधू ने 2018 कॉमनवेल्थ गेम्स में स्वर्ण पदक जीता था, लेकिन सिंगल्स में यह उनका पहला सोने का तमगा है। सही मायनों में भारत को जो सपना 1983 में प्रकाश पादुकोण ने दिखाया था उसे 36 साल बाद सिंधू ने पूरा करके दिखाया।

आसान नहीं रहा सिंधू का सफर: दरअसल, सिंधू ने आज जो यह स्वर्णिम सफलता हासिल की है उसके पीछे वर्षों की कड़ी मेहनत है। अक्सर हम खिलाड़ियों की सफलताओं को देखकर खुश होते हैं, प्रेरित होते हैं, लेकिन हकीकत यह है कि उनके शिखर तक पहुंचने की मेहनत से वाकिफ ही नहीं हो पाते। सिंधू के लिए भी यह सफर आसान नहीं रहा। पीवी रमाना और पी विजया की बेटी सिंधू को खेल की परवरिश बचपन से ही मिली।

ऐसे जीता खिताब

पीवी सिंधू ने पहले गेम में अच्छी शुरुआत की और 5-1 की बढ़त बना ली। इसके बाद वह 12-2 से आगे हो गईं। लगातार तीसरे साल फाइनल में पहुंचने वाली सिंधू ने इसके बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा और 16-2 की बढ़त लेने के बाद 21-7 से पहला गेम जीत लिया। भारतीय खिलाड़ी ने 16 मिनट में पहला गेम अपने नाम किया। दूसरे गेम में सिंधू ने 2-0 की बढ़त के साथ शुरुआत करते हुए अगले कुछ मिनटों में 8-2 की बढ़त कायम कर ली। ओलंपिक पदक विजेता भारतीय खिलाड़ी ने आगे भी अपने आक्रामक खेल के जरिये अंक लेना जारी रखा। सिंधू ने मुकाबले में 14-4 की शानदार बढ़त बना ली। इसके बाद उन्होंने लगातार अंक लेते हुए 21-7 से गेम और मैच समाप्त करके स्वर्ण पदक अपने नाम कर लिया। विश्व चैंपियनशिप में सिंधू के अब पांच पदक हो गए हैं। इनमें एक स्वर्ण, दो रजत और दो कांस्य पदक शामिल हैं।

मैच के बाद जीत का जश्न मनातीं पीवी सिंधू • एपी

सिंधू का विश्व चैंपियनशिप में सफर

मैच	बनाम	जीत का अंतर
पहला दौर	बाई मिली	-
दूसरा दौर	पाइ यू पो	21-14, 21-14
अंतिम-16	बीवेन झांग	21-14, 21-6
क्वार्टर फाइनल	ताई जू यिंग	12-21, 23-21, 21-19
सेमीफाइनल	चेन यु फेई	21-7, 21-14
फाइनल	नोजोमी ओकुहारा	21-7, 21-7

बॉलीवुड ने सिंधू को बधाई दी

मुंबई, आइएएनएस : पीवी. सिंधू विश्व चैंपियनशिप को जीतने वाली पहली भारतीय बन गई हैं। उन्हें बधाई देने के लिए पूरा बॉलीवुड सामने आ गया। शाह रुख खान, अनुष्का शर्मा जैसे दिग्गजों ने सोशल मीडिया के माध्यम से सिंधू को बधाई दी। शाह रुख खान ने ट्वीट कर कहा कि विश्व चैंपियनशिप में गोल्ड जीतने पर पीवी सिंधू को बधाई। अपनी प्रतिभा से देश का नाम रोशन कर हमें कर दिया।

सिंधू के विश्व चैंपियनशिप में पदक

वर्ष	पदक
2013	कांस्य
2014	कांस्य
2017	रजत
2018	रजत
2019	स्वर्ण

शानदार प्रदर्शन सिंधू। विश्व चैंपियनशिप जीतने वाली पहली भारतीय बनने पर बधाई। आपने भारत को गौरवान्वित किया है। **सचिन तेंदुलकर**, पूर्व भारतीय क्रिकेटर

विश्व चैंपियनशिप में भारत के पदक

वर्ष	खिलाड़ी	पदक	वर्ग
1983	प्रकाश पादुकोण	कांस्य	सिंगल्स
2019	बी साई प्रणीत	कांस्य	सिंगल्स
2011	ज्वाला गट्टा-अश्विनी पोनप्पा	कांस्य	महिला डबल्स
2013	पीवी सिंधू	कांस्य	सिंगल्स
2014	पीवी सिंधू	कांस्य	सिंगल्स
2015	साइना नेहवाल	रजत	सिंगल्स
2017	साइना नेहवाल	कांस्य	सिंगल्स
2017	पीवी सिंधू	रजत	सिंगल्स
2018	पीवी सिंधू	रजत	सिंगल्स
2019	पीवी सिंधू	स्वर्ण	सिंगल्स

बैडमिंटन कोर्ट पर आपके जादुई प्रदर्शन, कड़ी मेहनत और दृढ़ता से लाखों लोग रोमांचित और प्रेरित होते हैं। विश्व चैंपियन। भविष्य के सभी मुकाबलों के लिए मेरी शुभकामनाएं। **रामनाथ कोविंद**, राष्ट्रपति

विश्व चैंपियनशिप में ऐतिहासिक स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय बनकर सिंधू ने इतिहास रच दिया है। भारत को सिंधू पर गर्व है। मेरी ओर से उन्हें ढेर सारी बधाई। सरकार ऐसे ही और चैंपियन बनाने के लिए खिलाड़ियों को हर तरीके की सुविधाएं और सहायता देना जारी रखेगी। **किरण रिजिजू**, खेल मंत्री

विश्व चैंपियनशिप में भारत को पहला स्वर्ण दिलाने के लिए बधाई पीवी सिंधू। आपने अपनी इस स्वर्णिम सफलता से पूरे देश को गौरवान्वित किया है। **अमित शाह**, गृह मंत्री

विश्व चैंपियनशिप को जीतने वाली पहली खिलाड़ी बनने पर सिंधू को बधाई। आपने भारत को गौरवान्वित किया। जीतते रहिए। **ममता बनर्जी**, मुख्यमंत्री बंगाल

प्रमोद ने जीता खिताब

पैरा बैडमिंटन विश्व चैंपियनशिप के पुरुष सिंगल्स में बने विजेता

जागरण संवाददाता, राउरकेला: ओडिशा के पैरा बैडमिंटन खिलाड़ी प्रमोद भगत ने एक बार फिर अपनी प्रतिभा का परचम लहराया है। उन्होंने स्विट्जरलैंड के बासेल में हुई पैरा बैडमिंटन विश्व चैंपियनशिप के रविवार को हुए पुरुष सिंगल्स के फाइनल में जीत हासिल कर खिताब जीता।

फाइनल में उनका मुकाबला विश्व के नंबर दो खिलाड़ी इंग्लैंड के डैनियल बेटहेली से हुआ। प्रमोद ने 6-21, 21-14 तथा 21-5 से जीत दर्ज कर विश्व चैंपियनशिप पर अपना कब्जा जमाया। इससे पूर्व भी प्रमोद भगत राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी खेल प्रतिभा का जौहर दिखा चुके हैं। उन्हें खेल के क्षेत्र में उम्दा प्रदर्शन के लिए दिए जाने वाले अर्जुन पुरस्कार के लिए इस वर्ष चुना गया है। अब उन्हें अगले वर्ष होने वाले पैरालंपिक में अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद है।

प्रमोद भगत • ट्विटर

विश्व खिताब जीतना किसी सपने के सच होने जैसा : मानसी

बासेल (स्विट्जरलैंड), आइएएनएस: भारत की पैरा बैडमिंटन खिलाड़ी मानसी जोशी ने पहला विश्व चैंपियनशिप खिताब जीतने के बाद कहा कि यह उनके लिए किसी सपने के सच होने जैसा है। उन्होंने महिला सिंगल्स वर्ग के फाइनल में यहां शनिवार को हमवतन पारुल परमार को 21-12, 21-7 से पराजित किया।

जोशी ने 2011 में एक दुर्घटना में अपना बायां पैर खो दिया था और चार साल बाद उन्होंने बैडमिंटन खेलना शुरू किया। वह पुलेला गोपीचंद अकादमी में ट्रेनिंग करती हैं।

मैच जीतने के बाद जोशी ने कहा, 'मैंने बहुत कठिन ट्रेनिंग की है। मैंने एक दिन में तीन सत्रों में ट्रेनिंग की है। मैंने फिटनेस पर ध्यान केंद्रित किया था, इसलिए मैंने कुछ वजन भी कम किया और अपनी मांसपेशियों को बढ़ाया। मैंने जिम में अधिक समय बिताया, सप्ताह में छह सत्रों में ट्रेनिंग की। मैंने अपने स्ट्रोक्स पर भी काम किया, मैंने इसके लिए अकादमी में हर दिन ट्रेनिंग की। मैं समझती हूं कि मैं लगातार बेहतर हो रही हूं और अब यह दिखना शुरू हो गया है।'

अपने सफर के बारे में जोशी ने कहा, 'मैं 2015 से बैडमिंटन खेल रही हूं। विश्व चैंपियनशिप में पदक जीतना किसी सपने के सच होने जैसा होता है।' जोशी ने बताया कि वह चलने के लिए अब नए वॉकिंग प्रोसथेसिस सॉकेट का उपयोग कर रही हैं। इससे पहले वह पांच साल से एक ही सॉकेट का इस्तेमाल कर रही थीं जिसके कारण वर्कआउट के दौरान उनकी रफ्तार धीमी हो रही थी।

जोकोविक, फेडरर व नडाल खिताब के दावेदार, आज से शुरू हो रहा है साल का अंतिम ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट

यूएस ओपन में 'बिग थ्री' की निगाहें खिताब पर

न्यूयॉर्क, एएफपी: गत विजेता नोवाक जोकोविक, राफेल नडाल और रोजर फेडरर सोमवार से यहां फ्लशिंग मिडोज हार्ड कोर्ट में शुरू होने वाले यूएस ओपन के पुरुष वर्ग में प्रबल दावेदार होंगे और महिला वर्ग में सेरेना विलियम्स इतिहास रचने की कोशिश करेंगी। कई युवा खिलाड़ी पुरुष टेनिस के 'बिग थ्री' की चुनौती शुरू में समाप्त करने की कोशिश करेंगे, लेकिन उनके लिए मुकाबले इतने आसान नहीं होंगे।

शीर्ष रैंकिंग के खिलाड़ी जोकोविक के नाम 16 ग्रैंडस्लैम खिताब हैं और वह इसे बढ़ाने का प्रयास करेंगे। उन्होंने कहा, 'मैं इसमें मिलने वाली चुनौती से वाकिफ हूं।' फेडरर 20 ग्रैंडस्लैम के सर्वकालिक रिकॉर्ड में और ट्रॉफी जोड़ना चाहेंगे। उन्होंने, जोकोविक और स्पेनिश सुपरस्टार नडाल ने मिलकर यहां पिछले 11 ग्रैंडस्लैम खिताब हासिल किए हैं। फेडरर ने कहा, 'नोवाक, राफा और मैं स्वस्थ हो चुके हैं। एंडी मरे भी धीरे-धीरे वापसी कर रहे हैं। इससे युवा खिलाड़ियों के लिए काफी मुश्किल हो जाएगी। मैं यूएस ओपन से पहले इतने वर्षों बाद इतना बेहतर महसूस कर रहा हूं जो प्रेरणादायी है। मैं यूएस ओपन के लिए तैयार हूं। इसमें कोई शक नहीं कि टूर्नामेंट को जीतना काफी मुश्किल होगा।' वहीं, तीसरी वरीय फेडरर ने कहा, 'मैं खुद पर अतिरिक्त दबाव नहीं डाल रहा हूं। मैं जानता हूं कि यह काफी कठिन होगा। मुझे लगता है कि मैं उन खिलाड़ियों में शामिल हूं जो यह कर सकते हैं।' फेडरर पहले दौर के मुकाबले में भारतीय खिलाड़ी सुमित नागल का सामना करेंगे।

जोकोविक ने पिछले पांच में से चार ग्रैंडस्लैम जीते हैं। जून में फ्रेंच ओपन फाइनल में उन्हें नडाल से हार मिली थी। 32 साल के सर्बियाई खिलाड़ी ने कहा कि उन्होंने पिछले कुछ समय में खिताब बचाने के अतिरिक्त दबाव से निपटना सीख लिया है। उन्होंने कहा, 'ग्रैंडस्लैम खिताब के बचाव की चुनौती काफी ज्यादा होती है। आप इन टूर्नामेंट को जीतना चाहते हो। आप इन्हीं में चमकना चाहते हो।' 33 वर्षीय नडाल ने रोम, फ्रेंच ओपन और मांट्रियल में खिताबी जीत से शानदार प्रदर्शन किया है। वह विंबलडन के सेमीफाइनल में फेडरर से हार गए थे। नडाल ने कहा, 'बड़े टूर्नामेंट में सकारात्मकता के साथ आने से मदद मिलती है। इससे आत्मविश्वास में बढ़ोतरी होती है। मैं अच्छा महसूस कर रहा हूं। मैंने अच्छा अभ्यास किया है।' दूसरी रैंकिंग पर काबिज नडाल ने जून में 12वां फ्रेंच ओपन खिताब जीता था।

रूस के डेनिल मेदवेदेव ने यूएस ओपन की तैयारियों के लिए आयोजित टूर्नामेंट में अच्छा प्रदर्शन किया है। उन्होंने सिनसिनाटी में खिताब जीता तो वह वाशिंगटन और मांट्रियल में उप विजेता रहे। उन्होंने कहा, 'मैं खुद को प्रबल दावेदारों में नहीं मानता क्योंकि अपने करियर में मैं एक ग्रैंडस्लैम के क्वार्टर फाइनल तक भी नहीं पहुंचा हूं। हालांकि जब मैं अपना सर्वश्रेष्ठ टेनिस खेलता हूं तो मैं किसी को भी हरा सकता हूं।' ऑस्ट्रेलिया के चौथे वरीय डोमिनिक थिएम रोलां गैरां फाइनल में नडाल से हार गए थे और वह भी खतरा बन सकते हैं। नडाल ने कहा, 'हर साल वह सुधार कर रहा है। हर दिन वह काफी मजबूत हो रहा है और हर साल वह और ज्यादा मजबूत हो रहा है।' जर्मनी के छठी रैंकिंग के एलेक्जेंडर ज्वेरेव ने चेताया कि कम वरीयता प्राप्त खिलाड़ियों की अनदेखी करना सही नहीं होगा जिसमें जापान के सातवीं वरीय केई निशिकोरी और स्टेफानोस सितसिपास शामिल हैं।

सेरेना की राह हो सकती है मुश्किल : अमेरिका की 37 साल की खिलाड़ी सेरेना टेनिस इतिहास रचने की कोशिश करेंगी लेकिन कई ग्रैंडस्लैम विजेता और ऊंची रैंकिंग की प्रतिद्वंद्वी उनकी राह मुश्किल कर सकती हैं। सेरेना पहले दौर में रूस की मारिया शारापोवा से भिड़ेंगी। उन्हें पिछले साल के यूएस ओपन फाइनल में नाओमी ओसाका से हार का सामना करना पड़ा था।

केविन एंडरसन यूएस ओपन से हटे

न्यूयॉर्क : दो बार ग्रैंडस्लैम के फाइनल में पहुंचने वाले दक्षिण अफ्रीका के केविन एंडरसन ने घुटने की चोट के कारण यूएस ओपन से हटने का फैसला किया। दक्षिण अफ्रीका के 33 साल के खिलाड़ी यूएस ओपन में 2017 फाइनल में स्पेन के दिग्गज राफेल नडाल से हार गए थे और पिछले साल विंबलडन में नोवाक जोकोविक से हारकर उप विजेता रहे। ड्रॉ में एंडरसन की जगह इटली के पाओलो लोरेंजी को शामिल किया गया। पिछले महीने विंबलडन के तीसरे दौर में बाहर होने के बाद एंडरसन किसी टूर्नामेंट में नहीं खेले हैं। चोट के कारण दुनिया का 17वें नंबर का खिलाड़ी हाल में वाशिंगटन, मांट्रियल और सिनसिनाटी हार्ड कोर्ट टूर्नामेंट में हिस्सा नहीं ले पाया था।

नोवाक जोकोविक फाइल फोटो • एएफपी

हुर्काज ने पहला एटीपी खिताब जीता

लॉस एंजिलिस, एपी: पोलैंड के हुबर्ट हुर्काज ने विंस्टन सलेम एटीपी टूर्नामेंट के फाइनल में शीर्ष वरीय बेनो पेयरे को तीन सेटों में हराकर उलटफेर किया और करियर का पहला खिताब अपने नाम किया। इस तरह वह वोजटेक फिबाक के 1982 में डब्ल्यूसीटी शिकागो खिताब के बाद टूर सिंगल्स टूर्नामेंट जीतने वाले पोलैंड के पहले खिलाड़ी बन गए। 22 साल के खिलाड़ी ने फाइनल में पेयरे के खिलाफ दमदार प्रदर्शन करते हुए 6-3, 3-6, 6-3 से जीत हासिल की। वह 2019 में एटीपी टूर में पहली बार ट्रॉफी जीतने वाले 14वें खिलाड़ी भी बन गए।

मुझे थोड़ा संयम दिखाने की जरूरत : केएल राहुल

एंटीगा, प्रेट्र: भारतीय सलामी बल्लेबाज लोकेश राहुल मानते हैं कि तकनीक को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता है, लेकिन उन्होंने स्वीकार किया कि उन्हें रन जुटाने के लिए थोड़ा संयम बरतने की जरूरत है। अफगानिस्तान के खिलाफ एकमात्र टेस्ट में अर्धशतक और पिछले साल इंग्लैंड में 149 रन के अलावा राहुल ने 2018 के शुरू के बाद से लंबे प्रारूप में कुछ खास प्रदर्शन नहीं किया है।

वेस्टइंडीज के खिलाफ चल रहे मुकाबले में राहुल ने अच्छी शुरुआत के बाद भी विकेट गंवा दिया। उन्होंने तीसरे दिन का खेल समाप्त होने के बाद कहा कि तकनीक और बाकी सब कुछ को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता है, जब आप रन जुटाते हो तो सब अच्छा दिखता है। इसलिए मेरे लिए क्रीज पर समय बिताना काफी अहम था। राहुल ने पहली पारी में 44 रन बनाए और वह दूसरी पारी में 38 रन पर आउट हो गए। उन्होंने कहा कि मैं बहुत निराश हूं, लेकिन मैं काफी चीजें सही कर रहा हूं। मुझे सिर्फ थोड़ा धैर्य बरतना होगा। उन्होंने कहा कि मैं जो अच्छी चीजें कर रहा हूं, उन्हें 35 से 45 रन के बाद भी जारी रखना होगा। मैं अच्छी बल्लेबाजी कर रहा हूं। मैं दोनों पारियों में सहज था। काफी चीजों के लिए खुश हूं।

शीर्ष क्रम की विफलता से होल्डर काफी निराश: वेस्टइंडीज के शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों के प्रदर्शन से निराश कप्तान जेसन होल्डर ने नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि चुनौतियों के सामने नहीं टिक पाना एक आम चीज बन गई है। शीर्ष क्रम को अच्छा करना चाहिए था। भारत के पहली पारी के 297 रन के स्कोर के जवाब में वेस्टइंडीज की टीम विश्व चैंपियनशिप के शुरुआती टेस्ट मैच में 222 रन पर सिमट गई थी। होल्डर ने इस पर निराशा व्यक्त की। होल्डर ने कहा कि बहुत निराश हूं। यह हमारे बल्लेबाजों के लिए अब सामान्य चीज बन गई है। हमारे शीर्ष क्रम के खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाए हैं।

अच्छी पिचें टेस्ट को बचाने में मदद करेंगी : तेंदुलकर

मुंबई, प्रेट्र: पूर्व भारतीय दिग्गज बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने कहा है कि प्रतिस्पर्धी पिचें टेस्ट क्रिकेट को काफी मदद करेंगी, जैसा कि एशेज में अब तक पिचें पेश की गई हैं। उन्होंने कहा कि विश्व टेस्ट चैंपियनशिप की शुरुआत के बावजूद प्रशंसकों को इसकी ओर आकर्षित करने के लिए क्रिकेट रोमांचक होनी चाहिए। सचिन ने कहा कि टेस्ट क्रिकेट को अच्छी पिचों की मदद से बचाया जा सकता है, लेकिन पिचें फ्लैट और डेड होती हैं तो टेस्ट क्रिकेट की चुनौतियां बरकरार रहेंगी। उन्होंने कहा कि मैं जानता हूं कि विश्व टेस्ट चैंपियनशिप से क्रिकेट का यह प्रारूप काफी रोचक बन सकता है।

मेरी कोई बहन नहीं है। अगर होती तो मैं उसकी शादी बेन स्टोक्स से कर देता।
–ग्रीम स्वान, इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर

नए अंदाज में नजर आए महेंद्र सिंह धौनी

नई दिल्ली : टीम इंडिया के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धौनी जम्मू-कश्मीर में इंडियन आर्मी में अपनी सेवाएं देकर लौट आए हैं। 15 दिन ड्यूटी और करीब एक महीने तक ट्रेनिंग करने के बाद कश्मीर से लौटे एमएस धौनी अब अपने बाकी कामों में व्यस्त हैं। इसी दौरान के कुछ फोटोज और वीडियोज सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं, जिनमें महेंद्र सिंह धौनी का नया अवतार देखा जा सकता है। तस्वीर और वीडियो जयपुर की है जहां धौनी ने अपने सिर पर काला बान्दाना बांध रखा है।

कोमलिका बनीं विश्व युवा तीरंदाजी चैंपियन

उपलब्धि ▶ अंडर-18 वर्ग में विश्व चैंपियन बनने वाली भारत की दूसरी तीरंदाज बनीं बारी

खेल संवाददाता, जमशेदपुर

टाटा तीरंदाजी अकादमी की कोमलिका बारी ने स्पेन की राजधानी मैड्रिड में हुई विश्व युवा तीरंदाजी चैंपियनशिप के फाइनल में स्वर्णिम निशाना साधकर इतिहास रच दिया। कोमलिका ने रविवार को खेले गए फाइनल में जापान की वाका सोनोडा पर 7-3 से जीत के बाद महिला कैडेट रिकर्व श्रेणी में स्वर्ण पदक जीता।

कोमलिका ने गुरुवार को खेले गए सेमीफाइनल मुकाबले में कोरियाई तीरंदाज जांग मी को 6-5 से पराजित किया था। 17 साल की कोमलिका अंडर-18 वर्ग में विश्व चैंपियन बनने वाली भारत की दूसरी तीरंदाज बनीं। उससे पहले दीपिका कुमारी ने 2009 में यह खिताब जीता था।

फाइनल में कोमलिका को कठिन चुनौती का सामना नहीं करना पड़ा। कोमलिका ने पहले दो सेट आसानी से जीतकर 4-0 की बढ़त बना ली। हालांकि, जापानी तीरंदाज ने वापसी कर मुकाबले को 5-1 पर लाने में सफलता हासिल की। कोमलिका को स्वर्ण पदक हासिल करने के लिए बस एक अंक की जरूरत थी। चौथे सेट में भी जापानी खिलाड़ी सोनोडा ने जीत हासिल कर मुकाबले को 5-3 पर ला खड़ा किया। लेकिन, अंतिम सेट में 29-28 अंक हासिल कर कोमलिका ने स्वर्ण पदक को अपनी झोली में डाल लिया। विश्व तीरंदाजी से निलंबन लागू होने से पहले भारत ने अपनी आखिरी प्रतियोगिता में दो स्वर्ण और एक कांस्य पदक के साथ अभियान का समापन किया। इस महीने की शुरुआत में विश्व तीरंदाजी ने भारत को निलंबित करने का फैसला किया था, जिसके हटने तक अब कोई भी भारतीय तीरंदाज देश का प्रतिनिधित्व नहीं कर पाएगा। भारतीय तीरंदाजों ने इससे पहले शनिवार को मिक्स्ड जूनियर डबल्स स्पर्धा में स्वर्ण और शुक्रवार को जूनियर पुरुष टीम स्पर्धा में कांस्य जीता था।

जमशेदपुर स्थित टाटा तीरंदाजी आकादमी में अभ्यास करती विश्व युवा तीरंदाजी चैंपियन कोमलिका बारी। जागरण आर्काइव

रिश्ता छुपाने से अच्छा जाहिर करना : दुति

नजरिया

नई दिल्ली, प्रेट्र : समलैंगिक रिश्ते का रहस्योद्घाटन करने वाली भारत की पहली एथलीट दुति चंद ने कहा कि उनके लिए रिश्ते को सार्वजनिक करना छुपाने से बेहतर है। दुति ने मई में ओडिशा के अपने गांव की एक महिला के साथ अपने रिश्ते को सार्वजनिक करके सुर्खियां बटोरी थीं। उनके इस फैसले के बाद परिवार ने उनसे नाता तोड़ने, जबकि उनकी बड़ी बहन ने अलग होने की धमकी दी थी, लेकिन दुति पर इसका कोई असर नहीं हुआ।

▶ अपने समलैंगिक रिश्ते को लेकर बोलीं चंद, निजी जिंदगी के कारण अब कोई दबाव नहीं

दुति ने उस महिला के साथ घर बसाने की इच्छा जाहिर की। अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में देश के लिए कई पदक जीतने वाली 23 साल की इस फर्राटा धावक ने कहा, 'मेरी निजी जिंदगी के कारण अब मेरे ऊपर कोई दबाव नहीं है, क्योंकि मैंने इसका रहस्योद्घाटन कर दिया है। दरअसल, जब तक मैंने इसे छुपा रखा था तब तक मैं डर रही थी और दबाव महसूस करती थी। इस रिश्ते को सार्वजनिक करने के बाद कई लोगों ने मुझसे बात की और मेरा समर्थन किया। उन्होंने मेरे प्रयास की सराहना की, जिससे मुझे अच्छा महसूस हुआ।'

अगला लक्ष्य, ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करना : दुति हाल ही में विश्व यूनिवर्सिटी खेलों में 100 मीटर की दौड़ में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला ट्रैक और फील्ड खिलाड़ी बनी हैं। पिछले महीने नपोली में हुए इन खेलों में दुति ने 11.32 सेकेंड का समय निकालकर रेस जीती। वह मंगलवार से लखनऊ में खेले जाने वाली राष्ट्रीय-अंतरराज्यीय चैंपियनशिप में भाग लेंगी, जहां उनका लक्ष्य अगले महीने दोहा में खेले जाने वाली विश्व चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाई करना होगा। 100 मीटर की में राष्ट्रीय रिकॉर्ड धारी (11.26 सेकेंड) दुति ने कहा, 'मैं राष्ट्रीय-अंतरराज्यीय चैंपियनशिप में भाग ले रही हूं और मैं आपको भरोसा देती हूं कि आप मेरे समय में सुधार देखेंगे।'

विश्व चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाइंग समय 11.24 सेकेंड है। दुति का लक्ष्य अगले साल टोक्यो में होने वाले ओलंपिक खेलों के लिए क्वालीफाई करना है। महिलाओं की 100 मीटर रेस के लिए ओलंपिक क्वालीफाइंग के लिए 11.15 सेकेंड का समय रखा गया है। दुति ने कहा, 'ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करना और प्रतिस्पर्धा करना हर खिलाड़ी का सपना होता है और मैं अलग नहीं हूं। मैं निश्चित रूप से अपने देश के लिए पदक जीतना चाहूंगी और इसके लिए मेरी तैयारियां जोरों पर हैं।'

भारतीय एथलीट दुति चंद। फाइल फोटो

पैरालंपिक के लिए नए मानक तय करेगा टोक्यो : आइपीसी

टोक्यो, आइएएनएस : अंतरराष्ट्रीय पैरालंपिक समिति (आइपीसी) के उपाध्यक्ष डुआन काले ने कहा है कि जापान की राजधानी टोक्यो में अगले साल होने वाले पैरालंपिक खेल इस खेल के नए मानक तय करेगा। काले ने हालांकि एक साक्षात्कार में स्वीकार किया कि इसे शुरू होने में अब एक साल से भी कम समय बचा है, ऐसे में इस टूर्नामेंट के लिए अभी भी चुनौतियां कायम हैं। समाचार एजेंसी एफे की रिपोर्ट के अनुसार, न्यूजीलैंड के पूर्व पैरालंपिक तैराक काले इस समय टोक्यो में हैं, जहां वह पैरालंपिक खेलों की तैयारियों का जायजा ले रहे हैं। पैरालंपिक खेलों का आयोजन अगले साल टोक्यो में 25 अगस्त से छह सितंबर तक होना है।

▶ पैरालंपिक खेल अगले साल टोक्यो में 25 अगस्त से छह सितंबर तक होंगे

काले ने कहा कि आयोजनकर्ता अविश्सनीय काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा, खेलों के बारे में एक चीज है कि रिकॉर्ड बनते ही हैं टूटने के लिए। ऐसा कहा गया कि लंदन ने नए बेंचमार्क तय किए थे लेकिन टोक्यो भी पैरालंपिक के लिए नए मानक तय करने के लिए पूरी तरह से तैयार है।

काले ने कहा कि एथलीटों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आयोजन समिति पानी की गुणवत्ता के मुद्दे पर पहले से ही बहुत मेहनत कर रही है। उन्होंने आयोजकों द्वारा पानी में हानिकारक बैक्टीरिया के स्तर की जांच करने के लिए अपनाए गए उपायों का जिक्र करते हुए कहा कि हम जानते हैं कि हम अधिक स्क्रीनिंग सुविधाओं पर इसे ट्रायथलॉन एथलीटों के लिए सुरक्षित वातावरण बनाने के लिए रख सकते हैं।

जुवेंटस ने पार्मा को 1-0 से हराया

फुटबॉल डायरी

रोम, आइएएनएस : कप्तान जॉर्जियो चिलेनी के गोल की बदौलत इटली लीग की मौजूदा चैंपियन जुवेंटस ने 2019-20 सत्र की शुरुआत जीत के साथ की। जुवेंटस ने पहले दौर के मैच में पार्मा को 1-0 से हराया। जुवेंटस ने लगातार आठ बार यह खिताब जीता है। मैच की शुरुआत से ही जुवेंटस के खिलाड़ी आक्रामक अंदाज में खेले। जुवेंटस को 21वें मिनट में कॉर्नर मिला। 18 यार्ड बॉक्स के अंदर से मेजबान टीम के गोलकीपर ने गोल नहीं होने दिया। पहले हाफ में क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने भी बेहतरीन दौड़ के बाद एक गोल किया, लेकिन रेफरी ने वार की मदद लेने के बाद उसे ऑफ साइड करार दिया। मैच के दूसरे हाफ में जुवेंटस का पलड़ा भारी रहा। हालांकि, तमाम प्रयासों के बावजूद उसे अपनी बढ़त को दोगुना करने में सफलता नहीं मिली।

क्रिस्टल पैलेस ने युनाइटेड के खिलाफ किया उलटफेर

मैनचेस्टर, आइएएनएस : मैनचेस्टर युनाइटेड को इंग्लिश प्रीमियर लीग (ईपीएल) के तीसरे दौर के मैच में क्रिस्टल पैलेस के खिलाफ उलटफेर का शिकार होना पड़ा। पैलेस ने शानदार प्रदर्शन करते हुए युनाइटेड को उसी के घर पर 2-1 से पराजित किया। ओल्ड ट्रैफर्ड मैदान पर पैलेस की 1989 के बाद यह पहली जीत है। पैलेस ने मैच का आखिरी गोल इंजुरी समय में दागा। मैच की शुरुआत से ही दोनों टीमों के बीच कड़ी टक्कर देखने को मिली। युनाइटेड की टीम शुरू से ही दबाव में नजर आई और मेजबान टीम के डिफेंस को मेहमान टीम ने लगातार भेदने का प्रयास किया। पैलेस को 32वें मिनट में मौका मिला और आंद्रे आयू ने गोल करते हुए अपनी टीम को 1-0 से आगे कर दिया। युनाइटेड ने इस झटके के बाद अपने खेले के स्तर को बेहतर करने की कोशिश की, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली।

दूसरे हाफ में मेजबान टीम को पेनाल्टी मिली। पिछले मैच से अलग इस मुकाबले में पेनाल्टी पर मार्कस रशफोर्ड ने ली। हालांकि, उन्हें भी सफलता नहीं मिली। पिछले ईपीएल मैच में पॉल पोग्बा पेनाल्टी पर चूक गए थे जिसके कारण उनके खिलाफ सोशल मीडिया पर नस्लीय टिप्पणी भी की गई थी। मैच के 89वें मिनट में डेनियल जेम्स ने 18 यार्ड बॉक्स के अंदर से दमदार गोल करते हुए अपनी टीम को बराबरी दिला दी। हालांकि, मेजबान टीम मैच से अंक बटोरने में कामयाब नहीं हो पाई और 93वें मिनट में पैट्रिक वैन आंहोल्ट ने गोल करके अपनी टीम को जीत दिला दी।

भारत घुड़सवारी में भी हासिल कर सकता है ओलंपिक क्वालीफिकेशन

नई दिल्ली, प्रेट्र : एशियन गेम्स के रजत पदकधारी फवाद मिर्जा को लगता है कि अगर सभी चीजें उनके हिसाब से होती हैं तो भारत घुड़सवारी में भी ओलंपिक क्वालीफिकेशन हासिल कर सकता है। 1983 के बाद पिछले साल एशियन गेम्स की घुड़सवारी स्पर्धा में व्यक्तिगत पदक हासिल करने वाले वह पहले भारतीय बने और उन्होंने टीम स्पर्धा में देश को दूसरे स्थान पर पहुंचाने में अहम भूमिका अदा की।

फवाद ने जर्मनी से कहा, 'इस समय मेरा ध्यान 2020 टोक्यो ओलंपिक गेम्स के चयन पर लगा है। हम इसे हासिल कर सकते हैं, लेकिन यह काफी चीजों पर निर्भर करता है जैसे कि घोड़ों को काफी लंबी यात्रा करनी होगी।' उनके ओलंपिक क्वालीफिकेशन की उम्मीद को तब करारा झटका लगा जब उनकी पसंद के घोड़े 'सेगनूर मेडिकोट' को चोट लग गई, जिससे उन्होंने एशियन गेम्स का पदक जीता था। फवाद को फिर भी लगता है कि ओलंपिक की तैयारियों के लिए उनका प्रदर्शन संतोषजनक रहा है। उन्होंने कहा, 'मेरा मुख्य घोड़ा बाहर हो गया तो यह काफी मुश्किल है, लेकिन अगर सब कुछ अच्छा रहा तो ओलंपिक क्वालीफिकेशन हासिल किया जा सकता है।

फवाद मिर्जा। (फाइल फोटो)

विविध

न रहस्य से पर्दा उठा और न कोई शिकायत दर्ज कराई

जागरण संवाददाता, हरिद्वार

▶ विषाक्त मिठाई खाने से आचार्य बालकृष्ण की तबीयत बिगड़ने का मामला

पतंजलि योगपीठ के महामंत्री आचार्य बालकृष्ण को विषाक्त मिठाई खिलाने के रहस्य से अभी पर्दा नहीं उठा है। हालांकि योग गुरु बाबा रामदेव पहले ही साफ कर चुके हैं कि वह मामले की जांच कराएंगे और जरूरत पड़ने पर मुकदमा भी दर्ज कराया जाएगा। पतंजलि की तरफ से पुलिस को कोई शिकायत नहीं की गई है। एसएसपी सेंथिल अबुदई कृष्णराज एस ने इसकी पुष्टि की।

योगगुरु बाबा रामदेव के करीबी आचार्य बालकृष्ण शनिवार शाम को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान ऋषिकेश से छुट्टी मिली थी। शुक्रवार दोपहर तबीयत बिगड़ने के कारण उन्हें यहां लाया गया था। चौबीस घंटे विशेषज्ञ डॉक्टरों की देखरेख में गहन चिकित्सा उपचार लेने के बाद उनकी तबीयत में सुधार आया था। तबीयत बिगड़ने का कारण विषाक्त खाने का सेवन निकला। बताया गया कि शुक्रवार को आचार्य बालकृष्ण ने एक भक्त की लाई जन्माष्टमी की मिठाई खाई थी। उसके बाद ही उनकी तबीयत खराब होने लगी। अर्द्ध बेहोशी की हालत में उन्हें हरिद्वार स्थित श्रीभूमानंद अस्पताल ले जाया गय। वहां से उन्हें एम्स ऋषिकेश रेफर किया गया था। उपचार के बाद आचार्य शनिवार शाम पतंजलि लौट आए, लेकिन जहरीली मिठाई लाने वाले भक्त का नाम अभी तक सामने नहीं लाया गया। वह कौन था, कहां का था और पहले भी कभी पतंजलि में आया था या नहीं जैसे सवालों पर सभी की चुप्पी है। हां, शुरुआती बयानों में इतना जरूर कहा गया था कि भक्त की मंशा पर बेवजह शक नहीं किया जा सकता। पहले पूरा मामला देखा जाएगा, तभी कुछ कहा जा सकेगा। वह रहस्य अब भी बरकरार है। बीते रोज बाबा रामदेव कह चुके हैं कि पूरे मामले की पड़ताल की जाएगी, जरूरत पड़ने पर रिपोर्ट भी दर्ज कराई जाएगी। एसएसपी हरिद्वार का कहना है कि पुलिस को अभी किसी की भी तरफ से कोई शिकायत नहीं मिली है। शिकायत मिलती है तो जांच कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

उमा भारती समेत कई ने पूछी कुशलक्षेम : रविवार को कनखल दादू बाग स्थित दिव्य योग मंदिर ट्रस्ट में आचार्य बालकृष्ण की कुशलक्षेम पूछने के लिए विशिष्टजनों का पहुंचने का सिलसिला शनिवार शाम से रविवार पूरे दिन चला। पूर्व केंद्रीय मंत्री उमा भारती भी शनिवार देर रात वहां पहुंचीं।

सामूहिक दुष्कर्म पीड़िता नाबालिग को पंचायत ने सिर मुंडवा गांव में घुमाया

जागरण संवाददाता, गया

▶ 11 दिन बाद डीजीपी से फोन पर न्याय का आश्वासन मिलने पर पीड़िता पहुंची एसएसपी के पास, हुआ मामला दर्ज

▶ मेडिकल जांच हुई, आज होगा कोर्ट में बयान, आरोपितों ने एफआइआर नहीं करने को धमकाया था

जिले के मोहनपुर प्रखंड में एक नाबालिग के साथ सामूहिक दुष्कर्म का मामला 11 दिनों बाद प्रकाश में आया है। दुष्कर्म के बाद पीड़िता को लेकर गांव में पंचायत बैठी। पंचायत में पीड़िता को न्याय देने के बजाए उल्टे उसे ही दोषी बना दिया गया। फैसले के बाद पीड़िता का सिर मुंडवा कर गांव में घुमाया गया।

न्याय के लिए पीड़िता और उसकी मां रविवार को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक आवास पहुंची। वहां पीड़िता ने एसएसपी को आवेदन देकर पूरी व्यथा सुनाई। इस पर संज्ञान लेते हुए महिला थाना में आरोपित व पंचायत लगाने वाले कुल पांच लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई गई है। पुलिस ने पीड़िता की मेडिकल जांच प्रभावती अस्पताल में कराई है। सोमवार को उसका कोर्ट में बयान कराया जाएगा।

पीड़िता का कहना है कि 14 अगस्त को मोहनपुर ब्लाक के एक गांव में अपने घर से निकली थी। शाम के सात बज रहे थे। तभी एक कार में छह लोग सवार थे। उन्होंने गाड़ी को रोका। बच्ची को जबरन गाड़ी के बीच वाली सीट पर बैठा लिया। कुछ समय बाद वह बेहोश हो गई। उसमें से एक लड़के को पीड़िता पहचानती है। उन्होंने बताया कि दूसरे दिन उसे होश आया तो एक पंचायत भवन के छज्जे पर पाया। तभी उसी गांव की महिला ने बच्ची के एक पंचायत भवन में होने की सूचना दी। परिजन पहुंचे तो बच्ची के शरीर पर कपड़े नहीं थे और वह खून से लथपथ थी। पीड़िता ने मां को आपबीती बताई।

दुष्कर्म के बाद गांव में लगी पंचायत ने सुनाया तुगलकी फरमान : पीड़िता की मां ने घटनाक्रम की जानकारी दी। पीड़िता द्वारा युवक की पहचान की गई। उस पर पंचायत बैठी। पीड़िता की बात को पंचायत ने अनसुनी कर दी। उल्टे पीड़िता को दोषी माना। पंचायत के तुगलकी फरमान पर पीड़िता का सिर मुंडवा गांव में घुमाया गया। इस फैसले से पूरा परिवार डरा हुआ है। पीड़िता की मां ने बताया कि चूंकि पूरी घटना को अंजाम देने वाले गांव के ही लोग हैं। जातीय पंचायत ने फरमान सुनाया था। पंचायत में कहा गया था कि थाने में इस घटना के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज नहीं कराना है। ऐसे में डर कर मोहनपुर थाने में प्राथमिकी दर्ज नहीं कराई। परिवार की हर गतिविधियों पर ग्रामीण नजर रखे हुए हैं। पीड़िता ने बताया कि बीमार रहने और गांव वाले के डर से प्राथमिकी दर्ज नहीं कराई थी।

डीजीपी की पहल पर शिकायत हुई दर्ज : पीड़िता की मां का कहना है कि मामले की शिकायत करने के लिए गया के एसएसपी को फोन किया थ, लेकिन उनसे बात नहीं हुई। इसलिए पटना में डीजीपी को फोन किया। वहां से कहा गया कि एसएसपी आवास पर जाकर शिकायत दर्ज कराएं। पीड़िता ने गांव के देवलाल यादव समेत छह अज्ञात पर महिला थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई है। साथ ही तुगलकी आदेश देने वाले पंचायत के सदस्य दुखन सिंह, कपिल सिंह, महादेव सिंह, बीरेंद्र सिंह के खिलाफ भी प्राथमिकी दर्ज है।

प्रभारी वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मंजीत ने बताया कि उसका मेडिकल कराया गया है। पीड़िता के आवेदन पर कुछ लोगों को नामजद किया गया है। पॉक्सो एक्ट के तहत सामूहिक दुष्कर्म का मामला दर्ज कराया गया है। महिला थाना की देखरेख में जांच शुरू की गई है।

बहन के प्रेमी को अगवा कर भाइयों ने पीटा, मौत

जागरण संवाददाता, गुरदासपुर

▶ मेला देखने जा रहे प्रेमी को अगवा कर गांव तुंग स्थित अपने घर ले आए आरोपित

▶ युवक की चिल्लाने की आवाज सुनकर पड़ोसी बचाने आए तो भाइयों ने भगाया

▶ दो भाइयों व चाचा के खिलाफ केस दर्ज, प्रेमिका और उसकी मां गिरफ्तार

बहन के साथ प्रेम संबंधों से खफा भाइयों ने गांव तुंग में यूसुफ नाम के युवक को अगवा कर रात को उसे मौत के घाट उतार दिया। वारदात के बाद रविवार को पुलिस ने प्रेमिका मनप्रीत कौर और उसकी मां को गिरफ्तार कर लिया, जबकि दो भाई काका, प्रीत और चचार देबा फरार हो गए।

यूसुफ मसीह उर्फ लक्की और मनप्रीत गांव तुंग के रहने वाले थे। पड़ोसी होने के कारण दोनों एक-दूसरे को प्यार करने लगे। यूसुफ टाइल बनाने वाले एक भट्ठे में काम करता था। मनप्रीत का परिवार यूसुफ के साथ रिश्ते के लिए तैयार नहीं था, इसलिए दोनों एक बार घर से भाग भी गए थे। शनिवार दोपहर तीन बजे गांव बरसोला में मेला देखने जा रहे यूसुफ को काका, प्रीत और देबा ने हरदोछन्नी बाईपास से मोटरसाइकिल पर अगवा कर लिया। इस दौरान यूसुफ की चप्पल हरदोछन्नी बाईपास पर ही गिर गई थी। इसके बाद आरोपित उसे अपने घर ले आए। देर रात तेजधार हथियारों से उस पर हमला कर दिया। रात एक बजे तक यूसुफ के चिल्लाने की आवाज सुनकर गांव के लोग पहुंचे तो आरोपितों ने हथियार दिखाकर उन्हें भगा दिया। रात को ही जब आरोपित शव को ठिकाने लगाने की साजिश कर रहे थे तो किसी ने पुलिस को सूचित कर दिया।

दो महीने पहले श्रीनगर भाग गए थे यूसुफ और मनप्रीत : दो महीने पहले यूसुफ और मनप्रीत कौर घर से भागकर श्रीनगर चले गए थे। लड़की का परिवार दोनों को पकड़कर गांव वापस ले आया था और मामला पंचायत के पास पहुंचा था। पंचायत में लड़की के परिवार ने कहा था कि यूसुफ को छह महीने के लिए गांव से बाहर भेज दिया जाए। इस बीच वे लड़की की शादी कहीं दूसरी जगह करवा देंगे। पंचायत में समझौते के बाद यूसुफ का परिवार गांव छोड़कर गुरदासपुर में प्रेम नगर स्थित किराये के मकान में रहने लगा। परिवार ने गांव तो छोड़ दिया, लेकिन यूसुफ और मनप्रीत का प्रेम प्रसंग पहले ही तरह चलता रहा।

आरोपितों के घर से मिला युवक का शव : थाना सदर प्रभारी मक्खन सिंह का कहना है कि आरोपितों के घर के कमरे से यूसुफ का शव बरामद हुआ है। मनप्रीत और उसकी मां कंती को गिरफ्तार कर लिया है। लड़की के भाई काका, प्रीत और एक अन्य आरोपित फरार हैं। पांचों आरोपितों पर हत्या का केस दर्ज किया गया है।

धरने पर बैठे प्रेमी के परिजन, दो और लोगों पर केस दर्ज : परिवार के पांच लोगों पर हत्या का केस दर्ज करने के बाद दो और आरोपितों को एफआइआर में शामिल करने के लिए यूसुफ के परिजनों ने सड़क पर धरना दिया। धरने के बाद पुलिस ने आरोपित भाइयों के रिश्तेदार संदीप और अजूबा नाम के दो और युवकों के खिलाफ केस दर्ज किया है।

लद्दाख ट्रैक के समान है सिनला पास ट्रैक

जागरण संवाददाता, पिथौरागढ़

▶ हिमालय में 5400 मीटर की ऊंचाई वाला सबसे सुरक्षित ट्रैक

▶ कॉसमॉस ट्रैक ने शुरू किया है सिनला पास ट्रैक का प्रचार

उच्च हिमालय में पांच हजार मीटर की ऊंचाई वाले ट्रैकों में से एक धारचूला का सिनला पास ट्रैक जल्द ही प्रमुख ट्रैकों में शामिल होने जा रहा है। कॉसमॉस ट्रैक ने इसकी मार्केटिंग शुरू कर दी है। हिमालय में इस ऊंचाई का यह ट्रैक आस्था, रोमांच और साहस का परिचायक बनेगा।

हिमालयी क्षेत्र में लद्दाख में पांच हजार मीटर से अधिक ऊंचाई वाले कई ट्रैक पूर्व में ही खोज दिए गए थे, जो आज ट्रैकरों की पसंद बने हैं। गढ़वाल में भी कालिंदी पास ट्रैक, रूपकुंड ट्रैक चर्चा में हैं, लेकिन कुमाऊं में अभी तक इस ऊंचाई के ट्रैक नहीं के बराबर हैं। यूं तो तहसील धारचूला के उच्च हिमालयी क्षेत्र में सिनला पास ट्रैक तो पूर्व से ही चर्चा में रहा है, परंतु ट्रैकरों के लिए आम नहीं हो सका है। विशेषज्ञों के अनुसार इस ऊंचाई का यह ट्रैक हिमालय का सबसे सुरक्षित और खूबसूरत ट्रैक है। यह ट्रैक नजंग से शुरू होता है। नजंग से बूंदी, छियालेख, गुंजी, कुटी, ज्योलिंगकोंग आदि कैलास, सिनला पास व विदांग होते हुए दूसरी उच्च हिमालयी दारमा घाटी के दांतु तक लगभग 120 किमी लंबा है। उच्च हिमालयी व्यास घाटी से दारमा घाटी को जोड़ता है। 5400 मीटर की ऊंचाई पर सात किमी की सीधी चढ़ाई इस ट्रैक को अद्भुत रूप दे देती है।

आठ सदस्यीय टीम ने किया ट्रैक का सर्वे : कॉसमॉस ट्रैक की आठ सदस्यीय टीम ने ग्रुप लीडर सुरेंद्र पवार के नेतृत्व में ट्रैक का सर्वे किया। अब तक हिमालय के कई ट्रैकों पर जा चुकी टीम ने बताया कि सिनला पास ट्रैक जैसा दूसरा कोई ट्रैक नहीं है। जिसे देखते हुए कॉसमॉस कंपनी ने इसकी मार्केटिंग शुरू कर दी है। दिल्ली, कोलकाता, बंगलुरु, मुंबई से ट्रैकर इस ट्रैक पर जाने को अपना आवेदन करने लगे हैं।

पिथौरागढ़ के सिनला पास ट्रैक पर सर्वे करते कॉसमॉस ट्रैक के सदस्य। जागरण

परिजन ने छोड़ा साथ तो जेल कर्मियों ने बढ़ाया हाथ

मनीष तिवारी, ग्रेटर नोएडा

▶ एनीमिया बीमारी से पीड़ित थी महिला बंदी, बंदी के परिजनों ने रक्त देने से कर दिया था इन्कार

जिला जेल में एनीमिया (खून की कमी) से मौत की कगार पर पहुंची महिला बंदी को उसके परिजनों ने ही खून (रक्त) देने से मना कर दिया। जेल प्रशासन ने उसके लिए खून की व्यवस्था की। बंदी को खून देने के लिए सिपाही कृष्णा देवी व संतोष कुमार आगे आए। दोनों ने बंदी को एक-एक यूनिट रक्त दिया। इसके बाद बंदी की जान बच सकी।

बिसरख कोतवाली क्षेत्र में पिछले वर्ष हुए हत्या के मामले में रितु जेल में बंद है। समय-समय पर रितु के परिजन उससे मिलने के लिए जेल जाते रहते हैं। पिछले दिनों रितु एनीमिया बीमारी से पीड़ित हो गई। जेल के अस्पताल में इलाज की सुविधा न होने पर बंदी को कासना स्थित राजकीय आयुर्विज्ञान संस्थान (जिम्स) में भर्ती कराया गया। जांच के बाद डाक्टरों ने पाया कि रितु को तेजी से खून की कमी हो रही है। उसे दो यूनिट की कमी हो चुकी है। जल्द खून नहीं चढ़ाया गया तो स्थिति खराब हो सकती है। जानकारी मिलने पर जेल प्रशासन ने बंदी के परिजनों को सूचना दी और खून देने के लिए कहा। इस पर बंदी के परिजनों ने मना कर दिया। इसके बाद जेल प्रशासन खून की व्यवस्था करने में जुट गया। खून देने के लिए सिपाही कृष्णा देवी व संतोष कुमार आगे आए। दोनों ने बंदी को एक-एक यूनिट खून दिया। खून चढ़ाए जाने के बाद महिला बंदी की तबियत में सुधार आया। दोबारा की गई जांच में स्वास्थ्य सही पाए जाने पर डाक्टरों ने बंदी को डिस्चार्ज कर दिया और बंदी दोबारा जेल पहुंच गई। जेल अधीक्षक विपिन कुमार मिश्रा ने बताया इलाज के बाद रितु पूरी तरह से स्वस्थ है।

मौसम विशेष

जम्मू-कश्मीर व हिमाचल प्रदेश में अधिकतर भागों में मौसम शुष्क रहेगा। कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा होगी। पूर्वी राजस्थान में अनेक स्थानों पर गरज के साथ हल्की से मध्यम वर्षा होगी। पंजाब, हरियाणा व पश्चिमी राजस्थान में मौसम मुख्यत: शुष्क और गर्म रहेगा। दिल्ली में बूंदाबांदी होगी।

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

शहर		शहर	
मुंबई	29/25/व	अहमदाबाद	34/28/[illegible]
कोलकाता	34/26/व	भोपाल	30/24/[illegible]
चेन्नई	37/26/[illegible]	जयपुर	31/24/व
हैदराबाद	34/24/व	इंदौर	27/22/[illegible]
बेंगलुरु	28/20/व	रांची	34/21/[illegible]
तिरुवनंतपुरम	31/24/व	पटना	35/27/व
गुवाहाटी	33/26/व	लखनऊ	34/28/[illegible]
गंगटोक	19/09/[illegible]	पुणे	24/22/व

स्टीम बोट के लिए पेटेंट मिला

1791 में आज ही अमेरिकी आविष्कारक जॉन फिच को स्टीम बोट के लिए पेटेंट मिला था। तब इसे चलाने के लिए मरीन स्टीम इंजनों का प्रयोग होता था। जॉन फिच द्वारा बनाई गई पहली स्टीम बोट 45 फीट लंबी थी।

महिला समानता दिवस मनाने की शुरुआत हुई

1920 में अमेरिका में 19वें संविधान संशोधन के साथ पहली बार महिलाओं को मतदान का अधिकार मिला। इसके बाद महिलाओं को समानता का अधिकार दिलाने के लिए लगातार संघर्ष करने वाली महिला बेल्ला अब्जुगके के प्रयास से 1971 से हर साल 26 अगस्त को यह दिवस मनाया जाने लगा।

दया और सेवा भावना की प्रतिमूर्ति थीं मदर टेरेसा

मदर टेरेसा का जन्म 1910 में आज ही मेसीडोनिया में हुआ था। उनका वास्तविक नाम अगनेस गोंझा बोयाजिजू था। 1929 में भारत आईं। गरीबों, असहायों की सेवा के लिए 1950 में कोलकाता में मिशनरीज ऑफ चैरिटी की स्थापना की। कुष्ठ रोगियों और अनाथों की सेवा में अपनी जिंदगी लगाने वाली मदर टेरेसा को 1979 में नोबेल शांति पुरस्कार मिला और 1980 में भारत सरकार ने इन्हें भारत रत्न से भी सम्मानित किया। वेटिकन सिटी में पोप फ्रांसिस ने उनको संत की उपाधि दी। 5 सितंबर, 1997 को देहांत हो गया।

इधर-उधर की

माफीनामे के साथ लौटाया पत्थर

वाशिंगटन, एजेंसी : नॉर्थ कैरोलिना स्थित ग्रेट स्मोकी माउंटेन नेशनल पार्क से कुछ ही दिन पहले एक बच्ची अपने साथ एक पत्थर घर ले गई। यह पत्थर दिल के आकार का था, लेकिन जब बच्ची को अपराध बोध हुआ तो उसने माफीनामे के साथ पत्थर लौटा दिया। बच्ची ने पत्र में लिखा, उसे पार्क, माउंटेन और वॉटरफाल बहुत पसंद है। इसलिए वह वॉटरफॉल के पास से यह पत्थर घर ले आई थी। लेकिन अब मैं यह पत्थर लौटा रही हूं। बच्ची ने पत्र में वॉटरफाल का चित्र भी बनाया था। बच्ची के इस पत्र को पार्क की देखभाल करने वाले एक अधिकारी ने ने फेसबुक पर डाल दिया। जिसके बाद हजारों लोगों बच्ची को आदर्श बता रहे हैं। ग्रेट स्मोकी माउंटेन नेशनल पार्क अपनी खूबसूरती के लिए प्रसिद्ध है। यहां मौजूद 60 फीट की ऊंचाई से गिरने वाला टॉम ब्रीच वॉटरफॉल है। यही कारण है कि हर साल यहां करीब एक करोड़ से भी अधिक लोग आते हैं। इनमें से हजारों यहां की यादों से जुड़ी कोई न कोई वस्तु ले जाते हैं। नियमों के मुताबिक पार्क से पौधों या वस्तुओं को ले जाना बैन है।

रिश्तों की कड़वाहट ने रख दी अंतरिक्ष में अपराध की नींव

न्यूयॉर्क टाइम्स से

- अंतरिक्षयात्री पर पूर्व समलिंगी जीवनसाथी का बैंक खाता खंगालने का आरोप
- आइएसएस पर रहने के दौरान किया था अपराध, अब नासा कर रही जांच

वाशिंगटन : अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के अधिकारी इन दिनों एक अजीबोगरीब मामले की जांच में उलझे हैं। यहां अंतरिक्षयात्री एनी मैकक्लेन पर आरोप लगा है कि उन्होंने अंतराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आइएसएस) में रहते हुए अपनी समलिंगी जीवनसाथी समर वॉर्डन का बैंक खाता खंगाला था। वॉर्डन ने उनके खिलाफ बिना इजाजत बैंक खाता देखने की शिकायत दर्ज कराई है। यह कथित अपराध अंतरिक्ष में हुआ है, इसलिए अधिकारी इसके सभी कानूनी पहलुओं पर विचार कर रहे हैं। किसी व्यक्ति पर अंतरिक्ष में अपराध करने का यह पहला आरोप है।

एनी मैकक्लेन ने 2014 में पूर्व वायुसेना अधिकारी समर वॉर्डन से शादी की थी। इस समलैंगिक शादी से करीब सालभर पहले वॉर्डन ने एक बेटे को जन्म दिया था। बच्चे पर अधिकार को लेकर दोनों महिलाओं में अनबन होने लगी। वॉर्डन नहीं चाहती थीं कि उनके बेटे पर मैकक्लेन किसी तरह का दावा करें। वहीं मैकक्लेन बतौर अभिभावक उस बच्चे को अपनाना चाहती थीं। अनबन इतनी बढ़ गई कि वॉर्डन ने तलाक का फैसला ले लिया।

मैकक्लेन। फाइल

पहले भी देखती थी बैंक अकाउंट : मैकक्लेन का कहना है कि वह हमेशा से वॉर्डन के बैंक खाते को समय-समय पर देखती रही हैं। वह ऐसा इसलिए करती हैं, ताकि उन्हें पता चलता रहे कि परिवार को पैसे की कोई कमी तो नहीं है। उनके वकील रस्टी हार्डिन ने कहा कि मैकक्लेन ने कुछ भी गलत नहीं किया है। अंतरिक्ष से भी उन्होंने वही किया जो वॉर्डन के साथ रहते समय वह किया करती थीं। वॉर्डन भी यह नहीं साबित कर पाई हैं कि उनके खाते से कोई गलत लेनदेन हुआ है।

एफटीसी ने नासा के सुपुर्द किया मामला : वॉर्डन ने फेडरल ट्रेड कमीशन से इसकी शिकायत की थी। कमीशन ने जांच के दौरान पाया था कि अपराध आइएसएस पर रहन के दौरान हुआ है। इसके बाद कमीशन ने सुबूत के साथ मामले को नासा की आंतरिक जांच एजेंसी ऑफिस ऑफ इंस्पेक्टर जनरल को ट्रांसफर कर दिया। वॉर्डन ने फेडरल ट्रेड कमीशन पर कार्रवाई नहीं करने का आरोप लगाया था।

पहले भी हुए हैं अंतरिक्ष से जुड़े अपराध : व्यक्तिगत रूप से अंतरिक्ष में रहते हुए अपराध करने का यह भले ही पहला मामला है, लेकिन अंतरिक्ष से जुड़े आपराधिक मामले पहले भी सामने आए हैं। 2011 में नासा ने एक स्टिंग ऑपरेशन किया था, जिसमें पता चला कि एक अंतरिक्ष इंजीनियर की विधवा चांद से लाए गए पत्थर को बेचने की फिराक में थी। इसी तरह, 2013 में रूस का एक सेटेलाइट चीन के ऐसे सेटेलाइट के टुकड़े से टकराकर क्षतिग्रस्त हो गया था, जिसे चीन ने 2007 में अंतरिक्ष में ही नष्ट कर दिया था। 2017 में ऑस्ट्रिया के एक व्यक्ति ने एक स्पेस टूरिज्म कंपनी पर केस कर दिया था। उस व्यक्ति का दावा था कि उसने अंतरिक्ष यात्रा के लिए पैसा जमा कराया है, लेकिन इस दिशा में काम आगे बढ़ नहीं रहा है। इस आधार पर उसने अपना पैसा वापस करने की मांग की थी।

पांच देश संभालते हैं आइएसएस का जिम्मा : आइएसएस में अमेरिका, रूस, कनाडा, जापान और यूरोप की अंतरिक्ष एजेंसियां काम करती हैं। अंतरिक्ष में रहने के दौरान किसी यात्री द्वारा अपराध करने के मामले में इन देशों ने पूरी कानूनी प्रक्रिया बना रखी है। हालांकि अब तक ऐसा कोई मामला नहीं दिखा है, जिसमें अंतरिक्ष में या आइएसएस में रहने के दौरान किसी ने अपराध किया हो।

कीटनाशकों का प्राकृतिक विकल्प खोज रहे वैज्ञानिक

- केवल हानिकारक कीटों का सफाया करेंगे आरएनए आधारित बायोकंट्रोल, अच्छी फसल होने से बढ़ेगा किसानों का मुनाफा
- रॉयल सोसाइटी ऑफ केमिस्ट्री की पत्रिका 'एनालिस्ट' में प्रकाशित हुआ अध्ययन

नए विकल्प से बढ़ेगा फसलों का उत्पादन। प्रतीकात्मक

लंदन, प्रेट्र : ब्रिटेन के शोधकर्ता कीटनाशकों का एक ऐसा प्राकृतिक और स्थाई विकल्प विकसित कर रहे हैं जो केवल हानिकारक कीटों को ही अपना निशाना बनाएगा। शेफील्ड यूनिवर्सिटी के इंस्टीट्यूट फॉर सस्टेनेबल फूड के शोधकर्ता पौधों को हानि पहुंचाने वाले कीटों को मारने के लिए एक कृषि कंपनी सिनजेंटा के सहयोग से आरएनए आधारित बायोकंट्रोल (कीटनाशक) विकसित कर रहे हैं। आरएनए एक ऐसा मॉलीक्यूल है जो पौधों के जीन की कार्यप्रणाली को नियंत्रित करता है। आरएनए-आधारित बायोकंट्रोल कीटों में एक महत्वपूर्ण प्रोटीन के उत्पादन को भी रोकते हैं।

रॉयल सोसाइटी ऑफ केमिस्ट्री की पत्रिका 'एनालिस्ट' में प्रकाशित अध्ययन में कहा गया है कि नया विकल्प पौधों में कीटों से उत्पन्न होने वाली खाद्य सुरक्षा के लिए खतरे को हल करने में महत्वपूर्ण हो सकता है, जो वैश्विक कृषि उत्पादन में सालाना 40 फीसद की हानि का कारण बनता है, जबकि इसकी लागत 100 अरब अमेरिकी डॉलर लगभग 100 अरब रुपये है।

इस अध्ययन के नेतृत्वकर्ता और : इंस्टीट्यूट फॉर सस्टेनेबल फूड के प्रोफेसर मार्क मैन ने कहा कि सिनजेंटा के सहयोग से हम जिस आरएनए बायोकंट्रोल पर काम कर रहे हैं, वह खेती की स्थिरता की चुनौती को दूर करने में मदद कर सकता है। ये बायोकंट्रोल उन कीटों का खत्म कर सकते हैं जो पौधों को नुकसान पहुंचाते हैं। उन्होंने कहा कि इस बायोकंट्रोल का लाभ यह है कि कीटों को मारने के मामले में यह काफी सेलेक्टिव हो सकते हैं। इसे कुछ इस तरीके से तैयार किया जाना है जो केवल पौधों को हानि पहुंचाने वाले कीटों को अपना लक्ष्य बनाता है और मधुमक्खी जैसे कीट जो परागण के मामले में सबसे अच्छे माने जाते हैं, उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाता है।

सबसे बड़ी चुनौती : इस अनुसंधान के निदेशक और शेफील्ड यूनिवर्सिटी के केमिकल और बायोलॉजिकल इंजीनियरिंग विभाग डिकमैन ने कहा कि इन बायोकंट्रोल के लिए सबसे बड़ी चुनौती इसके टिकाऊ होने के साथ-साथ बायोडिग्रेडेबल यानी एक समय बाद स्वयं ही नष्ट होने की होगी। हम वर्तमान में आरएनए आधारित बायोकंट्रोल के उत्पादन की रणनीतियों पर काम कर रहे हैं ताकि इसके विश्लेषण करने के तरीके तैयार हो सकें।

सिनजेंटा आरएनए इंटरफेस के प्रमुख माइक बीन ने कहा कि हम कई वर्षों से बायोकंट्रोल तैयार करने के लिए प्रयासरत हैं। साथ ही इसके पीछे के विज्ञान पर एक टीम काम कर रही है। इसके अलावा इन कीटनाशकों को तैयार करने के लिए हमने कई संस्थाओं के साथ भी हाथ मिलाया है। ताकि किसी भी तरह की चुनौतियों से आसानी से निपटा जाए।

स्पेक्ट्रम

ब्लैक कार्बन से लगेगा ऑर्गेनिक ऐरोसोल का पता

बीजिंग, आइएएनएस : खाना पकाने के दौरान निकलने वाले ऑर्गेनिक ऐरोसोल का पता लगाने का ब्लैक कार्बन सबसे बढ़िया तरीका है। एक नए अध्ययन में शोधकर्ताओं ने यह दावा किया है। ऑर्गेनिक ऐरोसोल शहरी पर्यावरण के प्रदूषण के प्रमुख स्रोतों में एक माना जाता है। बीजिंग और नानजिंग के मेगासिटी में कई डेटासेट में ब्लैक कार्बन ट्रेसर विधि को लागू करने से शोधकर्ताओं ने पाया कि गर्मी के मौसम में कुल कार्बनिक ऐयरोसोल में खाना पकाने के दौरान निकले ऑर्गेनिक ऐरोसोल का योगदान 15-27 फीसद था। यह एक बड़ी मात्रा है और इसकी रोकथाम जरूरी है।

शोध अनुसंधान

बच्चों में ब्रेन कैंसर के इलाज का नया तरीका मिला

वैज्ञानिकों ने बच्चों के लाइलाज ब्रेन कैंसर से निपटने का रास्ता तलाशने में सफलता हासिल की है। यह तरीका 10 साल से कम उम्र के बच्चों को निशाना बनाने वाले और खतरनाक किस्म के कैंसर डीआइपीजी के खिलाफ कारगर हो सकता है। इस कैंसर का पता चलने के बाद ज्यादातर मरीजों की सालभर के भीतर मौत हो जाती है। शोधकर्ता माइकल बेरेंस ने कहा, 'इस कैंसर से लड़ने का यह तरीका आश्चर्यजनक है। हमने पाया है कि इस कैंसर की वजह बनने वाला पीपीएम1डी जीन का बदलाव ही इसके खात्मे का रास्ता भी तैयार कर देता है।' वैज्ञानिकों ने बताया कि किसी भी तरह की कोशिका के जीवित रहने के लिए एनएडी मेटाबोलाइट जरूरी होता है। अगर दवा के माध्यम से इस मेटाबोलाइट के बनने में भूमिका निभाने वाले प्रोटीन को बाधित कर दिया जाए, तो कैंसर कोशिकाओं के प्रसार को रोका जा सकता है। - एएनआइ

वैज्ञानिकों ने खोजा तंत्रिकाओं की मरम्मत का तरीका

वैज्ञानिकों ने एक ऐसी पद्धति का पता लगाया है, जिसकी मदद से नर्व फाइबर्स यानी तंत्रिकाओं की बाहरी संरचना की मरम्मत करना संभव हो सकता है। ऐसा होने से मस्तिष्क, ऑप्टिक नर्व और रीढ़ की हड्डी की चोट के इलाज का नया रास्ता खुल सकता है। मस्तिष्क, रीढ़ और ऑप्टिक नर्व को केंद्रीय तंत्रिका तंत्र का हिस्सा माना जाता है। नर्व फाइबर्स को एक्सन भी कहा जाता है। आमतौर पर क्षतिग्रस्त होने के बाद इनके पुनः ठीक होने का विकल्प नहीं होता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि पीटीईएन प्रोटीन को हटाकर इन कोशिकाओं को कुछ हद तक ठीक किया जा सकता है। इस प्रक्रिया में एक और प्रोटीन सीआरएमपी2 निष्क्रिय हो जाता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि सीधे पीटीईएन को निष्क्रिय करने से कैंसर का खतरा रहता है। वहीं, सीधे सीआरएमपी2 को निशाना बनाने से यह खतरा नहीं रहता है। - एएनआइ

वैज्ञानिकों ने तैयार की कृत्रिम मांसपेशी

आविष्कार ▶ रोबोटिक्स की दुनिया में क्रांति ला सकता है एक्टुएटर

भविष्य में इंसानों की तरह मांसपेशियों से लैस दिखाई दे सकते हैं रोबोट

वाशिंगटन, एएनआइ : सॉफ्ट रोबोटिक्स के क्षेत्र में वैज्ञानिकों ने कृत्रिम मांसपेशी तैयार कर नई क्रांति ला दी है। अब भविष्य में रोबोट केवल एक मशीन के बजाय इंसानों की तरह भी काम करते दिखाई दे सकते हैं। इन मांसपेशियों से उनके काम करने की क्षमता में भी जबरदस्त सुधार देखने को मिल सकता है।

विज्ञान पत्रिका साइंस रोबोटिक्स में प्रकाशित अध्ययन में कहा गया है कि शोधकर्ताओं ने सॉफ्ट रोबोटिक्स के लिए एक पतली कृत्रिम त्वचा विकसित की है, जिसे एक्टुएटर नाम दिया गया है। इसे हाल ही में एक प्रदर्शनी में इसे प्रदर्शित किया गया था, जहां कृत्रिम रोबोट तितलियों से इन्हें जोड़ा गया था और इसकी मदद से ये तितलियां आसानी से फूल और पेड़ के पत्तों पर अपने पंखों को फैला पा रही थीं।

शोधकर्ताओं ने कहा कि दुनिया भर के इंजीनियर अधिक गतिशील एक्टुएटर विकसित करने का प्रयास कर रहे हैं जो टिकाऊ होने के साथ ही बिना टूटे ही झुक भी सकते हैं और जल्दी प्रतिक्रिया भी देते हैं। उन्होंने कहा कि हमने जो एक्टुएटर बनाया है वह करंट की मदद से मांसपेशियों को सिकोड़ता या घूमता है। शोधकर्ताओं ने कहा कि सॉफ्ट रोबोट की मांसपेशियों के साथ पहनने योग्य इलेक्ट्रॉनिक्स की मदद से कई तरह के प्रयोग किए जा सकते हैं। इससे रोबोट को और उन्नत बनाया जा सकता है।

एमएक्सईएन ने बनाई सामग्री : यह रोबोटिक मांसपेशी क्रिएटिव रिसर्च इनिशिएटिव सेंटर फॉर फंक्शनली एंटेगोनिस्टिक नैनो-इंजीनियरिंग की टीम ने विकसित की जो लगभग एक इंच लंबी है और कागज की पतली पट्टी की तरह दिखती है। इसे बनाने के लिए वैज्ञानिकों ने एक विशेष प्रकार की सामग्री का उपयोग किया, जिसका नाम एमएक्सईएन है। यह यौगिकों का एक वर्ग है जिसमें परतें केवल कुछ परमाणु ही मोटी होती हैं। एमएक्सईएन सामग्री (टी3सी2टीएक्स) टाइटेनियम और कार्बन यौगिकों की पतली परतों से बनी है। यह अपने आप से लचीली नहीं होती। जब इन्हें घुमाया जाता है तो सामग्री की चादरें एक्ट्यूएटर से बाहर निकल जाती हैं और करंट की मदद से हिलने लगती हैं। टाइटेनियम और कार्बन यौगिकों की मदद से बनाई गई सामग्री एक्ट्यूएटर को लचीली बनाती है, जिसे बिजली के जरिये लचीला बनाए रखना थोड़ा मुश्किल है। शोधकर्ताओं ने कहा कि इस एक्टुएटर की सबसे बड़ी खासियत यह भी है कि यह कम वोल्टेज में भी पांच घंटे से ज्यादा समय तक चलता रहता है।

शोधकर्ताओं ने रोबोटिक तितलियों की कृत्रिम मांसपेशी भी बनाई है। फाइल

इंसानों की तरह दिखाई देंगे रोबोट

रोबोटिक मसल (मांसपेशी) की कार्यप्रणाली को दिखाने के लिए शोधकर्ताओं ने इसे एक्टुएटर के साथ जोड़ कर एक आर्ट प्रदर्शनी में प्रदर्शित भी किया। इसके लिए शोधकर्ताओं ने एक रोबोटिक तितली भी बनाई जो कृत्रिम मांसपेशियों की मदद से अपने पंखों को ऊपर और नीचे ले जाती हैं। शोधकर्ताओं ने कहा कि कृत्रिम मांसपेशियां रोबोटिक्स के क्षेत्र में नई क्रांति लेकर आएगी और हो सकता है भविष्य में ऐसे रोबोट भी देखने को मिलें जो हूबहू इंसानों की तरह दिखाई देंगे। ये रोबोट कृत्रिम मांसपेशियों की मदद से ठीक वैसे ही काम करेंगे जैसे इंसान करते हैं, लेकिन उससे पहले इन्हें और उन्नत किए जाने की जरूरत है।

जस्ट आउट महोत्सव पर युद्ध कला

यूरोपीय देश सर्बिया में हर साल 'जस्ट आउट' महोत्सव का जश्न मनाने के लिए मध्ययुगीन सभ्यता और संस्कृति का प्रदर्शन किया जाता है। डेस्पोवैक शहर में मानसिजा मठ के समीप योद्धा पारंपरिक युद्ध कला के जरिए अपना कौशल और शक्ति का प्रदर्शन करते हैं। इस फेस्टिवल के दौरान आधुनिक और मध्ययुगीन संगीत का अद्भुत मिश्रण पेश किया जाता है। रायटर

विलुप्ति के खतरे से जूझ रहे शार्कों का होगा संरक्षण

वेजफिश की यह तस्वीर प्यू चैरिटेबल ट्रस्ट ने दक्षिण अफ्रीका में क्वाजुलू नटाल प्रांत के प्रोटिया बैंक पर खींची है। वेजफिश उन मछलियों में शुमार है जो विलुप्ति के खतरे से जूझ रही हैं। रविवार को विश्व वन्यजीव सम्मेलन में कई देशों ने विलुप्त होने के खतरे से जूझ रही एक दर्जन से अधिक शार्क मछलियों की प्रजाति के संरक्षण पर सहमति जताई है। इस दौरान 18 तरह की माको शार्क, वेजफिश और गिटारफिश को लेकर तीन प्रस्ताव पेश हुए, जो दो तिहाई बहुमत के साथ पास हुए।

स्क्रीन शॉट

अंदर के कलाकार को नहीं मार सकती : आकांक्षा सिंह

सात सवाल

टीवी पर अभिनय के बाद आकांक्षा सिंह ने 'बद्रीनाथ की दुल्हनियां' से फिल्मों में कदम रखा था। तेलुगु की दो फिल्में कर चुकीं आकांक्षा अब कन्नड़ फिल्म 'पहलवान' से हिंदी दर्शकों के सामने भी लीड अभिनेत्री के रूप में आएंगी। यह फिल्म हिंदी में भी डब होगी। आकांक्षा से बातचीत :

टेलीविजन से साउथ इंडस्ट्री की ओर जाना कैसे हुआ?

- एक दिन निर्देशक का फोन आया और फिल्म की कहानी सुनाई। छोटा-सा वीडियो भेजा। मुझे लगा कि फिल्म करनी चाहिए, क्योंकि मेरा किरदार उतना ही अहम था, जितना हीरो का।

'पहलवान' फिल्म कैसे मिली?

- मुझे निर्माता का कॉल आया था। पहले तो फेक कॉल समझ कर मैंने बात नहीं की। उन्होंने दोबारा कॉल करके ऑडिशन के लिए बुलाया। मेरे किरदार का नाम रुक्मिणी है, जो अहम किरदार है।

'बद्रीनाथ की दुल्हनियां' में आपने एक छोटा-सा किरदार किया था। उसे करने की क्या वजह थी?

- मैं जब उस किरदार का ऑडिशन देने गई, तब मैंने शशांक खेतान से स्क्रिप्ट मांगी। सब मेरी तरफ देखने लगे, क्योंकि धर्मा प्रोडक्शन में कोई स्क्रिप्ट नहीं देता। शशांक सर ने मुझे मेरे हिस्से वाली स्क्रिप्ट दी। मुझे लगा कि बड़े बैनर की फिल्म है, अनुभव लेने के लिए कर लेना चाहिए।

सुनील शेट्टी और साउथ के स्टार सुदीप के साथ काम करने का अनुभव कैसा था?

- मैं नर्वस नहीं थी। सुदीप सर तो मेरी बहुत टांग खिंचाई करते थे। हां, सुनील सर गंभीर हैं, लेकिन वह बहुत ही अच्छे से पेश आते हैं। नए कलाकार को सहज महसूस कराते हैं।

टीवी पर महिलाओं का वर्चस्व है। जब सिनेमा में काम किया, तब वहां अहमियत मिली?

-दोनों जगह मुझे अहमियत मिली। यूं तो मुख्य किरदार को ज्यादा अहमियत मिलती है, लेकिन अब अभिनेत्रियों के लिए भी किरदार लिखे जा रहे हैं।

आप फिजियोथेरेपिस्ट हैं। ऐसे में ग्लैमर की दुनिया में आने के बारे में क्यों सोचा?

- शिक्षा हर किसी के लिए जरूरी है। अभिनय ऐसा पेशा है, जिसमें अनिश्चितता है। कई बार प्रतिभा होने के बावजूद काम नहीं मिलता है। एसी स्थिति में हो सकता है मैं सेलेब्रिटी फिजियोथेरेपिस्ट बन जाऊं।

टेलीविजन पर लौटने का इरादा है?

- अगर कंटेंट अच्छा होगा तो जरूर करना चाहूंगी। हां, मैं सास-बहू ड्रामा नहीं कर सकती। मैं अपने अंदर के कलाकार को नहीं मार सकती। मैं केवल पैसे के लिए काम नहीं करती हूं। आठ साल के सफर में हमेशा वही किया है, जिससे मुझे संतोष मिले। 'पहलवान' की शूटिंग के बाद भी मैंने टीवी के लिए ऑडिशन दिए हैं। टेलीविजन ने ही मुझे यहां तक पहुंचाया है।

प्रियंका सिंह

...इसलिए 20 साल बाद भी राज कपूर नहीं बना पाए आबिद सुरती के साथ फिल्म!

मशहूर लेखक, कार्टूनिस्ट, और समाजसेवी आबिद सुरती ने बताया कि राजकपूर उनकी कहानी पर फिल्म बनाना चाहते थे, लेकिन संयोग से यह संभव नहीं हो सका। हाल ही में मुंबई में अपनी ऑटोबायोग्राफी 'सूफी' के अंग्रेजी संस्करण के लॉन्च पर आबिद सुरती ने राज कपूर के साथ जुड़ी यादें ताजा की। उन्होंने बताया कि राज कपूर के साथ लगातार 20 वर्षों तक संपर्क में रहने के बाद भी बदकिस्मती से उनकी फिल्म नहीं बन सकी। आबिद सुरती पहले अपनी कहानियों को कार्टून के जरिए बयां करते थे। इसी में से एक कहानी राज कपूर को पसंद आ गई थी। राज कपूर ने आबिद सुरती को मिलने के लिए भी बुलाया था। आबिद बताते हैं, 'उन दिनों 'बॉबी' रिलीज हुई थी। राज कपूर को लगा कि एक-दो हफ्ते तक ही चलेगी, फिर वह मेरी कहानी पर काम शुरू कर देंगे। लेकिन 'बॉबी' इतनी बड़ी हिट हुई कि तीन वर्षों तक राज सफलता का आनंद उठाते रहे। तीन साल बाद उन्होंने फोन करके मिलने के लिए बुलाया और एक लव स्टोरी पर काम करने को कहा। इसी बीच उनकी फिल्म 'सत्यम शिवम सुंदरम' रिलीज हुई। इस फिल्म के बड़ी हिट होने के कारण मेरी कहानी पर काम रुक गया। 20 साल बाद उन्होंने मुझे बुलाकर मेरे हाथ में पांच हजार रुपये का चेक देकर कहा कि जल्द ही फिल्म शुरू होगी। लेकिन वह सपना ही बनकर रह गया।'

परफेक्ट मदर हैं सनी लियोनी

अभिनेत्री सनी लियोनी दुबई में अपने परिवार के साथ छुट्टियां मना रही हैं। छुट्टी में उन्होंने मां का फर्ज निभाया और अपनी बेटी निशा का होमवर्क पूरा कराया। सनी का यह फोटो वायरल हो रहा है, जिसमें वह बेटी का होम असाइनमेंट पूरा करने में मदद कर रही हैं और निशा ध्यान से उसे समझ रही हैं। खिड़की के पार दुनिया की सबसे ऊंची इमारत बुर्ज खलीफा दिखाई दे रही है। सनी ने इंस्टाग्राम पर तस्वीर के कैप्शन में लिखा, 'छुट्टी पर हूं, बेटी का सहयोग कर रही हूं। मैंने उसके होमवर्क असाइनमेंट को पूरा करने में मदद की। हमारे पीछे बुर्जखलीफा का नजारा है।' साल 2017 में सनी और उनके पति डेनियल वेबर ने निशा को गोद लिया था।

अध्ययन

स्वास्थ्य पत्रिका क्लीनिकल साइकोलॉजिकल साइंस में प्रकाशित अध्ययन में शोधकर्ताओं ने किया दावा, कहा- दैनिक कार्यों में संतुलन बनाना भी है जरूरी

स्वास्थ्य के लिए इतना भी बुरा नहीं है स्मार्टफोन

नई दिल्ली, आइएएनएस : स्मार्टफोन के उपयोग के नकारात्मक प्रभावों के बारे में हम अक्सर लोगों को बातें करते देखते-सुनते हैं, लेकिन हाल ही में हुए एक अध्ययन में शोधकर्ताओं ने दावा किया है कि टीनएजर्स का अपने फोन पर या ऑनलाइन समय बिताना मानसिक स्वास्थ्य के लिए उतना भी बुरा नहीं है जितनी चर्चा की जाती है। नॉर्थ कैरोलिना यूनिवर्सिटी के असिस्टेंट प्रोफेसर माइकेलिन जेंसन ने कहा कि आम धारणा है कि स्मार्टफोन और सोशल मीडिया युवक-युवतियों के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है, लेकिन ठीक विपरीत नए अध्ययन का विश्लेषण करने पर यह कहीं भी देखने को नहीं मिल रहा है कि फोन और ऑनलाइन रहने के कारण मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से जुड़े जोखिम बढ़ रहे हैं।

स्वास्थ्य पत्रिका क्लीनिकल साइकोलॉजिकल साइंस में प्रकाशित इस अध्ययन के लिए शोधकर्ताओं ने 10 से 15 वर्ष तक के आयु वर्ग के बीच 2,000 से अधिक किशोरों (टीनएजर्स) पर परीक्षण किया। शोधकर्ताओं ने दिन में तीन बार इन किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित लक्षणों की रिपोर्ट एकत्र की। साथ ही किशोरों की ऑनलाइन या फोन पर समय बिताने की हर दिन की रिपोर्ट तैयार की। इस रिपोर्ट को जब बाद में देखा गया तो शोधकर्ताओं ने पाया कि डिजिटल तकनीक के अत्यधिक उपयोग का संबंध खराब मानसिक स्वास्थ्य से नहीं है।

स्मार्टफोन आज सबकी एक जरूरत बन गया है।

जिम्मेदारी के साथ करें उपयोग : शोधकर्ताओं ने कहा कि रिपोर्ट में जिन युवाओं के अधिक टेक्स्ट मैसेज भेजने की सूचना मिली वे उन युवाओं की तुलना में अच्छा महसूस कर रहे थे जिन्होंने कम मैसेज भेजे। तकनीक के अत्यधिक उपयोग के खिलाफ सलाह देते हुए विशेषज्ञों ने इसका उपयोग जिम्मेदारी के साथ करने पर जोर दिया।

संतुलित दिनचर्या है जरूरी : मनोवैज्ञानिक और नोएडा में फोर्टिस मेंटल हेल्थ प्रोग्राम के निदेशक समीर पारेख के मुताबिक, एक युवा की जिंदगी इनडोर और आउटडोर गतिविधियों के साथ अच्छी तरह से संतुलित होना चाहिए और पढ़ाई व मस्ती के बीच भी संतुलन का होना बेहद आवश्यक है। उन्होंने बताया कि टीवी, इंटरनेट, सोशल मीडिया का इस्तेमाल सीमित मात्रा में किया जाना आवश्यक है और यह कभी भी दोस्तों से बातचीत, परिवार के लिए समय, खेल या पढ़ाई पर भारी नहीं पड़ना चाहिए। इनमें संतुलन होना चाहिए। दोस्तों से बात करने के लिए फोन का इस्तेमाल करना अच्छा है, लेकिन छात्रों को सामने से मिलकर दोस्तों से बात करने को भी महत्व देना चाहिए।

जीवनशैली अच्छी बना सकते हैं अभिभावक : समीर पारेख ने कहा कि सोशल मीडिया का इस्तेमाल सकारात्मकता के साथ विचारों को व्यक्त करने के लिए किया जा सकता है। इसके साथ ही सोशल मीडिया से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए बच्चों को कुछ कौशल की जानकारी होना चाहिए। बड़ों को एक बेहतर रोल मॉडल बनकर बच्चों की जीवनशैली को एक बेहतर रूप देने में उनकी मदद करनी चाहिए।